लेखक की कलम से

ॐ नमः शिवाय

जब तक किसी देश या समाज में शोषण एवं उत्पीड़न रहेंगे तबतक उनके विरूद्ध आवाजे उठती रहेंगी। ये आवाजें राजनीति, धर्म या साहित्य में प्रकट होती है । मैंने साहित्य के माध्यम से इस शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने का प्रयास किया है । साहित्य समाज का दर्पण है जिस में ये आवाजें अधिक काल तक छाप छोड़ती है। नेपाल में मधेश एक ऐसी इकाई है जो विगत दो सौ पचास वर्षों से उपेक्षित एवं शोषित रहा है ।

स्वर्गीय वी.पी. कोइराला के पास भी मधेश के शोषण के विरूद्ध कोई मार्गचित्र नहीं था । वे लोकतन्त्र में ही सभी शोषण का अन्त देखते थे । फलस्वरूप उनके ही घटक के कुछ लोगों ने उनसे अलग होकर इस आवाज को बुलन्द किया । पंचायती व्यवस्था के घनघोर अंधकार में मैंने इस उपन्यास को लिखा है। मुझे मधेश की मुक्ति की रोशनी कहीं दिखाई नहीं पड़ती थी । राजशाही के अन्त की कल्पना भी नहीं की जाती थी । अगर, र ाजशाही का अन्त हो भी जाय तो भी इस देश के शासक वर्ग से निकल पाने का कोई मार्ग नहीं दिखाई पड़ता था । ऐसे में मेरा उपन्यासकार एक ऐसी विनाशकारी प्राकृतिक विप्लव की कल्पना करता है जिस में सभी कुछ समाप्त हो जाता है । उपन्यास यहाँ पर समाप्त हो जाता है । पाठक वर्ग अब यह पूछेंगे कि इस विनाश से आखिर क्या हासिल होगा । मेरा उत्तर यह है कि जरूर हासिल होगा। मनु की नाव उस समय भी होगी जिस में सृष्टि के सभी समान भरे होंगे । कृष्ण के महाभारत में दुर्योधन की हठधर्मिता के साथ सभी आतताइयों का नाश होगा । जन्मेजय एवं परीक्षित की कहानी के साथ एक नये हस्तिनापुर का निर्माण अवश्य होगा ।

इस उपन्यास के सभी पात्र काल्पनिक हैं । अगर इससे मेल खाता कोई नाम मिलता है तो यह महज एक संयोग मात्र हैं । अन्त में मैं मधेश सेवा आश्रम (बारा) के माननीय श्री जीतेन्द्र प्रसाद सोनल का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने इस किताब को प्रकाशित कर अपने विराट हृदय का परिचय दिया ।

इस प्रकाशन में सहयोग करने हेतु श्री शुकेश्वर पाठक एवं माननीय श्री हृदयेश त्रिपाठी जी के प्रति विशेष धन्यवाद प्रकट करता हूँ ।

डॉ. शिवशंकर यादव

प्रकाशक की ओर से

मधेश सेवा आश्रम की स्थापना देश में व्याप्त भेदभाव, सामाजिक कुरीति, जड़ता, असमानता को समाप्त कर एक नयाँ समतामूलक समाज की स्थापना में वह भूमिका निर्वाह करने के उद्देश्य से तो हुआ ही है, किन्तु मधेश की कला, संस्कृति, सभ्यता की र क्षा करना और मधेशी के दमन को उजागर करने हेतु साहित्य, रचना को प्रकाशित कर उस दिशा में भी अग्रणी भूमिका निर्वाह करने का संकल्प भी मधेश सेवा आश्रम का रहा है । इसी सन्दर्भ में डा. शिवशंकर यादव द्वारा रचित कबूतर उपन्यास को प्रकाशित कर आश्रम आज अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा है। डा. यादव ने अपने इस उपन्यास में मधेशी अपने ही देश में किस प्रकार के विभेदों का शिकार हो रहा है, उसके स्वाभिमान, उसकी दासता और उससे मुक्ति पाने के सवालों को काल्पनिक पात्रों के माध्यम से बहुत ही गहराई के साथ प्रस्तुत किया है। इसे पढ़कर पाठक को मधेशी की अवस्था से अवगत होने में काफी मदद मिलेगी। सम्पूर्ण मधेश ही नहीं, अपितु देश की ही साहित्यिक निधि के रूप में यह उपन्यास स्थान पाएगा, ऐसा मेरा मानना है

मधेश सेवा आश्रम अपने सीमित श्रोत और साधन से इस कृति को प्रकाशित कर प्रकाशन के क्षेत्र में पहला कदम रखा है । परन्तु मधेशी पर आधारित साहित्य एवं र चनाओं को संकलित कर आगामी दिनों में भी प्रकाशित करने का निरन्तर प्रयास किया जाएगा ।

धन्यवाद ।

जीतेन्द्र सोनल
अध्यक्ष
मधेश सेवा आश्रम, बारा

१

जब से चितवन में उसका पोस्टिंग हुआ है तब से उसके प्राण और तड़प उठे है। अन्याय का ताण्डप रूप उसे यहां देखने को मिला। रोज सुबह का टहलना उसने नहीं छोड़ा है। यहाँ आने के बाद वह रोज जंगल की ओर घूमने निकल जाता है और एक वेदना मिश्रित आक्रोश से जंगल के बीचों बीच बने एक बंगले को देख कर वापस लौट जाता है। लौटते वक्त वह कितनी ही बातें नहीं सोच डालता । हमारे बच्चे यहाँ पर उन बच्चों की तरह हैं जैसे ताईवान में चीनी बच्चे। उस दिन एक नर्स ने मेरे दोस्त के बच्चे को किस तरह डपटा था। 'मर्सिया' कहकर जब वह अपना गुस्सा उतार कर चली गयी थी तब से रोज उस नर्स के बच्चे उन्हें 'मर्सिया' कह कर चिढ़ाते हैं। बच्चे वापस लौटने पर रोज इसकी शिकायत करते हैं। उस दिन तो उसके धैर्य का बाँध ही टूट गया जिस दिन एक अदना सा पिउन उसको 'मर्सिया' कहकर अपमानित कर दिया था। कैसे सीना तान कर उसने गौरव से अपने आपको नेपाली और उसको इण्डियन साबित कर दिया था।

जब वह अपनी ड्यूटी पर जाता है तो लोगों की उपस्थिति के बावजूद भी वह अकेलेपन एवं सबके हिकारत का सामना करके वापस लौटता है। कोई उसे सलाम तक नहीं करता। जिस माहौल को परस्पर भाईचारे एवं राष्ट्रीयता से ओतप्रोत होना चाहिए, वह कितना तिक्त और उदासी से भरा होता है। ऐसे में किसी के अन्दर कैसे राष्ट्रीयता एवं कर्मठता का प्रादुर्भाव हो सकता है ? उस दिन जब वह पृथ्वी नारायण शाहदेव का राजदरबार देखने गोरखा जा रहा था तो गाड़ी में उसके अलावा सभी पहाड़िया लोग बैठे हुए थे। एक लकड़ी बेचने वाले को

देखकर एक ने कहा कि मदेसिया मोरा यहाँ पनि रहेछ। उसका मन हुआ इसका मुंहतोड़ जवाब दे पर यह चुप रहा। पहाड़ के सभी लोग तराई के कोने कोने में छाये हुए हैं और ये यहां पर एक लकड़ी बेचने वाले को देखकर भी हिकार से भरे हुए हैं। उस दिन वह उस गोरखा को देखकर आया था जिस गोरखा ने नेपाल का एकीकरण किया था। बिल्कुल सूना, उचाट और सूखा गोरखा, नरम दिव लोगों को कैसे पैदा करेगा। उसने उसी तरह उस समय सभी जगहों पर आक्रमण किया होगा जिस तरह रेगिस्तान के लोग खैबर खाई को पार कर सोने की चिडिय पर आक्रमण करते होंगे। बाद में उसे एकीकरण और महानता का जामा पहनाया गया होगा। रोटी और क्षुधा की मार से व्याकुल होकर किसी दूसरे की रोटी छिनेके अलावा इनलोगों के मन में कोई पवित्र भावना नहीं रही होगी। और आज भी ये लोग दया नहीं कर रहे हैं। दुनिया भर में बहादुर कहे जाने वाले , इन लोगों की बहादुरी इतनी भर है और कुछ नहीं। आज उसी का परिणाम है कि देश के सभी जगहों पर और सारे तराई वासियों में गहरी उदासी और दहशत छायी हुई है जो समय के साथ कुलबुलाते हुए आक्रोश का रूप धारण करता जाएगा।

सिनेमा हल में जब डंडे मार कर लोगों को राष्ट्रीय धुन के साथ खड़ा कराया जाता है या किसी राष्ट्रीय उत्सव वा राष्ट्रीय पंचायत में जब राष्ट्रीय पोशाक के रूप में दौरा सुरवाल और कोट को अनिवार्य किया जाता है तब उसके मन में इस देश के प्रति कैसा भाव उठता है एवं इसके भविष्य के प्रति वह किस तरह तरस से भर जाता है। यह जबरदस्ती की राष्ट्रीयता जब उसके ऊपर थोपी जाती है तब वह सिर्फ अपने गाँव में ही सिमटकर रह जाना चाहता है। उस गाँव को ही तब वह अपना पूरा देश समझने लगता है जिसमें वह खेतों एवं खलिहानों की प्राकृतिक दृश्यों को देखता हुआ विभोर हो जाता है। गांव के बाहर निकलते ही यह दुनिया उससे वह सब कुछ छीन लेती है जो उसकी विरासत है। बाहर सूट पाइन्ट पहनना और कार्यालयों में दौरा सुरवाल पहनकर वह अपने को अपनी जड़ एवं मूल से कटा हुआ अनुभव करता है।

यही सब सोचते-सोचते जब यह अगल-बगल के जंगलों पर नजर दौड़ाता है। तब एक दूसरी आह भरता है। बचपन में मां कहा करती थी कि वन में वनस्पति माई का निवास रहता है। उत्तर की तरफ होकर लघुशंका नहीं करनी चाहिए

क्योंकि उत्तर में वनस्पति माई का निवास रहता है। वह कोशित हो जाएगी। लेकिन यहाँ पर वे सभी लोग वनस्पति माई की छाती चिरकर बैठ गए हैं और कुछ नहीं होता । अब पूरव से पश्चिम तक सारे जंगल साफ हो गये हैं, पर कुछ नहीं होता ।शायद वनस्पति माई वीर गोरखालियों से हार गई है। कहीं पेड़ों पर आग की लपटे दिखाई पड़ती है, कहीं पर किसी पेड़ को नीचे से ऊपर तक छील दिया गया है ताकि पेड़ सूख जाये और इस तरह हम काटने के अपराध से वरी हो जाय । जब पूरब से पश्चिम तक का सारा जंगल सखाप हो गया तब अमेरिका के कहने पर गोर खालियों को पर्यावरण की चिन्ता सताने लगी थी और जंगल कटाई पर रोक लगा दी गयी है। पर रोज झुण्ड के झुण्ड लोग आते है और सुकुम्वासी के रूप में बसते जाते हैं। राष्ट्रीय निकुंज में यह लिखकर टांगा गया है कि मलेरिया कन्ट्रोल के कार ण जंगल सखाप हो गया है। पुनर्वास कार्यक्रम भी इसी के कारण नहीं था क्या ? पहले ये वीर गोरखाली मच्छरों से भी हारते रहे। डर के मारे तराई में उतरते नहीं थे और अब जिन लोगों ने बीमारियों से लड़ लड़ कर भी इसे नहीं छोड़ा था उन थारुओं से यह कहा जाता है कि ये लोग यहां के निवासी नहीं हैं, ये मदेशिया और इण्डियन है । उनसे सब कुछ छीन लिया जाता है । उनकी सभी जमीन भूमि सुधार के नाम पर छीन कर पहाड़ियों में बांट दिया जाता है। जैसे ब्रहभोज का प्रसाद हो । ये सभी लोग उनकी छाती पर रौंदकर बैठ गये हैं। सरकार कहती है कि चूंकि ये पहाड़ के गरीब लोग है, इसलिए इनको जमीन देना जरूरी है, जैसे कि तराई में कोई गरीब ही नहीं। ये लोग जिनके घर परिवार का कोई सिंगापुर, इंगलैण्ड, मलेशिया या हिन्दुस्तान जैसी जगहों पर रहते हैं और डालर कमा कमा कर अब मुहमांगे दामों पर तराई में जमीन खरीदते हैं, गरीब कहलाते है और तराई के निर्धनतम लोग भी अमीर माने जाते हैं ।

कैसी विडम्बना है । वह आहें भर कर आगे बढ़ता है। वह पृथ्वी नारायण शाह के एकीकृत नेपाल को टुकड़ों में बंटते हुए देखता है और मुड़कर उस बंगले की ओर हिकारत से देखता है। उसके मन में उस बंगले के प्रति तनिक भी श्रद्धा नहीं रह जाती हैं । राजमुकुट की सारी पवित्रता उसे दफन हो गयी लगती है। उसे ऐसा लगता है कि वह गोरखा एक लुटेरा से कम नहीं जिसने हमको लूटा है, इन जंगलों

को लूटा है। उसको लुट का इससे बडा प्रमाण और क्या होगा कि आज नेपाल विश्व का निर्धनतम देश है । दुनिया के सभी लोग जब चांद सितारों पर जा रहे है हम अपने ही देशवासियों की लूट में हिस्सा बंटाले हुए इसे निर्दलीयता और आदर्श व्यवस्था की संज्ञा देते हुए नहीं अघाते ।

अंग्रेज भी कभी इसी तरह हिन्दुस्तान को लूटते थे पर तब से कोई विदेशीः जिनका काम किसी दूसरे देश को लूट कर अपने देश को हरा-भरा यहां कौन अंग्रेज और कौन हिन्दुस्तानी है ? है, निश्चित है । अन्तर्राष्ट्रीय रंगभेद की नीतियों का विरोध करने वाले लोग अपने ही देश में एक रंगभेद की नीति से ग्रसित लोग तराई वासियों को लूटकर हरे भरे हो रहे हैं और इस लूट में इसका सबसे बड़ा मददगार वह पवित्रतम कहलाने वाला राजमुकट है और दूसरा कोई नहीं-नहीं हमें इन अंग्रेजों को यहां से भगाना होगा, हमे इन स्तर पर से अपने देश को स्वतन्त्र कराना होगा । सोचते हुए उसके होठ फड़फड़ाने लगते है तथा आंखों में खून उतर आता है ।

वह उस देश को आजाद करायेगा जिस पर कभी उसी के पूर्वजों का राज्य था. जिस पर गुप्तवंशी, गोपालवंशी राजाओं का शानदार रियासत रहा होगा। गयासुद्दिन तुगलक के आक्रमण के बाद जिसने खुद नेपाल पर शताब्दियों तक राज्य किया है । वह अन्यायपूर्ण राज्य और राजमुकुट को नहीं मानता। यह केवल एक लुटेरा का मुकुट है जिस पर पवित्रता और राष्ट्रीयता का मुलम्मा चढ़ा दिया गया है । वह इस मुलम्मे को उतार कर इस मुकुट को बेनकाब करेगा। इसके बिना वह दम नहीं लेगा ।

उस दिन किस तरह वीरगंज में उसे अपने ही एक दोस्त से झड़प हो गयी थी । यह दोस्त और क्लाससाथी जब पढ़ाई में असफल हो गया तो पढ़ाई छोड़कर वीरगंज चला आया । और वहां कलेज में नाम लिखाकर राष्ट्रवादी विद्यार्थी मण्डल में शामिल हो गया। लोगों पर जुल्म ढाते-ढाले प्रशासकों की मदद से चुनाव जीतकर अब वह उसी जिला का सभापति हो गया है। उसके अफिस मे नेपाल के झण्डे के नीचे ही उसकी बातचीत हो रही थी। किस तरह उसने कहा था कि अगर कुछ कर ना है तो सर्भिस छोड़कर आइए और कुछ कीजिए। इस सरकार का नमक खाकर इसी की खिलाफत करते है । वह हक्का-बक्का रह गया था यह

सुनकर। वह सरकार का नमक खाता है या सरकार उसका नमक खाती है। तराई वाले पहाड़ का खाते हैं या पहाड़वाले तराई का खाते हैं। मैं चूंकि उस सरकार का नमक खाता हुँ इसलिए मुझे उस सरकार के विरुद्ध नहीं बोलना चाहिए। उसे अपने सहपाठी की इस राष्ट्रीयता पर इस दयनीयता पर बड़ा तरस आ गया था। और जब उसने इसे अपने अकाट्य तर्कों से काट दिया था तो उसका सहपाठी तो भराज हो गया था पर नेपाल का फटा हुआ झण्डा उसके ऊपर मंडरा रहा था। उसके पीछे टंगी राजा और रानी की तस्वीर उसी की ओर निहार रही थी। सहपाठी ने राजा और रानी की तस्वीर को एक बार देखा था और उसके गले के नीचे का थोड़ा थूक सूख गया था। वह अपने उस सहपाठी को हिकारत से देखते हुए वापस चला आया था। यही वे लोग हैं जो अपनी महत्वाकांक्षा के लिए पूरी तराई को बेच रहे है, पूरी तराई का शोषण करवा रहे है। जिन लोगों के पास इतनी भी समझ नहीं है कि सरकार हमारा नमक खाती है या हम सरकार का नमक खाते हैं, वे लोग इस सरकार में बड़े से बड़ा पद पर जाने की समझ अवश्य रखते हैं। वहीं लोग पद पा जाने के बाद जब घूस का पैसा दनादन लेते-लेते थक जाते हैं तब उस सरकार की, उस देश की धज्जियां नहीं उड़ा देते क्या? यही लोग उससे नमक का बदला देने की दुहाई देते हैं । वीर गोरखालियों की वीरता के साथ उसके तराईवासियों के ऐसे ही लोगों की नमक हलाली के कारण सारा तराई उजड़ गया है। अब किसी दिन सम्पूर्ण तराईवासियों के साथ वे भी रक्सौल में शरण लेंगे तो जाकर पता चलेगा। अभी-अभी चार ट्रक लोगों को काठमाण्डू से भरकर बोर्डर के पास छोड़ आया था । इन्दिरा गांधी की शख्त कदमों से अगर ये लोग डरते नहीं होते तो शायद पूरे हिमाली राज्य का सपना देखने वाले ये गोरखाली पाकिस्तानियों की तरह हिन्दुस्तान पर भी कई बार आक्रमण कर चुके होते। पर इन बेचारों की सारी वीरता तराई के शोषण से अधिक दूर तक अपना पांव नहीं फैला सकती । देश को रसातल में पहुंचाने वालों की वीरता पर उसे तरस आ गया ।

अपने इन्हीं वीरों के बीच एक दिन वह कार्यालय के रूम में पड़ गया था। उन लोगों ने उसे कहा था कि इस देश में रह कर इस देश का अन्न खाकर इस देश के बारे में ऐसा सोचते हैं? किस तरह अपने अकाट्य वाक्यों से देश के बारे में समझाने पर भी उन लोगों न उसे हिकारत भरी निगाहों से देखा था । कैसे

अन्तराष्ट्रीय मामलों में वे लोग टिक नहीं सकते थे । जब देश और देशभक्ति के बारे में चर्चाये होती तो उनका तर्क होता कि कैसा देश कैसी देशभक्ति बंगलादेश वाले बंगलादेश के प्रति देशभक्ति दिखलायेंगे, पर उनके बाप लोग हिन्दुस्तान के प्रति दिखलाते थे। आज पाकिस्तान वाले पाकिस्तान के प्रति दिखलायेंगे पर उनके बाप लोग हिन्दुस्तान के प्रति दिखलाते थे। आज हम नेपाल के प्रति देशभक्ति दिखलायेंगे पर हो सकता है कि कल नेपाल को हिन्दुस्तान जीत ले, तब उस समय मेरा कर्तव्य क्या हो जाना चाहिए ? जिस समय पृथ्वी नारायण शाह ने हमारी तराई को जीता होगा उस समय हमारे पूर्वजों ने जो उनके साथ किया होगा वहीं मैं आज नहीं करू क्या ? बाइस राज्यों को जीत कर उनकी राष्ट्रीयता खत्म करने वाले को एकीकरण का मसीहा मानकर यशोगान गाया जाता है पर अगर आज मैं यह कहूँ कि नेपाल को भी भारत के साथ एकीकृत हो जाना चाहिए तो? तो मैं देशद्रोही हो जाता हूँ, क्यों हो जाता हूँ ? सभी लोग पागल तो नहीं हैं जो इतनी सी बात नहीं समझते? जब अफगानिस्तान पर रुसी सेनाओं की बातें होती हैं तो किस तरह सभी लोग बौखला जाते हैं। उस दिन उसने कह दिया था कि जब निमन्त्रण पर पृथ्वी नारायण शाह का काठमाण्डू में जाना ठीक था तो उसी तरह रूस का अफगानिस्तान में आना क्यों ठीक नहीं है ? किस तरह सभी लोग भौचक होकर उसके मुंह की ओर ताकने लगे थे लेकिन इस अकाट्य तर्क का जवाब भी उनके पास क्या था ? कोई नहीं । पर इसलिए भी वह उनलोगों की नजरों में और हिकारत का पात्र बन जाता है । वे लोग सोचते हैं कि कहीं ऐसे ही सोच वाले कुछ तराईवासी विद्रोह कर दे तो शायद वीर गोरखालियों की सारी वीरता पस्त हो जायेगी ।

उस दिन भी गोरखालियों की वीरता की ही चर्चा चल पड़ी थी। कोई कहता बिना खाये पीये भी वह लड़ लेता है। जब चाइनिज वार के बाद एक आदमी ने किसी गोरखाली को 'हार गया' शब्द बोल दिया तो तुरत उसने खुकुरी निकाली और आनन-फानन में चार लोगों की गर्दन काट डाली। तब से सारे भारतवासी गोरखालियों की खुकुरी से डरा करते हैं। बम और पिस्तौल के जमाने में भी इनकी खुकुरियां ही जीत जाती हैं । यही है इन गोरखालियों की वीरता । अपनी इसी खुकुरी के जोर से ये कहते रहते हैं कि गंगा के किनारे तक हमारा अपना है ।

शिमला, कुमाउ और गढ़वाल, कश्मीर सब हमारे अपने हैं। जब सिक्किम को हिन्दुस्तान ने ले लिया था तो कुछ दिनों तक यह खुकुरी बड़ी ऐठी और चमकी थी पर जब ९० हजार सैनिकों का आत्मसमर्पण याद आता तो ये अपनी खुकरी को म्यान के भीतर रखने में देर नहीं करते ।

यही सब सोचते-सोचते वह उस मन्दिर तक पहुँच गया जहां पर वह र ोज अपना माथा टेकता है। रोज की तरह वहां उसने अपना माथा टेका और यह कहकर कि "हे परम पिता, हे जगत जननी माता, तेरी इच्छायें पूरी हो" वापस अपने क्वार्टर में आ पहुंचा।

काम पर जाते समय रोज की तरह कार्यालय में धूप ताप रहे सभी कर्मचारियों ने हिकारत से हंसते हुए प्रणाम किया और वह रोज की तरह उनलोगों की ओर बिना देखे ही आगे निकल गया। आगे जाकर लड़कियों के झुण्ड में भी उसने किसी की ओर नहीं देखा, पर जब एक लड़की ने रोज की तरह उसे बड़ी ही शालीनता से नमस्कार किया तो वह उसी शालीनता से उसका जवाब भी दिया जैसे रोज देता था । वह लड़की कनखियों से देख कर दूसरी तरफ चली गयी और एक मरीज का सैलाइन निकालते हुए उसे कनखियों से घूरती और मुस्कुराती रही ।

आज अस्पताल से वापस लौटकर वह अपने क्लिनिक नहीं जा सका। जिस दिन उसका इमरजेन्सी होता है, उस दिन ऐसा ही होता है। वह अपने प्रैक्टिस के पैसे चुका कर मानों इमरजेंसी करता है। सबको इमरजेन्सी ड्यूटी के लिए अतिरिक्त पैसे मिलते हैं परन्तु वह अतिरिक्त पैसे देकर इमरजेन्सी ड्यूटी करता है । सब आपस में अपनी इमरजेंसी ड्यूटियां करवा लेते हैं पर उसको कोई नहीं पूछता । आज इसी इमरजेंसी के कारण वह नहीं जा सका था ।

शाम के समय अस्पताल से कॉल आया। एक आदमी को सांप के काट लेने की सम्भावना थी और वह वेहोश पड़ा था। खबर पाते ही वह दौड़ा हुआ गया। मर ीज बेहोश तो पड़ा था पर उसके मुँह से आ रही बदबू से वह समझ गया कि अत्यधिक शराब पी जाने के कारण मरीज वेहोश हो गया था । अकेले पड़े उसकी इसी अवस्था में उसके घर में जब उसके दोस्त गये तो उन लोगों को ऐसा लगा कि उसे सांप ने काट लिया होगा। चितवन में सर्प के काटने की घटनायें सबसे अधिक होती है। जब किसी भी मरीज के मुख से झाग निकलने लगता है तब उसे

साँप के काटने की सम्भावना में लोग उसे तुरंत अस्पताल पहुंचा जाते हैं। समूचे जंगलों को काटने की सजा उसको सिर्फ इतनी मिलती है कि सर्पों ने अपना मोर्चा सम्भाल लिया है। वे आतंकवादियों की तरह अपना बार उन पर करते रहते हैं। अपनी निष्कंटक भूमि को हड़पने का बदला वे इनसे इसी तरह लेते हैं ।

डाक्टर ने रोगी की स्थिति देखी और निदान लिखकर मरीज के लोगों से बातें करते और समझाते हुए बाहर तक आ गया। वह उन लोगों को स्थिति की गम्भीरता को बतलाते हुए शराब की नशे की बात बतायी और इलाज के लिए सभी औषधियों को लाने के लिए कहा।

"रोगी की हालत इतनी नाजुक है और आप यहां से जा रहे हैं ? "एक आदमी ने पीछे से डाक्टर को कहा । "देखिये, मैं औषधियां प्रेस्काइव कर चुका हूँ और सभी लोग इस हिसाब से जुट चुके हैं।" डाक्टर ने उस आदमी को जवाब बड़ी विनम्रता से दिया

"पर तुम यहां से क्यों जाते हो ? तुमको तो रहना होगा ।"

जब एक व्यक्ति आप से तुम पर उतर आया तो अपने इर्द-गिर्द फैले उन दश नवयुवकों की मनस्थिति को भांपकर उसने फिर स्थिति को सम्भालने और समझाने की कोशिश की। पर इसी बीच एक आदमी ने डाक्टर का कालर पकड़ लिया और गालियों की बौछार करते हुए उसे वहां पर घसीट लाया जहां पर मरीज पड़ा हुआ था । वे सभी भी शराब पी रखे थे। सभी स्टाफ तब तक उसके निदान के अनुसार उस मरीज की सेवा में जुट चुके थे। पर उन लोगों के अनुसार उस डाक्टर को तब तक वही रहना चाहिए था जब तक रोगी ठीक नहीं हो जाता। ऐसा करना सम्भव नहीं है, इस बात को डाक्टर ने एक बार और समझाने का असफल प्रयास किया । उसी समय एक युवक ने डॉक्टर के शरीर पर कई घूसें एवं थप्पड़ जड़ दिए और मर्सिया आदि कह कर सभी एक स्वर से उस डाक्टर को गालियां वकने लगे। एक बेहोश रोगी के सामने डाक्टर, जो अनावश्यक रूप से उसके पास नहीं रहा था, अब अनावश्यक रूप से पिटाई खा रहा था ।

तभी उस लड़की ने जो उसे देखकर मुस्कराई थी दौड़ी हुई फोन पर गयी और पुलिस को खबर कर दी। बाकी लड़कियां शायद उन नवयुवकों का समर्थन कर रही थी। उन नवयुवकों में से कई को वह हमेशा नर्सों के आसपास मंडराते

हुए देखा था। पता चला वे नवयुवक उन लड़कियों के दोस्त है। वहां उन दोस्तों की दोस्ती और डाक्टर की पिटाई हो रही थी ।

आनन-फानन में ही पुलिस पहुँच गयी क्योंकि कुछ दिन पूर्व ही एक डाक्टर को इसी तरह थोड़ा आंख दिखलाने पर पुलिस ने एक आदमी को एक महीने तक हिरासत में रखा था । पर इस बार आते ही पुलिस को लगा जैसे यहां तक आना बेकार हो गया । ज्यों ही पता चला कि इस मर्सिया डाक्टर के साथ ऐसा हुआ है, उनलोगों ने बेमन से पूछताछ करना शुरू किया। उसी दौरान पुलिस को यह पता चला कि वेहोश मरीज मुगलिंग का कोई पुलिस ही है। तब पुलिस भी उन्हीं नवयुवकों की ओर से बोलना शुरू कर दिया। उन नवयुवकों के बदले डाक्टर के ऊपर ही नौबत टूट पड़ी। डाक्टर वह सब देखता रहा और सब कुछ सहता रहा । जब वह क्वार्टर पर लौटा, बिना खाये सो गया ।

इन सभी घटनाओं के दौरान उसने देखा था कि वह लड़की, जिसने फोन किया था, बहुत ही उदास और मायूस हो गयी थी। इस अन्याय के खिलाफ वही लड़की उस मर्सिया की गवाह थी ।

२

सुबह की अरुणिमा चारों तरफ फैल चुकी थी। प्राची की ओर मुँह किये कुछ देर तक वह उस शक्तिपुञ्ज की बन्दना करता रहा। फिर अपने चारों तरफ फैली पहाड़ियों को आत्म विभोर होकर देखता रहा। उन पहाड़यों के महासमुद्र में वह पता नहीं क्या खोजता रहा। उसे लगता था कि इन पहाड़ियों में हमने कुछ खो दिया है। इस समस्त सुन्दरताओं के बीच भी ऐसा कुछ हो गया है जिससे इन समस्त वादियों की शक्ति हममें प्रवाहित नहीं हो रही है दूर गल्लावन में एक मन्दिर पर नजर पड़ते ही उसने नमस्कार की मुद्रा में अपने हाथ जोड़ दिये और प्रार्थना करने लगा ।

ॐ नमो भगवती सर्व रक्षकाय ही ॐ मा रक्ष रक्ष
सर्व सौभाग्य भाजनम मां कुरु कुरु स्वाहा ।

फिर उसने चारों तरफ नजर दौड़ाया जहां उसे एक और भगवान बुद्ध का एक जीर्णशीर्ण विहार नजर आया। इस मन्दिर पर नजर पड़ते ही वह उस ओर चल दिया और जाकर उसकी सीढ़ियों पर माथा टेक दिया ।

“बुद्धं शरम् गच्छामि “

फिर वह गौर से उस बिहार का निरीक्षण करने लगा।

जीर्णशीर्ण अवस्था में पड़ा हुआ वह बिहार इस देश के समूचे प्रतिविम्ब को उजागर कर रहा था । इसी तरह यह देश भी जीणशीर्ण नहीं हो गया है क्या ? आज इस बिहार में कोई नहीं आता, यहां पर कोई भिक्षुक, कोई पुजारी नहीं होता । यहां पर कोई उत्सव, कोई कीर्तन नहीं होता । मठ की तरह यहां पर प्रसाद नहीं बंटता । मठों की तरह यहां पर कोई मन्नते मांगने नहीं आता। गिरिजाघरों की

तरह यहां पर कोई अपना अपराध स्वीकार करने नहीं आता । भगवान बुद्ध सबको ऐसा ही करने के लिए कहते गये। आज लोग उसका अक्षरशः पालन करते हैं । पर उस मन्दिर में भगवान बुद्ध की एक मूर्ति बड़ी ही ध्यानावस्था में चूप लगाये बैठी है । बुद्ध की जन्मभूमि के रूप में जाने जानावाला यह एक हिन्दू देश है, जहां के हिन्दू बुद्ध को उसी तरह नहीं भूल गये हैं जिस तरह से कोई कसाई बकरे को नहीं भूलता। उस बकरे की नींव पर ही वे अपना महल खड़ा करना चाहते हैं । उसके मांस और बोटियों से वे अपने पेट की अशान्ति को शान्त करना चाहते हैं। आजकल इस शान्ति का चाव कुछ अधिक बढ़ रहा है। जापान और श्रीलंका से इस बकरेका वजन बढ़ाने का समझौता होता है। रोज भगवान बुद्ध मन्दिरों में स्थापित हो रहे हैं । रोज बलि का बकरा भगवान बुद्ध बन रहे हैं। दर्जनों देश इसे शान्ति क्षेत्र की मंजूरी दे चुके हैं। रुस ने फिर वापस ले लिया है। जब मंजूरी देना है और फिर वापस ले लेना है तब तो हम वैसे भी जैसे थे वैसे ही रहेंगे। बीच में भगवान बुद्ध को घसीट कर पता नहीं हम उनके साथ कैसा व्यवहार करना चाहते हैं । यह तो उन्हीं को पता होगा ।

फिर एक लम्बी सांस लेकर वह वापस लौट पड़ा। एक साल बाद वह यहां पर आया है। एक साल पहले जब वह यहां से गया था तो यहां के लोगों से उसे सब मिलाकर सम्मान ही मिला था । अबीर, गुलाल लगाये ही वह यहां से चितवन गया था। पर चितवन में जब स्थिति उसके बर्दास्त से बाहर हो गयी तो वह सोचता था कि पहाड़ के वही लोग जो यहां पर इतने सीधे और सरल है वहां जमीन पर उतर ने के बाद उतना कठोर क्यों बन जाते हैं ? क्या यह स्वाभाविक है या वहां उतर ने पर कुछ सिखाया और पढ़ाया जाता है। जब परिवार नियोजन के लोगों ने उसे जलील किया था कि उससे अपरेशन नहीं कराया जायेगा तो उसे बड़ी चोट पहुंची थी । उस दिन उसे ऐसा लगा था कि डाक्टर बनकर उसने जो सपने देखे थे वह इस देश में और इस देश के इनलोगों के बीच पूरा नहीं हो सकेगा। इतना भयंकर अपमान का सामना उसे करना पड़ेगा, ऐसा उसने सोचा भी नहीं था ।

ठीक उसी दिन पाल्पा से उसी कार्य के लिए जब उसका बुलावा आया तब उसे थोड़ी राहत मिली थी और वह यहां पहुंच गया था। तब जिन लोगों ने उसको अपमानित किया था वे लोग अब खुद अपमानित हो चुके थे ।

वापस लौटकर वह अपनी पूरी टीम के साथ रामपुर के लिए रवाना हो गया। इस टीम के साथ वह हमेशा कहीं भी जाने को तैयार रहता क्योंकि वहां के हरिकश के साथ उसे इतना अपनत्व एवं इतना बौद्धिक खुराक मिलता और साथ ही पहाड़ा वादियों एवं काली गण्डकी (सरस्वती) की मनोरम घटाओं का इतना आनन्द प्राप्त होता कि वह इस सौभाग्य को कभी छोड़ना नहीं चाहता। एक साल बाद अब वह अफिसर फिर उन्हीं पहाड़ी पगडण्डियों पर चलने लगा। बगल से काली गण्डकी कल-कल करती बहती जा रही थी और उसकी उलटी दिशा में काफिला चलता जा रहा था। सामने हिमालय का अनुपम सौन्दर्य और रास्ते पर नवयुवकों और नवयुलिया निरछल छेड़खानियां उसी में अनवरत बहती बौद्धिक चर्चायें जैसे आनन्द के उच्चतम शिखर पर पहुंचा जाती ।

“इस देश में काली गण्डकी की यह धारा इतनी निर्दय और साम्प्रादायिक हो गयी है। देखिये यहां पर यह कितना निरछल, शान्त, झील की तरह, दर्पण की तरह है जैसे कोई भी इसमें अपना चेहरा देख ले। यही मैदानों में उतर कर कितनी मटमैली, कितनी विशाल और विनाशकारी हो जाती है। कितने फसलों को बर्बाद कर, कितने लोगों को यह नहीं उजाड़ देती। आखिर ऐसा क्यों ?“ डाक्टर ने बड़ी चतुराई से अफिसर साहब से यह प्रश्न कर दिया ।

“इसलिए कि मैदान मिट्टियों से भरा है और यह पहाड़ पत्थरों से । इसको दर्पण की तरह स्वच्छ बनाने के लिए ये पत्थर उत्तरदायी हैं। ये लोग छानकर इसके सारे मैल निकालते हैं। तराई में मिट्टी के अलावा और कुछ नहीं होता जो केवल मैल ही मैल है। पत्थरों की सख्ती वहां नहीं होती । “

“पत्थरों की सख्ती तो उसमें नहीं होती पर आप कैसे कह सकते हैं कि मिट्टी केवल मैल ही मैल है । उसी मिट्टी पर ये पत्थर भी पड़े होते हैं। मिट्टी के बिना ये पत्थर टिक ही नहीं सकते। मिट्टी की शान्ति अगर इन नदियों के अनाचार के लिए उत्तरदायी है तो क्या उस मिट्टी को भी पत्थर में बदलना होगा ?

“नहीं, न बदलना होगा और न बदल सकता है खुद ही ये पत्थर वह वह कर वहां पहुँच जायेंगे ।”

“बह करके जायेंगे पर वहीं मिट जायेंगे। यह भी सत्य है। इनका अस्तित्व तभी तक है जब तक फदेबुर होकर वे इन पहाड़ों का निर्माण करते हैं। मैदानों में जाकर वे मिट्टी के नीचे दबे बिना नहीं रहेंगे क्योंकि मिट्टी संसार के सम्पूर्ण इतिहास

को ही दबोच लेने की क्षमता रखती है। उस मिट्टी के ऊपर फैले बालुओं का एक ही बबण्डर इस सम्पूर्ण हिमालय के बराबर होता है। ऐसा हिमालय रोज यहां के बबण्डरों में बन और बिखर सकता है ।

"वे बालू भी ये पत्थर ही है, यही तो दुःख है । वहां तक तो यह नदी पहुंचती नहीं और जहां तक पहुंची है वहां सिर्फ मिट्टी ही है। इस मिट्टी से कुछ नहीं होने वाला । उसमें न कोई बबण्डर आ सकता है न तूफान इन पत्थरों से ढक जायेंगे वे ।"

"पर वह दिन इस देश के लिए पड़ा दुर्भाग्यपूर्ण होगा क्योंकि तब अन्न का एक दाना भी नहीं मिलेगा। बिना मौत मरना है तो ये पत्थर वहां जाय। मिट्टी भी मरेगी, पत्थर भी मरेंगे।"

दोनों का यह अप्रत्यक्ष वार्ता बड़ा मजेदार रहा। उन दोनों के अलावा इस वार्तालाप का मतलब टीम का और कोई भी नहीं समझ पाया। कड़ी धूप के कारण पसीने की बूंदे बदन पर आ गयी थी। सबने काली गण्डकी के पानी से प्यास बुझाई और वे थोड़ी दूर पर एक बगीचे में पहुँच गये। वहां पर एक नवयुवती को देखकर सभी लोग वहीं थोड़ी देर ठहर कर थकान मिटाने लगे । नवयुवती के कारण थोड़ी देर तक सभी चुप रहे पर तभी सामने से एक मगर युगल गुजरा । सबके सामने ही उस मगर युवक ने मगर युवती की छाती बड़ी सहजता से मसल दिया । इस घटना के साथ ही एक ठहाका गूंज गया और इसी के साथ सबका मौन टूट गया। बैठी हुई अकेली युवती झेंप सी गयी। उच्च ललाट एवं तिखी नाकनक्स वाली वह लड़की कोई ब्राह्मण या क्षेत्री सी लग रही थी। अब सभी लोग उसकी तरफ मुखातिब हो गये। हमला चारों तरफ से हुआ । पहाड़ों में ब्राह्मण युवतियां शर्मिली होती हैं और फ्रैंक नहीं मानी जाती। फिर भी उन आदिवासियों की संस्कृति उनमें मिल गयी है । तथा मुसलमानों की संस्कृति से वह बची रह गयी है। नतीजा यह हुआ है कि न वह इधर की रही है न उधर की। वे न इतनी सहज एवं सरल होती हैं जितनी कोई मगर या गुरुंग युवतियां, न तराईबासी युवतियों की तरह घूंघटधारी ही । इसी वर्ग की महत्वाकांक्षी युवतियां भटक कर बम्बई की गलियों में जाती हैं । ब्राह्मण वर्ग की होने की वजह से वे अन्य जातियों से अपने को उच्च मानती है । अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए उन जनजातियों की संस्कृति से प्राप्त स्वतन्त्रता का फायदा उन्हें मिल जाता है। घूंघटधारियों की संस्कृति का दवाब वहा नहीं होता ।

"कहाँ जायेगी बैनी "एक आदमी ने उस नवयुवती से पूछा । खाली युवती हसती हुई पर झैंपती हुई बोली। उसे पता हो गया कि अब ये लोग हमें छोड़ेंगे नहीं। पर भीतर ही भीतर वह इसके लिए तैयार भी थी ।

"वह घर है या माइती ?"

"आपको क्या लगता है ?"

"देखकर तय करना मुश्किल लगता है ।"

"तब आप सभी लोग सगुन करके बतायें।" नवयुवती ने गले से कुछ निकाल कुछ छुपाते हुए बोला। सभी लोग एक-एक करके अपने अपने मन की बातें बतलाने लगे ।

"माइती" एक ने कहा ।

"हाहा ऽ ऽ ऽ" युवती की हंसी से ऐसा लगा कि उस युवक का बयान सही नहीं है ।

"घर ।" दूसरे ने कहा

"हा हा हा" युवती ने फिर उसी अन्दाज़ में हंस दिया। उसकी हंसी की अन्दाज से कुछ भी अनुमान लगा पाना मुश्किल था। फिर थोड़ी देर के बाद सभी लोग अपने रास्ते चलने लगे । गण्डकी के किनारे परिवार नियोजन की उस टोली में अब एक नवयुवती भी अचानक आ मिली थी। सभी लोगों का रास्ता तय करना अब आसान हो गया था । पहाड़ों के चढ़ाई उतराई वाले पैदल एवं थका देने वाले रास्ते को तय करने के लिए ऐसे अवसर लोग हमेशा खोजते रहते हैं ।

"क्या नाम है आपका ?" फिर एक युवक ने पूछा ।

"फिल्मी"

"फिल्मी ?" एक युवक ने ठहाका लगाते हुए कहा। पर साथ ही इस खूबसूरत नाम के सुनते ही वह उससे एक गाना सुनाने का आग्रह कर बैठा ।

"गाना वह यहां नहीं सुनायेगी। वह तो हमें अपने यहां ले जाकर सुनायेगी, क्या बैनी"

"क्या आप आज हमलोगों को अपने यहां जगह देंगी " ?

"मेरी जगह तो पहले से खाली नहीं हैं ।" कहती हुई युवती मुस्कुरा उठी । उसके कदम जल्दी जल्दी उठ रहे थे ।

"क्या मतलब अब युवक अपने प्रश्न के साथ ही समझ गया कि वह युवती विवाहित है । अब उसकी बारी थी ।

"इतनी जल्दी-जल्दी कदम का उठाना ही अब तक हमारी शंका समाधान कर दिया है । पर हम तो सिर्फ दरवाजे पर जगह चाहते है । जो खिला देंगी उसी से संतुष्ट हो जायेंगे बैनी । जगह पर क्या किसी आदमी का नाम लिखा होता है । आज हम जाकर रुकेंगे और चले जायेंगे । कल दूसरा रूकेगा फिर भी वहां कोई निशान नहीं
बनेगा ।"

"निशान बनाने की कोशिश तो सब करते हैं। शायद आप लोग भी कर र हे हैं। पर यहां पर निशान बनाना मुश्किल है ।

"आज अवसर हमें देकर देखिये, निशान बनता है कि नहीं ।"

"काश कोई निशान बन भी पाता " कहकर युवती ने एक अंगडाई ली और फिर मुस्कुराकर थोड़ी देर दौड़ पड़ी । उसको पकड़ने के अन्दाज में पीछे से एक युवक भी दौड़ पड़ा । इस तरह हंसी मजाक की पहाड़ी स्वतन्त्रता अपनी चरम सीमा पर पहुंचती और फिर उतर जाती । इस तरह पता नहीं कब रास्ता तय हो गया ।

इस पूरी स्वतन्त्रता में डाक्टर को एक ही बात खलती रही और इस समूचे रास्ते पर वह केवल इसलिए मूक दर्शक बना रहा। सभी लोग उस युवती को बार - बार बहिनी कह रहे थे और भद्दे मजाक भी कर रहे थे। तराईवासी उस डाक्टर के लिए यह कतई पसन्द नहीं था कि एक लड़की को बहन कहकर उसके साथ ऐसे मजाक किया जाय ।

"डाक्टर साहब तो कुछ बोलते ही नहीं।" लड़की ने कहा । "इसलिए कि तुम सबकी बहन बनती जा रही हो और इतनी अश्लीलता भी अपने मन में भरती जा रही हो। हम तराईवासी इसके बिल्कुल विरुद्ध हैं । हम जिसको बहन कह देते हैं, फिर उसके साथ ऐसा बर्ताव नहीं करते ।"

नवयुवती थोड़ी देर के लिए झेंप गयी और बिल्कुल गम्भीर होकर उस डाक्टर को देखने लगी। बात तो बिल्कुल ठीक है। शायद डाक्टर ने अपने इसी शब्द के साथ ही उस पर कोई निशान बना दिया था। तबतक खालीवन आ चुका था । वह लड़की आग्रह करके सबको अपने घर ले गयी । डाक्टर को वह विशेष अनुरोध करके ले गयी। उसकी नजर में डाक्टर का स्थान बहुत ऊंचा हो चुका था । मन ही मन वह उस पर लूट गयी थी ।

जब सभी लोग उसके घर पर पहुंचे तो उसके घरवाले भी आदर एवं श्रद्धा से झुककर सबको नमस्ते किया। गांव के कितने ही औरत-मर्द आते और वही शालीनता से दोनों हाथ जोड़कर एवं झुककर एक विशेष अन्दाज में नमस्ते कर ते पहाड़ों पर इस विशेष अन्दाज का नमस्कार औरतों में अधिक प्रचलित है। उस समय उनकी भलमनसाहत का कायल हो जाना किसी के लिए भी स्वाभाविक है। "क्या यही है वे लोग जिनको आपने पत्थरों की संज्ञा दी थी गुरु ?" डाक्टर ने डी. ओ. साहब की गम्भीर मुद्रा को तोड़ा ।

"नहीं ।"

"तो फिर ?"

"इनके बाद की पीढिया जिनपर लन्दन और अमेरिका के मंडराते रहते भूत हैं। जब वे यहां से चल कर तराई के हरे-भरे एवं लम्बे मैदान में उतरते हैं तो उनपर सवार लन्दन और अमेरिका के भूत मंडराने लगते है तब वे एक हिमाली राज्य की कल्पना करते हैं और अपनी खुकुरी को गंगा में धोने का लोभ संवरन नहीं कर पाते । उनका कहना है कि गंगा के किनारे तक उनका अपना देश है ।"

गंगा के किनारे तक के उनके इस देश में वे लोग नहीं आते क्या जो वहां तक के निवासी भी है? वहां तक की जमीन को तो वे अपना कहते हैं पर वहां तक के लोगों को अपना क्यों नहीं कहते ? क्यों तराईवासियों को इण्डियन कहकर, धोती-कुर्ता कहकर अपमानित करते हैं? इस तरह के रवैये से तो मैं समझता हूँ कि अपनी खुकुरी को तो गंगा में धोने की तो बात ही छोड़ दीजिए उसको साफ करने के लिए हिमालय का बर्फ भी नहीं मिलेगा और इसके लिए वे ही तराईवासी उसके साथ ऐसा करने की प्रक्रिया को सहायता देंगे। अच्छा गुरु क्या तराई पर एक बार कब्जा कर लेने पर ही ये लोग गंगा में अपनी खुकुरी धोना चाहते हैं ? क्या इनलोगों को मालूम नहीं कि नेपाल, काठमाण्डू को छोड़कर और किसी का नाम नहीं? अगर है भी तो वे इस नफरत और जुल्म से जो कुछ भी है वह सब हाथ से गंवा देंगे ? आखिर इन नवयुवकों को गुमराह करने वाला कौन है ? अमेरिका और लन्दन के भूत लानेवाले कौन हैं ?"

"यह तो एकलव्य से पूछना होगा ।"

एकलव्य हमारे टीम का एक सुधा नौजवान था जिससे सभी मजाक कर ते थे । डी. ओ. साहब उसे बहुत मानते थे ।

गुरु के इस वक्तव्य पर सभी लोग एक जोर के ठहाके के साथ हंस पड़े। तबतक फिल्मी एवं उसके घरवाले ने लालमिट्टी से लीपे बरामदे पर सुकुल बिछा दिया और पीने के लिए मही लाने अन्दर चली गयी। पहाड़ी रास्तों की थकान मिटाने के लिए ऐसे ही लोग रास्ते में खीरा, ककड़ी खाते और लोगों से मजाक करते चलते हैं। जहां बैठ गये वहां हर जगह मही अथवा छांग की मांग होती है। जब शाम हो जाती है तो अधिक लोग छांग या जाड़ की भी मांग करते हैं ।

थोड़ी ही देर में मही बनकर तैयार हो गया। फिल्मी ने अपने हाथों से डाक्टर के हाथों में गिलास थमाया। डाक्टर उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर पूछा.....

"आखिर आपका नाम फिल्मी क्यों हैं, मेरी समझ में नहीं आती ।"

"मैं फिल्म देखने और फिल्मी गाना गाने की बहुत शौकिन हूँ, इसलिए ।"

डाक्टर इस उत्तर से झेंप गया और फिर उससे कुछ भी पूछना मुनासिव नहीं समझा । उसने उसकी आंखों में एक विचित्र चमक एवं वहशीपन देखा । बाद में खालीवन की चौर में घूमते समय लोगों ने उसे बताया कि शादीशुदा होने के बावजूद भी वह इतना स्वतन्त्र, स्वच्छन्द एवं बहसी है कि जिस किसी के भी साथ तानसेन फिल्म देखने चली जाती है और दो चार रोज में आती हैं। फिल्मी गाने एवं स्वच्छन्दतापूर्वक घूमने की वह इतनी शौकिन है कि लोगों ने उसका नाम ही फिल्मी रख दिया है । पति मलाया में बहादुर सैनिक है और यहां पर वह उसकी बहादुर पत्नी । मां बाप ने एक बार इसके पति से शिकायत की थी तो उलटे उसके पति ने मां बाप को डांट दिया था । मलाया से ही वह इसके लिए सोने के गहने एवं सभी मनपसंद चीजें भेजता हैं ।

मही का गिलास थमाते समय के उनके गर्म हाथों एवं आंखों की चमक की वास्तविकता डाक्टर को समझ में आ गयी थी। उसकी आंखों के सामने वह दृश्य घूम गया जब उसके क्लिनिक में सुन्दरता की एक साक्षात मूर्ति अचानक आ पड़ी थी । पान बेचने वाली उस युवती के पोशाक एवं सौंदर्य को देखकर आंखे चौंधिया गयी थी । स्याङ्जावासी मां-बाप के द्वारा मणिपुर में जन्मी जब वह अपने देश में आयी तो एक वर्ष के बाद ही उसे दौड़ते हुए क्लिनिक में आना पड़ा था। बड़ी विनम्रतापूर्वक, जिसमें मणिपुर की संस्कृति की छाप स्पष्ट दिखलाई पड़ती थी, जब उस युवतीने डाक्टरसे आग्रह किया था कि उसके पेट में पल रहे बच्चे को गिरा दिया जाय क्योंकि वह अविवाहित है, तब डाक्टर उसकी दयनीयता, सौंदर्य, सौष्टव

एवं सामाजिक मजबूरी को देखकर उसकी मदद करने की आकांक्षा रखते हुए भी उस युवती के आग्रह को ठुकरा दिया था । उसने कहा था कि जब तुम अविवाहित हो तो तुम्हें उस युवक से शादी कर लेनी चाहिए। जब उसने देखा कि उस युवती को पूरे लन्दन और अमेरिका की संस्कृति का भार नेपाली तरीके से ढोना पड़ रहा है तब उसे उस युवती पर बड़ा तरस आया था ।

जब खालीवन के चौर से लौटकर सभी लोग वापस आये तो गाई वस्तुओं को खिलाने के लिए एक बूढ़ा आदमी अपनी पीठ पर शाल के पत्तों को बोके चला आ रहा था । एक औरत धारा से पानी की गगरी लिए चली आ रही थी । एक दूसरी युवती जो फिल्मी की ननद थी, गायों को बांध रही थी। शाल के बड़े-बड़े पत्ते वहां पर छितराये हुए थे तथा बगल में बकरियां मेमिया रही थीं। सभी लोग काठ की एक सीढ़ी द्वारा ऊपर चले गये जहां पर फिल्मी ने आतिथेय में कोई कमी नहीं रख छोड़ा था। सबके लिए विछावन का पूरा बन्दोवस्त हो चुका था ।

खाना खाकर कुछ लोग सोने लगे और कुछ लोग ताश खेलने और सिगरेट पीने लगे । पपलू का बाजार पहाड़ों में अवाल-वृद्ध गर्म रहता है। यही से वह नेपाल के प्रत्येक ऑफिस एवं कार्यालयों में पहुंच कर नेपालियों की कार्य क्षमता में चार चांद लगाता है ।

डाक्टर की आंखों में निन्द नहीं है। वैसे भी वह देर से सोता है । कुछ देर के बाद उसने देखा चुपके-चुपके एक-एक करके ताश खेलने वाले लोग कहीं जाने और आने लगे । डाक्टर को समझते देर नहीं लगी। लन्दन और अमेरिका की संस्कृति नेपाली तरीके से नृत्य करने लगी थी। लन्दन और अमेरिका का स्वाद नेपाली थाल में परोसे जाने लगे थे। कुछ देर पहले फिल्मी ने सबको बड़े चाव से खाना खिलाया था । गुरू खर्राटे भरने लगे थे ।

कब आंखें लग गयी डाक्टर को पता नहीं चला। सुबह आंखें खुली तो लगा जैसे बचपन लौट गया है। वचपन में निन्द टूटते ही गांव में उसे ढेकी और जातो का संगीत सुनाई देता था। सारे गाँव की औरतें चार बजे भोर से ही इस काम में जुट जाती थीं। तब सारा गाँव अजीब संगीत से भर उठता था । तब मिल का राक्षस नहीं आया था । बहुत दिन हुए थे ऐसा संगीत सुने हुए। यहां पर आकर बिल्कुल उसी तरह का संगीत सुनाई पड़ा उसे । पश्चिम की मशीने अभी पहाड़ों पर नहीं आयी हैं । वह बाहर आकर पहाड़ों के दृश्यों को देखने लगा । सरसों के

फूल चारों तरफ खिले हुए थे। चांदनी रात में अनुपम शोभा का आनन्द टपक रहा था । तभी उसने देखा फिल्मी उसकी ओर देख कर मुस्करा रही है मानों रात की संस्कृति में शरीक न होने पर वह उसको बुधू समझ रही हो ।

सूर्योदय हुआ। फिल्मी सबको चाय लाकर दे दी। चाय पीकर, घरवाले को १४० रुपये देकर सभी लोग अब उस पड़ाव से चल पड़े। कुछ ही मिनटो में फिल्मी भी रामपुर के आयुर्वेदाचार्य से उपचार कराने के बहाने उस काफिले में आ मिली । आज वह अधिक खुला, अधिक स्वच्छन्द और अधिक तरोताजा लग रही थी । आज सचमुच उसने फिल्मों के इतने बढियां गीत सुनाये कि सब दंग रह गये । इतना सुन्दर कंठ, इतना सुन्दर रूप, इतना सुन्दर सौष्ठव पर......डाक्टर फिर एक लम्बी सांस खीच कर तरस खा गया ।

दोपहर के बाद काफिले के कुछ लोग एक बड़ के पेड़ के नीचे सुस्ताने बैठे। वही पर एक मगर सास-बहु छाग बेच रही थी। छाग बेचकर गुजारा करने वाली उन मगरिनियों का सौष्ठव भी कुछ कम नहीं था। वअकी देह से तो मानों खून ही टपक रहा था। सभी लोग अब उनके साथ मजाक करने में लग गये ।

"हम तुम्हें ले जायेंगे तो तुम हमारे साथ चलोगी ? "

"हमारी सास जो बैठी हुई है ।"

"हम सास को भी ले जायेंगे ।"

"हम तो अब क्या जायेंगे बाबू, हा इसे ले जाओ आप लोग ।"

"कहां ले जाये ? क्या उस झाड़ी में ले जाय ।"

"जहां कहीं भी ले जाओ, आपकी मर्जी ।"

सास पतोह के ऐसी बेबाक मजाक से डाक्टर सन्न रह गया । काफिले का एक आदमी उठकर, सचमुच ही उस युवती को लेजाने के लिए चला । ज्योंही उसने उसकी देह को छूना चाहा, युवती के भरपूर चाटे से वह युवक औधे मुंह गिर पड़ा । सभी लोगों ने उसे वास्तविकता से परिचय कराया। असल में वह युवक भी मधेश का ही था और फिल्मी के व्यहारों से समझा था वह उसके साथ भी वैसा ही कर सकता है । पर सभी लोगों ने उसे समझाया कि मगर लोगों से जितना मजाक करना हो कर लो पर वह देह उसी को छूने देती है जिसका हक है । हक उसका होता है जो उसका दिल जीत ले । थोड़ी देर के मजाकों में ही दिल जीत लिया ऐसा नहीं होता । उसके लिए रातभर का समय चाहिए जाँड़ और रक्सी का

दौर चाहिए। तब जाकर कहीं किसी मगर युवती का दिल जीता जा सकता है। वह कोई फिल्मी नहीं । लन्दन और अमेरिका की संस्कृति से वे बिल्कुल बेदाग होती हैं।

फिल्मी ने इसे देखा और रास्ते भर गुम सुम चलती रही । मानो उसकी संस्कृति पर किसी ने करारा तमाचा जड़ दिया हो ।

शाम होते-होते सभी लोग एक विस्तृत मैदान में उतर गये। चारों ओर गोलाकार पहाड़ियों से धीरे हुए इस मैदान को देखकर सबका मन हरा हो गया । एक ओर काली गण्डकी की कल-कल धारा स्याङ्जा और पाल्पा को अलग कर र ही थी । हरे-भरे मैदान को देखकर डाक्टर को अपना मधेश याद आ गया। यहां गर्मी भी कुछ अधिक लग रही थी जो बिल्कुल तराई का सुख प्रदान कर रही थी। जगह-जगह पर युवतियां आती-जाती दिखलाई पड़ रही थीं जिससे तराई के पुराने पनघट की याद ताजा हो रहीं थी । दूर पहाड़ी पर एक स्कूल था जिससे स्कूल के लड़के-लड़कियां अभी भी छुट्टी होने के बाद अपने-अपने घरों को वापस जा रहे थे ।

कुछ देर के बाद सभी लोग उस मैदान के बीच में स्थित एक मकान में पहुंचे । यह रामपुर का आयुर्वेदिक अस्पताल था। उसी में परिवार नियोजन का अफिस भी था । सब लोग बगल के एक होटल में चाय पीकर अपना सामान खोल सोने-खाने के बन्दोवस्त में जुट गये । फिल्मी एक दूसरी दिशा की ओर चल दी । पता चला कि यहां पर उसका सम्बन्ध पड़ता है और वह वहीं जा रही थी। रामपुर ब्राह्मणें की बस्ती है और पाल्पा के हर ब्राह्मण का कोई न कोई सम्बन्ध यहां अवश्य पड़ता है। अगर दूसरा कोई सम्बन्ध न हो तो ससुराल अवश्य हो जाता है । कहते हैं रामपुर नेपाल का अमेरिका है। यहां की ब्राह्मण युवतियों का सौन्दर्य रामपुर के छोटे से फांट में नहीं अटता । खाने पीने के लिए यहां अन्न थोड़ा ज्यादा होता है । इसलिए मर्द इसका भरपूर फायदा उठाते है । वे एक साथ तीन-चार औरतों को खिला-पिला सकते हैं, सो वे करते हैं। बाद में जब उन औरतों का मन नहीं भरता तो पेट पर लात मार कर कहीं भी चली जाती है । ऐसे समाज की लड़के-लड़कियों पर कौन काबू पा सकता है । सब राजमार्ग के अगल-बगल दिखलाई पड़ने के लिए छटपटाते रहते है । चारों तरफ से घिरी पहाड़ियां इनको जेल की दीवार जैसी लगती है जिसे तोड़कर वे तत्काल र ाजमार्ग पकड़ लेती हैं । जिन पहाड़ियों के बीच में आकर डाक्टर को एक अपूर्व स्वच्छन्दता, स्वतन्त्रता एवं परम शान्ति का अनुभव हो रहा था वही वहां के लोगों के लिए एक कारागृह बना हुआ था । भ्रष्ट व्यवस्था एवं भ्रष्ट ब्राह्मणत्व का वह

एक जीता जागता नमूना है। वेदमंत्रो एवं रामायण-महाभारत की पंक्तिया वहा अपने असफल प्रयास करती नजर आती है ।

डाक्टर दूर तक फिल्मी को जाते हुए देखता रहा। उधर से स्कूल की एक छोटी सी लड़की बस्ता लेकर आ रही थी। समीप आकर दोनों ने एक दूसरे को कुछ दिया। स्कूल की लड़की उसे लेकर अपने घर को चल दी । अब वह चोरमारा और राजमार्ग पर जाने के लिए मचलेगी बड़ी होकर, क्योंकि घर का रास्ता वह उसी तरह भटक जायेगी जिस तरह फिल्मी भटक गयी है ।

पूरा काफिला वहां के बाजार की चौक में जा कर रूका। चारों तरफ चाय की दूकाने थी जिसमें विस्कुट भी मिलते थे। बीचों बीच तीन चार पीपल और स्वामी के वृक्ष लहरा रहे थे। एक ओर कृषि बैंक और सिंचाई अफिस का तख्ता लटका हुआ था । अफिसर लोग वहां पर नहीं थे। सिंचाई के लिए तो वहां पर कुछ था नहीं इसलिए वर्षा होने पर वह अफिस भी खुलता है। कृषि बैंक के हाकिम मधेश के थे, इसलिए छुट्टी लेकर तबादला कराने गये थे। उनको इस अमेरिका का सुख रास नहीं आया था । बाल बच्चेदार आदमी, इस जेल में अपने साथ अपने बच्चों को भी क्यों खतम करें। जनकपुर में कितना आनन्द और सुविधायें रहती थी। इस जगह और इस देश की सेवा करने के लिए क्या हम ही ठेका लिए हुए है ? जिधर जाइए मदेशिया कहकर दुतकारता है । लोग हमारे जनकपुर में जाकर कितना गुलछर्रों उड़ाता है और हम यहां पर आकर देश सेवा करें ? जहन्नुम में जाय ऐसा देश ऐसा कह कर वे अनिश्चित काल के लिए बिदा लेकर चले गये थे ।

चौक के बीचोबीच एक शानदार दूकान थी। वही पर सभी लोग जाकर बैठ गये । दूकान का मालिक डी. ओ. साहब का पहचाना हुआ था ।

नेवारी भाषा में दोनों ने कुछ बातें की जो किसी को समझ में नहीं आयी । उसने किसी को बुलाया और दौड़ती हुई उसकी लड़की आयी और उस काफिले को देखते ही ठिठक गयी । डाक्टर ने उस लड़की के सौन्दर्य को देखा और ठिठका रह गया । गले में पोते को देख कर उसे लगा कि लड़की शादीसुदा है। पर डी. ओ. साहब से इस बारे में फुसुर-फुसुर करने पर पता चला कि ऐसी बात नहीं है । वह तो मैट्रिक में पढ़ रही एक चुहल लड़की है और जब भी वे आते है उसका चहकना काबिलेगौर होता है । बाप का मन ही मन इरादा यह है कि इस लड़की के लिए कोई लड़का डी.ओ. साहब से ही मिलेगा। इन ब्राह्मणों और मगरों की बस्ती में

वह एक ही नेवार था जो सबसे सम्पन्न तो था पर और सभी लोगों की परम्परा से वह बिल्कुल भिन्न परम्परा का था। नेवार लोग उसी तरह कन्जरवेटिव होते जितना तराई के लोग होते है । एक बार लड़की के ज्यादा चहकने पर बाप ने जोर से डांटा था जो पहाड़ियों के और वर्गों में डाक्टर ने नहीं देखा था ।

थोड़ी ही देर में सभी लोगों को ऊपर बुलाया गया। लड़की ने सभी लोगो के लिए बिस्तर को करीने से सजाकर ठीक-ठाक कर दिया था। डाक्टर और डी. उर्ड के बिस्तर पर अच्छी पत्रिका की व्यवस्था कर दी गई थी ताकि आराम करते वे उन्हें पढ़ सकें ।

सभी लोग बैठकर ताश खेलने लगे। लड़की बार बार आती और डी. ओसे कुछ बातें करके चली जाती। किसी को कुछ समझ में नहीं आता। पूछने पर पता चला कि लड़की कभी कुछ चाहिए, कभी कुछ चाहिए इत्यादि पूछने के लिए आती है और उसके ना कहने पर फिर चली जाती है। बिना मांगे ही वह आइना और कधी रख गयी, और सभी लोग उसे देख कर हंस दिए। लड़की लाज से झूक गयी और दौड़कर वापस चली गयी। नेवार लडकिया कन्जरवेटिव होती है। वे सबाल-जवाब करना कम जानती है।

समय पर सबने खाना खाया। ११ बजे सोते समय लड़की ने डी. ओ. साहब का इलायची दी । डी. ओ. साहब ने इलायची लेने के साथ-साथ उसकी कलाई भी मरोड़ दी। जब डी. ओ. साहब को पता चला कि वह सड़की भी बगल के कमरे में ही सोई है और बीच में एक टाट की दीवार भर है तो वे रातभर करवटे बदलते रहे ।

सुबह उठकर रोज की तरह टहलने के लिए डाक्टर उठ गया। प्रकृति की उस अनुपम गोद में टहलकर एक नयी तरह की स्फूर्ति को लकेर अब वह बगल में वह रही धारा में नहाने के लिए चल पड़ा। यहां बाथरूम की कृतिमता और पनघट का पाबन्द दोनों नहीं होता। यहां पर औरत-मर्द साथ-साथ एक ही धारा में नहाते-धोते देखे जाते हैं। उतनी सुबह-सुबह उस धारा पर मर्दों का जमघट तो नहीं था पर औरतों और लड़कियों का हजुम था। कोई पानी भरकर वापस लौट रही थी, कोई पानी लेने अभी-अभी जा रही थी । कहीं दो-तीन युवतियां आपस में कुछ कहती और खिलखिलाकर हंस पड़ती थी । कोई सायों को अपने स्तनों तक चढ़ाकर एडियां रगड़ रही थी। चारों और प्रकृति अपने जवान स्तनों एवं नितम्बों

का पहाड़ों के रूप में फैलाई हुई थी। ये पहाड़िया नायिकाओं के स्तनों के नुकीलेपन से प्रतिस्पर्धा कर रही थी। नवजात सूरज की किरणे दूर हिमालय से टकरा कर वहां नहा रही युवतियों के शरीर को स्पर्श कर रही थी और दोनों ही कुन्दन की तरह चमकती हुई आंखों में शान्तिदायक ब्रह्मत्व की सृष्टि कर रही थी । सृष्टि की इस शीतलता को सूरज की किरणें समेट समेट कर आंखों के द्वार तक पहुंचाती थी। कैसा अनोखा, कैसा अनुपम, कैसी अमरता कैसा आनन्द ! डाक्टर झूम-झूम गया । ठिठक कर उसने एक बार चारों ओर नजर दौड़ावी और अनायास उस धारा की ओर खींचता चला गया ।

ज्योंही वह पनघट पर पहुंचा, एक युवती भर गगरी पानी लेकर मुड़ी और चलने को हुई। दोनों की नजरें पहली बार मिली । दोनों अवाक होकर एक दूसरे का मुँह देखते रह गये । मानों प्रकृति की उस मनोरम गोद में ब्रह्मानन्द की बौछार हो गयी और सब कुछ ज्यों के त्यों ठहर गये हों। हाथ पैर को काठ मार गया हो, समय भी एक पल के लिए रूक गया हो। दोनों की मुलाकात इस तरह, इस घड़ी, इस मनोहरता के साथ होगी, दोनों में से किसी को मालूम नहीं था ।

युवती के हाथ की पकड़ गागर पर से छूट गयी और गागर धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। उसके साथ ही दोनों उस गागर को उठाने के लिए झुके । एक तरफ लड़की और दूसरी तरफ डाक्टर उसके किनारे पकड़े हुए थे। दोनों की आंखें एक क्षण के लिए मिली और फिर गागर के पानी की ओर देखने लगी। गागर में बनी हुई प्रतिच्छवि को दोनों ने देखा । भीतर के पानी के हलचल से दोनों की छवियां एक दूसरे से टकरा टकरा कर एक दूसरे में विलीन हो रही थीं। मानों दोनों की आत्मा ही नहीं, दोनों के रंग-रूप भी एक दूसरे में समाहित हो गये हैं। अब बीच में कोई दीवार नहीं रह गयी हो ।

"रचना, यहां और तुम " डाक्टर ने कहा।

"पुनर्नवा, यही तो ओ ... सामने मेरा घर है ! यही तो है मेरा गाँव ।" लड़की ने जवाब दिया ।

उसी समय जोर के ठहाके गूंजे। चार-पांच युवतियां पनघट से ही यह देखकर हंसी थी । जैसे सपने टूट गये हो। रचना जल्दी से उस गगरी को उठाकर सर से निकल गयी । पुनर्नवा दूर तक उसे देखता रहा ।

दूर क्षितिज के पास सूरज की किरणें हिमालय से टकरा रही थी । वही किरण रचना के शरीर से टकरा कर पुनर्नवा की आंखों पर जादू कर रही थी। कैसा अप्रतिम कैसा मोहक ।

X X X

डिक, ड्रम, डिक डूम डिक डूम
हम तुम, हम तुम, हम तुम डिक डिम डिम,
डिक डिम डिम, डिक डिम डिम
हम तुम तुम, हम तुम तुम, तुम तुम हम
ता धिन ता धिन ता धिन
आउनु आउनु आउनु

शाम को कहीं पर मगर लोगों के नृत्य का आयोजन था । जब लोगों को पता चला तो परिवार नियोजन की पूरी टीम भी जाने को मचल उठी । तय हुआ कि डाक्टर भी जायेगा। डाक्टर को भी शाम के समय इन ग्रामीणों का मनोरंजन देखने को मन हुआ। दिन भर के काम से उसे भी थकावट हो आयी थी। खाना खाकर सभी लोग चले । पुनर्नवा और डी. ओ. के लिए एक-एक कुर्सी लगायी गयी थी । ग्रामीण नृत्य का दौर काफी देर तक चलता रहा। पुनर्नवा मगन होकर ग्रामीण अंचलों की इस संस्कृति का अवलोकन कर रहा था। मगर युवक-युवतियां नाच-नाच कर अपने-अपने भावों को प्रदर्शित कर रहे थे। इसी तरह नाचते-नाचते वे एक दूसरे का हाथ थाम लेते। उन लोगों की शादियां भी उसी तरह हो जाती हैं । नृत्य अपने उफान पर था । सभी लोग उसमें मगन थे । तभी पुनर्नवा की दृष्टि दूसरी तरफ एक युवती पर पड़ी। दूसरी तरफ से रचना एक टक उसी की ओर देख रहीं थी । नृत्य से उसको कोई मतलब नहीं था । उसका मन-मयूर तो इस नृत्य से अलग एक अनोखा नृत्य कर रहा था । नजर मिलते ही रचना का चेहरा तमतमा गया। खून का सारा बहाव उसके चेहरे की तरफ हो गया। वह आत्म - विभोर हो गयी । दोनों पता नहीं कब तक एक दूसरे को इसी तरह देखते रहे । आंखों ही आंखों में तृप्ति का यह दौर जब कम पड़ने लगा तब दोनों की व्याकुलता बढ़ने लगी । पुनर्नवा कुर्सी से उठकर एक ओर चल दिया। दूसरी तरफ से रचना भी उसी ओर अनायास खींची चली आयी । सभी लोग नृत्य में मगन थे । थोड़ी दूर

पर खेतों की सुनसान झाडियों में दोनों एक दूसरे से ऐसे आलिंगनबद्ध हो गये जैसे इतने दिनों की व्याकुलता सारे बन्धन तोड़कर एक दूसरे में समा जाना चाहती हो । जब वे अलग हुए, आंसुओं का सैलाब एक दूसरे की आंखों में तैर रहा था ।

"तुम, तुम रचना यहां पर मैं सोच भी नहीं पा रहा हूँ ।"

"यही तो मेरा घर है, यही तो है मेरा गाँव ।"

"पर मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं था, कैसा संयोग है यह ?"

"तुम्ह मालूम कैसे हो ? बुद्ध की तरह आते हो और गौ की तरह वापस चले जाते हो । तुम्हारे इस सीधेपन और बुद्धपन पर कोई मर मिटा होगा, यह तुम्हे मालूम भी है? तुमको इसकी क्या पहचान ? तुमने क्या कभी किसी से पूछा है ?"

"जहां पर मुझे कोई नहीं पहचानता, वहां पर मैं किसी की पहचान के बारेमें क्या पूछू ? चुपचाप आता हूँ और चला जाता हूँ ।"

" आत्मीयता हर जगह अपनी पहचान बना लेती है। नफरत की कोई दीवार इस पहचान में कुछ नहीं कर सकती। यही तो परमात्मा का अप्रतिम वरदान है । जहां पर तुम अपनी पहचान तलाशते हो और कही कुछ नहीं मिलता, वहीं पर तुम्हारी पहचान तुम्हें ढूंढती फिर रही होती थी। जिनलोगों की नफरत से तुम्हारी पहचान खोती नजर आ रही है, उन्हीं लोगों के बीच से मैं आगे आकर तुम्हें तुम्हारी पहचान प्रदान करने के लिए कब से बेचैन हूं तुम्हें क्या मालूम ?

"नहीं रचना, उस दिन जब सभी लोग मुझे मदेसिया कहकर घुड़क रहे थे और जब पुलिस आयी थी और वह भी बिना कुछ किये वापस लौट गयी थी तो मैं कितना निराश हुआ था ।"

"मैं जानती हूँ, और क्या तुझे मालूम है ? कि फोन करके पुलिस को बुलाने वाली लड़की भी मैं ही हूँ। जब सभी लड़किया हंस रही थी और चटखारे ले रहीं थी, मैंने ही ऐसा किया था। लेकिन जब पुलिस आकर बिना कुछ किये वापस चली गयी तो तुम्हें क्या मालूम अपने कमरे में जाकर मैं कितना उदास रही थी। पर अपनी यह उदासी कैसे तुम पर जाहिर करें, इसी का संयोग ढूंढ रही थी। वह संयोग आज मिला है। कितनी प्रतीक्षा के बाद । इस बीच मैंने कितना तड़पा है ।"

सुनसान रास्ते के पास खेतों के बीचोंबीच अंधेरे में रचना और पुनर्नवा दोनों अपनी अपनी पहचान ढूंढ रहे थे। इन दोनों की पहचान खत्म हो चुकी थी और दोनों एक दूसरे के अन्दर अपनी पहचान तलाशने की पहल कर चुके थे । उधर

सभी लोग नृत्य देखने में मगन थे। वहां से बत्तियों के मद्धिम प्रकाश में दोनो एक दूसरे को पहचानने की कोशिश कर रहे थे ।

"यह सब जानकर मुझे शीतलता हुई रचना कि इस देश में मेरी पहचान के लिए भी कोई व्याकुल है ।"

"पुनर्नवा, प्रेम के इस संसार में ही यह पहचान मुखरित होती है । वे लोग जो तुम्हारी पहचान समाप्त करना चाहते हैं, वे नहीं जानते कि शैतानीयत और जंगली कानून से अलग एक ऐसा भी संसार होता है जो उसका कोई कानून नहीं मानता। उनके जगलीपन की पूरी अवज्ञा का नाम ही प्रेम है जो रचना के हृदय में उतरे बिना नहीं रह सकता। पर तुमेह क्या मालूम कि इस पहचान के लिए में अपने ही समाज में कितनी तड़प रही हु ? तुझे क्या मालूम कि अपने ही समाज में मैं कैसे पहचानहीन हो गयी हूँ। तुम तो अपनों के लिए नारा बुलन्द करके आन्दोलन करके । आगे बढ़ते हो, पर मैं ? मैं किस समाज के प्रति आन्दोलन और विद्रोह करूँ ?

"क्यों, तुम्हारी पहचान कैसे खो गयी है? मैं मदेसिया हूँ साफ-साफ दिखलाई पड़ता है। पर तुम तो उसी कौम के साझीदार हो जो मेरी पहचान समाप्त करना चाहती है ।"

"ऊपर से देखकर किसी बात का निर्णय मत करो डाक्टर । तुम कल मेरे घर पर खाने आओगे । मैं तुम्हें निमन्त्रण देती हूँ। अपनी आखों से सब कुछ देख लेना । अभी मैं जो इस संयोग को बनाया है, उसे प्रेम की बाहों में बहने दो ।"

दोनों एक दूसरे से लिपट गये । दोनों की आंखों से एक दूसरे की पहचान का सैलाब निकल रहा था। कहां था वह वहसीपन, कहां था वह जंगल कानून कहाँ थी वह दीवार जो मदेसिया और पहाडियों के बीच में कितने दिनों से खींचने की फोशिश की जा रही है । ये दीवारे दोनों के आंसुओं की बाद में वह गये थे ।

"पर तूने यह संयोग बनाया है, यह कैसे !"

"हां मैंने ही बनाया है, इस संयोग को । तूने मेरी नजरों को देखा ही कब है ।"

"इन नजरों को मैंने कई बार देखा, पर इसमें इतने सैलाव तैरते रहे थे, यह नहीं दीख पाया था ।

"और उसी सैलाब का परिणाम है यह संयोग जब मुझे पता चला कि तुम यहाँ पर आ रहे हो, मैं चटपट ५ दिनों की छुट्टी लेकर यहां पर चली आयी । तुझे

नहीं मालूम, पर यहीं पर मेरा घर है। मैं अपने घर पर चली आयी और आज हमारे बीच का दीवार चकनाचूर हो गया ।

X X X

चारों ओर झार झखाड़ों से घिरा हुआ एक घर एक झोपड़ी, जिसको अन्दर ही अन्दर मचान की तरह बनाकर दो मंजिले झोपडी का रूप दे दिया गया था। बीच में काठ की दीवार से ऊपर से नीचे तक घेर दिया गया था । जिससे उस दो मंजिली झोपड़ी में चार कमरे हो गये थे। झोपड़ी के चारों तरफ कुछ फूल खिले हुए थे । आगे इंट के एक चबूतरे पर तुलसी का एक पौधा लहरा रहा था । झोपड़ी के आगे बरामदे की तरह बनायी गयी एक जगह लाल मिट्टी से बड़ी करीने से लिपी गयी थी । उस पर दो-तीन सुकुल इधर-उधर पड़े हुए थे। एक तरफ एक गाय और एक भैस अपनी दुर्बलतम स्थिति में घास खा रही थी । अन्दर से धुएं का गुब्बार उपर उढ रहा था जो समूचे घर में फैल गया था। बरामदे पर ७० वर्ष का एक बूढ़ा उस धुएं के सैलाब के बीच भी अपना हुक्का गुड़गुड़ा रहा था मानो बाहर का धुआँ उसके सत्तर वर्ष के शरीर की नशा के लिए कम पड़ रहा था। उस नशा को पूरी तरह पूरा करने के लिए वह तड़ातड़ हुक्के का धुआं खींचता चला जा रहा था जिसमें उसके सत्तर वर्ष के मन मैल मिलकर फिर बाहर आ जा रहे थे। कभी-कभी खांसी की अचानक दौरे से उसका मैल तेजी से बाहर निकल जाता और वह फिर अपनी प्रक्रिया में पूर्ववत लग जाता । कुछ देर सुस्ता.........

पुनर्नवा ज्योंही रचना के साथ उसके घर में दाखिल हुआ, वहां उसने इस घर के चारों तरफ अपनी नजर दौड़ायी थी। प्रकृति की इस अनुपम और मनोहर स्थान पर उसका निर्मल मन जैसे धुआं-धुआ हो गया। धुएं के उस सैलाव में एक नवगठित युवती को निकलते हुए उसने देखा जैसे कोई स्वप्न की परी किसी सपने से निकलकर वास्तविक संसार की ओर आ रही हो। बीस वर्ष की उमर, ऐसा लगा वह रचना की बहन ही होगी ।

“यह तुम्हारी बहन है क्या? तुम कितने भाई बहन हो?“ युवती को देखकर अब रचना से प्रश्न किया ।

“हम तेरह भाई-बहन है और वह है मेरी मां ।”

सुनकर वह एक कदम भी आगे न बढ़ा सका । इस हम उम्र लड़की को दुह माँ और फिर तेरह भाई बहन भी है । उसे अब बिना पूछे अपने प्रश्नो के उत्तर मिल रहे थे ।

हमारी माँ चार है। पहली, दूसरी और तीसरी से हम १२ भाई बह और चौथी मा से एक। पूरे तेरह हुए। पहली मां का देहान्त हो गया, जिसके चार भाई बहन, दूसरी और तीसरी मां ऊपर है जिनसे सिर्फ लड़की ही हुई है और अपने अपने घरों को जा चुकी हैं । पुनर्नवा को अब सबकुछ समझ में आने लगा था। अब वह उसके घर और उसकी कहानी में अधिक दिलचस्पी ले रहा था। अब अधिक उत्सुकता के साथ वह सब कुछ सुन रहा था ।

“और ये है हमारे पिता जी।“ बरामदे पर बैठे हुए बूढ़े से रचना ने उसका परिचय कराया। पुनर्नवा ने दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन किया। जवाब में धूँए का सैलाब पुनर्नवा के मुंह तक आ गया। उसके साथ ही वह बूढा खासने लगा। डाक्टर अब उस वुढ़े को पहचान कर चौका ।

लेकिन आज ही तो मैं इस बुढ़े आदमी का अपरेशन किया है। अपरेशन करते समय लोग कितना मजाक कर रहे थे । ७० वर्ष के बूढे को बच्चे पर बच्चे होते तक जाते हैं और आजतक इसने परिवार नियोजन नहीं कराया था। बहुत से लोगों के कहने पर भी उसने परिवार नियोजन नहीं कराया था पर अब चौथी पत्नी के आने के बाद उसने सबकी बात मान ली थी, क्योंकि इस चौथी पत्नी ने आते ही कुछ इतनी जल्दी गर्भवती हो गयी थी कि वह सोच नहीं पा रहा था। सोच रहा था कि इतनी जल्दी तो जवानी में भी उसकी पत्नी गर्भवती नहीं हुई थी । अतः उसने इस पार सभी लोगों का कहना मान लिया था ।

“पर इसका आपरेशन तो आज मैंने ही किया है, रचना। सभी लोग कितने मजाक कर रहे थे ।” अबतक मन ही मन सोच रहा डाक्टर ने अब प्रत्यक्ष रूप से रचना से कहा ।

“पर हमे तो कुछ भी नहीं मालूम ?” अब रचना चौंकी थी ।

की “अब तुम हमारी सारी व्यथा-कथा समझ सकते हो। यह किसी को मालूम नहीं हो आपरेशन कराया है। हमारी नवी मां जब सुनेगी तब आग बबूला हो जायेगी। उन्हें भी अपनी पहली सौतों की तरह ४-५ लड़के-लड़कियाँ चाहिए,

ऐसी बात नहीं, पर अब वह इतनी सावधानी कैसे बरतेगी ? पिता जी ने इसलिए ही चुपचाप इस काम को कराया है। अब कुछ दिनों के बाद ये उसे कुल्टा साबित करेंगे। ७० वर्ष का यह बूढ़ा हाथ अपने आलिंगन में बाँध कर उस नवगठित कसमसाती युवती से कहेगा कि तुम कुल्टा हो । फिर वह नवयुवती मैके जायेगी और सब कुछ पता होने के बाद एवं अपने मैके से भी ठुकराने के बाद कुछ अधिक सावधानी के साथ फिर वापस चली आयेगी या फिर बम्बई का रास्ता पकड़ेगी। लोग हमसे कहते हैं कि इसी तरह करीब १० लड़कियाँ मुम्बई जा चुकी है क्योंकि उसको इनके बूढ़े हाथों की कैद पसन्द तो थी पर इतनी सख्ती के साथ नहीं। सब इन बूढ़े हाथों के सहारे अपनी पूरी स्वतन्त्रता का भरपूर उपयोग करना चाहती थी पर गर्भवती होने के बाद इन बुढों को यकीन नहीं होता एवं रोज के झगडा एवं कलह से बहुत दूर चली जाती है ।

उसी समय चार युवक 'जय नेपाल' करते हुए आये और हुका गुडगुड़ाते हुए उस बूढे के पास जा कर बैठ गये। सबकी आंखों में एक वहशीपन था और मुंह पर शराब की दुर्गन्ध भरी हुई थी बैठते हुए उन युवकों में से कोई सिगरेट मांगने लगा, कोई अन्दर झांकने लगा, कोई रचना और पुनर्नया को घूरने लगा। और रचना वहां से टहलते हुए थोड़ी दूर बारी की ओर चले गये ताकि उनके बीच हुई बात चीत उन लोगों को सुनाई नहीं पड़े ।

"ये चारों युवक यहां इस गांव के जांबाज राजनीतिज्ञ है। एक आदमी उपप्रधान पंच, दूसरा नवयुवक संगठन का अध्यक्ष, तीसरा नेपाली कांग्रेस का कार्यकर्ता और चौथा इन सबका साथी। इन सबों ने मिलकर मेरे पिता जी को प्रधानपंच बना दिया है। यही है प्रधानपंच यहां के । सब अपनी राजनीति के सारे मोहरे मेरे ही घर पर बैठाते हैं। इसमें ये लोग इतने कुशल है कि इनकी राजनीति का लोहा मानना पड़ता है ।"

"राजनीति ?"

"हा, राजनीति, बाहर जब ताश के पत्ते और लोकल शराब की दौर खतम हो जाती है तो सभी लोग हमारे घर का रास्ता पकड़ते हैं। वे लोग पिता जीसे राजनीति सिखने आते हैं। जब बैठे-बैठे ये लोग मेरे पिता जी से बतियाने ऊपर से मेरी चौथी मां चाय लेकर सभी के सामने रखेंगी और इनकी राजनितिका पहला दाव कनखियां में उतरेगा । इसके बाद पेरी चौथी मां मेरे पिताजी

का विस्तर ठीक करने चली जायेगी। फिर अचानक मेरे पिता जी से बाते करते-कर ते इन चारों में से एक गायब हो जायेगा । तीन आदमी हमेशा बातों में मशगुल रहेंगे । दूसरा तब गायब होगा, जब पहला अपनी जगह पर आ जायेगा। इस तरह पिता जी की राजनीति को जब वे लोग छक कर पान कर लेंगे तब उनको आदर के साथ सलाम करके चले जायेंगे । कभीकभी उनलोगों को इनके पैरो पर भी पड़ते देखा है मैंने ।"

"रचना, जब यह सब तुमको मालूम है, तब फिर ऐसा क्यों होता है, क्यों होने दिया जाता है ऐसा ?"

"हाँ यही तो मैंने तुमसे कहा था कि तुम अपनी ही आंखों से आकर सब देख लो। ऊपर से देखकर किसी बात का निर्णय मत करो। तुम तो एक समाज का आक्रोश, दूसरे समाज के साथ आन्दोलन करके निकाल लोगे पर हम किस समाज हमारा विद्रोह करेंगे ? यही समाज है, यही है हमारी नियति, यही है इस समाज के बीच औरतों का स्थान, यही है हमारी औरत जिसको मन्दिरों में स्थापित करके हम पूजते हैं। पूजा करनेवाले इन मर्दो से कौन और कैसे विद्रोह कर सकता है ? डाक्टर चुपचाप इन मन्दिरों से भाग निकलने के अलावा कोई चारा नहीं है। यही आज के शासक और राजनीतिज्ञ है। जिनके पास फरियाद ले जायेंगे, वे लोग भी कभी कभी अपनी शौक पूरा करने के लिए दूरदूर से यहाँ पर आते हैं। बहुत से लोग तुम्हें उनी लोगों में से मानते होंगे ।"

"हमको भी "

"हा, तुमको भी । यहां पर इस तरह के दौरे पर आनेवाले लोग हमेशा अपने मन में एक इस इच्छा को भी लेकर आते हैं और उनकी वह इच्छा यहां पूरी होती है । जानते हो, तुम पर मेरी आशक्ति का एक कारण अपने समाज के प्रति एक बिद्रोह भी है जो कहीं न कहीं से मेरे मन और आत्मा में बस कर तुम्हारे घूंघटधारी समाज के प्रति मुझे श्रद्धानत कर दिया है ।"

"लेकिन तुमको क्या पता कि औरतों को वहाँ भी कितना घुटनभरा जीवन जीना पड़ता है ।"

"मैं जानती हूं कि वहां भी घूटन है और अगर हम अपने पश्चिमी चश्मे को उतार देतो वह घटन नहीं, एक अध्यात्म बन जाता है । हम जब किसी चीज की परिभाषा पश्चिमी भाषा में करने लगते है तब उसका तद्रूप रूप उभर कर आता

यह रोज-रोज का नियम हो गया था। रोज-रोज पुनर्नवा के हाथ अनायास ही जुड़ जाते थे। किसी प्रकार की विकृति, किसी प्रकार का कालापन, किसी प्रकार की बेइमानी उसके अन्दर न थी । उसी तरह उस षोडशी की अल्लड़ता में परमात्मा की सारी पवित्रता टपकती थी जिसे हम अमृत कहते हैं, क्या वह यही नहीं है ? फिर इसे कौन इतना विषाक्त और मैला कर जाता है ?

"नमस्ते"

रोज की तरह पुनर्नवा ने मुड़कर देखा पर आज बिजली की तरह कौंधती हुई वह सर से निकल नहीं गयी उतर कर पुनर्नवा के सामने खड़ी हो गयी। पुनर्नवा की आंखें शीतल हो गयी। उसने मुड़कर देखा, सूरज का शीतल अण्डाकार गोलक, क्षितिज पर ऊपर उठ रहा था । उसने मुड़कर देखा युवती के उन्नत उरोजों के अण्डाकार गोलक, उसके अंदर समा रहे थे। सूरज और सौन्दर्य के बीच सृष्टि का अनुपम पौरुष अपनी महत्तम शक्ति को प्राप्त कर रहा था। पौरुष का वह कमान जब छूटेगा तो कौन सा विजय वह संसार में हासिल नहीं कर सकता ।

"नमस्ते ।" डाक्टर के हाथ अनायास ही उठ गये। "कौन हैं आप ? रोज ऐसे निकलती हैं जैसे कोई बिजली निकलती है ।"

"देखते नहीं आप कि मैं एक लड़की हूँ।" वही हंसी, वही खिलखिलाहट ।

"वह तो मैं रोजरोज देखता हूँ ।"पुनर्नवा उसके इस जवाब से झेंप गया ।

"इतनी सी बात से संसार का कौन परिचित नहीं है! नाम क्या है, आपका ?"

"नाम तो एक न एक दिन जान ही जायेंगे। क्या आपको नहीं मालूम कि हमारी सोसाइटी में औरतों का नाम नहीं होता? हम पुरूषों के नाम से जानी जाती हैं । क्या पता कहीं हम आप ही के नाम से जानी जाउँ ?"

"मेरे नाम से ?" पुनर्नवा एक कदम पीछे हट गया। वैसी कम उम्र में ऐसी चालाकी और वाकपटुता की आशा नहीं थी उसे । उसने पूछा "काफी मेच्योर्ड बात करती हैं आप। किस क्लास में पढ़ती हैं आप ?"

"तो क्या अभी आप मुझे मेच्योर्ड नहीं मानते ? वैसे तो मैं बारहवीं क्लास में पढ़ती हूँ पर पढ़ाई थोड़ी देर से शुरू हुई थी। रोज सुबह इसी समय ट्यूसन पढ़ने जाती हूं। वे मुझे मैच्यूरिटी सिखाते हैं ।"

"क्या मतलब?" डाक्टर को लगा जैसे इस निर्दोष सौन्दर्य में अभी से विद्रूपता समा गयी है ।

"मतलब यह कि मेरे टीचर बड़े इन्टेलिजेन्ट और तेजतर्रार है। साथ ही बच्चेदार और मैच्योर्ड भी वर्षों से मैं उनके यहां पढ़ती हूं तो कैसे मेच्योर्ड नहीं होउंगी ?"

पुनर्नवा के रोज-रोज की कल्पनायें एक बारगी टूट गयी। सौंदर्य के जिस शक्ति पुञ्ज को वह रोज ग्रहण करता था वह अचानक बिखर गया। उसे पता चल कि पूरी तरह से खिले एवं गदराये हुए फूल भी किस तरह से सुगन्धविहीन होते हैं। फिर भी उसने उस निर्दोष लड़की के दिल को तोड़ना नहीं चाहा । उसने पूछा:-

"क्या आपको मुझ अपरिचित से ऐसी बातें करते कोई हिचक नहीं होती

"बातें करने में हमारी सोसाइटी में कोई हिचक नहीं होती डाक्टर । ऐसा हमने अपने घर में सीखा है और न अपने टीचर से ही ।"

"पर क्या तुझे यह पता नहीं चलता कि यह गलत है ?"

"अगर आपको कहीं से यह गलत लगता हो तो मुझे क्षमा करना । अगर मैंने कही से भी आपके दिल को दुखाया हो तो मुझे क्षमा करना । नमस्ते ।" कहती हुई वह साइकिल पर सवार होकर आगे निकल गयी ।

डाक्टर के हाथ फिर अनायास जुड़ गये । उसे लगा जैसे उस युवती में कही कोई खोट नहीं है । कहीं न कहीं से उसकी सोसाइटी ने उसकी निर्दोषिता में जहर घोल दिया है। कोई न कोई खोट, कोई न कोई चूक उसके ऊपर चिपका दिया गया है । इस सोसाइटी का कोई न कोई मैल उसके उजले दर्पण पर धूल बनकर जम गया है। ऐसा सौंदर्य, यह सौष्ठव उस धूल के पर्त के नीचे उसके अन्तिम उत्तर और नमस्ते में झलक गया था। पर उसकी खिलखिलाहट में उसके सौंदर्य का अमृत और उसकी सोसाइटी का जहर दोनों मिले हुए थे। पुनर्नवा को अफसोस हुआ कि अगर इस सोसाइटी को नहीं बदला गया तो उसके सौंदर्य की अमृत धार में उसके जहर की विषाक्तता सदा-सदा के लिए धुल जायेगी । फिर इस जहर से न वह बच सकेगी न उसकी सोसाइटी । दोनों एक दूसरे को खोते रहेंगे । वह सोसाइटी को खायेगी और सोसाइटी उसको खायेगी। पहले सोसाइटी उसको समाप्त करेगी फिर वह पूरी सोसाइटी को समाप्त कर देगी । न वह रहेगी न उसकी सोसाइटी तब सब कुछ राख हो जायेगा ।

उसके बाद पुनर्नवा ने अपना रास्ता बदल दिया। वह ऐसे किसी भी रास्ते पर नहीं जाना चाहता जहां इस सोसाइटी के निकृष्टतम् रूप का दर्शन हो । वह खुद

एक ऐसा स्वस्थ्य घर एवं परम्परा से आया था जिसकी स्वस्थता यहां कही दिखलाई नहीं पड़ती थी। पर वह रास्ता बदल कर भी कहा जा सकता था। उसके चारों और वही रास्ते थे, वही सोसाइटी थी, वही दृश्य था । अपने चारों ओर के इस सैलाब के अन्दर अपनी घुटन एवं संत्रास को मिटाने के लिए उसने केवल प्रकृति को चुन रखा था कि न जाने कहाँ से उसके जीवन में रचना का अनायास साहचर्य प्राप्त हुआ था । उसको आशा बंधी थी। उस लड़की की विशाल हृदयता को देखकर उसके अंदर इस समाज के प्रति घृणा और द्वेष का भाव धीरे-धीरे मिटने लगा था। जब हृदय प्रेम से भरने लगा था तब नफरत की दीवारें अपने-आप टूटने ली थीं। परन्तु र ाजनीति के खतरनाक शतरंज के जाल से उसका यह प्रेम निकालने में सहज नहीं था। अपने समाज के प्रति बोये गये एवं बोये जा रहे इस खतरनाक खेल के प्रति वह पूरी तरह सजग था। रचना का प्रेम इस राजनीति से जीत नहीं सकती। इस दुनियाँ में यह प्रेम भले ही जगह बना लेता हो, भीतरी संसार में यह भले ही अपना बहुत बड़ा विस्तार कर लेता हो पर बाहर के संसार में हमेशा अकबर की तलवार की जीत होती हैं। यहां सलीम भी तड़पकर रह जाता है, अनारकली भी दीवारों के बीच में सिसकिया भर रही होती है ।

बहुत दिनों तक उस बेनाम लड़की से पुनर्नवा की मुलाकात नहीं हुई ।

X X X

भरतपुर अस्पताल

बीस बीघों का एक विशाल अहाता जो आज से करीब बीस साल पहले राजा की विशेष अनुकम्पा से बनाया गया था। अधिराज्य भर में सबसे बड़ा अस्पताल का अहाता । जब जंगल की अंधाधुंध कटाई होने लगी थी तब बांघ और भालू यहां से भाग कर सौराहा और कसरा की ओर चले गये। फिर इस अहाते में एक अस्पताल का जन्म हुआ । देखने पर वह अस्पताल कम, पहाड़ियों की खेती का एक विशाल फार्म ज्यादा लगता है। चारों ओर हर मौसम की फसल अपनी पूरी उर्वरा शक्ति से लहरा रही होती है। उन खेतों में कही कहीं शाल और साखू के अकेले पेड़ जंगल विनाश की याद दिलाते नजर आते हैं। खेतों की फसल अस्पताल के सीविल सर्जन और छोटे-छोटे कर्मचारियों में बँटती है। जब से अस्पताल बना है तब से लेकर यहाँ के कर्मचारी कहीं पर नहीं गये । अगर उनको कभी यहाँ से बदला गया तो वे अडियल टटू की तरह अड़ जाते हैं । कहीं न कहीं से पैरवी लगाकर वे अपना

तबादला रुकवा लेते हैं। फिर वे किसी डॉक्टर को टेरते नहीं । अस्पताल की अच्छी फसल उनके अंदर एक ऐसे दर्प का निर्माण कर जाती है जो किसी क्षुद्र नदी में अचानक आ जाने पर होती है ।

इसी अहाते के अंदर एक कोने पर एक छोटा सा अस्पताल है - चारों ओर अमलतास के पेड़ों के बीच से घिरा हुआ विशाल साखु और शिशम के पेड़ो बीच से घिरा हुआ । विशाल अमलतास के पेड़ लगाये गये हैं । इधरउधर जहां-तहाँ काठ के पिजडे जैसे घर दिखलाई पड़ते हैं। इसी पिजडेनुमा घर में जिसे देखने पर लगता है किसी सर्कस का वह पिजड़ा है जिसमें बाघों और शेरों को देखा जाता है । अस्पताल के कर्मचारी रहते हैं जो डाक्टरों के साथ पूरी तरह अवज्ञा आन्दोलन के मूड में रहते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि इनका कोई रिंग मास्टर नहीं है, जिसके इशारे पर वे नाच सके ।

पूरा अहाता एक छोटे से दिवाल से घिरा हुआ है जो जगह जगह स्थानीय लोगों के द्वारा तोड़ दिये गये है जिन रास्ते से वे अपने मवेशियों को आसानी से अस्पताल के अंदर अहाते में चराते रहते है। इसके खिलाफ अगर कोई बोले तो उन स्थानीय लोगों की खुकरियाँ भी कभी कभी चमकने लगती है। पता नहीं वे लोग संसार में किन किन जगहों से ट्रेनिंग लेकर आते हैं। इनके डर से बोलना तो दूर, यहाँ से चुपचाप इज्जत बचाकर चले जाना भी दुश्वार है ।

इसी अहाते में सबसे पीछे की दीवार के पास एक छोटा सा घर है जिसमें डाक्टर पुनर्नवा का क्वार्टर है। सबसे पीछे का क्वार्टर भी उसे जानबूझ कर दिया गया है ताकि प्राइवेट प्रैक्टिस के सारे पैसे दूसरे डाक्टरों की झोली में जाय यहाँ के लोग यह पूछते आते हैं कि एक नं क्वार्टर कौन है ? उसके बाद २ नं., ३ नं आदि । डाक्टर पुनर्नवा के क्वार्टर का कोई नम्बर नहीं है। वह जिसमें रहता उसमें और परिवार रहते है। वह उसी के एक कोने में रहता है ।

पर जिस मकसद से उसे क्वार्टर दिया गया, जिसने भी दिया उसे मालुम नहिं किं पुनर्नवा खुद प्रैक्टिस की इस भीड़ से बचना चाहता है। अगर भूखमरी न हो मालूम नहीं तो वह प्रैक्टिस के पक्ष में नहीं है। वह प्रैक्टिस के इस अमूल्य समय को अध्ययन मनन और लेखन में लगाना चाहता है। चिकित्सा की पेशा उसके लिए दूसरे नम्बर पर आता है। वह चिकित्सक बनकर इस समाज की सेवा करने की बदौलत अपने समाज की पीड़ा एवं उत्पीड़न के लिए आवाज बुलंद करना चाहता है ।

इसी अहाते के पास से ही वह सड़क जाती है जो इस अहाते के बनने के भी पहले बना । स्थानीय लोगों के द्वारा तोड़े गये रास्ते से निकलकर वह उसी सड़क पर रोज टहलने निकल जाता है। यह सड़क इस देश में सबसे पहले बनी और सबसे पहले पीच भी हुई। इसी सड़क पर राजा अपने दरबार से निकल कर मोटर गाड़ियों पर टहलते थे । पर आज डाक्टर पुनर्नवा टहलता है, लोग टहलते है और उसके किनारे बसे हुए असंख्य बर्मीज जो आकर यहाँ बस गये हैं, उस सड़क की अवज्ञा भी करते हैं ।

अस्पताल के अंदर ५० सीटें हैं जहाँ कोई व्यवस्था नहीं, कोई विकास नहीं, कोई ध्यान नहीं। पहले यहां लोगों का आना कम था पर लोग इस जिले में इस तहर टीड्डी दल की तरह आना शुरू हुए कि अब इसके विशाल भार को वह अस्पताल वहन करने में अक्षम है। उन अव्यवस्थाओं के बीच ही उन डाक्टरों को पीसना पड़ता है जो यहाँ पर काम करते हैं। अपने से नीचे के कर्मचारियों का असहयोग, स्टाफ नर्सों की लापरवाही एवं प्रशासकों के दवाब के तले इन डाक्टरों को पिटाने का भय हमेशा सताता रहता है। इसलिए यहाँ पर जो आता है, जल्दी अपना बोरिया विस्तर लेकर जाना भी चाहता है। जब तक यहां के माहौल को समझा नहीं होता तब तक कुछ फुर्ती भी करता है पर जब सब कुछ समझ जाता है तब वह उसी तरह से भाग जाना चाहता है जिस तरह कभी वहाँ से बाघ एवं भालू भाग गये होंगे ।

अस्पताल के अंदर आइए। पचासों मरीज फर्स पर लिटे हुए हैं। एक तरफ मर्दाना वार्ड और दूसरी तरफ जनाना वार्ड है। एक कोठे में बच्चा वार्ड है । मर्दाना वार्ड में अधिकतर लोगों की टांगे इंटों से लटकी होती है क्योंकि देश में सबसे अधिक एक्सीडेन्ट का केस यहीं आता है। उसके बाद नम्बर आता है जनाना वार्ड का । वहां पर चिखती, चिल्लाती औरतों के नंगे शरीर को बाहर से भी देखा जा सकता है । वे वहाँ पर सृष्टि का निर्माण करती है। सृष्टि के इस निर्माण को कभीकभी स्थानीय लोग घूर घूर कर देखने जाते हैं । किसी पिअन अथवा डाक्टर के डॉटने पर वे पहले खिसक जाते है पर फिर डाक्टर के चले जाने की घात लगाये रहते हैं । सृष्टि की निर्माणकत्री इस सबसे बेखबर उस पीड़ा को झेलने में लगी होती है जो कभी उसे अपने पहले पति, कभी दूसरे पति और कभी तीसरे पति की अनुकम्पा से मिली होती है ।

ठीक उसी के पास वह दरगाह है जहाँ पर कभी किसी लावारिस निर्माणकत्री का दुर्दान्त अन्त हो जाता है तब उसे वही पर ले जाकर दफना दिया जाता है । सृष्टि की नवजात भेंट को जब यह दुनिया रास नहीं आती तब उसे भी वहीं पर दफन कर दिया जाता है। इसलिए उस सृष्टिघर के चारों ओर दिन में हमेशा कुत्तों एवं र ात में सियारों की जनसंख्या अधिक घूमती हुई नजर आती हैं । पता नहीं इसे स्वर्ग का द्वार कहा जाय या नर्क का द्वार, पर इसी द्वार से बहुत से लोग निकल कर इस सोसाइटी में सास लेते हुए जाते हैं। सांस लेते हुए, बास, गाँस और कपास की खोज में। बीस वर्षों से यहाँ पर यह खोज चल रही है जिसे खोजते खोजते कभी-कभी लोग उस घर में लाकर रखे जाते हैं, जिसे अंग्रेजी में मोरचुअरी कहते हैं। पता नहीं हिन्दी में इस घर को लक्ष्मिनिया घर क्यों कहा जाता है ? हिन्दी में तो नहीं पर डंकन अस्पताल में इसे यही कहा जाता है। यहीं से यह नाम इस इलाके में फैला होगा। अक्सर लक्ष्मी की खोज में भागते लोग जब अवसाद से भर जाते हैं, तब अपने गले में रस्सियों के साथ ही इस लक्ष्मीनिया घर में रख दिये जाते है। साक्षात लक्ष्मी के घर के आगे अंदर ! कभी-कभी भगवान विष्णु के इस देश में जब किसी जहर खायी हुई लक्ष्मी को लाकर इस घर में रखा जाता है तब मन यह सोचने के लिए मजबूर हो जाता है कि विष्णु के अमृत पर यह जहर क्यों प्रभावकारी हो जाता है ! भगवान विष्णु का वह अमृत बेअसर हो गया है या खुद भगवान विष्णु ? कभीकभी जब एक के अंदर के दूसरे जीव की भी खोज खबर लेनी पड़ती है तो डाक्टर किसी तरह यह सिद्ध नहीं कर पाते कि उसका निर्माता कौन है ।

मोरचुअरी यानी लक्ष्मिनिया घर इसी दरगाह के बीचों-बीच बना है। जीवन और मृत्यु, सृष्टि और विनाश, पालन और संहार की दूरी यहाँ पर इतनी ही है। ऐसा है यह अस्पताल ।

X X X

बहुत दिनों तक उस बेनाम लड़की से भेंट नहीं हुई। डाक्टर अपना रास्ता बदल दिया था, पर वह लड़की हमेशा उस रास्ते की तलाश में थी जिस पर डाक्टर चलता था। एक दिन अचानक

“नमस्ते“

एक लड़की की आवाज सुनकर अपनी कुर्सी पर अध्ययनशील पुनर्नवा ने गर्दन ऊपर उठाकर देखा। वह उस लड़की को देखकर थोडा सहमा पर फिर नार्मल हो कर अपने दोनों हाथ जोड़ दिये ।

"नमस्ते "

"वाह डाक्टर, आप तो ऐसे गायब हो गये जैसे ट्रान्सफर हो गया। पता लगाया तो पता चला आप यहां पर रहते हैं।"

"क्यों आजकल आप उधर घूमने नहीं आते ?"

"नहीं, मैने अपना रास्ता बदल दिया है।"

" पर रास्ता बदल कर भी आप उसी रास्ते पर चलते हैं जिस पर हम चलते हैं। वह रास्ता कहीं न कहीं एक साथ जुड़ा हुआ है।

"चलते तो हैं, पर बिल्कुल भिन्न दिशाओं में। एक सूर्योदय की ओर जाता है। और दूसरा सूयास्त की ओर"

"तुम्हें क्या पता डाक्टर कि न कभी सूर्योदय होता है न कभी सूर्यास्त। यह तो पृथ्वी की चाल है कि ऐसा आभास हो जाता है। डाक्टर अपनी चाल बदल दो फिर न तुझे सूर्योदय दिखलाई पड़ेगा न सूर्यास्त। सब बराबर सब एक, सब निष्काम, सव निष्कलुष, अपने अंदर की भावनाओं को इतना राख न बनाओ। अगर तुम राख बनाओगे राख मिलेगा, फूल बनाओगे फूल मिलेगा। क्यों बेमतलब की र ाख इकट्ठा करते हो ? क्यों कालिमा अपने ऊपर थोपते हो।

युवती की वाकपटुता और दर्शन के आगे पुनर्नवा परास्त सा होने लगा। इस फिलोसफी की नयी पीढ़ी को देख कर वह दंग रह गया।

"काश तुम्हारी यह भावना, यह विचार समाज में मुखरित हो पाता तो इतना हाहाकार देखने को न मिलता। क्या तुम्हें मालूम है कि इस हाहाकार के अंदर इन विचारों और भावनाओं को लेकर तुम खुद भी दबी हुई हो। तुम्हें तुम्हारे अस्तित्व के बारे में भी पता है ?"

"कौन सा अस्तित्व, कैसा हाहाकार ? हम तुम्हारे सामने हैं यही हमारा अस्तित्व है। यह समय, यह क्षण जो यहां भी हाहाकार लेकर आयेगा, हम अपने इसी जिन्दा अस्तित्व के सहारे बड़ी खुशी से भोगते हैं।"

"तुम्हारे अंदर की ज्वालामुखी को मैं देख रहा हूँ, युवती। इस पुष्ट शर ीर के टपकते सौष्ठव से मुझे यही आशा थी। पर वास्तविकता की धरातल से तुम कम टकरा पायी हो, ऐसा लगता है। जिस दर्शन से तुम अपने ऊपर परवान चढ़ा रही हो, मैं देख रहा हैं कि पानी का वह शान उस तलवार पर चढ़ने जा रहा है जिससे किसी की गर्दन कटती हैं।"

"ओफ्फोह, तुमसे जीत पाना मुश्किल है डॉक्टर जिस दिन वह तलवार तुम्हारी गर्दन काट देगी, उस दिन ही हमारी जीत होगी।"

" एक ठहाका लगाते हुए डॉक्टर ने उस युवती को अपने पास बैठने का इशारा किया।

"गर्दन अगर कटती है तो उसमें जीत किसी की नहीं होती।"

"जीत न सही हार ही सही बाबा मैं यह हार तुम्हारे ही गले में पहनाउंगी।"

" सटकर पास बैठती हुई वह बोली और एक शरारतपूर्ण आंखों से डाक्टर की आँखो में एक टक झांकती रही और फिर उठकर जाते हुए बोली "अभी जाती हूँ तुम्हारे लिए एक मरीज लाने।"

"तुम खुद क्या किसी मरीज से कम हो कि दूसरा लाओगी ? खैर मेरी फीस के रूपये भी लेते आना।"

"फीस तो मैं तुमसे लूंगी, डाक्टर।" कहती हुई वह दरवाजे से बाहर निकल गयी।" आखिर हम दोनों फीस वाले ही निकले तो फिर इतना लम्बा चौड़ा दर्शन का स्थान कहाँ ?

डाक्टर को लगा, इस युवती से टक्कर ले पाना उसके बस के बाहर की बात है। इक्कीसवी शताब्दी की इस सोसाइटी से वैदिक परम्पराओं का कहीं मेल नहीं खाता। सारे मूल्य सारे सन्दर्भ अब किस तरह से बदल चुके हैं। सोमरस के उसी प्याले में अब उर्वसी की चुस्कियों किस तरह ली जाती है उसका साक्षात दर्शन उस लड़की की बातों में मिलता है।

X X X

"नमस्ते" दूसरे दिन वह लड़की फिर हाजिर हो गयी। उसके साथ एक दूसरी युवती भी थी।

"लो डाक्टर, अपनी मरीजा को तुमको विश्वास नहीं था। वह मेरी बड़ी बहन है।"

डाक्टर ने देखा उसकी बहन सचमुच मरीज ही थी। दोनों पैरों में मामूली दाग मरीज को देखकर डाक्टर ने प्रेसक्रिप्सन उस लड़की के हाथ में थमाते हुए सात दिन के बाद एक बार फिर दिखला देने को कहा।

"इतनी जल्दी छुट्टी न दो डाक्टर मैं तो बहुत लम्बा प्रोग्राम बनाकर तेरे पास आयी हूँ। हमारी अपनी अपनी फिस लेनी देनी जो है। बहुत दिनों से मेरी

बहन बीमार है। काफी इलाज करा चुकी पर ठीक नहीं हुई। इस बार मैंने इससे कहा कि चलो हम अपने डाक्टर से दिखलाते है। मेरे मर्ज की कितनी दवा उनके पास है कि मत पूछो। ऐसे महान डाक्टर है कि इस दिशा शून्य संसार में भी दिशायें खोजते हैं । क्षितिज के इस दिशाविहीन गोलाकार में ही सारा संसार छुपा हुआ है डाक्टर ।" कहती हुई उसने अपने दोनों हाथों की तर्जनियों को अपने उरोजों पर रख कर क्रमशः घड़ी की एवं घड़ी को विपरीत दिशाओं में घुमाया ।

"चुप क्यों हो, इसे अपने अस्पताल में भर्ती कर दो। इस बार हम ठीक होकर ही जायेंगे। मेरी बहन का कहना है कि इस बार अस्पताल में रह कर ठीक होकर आना है ।"

"अस्पताल में और इतनी छोटी सी बीमारी में ? अरे मेम साहब ! यह अस्पताल है, इसमें बड़े-बड़े सिरियस मरीज ही भर्ती किये जाते हैं। यह अस्पताल है जो डाक्टरों के निर्णय पर चलता है, मरीजों की मजी से नहीं ।"

"अच्छा छोड़ो, अपना दर्शन, झूठी बातें भी थोड़ा कम ही करो तो ठीक लगेगा । चलो, मैं तुझे एकएक मरीज दिखलाती हूँ जो सिर्फ १५ रूपये फीस कर दे भर्ती किये गये है। अगर भर्ती होना है तो डाक्टर को १५ रूपये फीस दो और फिर भर्ती हो जाओ । डाक्टर का मजाल नहीं है कि भर्ती नहीं करे । हम फीसो पर नाचने वाले हैं डाक्टर । "

डाक्टर को लगा, इस युवती से टक्कर ले पाना उसके बस से बाहर की बात है । डाक्टर को मामूली एक्जीमा के उस रोगी को भर्ती करना ही नहीं पड़ा, बल्कि उठकर अस्पताल में जाना पड़ा और बजाप्ते सीट भी दिलवाना पड़ा । १० सीटों वाले उस जनाना वार्ड में उस एक्जीमा के मरीज से सटे हृदय रोग से पीड़ित एक बीस वर्षीया युवती को अक्सिजन चढ़ाया जा रहा था। अक्सिजन सिलिण्डर का प्राण वायु एक प्लाष्टिक के ट्युव से निकल कर उसके निष्पंद शरीर के अन्दर जा रहा था । अक्सिजन सिलिण्डर, प्राणों का सस्ता संस्करण । डाक्टर और युवती दोनों ने एक ही साथ उसके अक्सिजन सिलिण्डर को देखा और दोनो एक ही साथ अपनी नजर ऊपर उठाये। पहली बार दोनों की आंखों में एक समान किस्म की शून्यता एंव होठो पर एक समान किस्म की गम्भीरता नजर आयी युवती ने अपनी नजरे नीचे झुका ली और उस जमीन की ओर निहारने लगी जिस जमीन से वह निकली होगी और जिस जमीन में वह समा जायेगी । डाक्टर को लगा कि पहली बार

आकाश में उड़ने वाला परिन्दा उस मिट्टी की ओर मुखातिब हुआ है जिस मिट्टी के वह बना है । जब थकान इतनी ही गहन हो जाती है तब परिन्दा अपनी सही धर ातल को ढूंढता है । युवती की आंखें ऐसी ही किसी धरातल की तलाश कर रही थी ।

डाक्टर ने युवती के कंधे पर हाथ रखा और वापस मुड़ गया। पहली बार युवती ने उसे देखा । उसकी जीत, उसकी चाल, उसका मस्तानापन । वैदिक पर म्पराओं की उस महानता के आगे इस २१ वीं सदी की सोसाइटी बौनी होकर रह गयी थी । २१ वी शताब्दी के सारे मूल्य, सारे सन्दर्भ वैदिक युग में वापस लौट गये थे । न कोई शब्द न कोई भाषा, न कोई विचार, न कोई दर्शन, न कोई आवाज । न कोई छन्द, न कोई गीता, न कोई वाइबील, न कोई कृष्ण, न कोई क्राइष्ट । फिर भी दोनों के अंदर वही सत्य उतर रहा था ।

पुनर्नवा चला गया । बहुत देर तक वह लड़की उसी तरह कुछ सोचती र ही, अक्सिजन सिलिण्डर की ओर देखती रही। फिर दरवाजे से बाहर होकर उसके पीछेपीछे चल दी ।

पुनर्नवा वहाँ से चलकर स्टेशन में जा कर बैठ गया। वहीं पर रचना कार्यर त थी । पुनर्नवा का आज इमरजेन्सी ड्यूटी था, इसलिए आज दिन भर वह कहीं नहीं जा सकता। पूरे अस्पताल की जिम्मेवारी पुनर्नवा एवं रचना के कंधों पर थी । दोनों ने पूरे वार्ड में चक्कर लगा कर रोगियों को देखा । आगेआगे रचना रोगियों को बतलाती जाती तथा डाक्टर उनके लिए आवश्यक निर्देश लिखता जाता ताकि रात में अनावश्यक परेशान न होना पड़े। किसी को सैलाइन के बोतल की आवश्यकता थी तो किसी को अक्सिजन की, किसी को सक्सन की तो किसी को आर्टिफिसियल रेसपिरेशन की ।

मरीजों को देखते-देखते दोनों वहां पर पहुंचे जहाँ रचना की चौथी माँ एक बेड के समीप टूल लगाकर बैठी थी। रचना के ७० वर्षीय पिता की चौथी बीवी । जवानी पर परवान चढ़ते-चढ़ते पति मृत्यु शैय्या पर सो चुके थे। आज एक महीने से कौर पल्मोनेल की बीमारी से ग्रसित होकर वे अपनी मृत्यु की घडीयाँ गिन रहे थे। रचना ने उन्हें यहीं पर लाकर भर्ती करा दिया है ताकि उसकी पूरी सर्भिस उसके पिता को मिल सके। अपनी बहन समान माँ के साथ वह उनकी सेवा में पुरी हुई थी । बचने की कोई आशा नहीं थी । आज या कल का मेहमान, पर रचना के लेने में कोई कमी नहीं, कोई दुराव नहीं ।

"कैसे है ये?" डाक्टर ने उसके प्रधानपंच पिता की नाड़ियां थामते हुए पूछा "कह नहीं सकती। खाना-पीना कई दिनों से छोड़ चुके है ।"

"तो फिर ?"

"इस बार तो कोई आशा नहीं। हर साल तो इस बीमारी के लिए में भर्ती होते रहे हैं। पर इस बार..... । अब उम्र की ताकत गायब हो चुकी है ।

उधर चौथी मां टुकुर-टुकर इन दोनों के वार्तालाप को सुन रही थी । उसकी आंखों में कोई उतार-चढ़ाव नहीं था ।

उदासी का एक खामोश आलम उसके ऊपर जरूर नजर आता था जो अस्पताल में आकर किसी भी व्यक्ति के अंदर देखा जा सकता है। डाक्टर ने उसकी ओर देखा । ऐसा लगा कि इन दोनों में कभी कोई गहरा लगाव नहीं हुआ होगा । एक का उम्र ७० वर्ष दूसरी का २० वर्ष । नेपाल की यह जनता क्लियोपेड्रा और सीजर से भी बहुत आगे निकल चुकी है। इनके जीवन के इन ५० वर्षों के अन्तर ाल को इस ५० वर्षो की खाई को कैसे पाटा जा सकता है जो ५० वर्षों के अनवर त साहचर्य से ही प्राप्त होता है। डाक्टर ने देखा, एक की आंखों में मृत्य उत्तर रही थी, दूसरी की आंखों में जीवन खेलना चाहता था । एक की आंखें भावशून्य, दूसरी की आंखें अवसाद शून्य एक अपनी मौत के चंगुल में फंस चुका था, दूसरा इस चंगुल से बचकर निकल जाना चाहता था । पर मजबूरी थी, यह सोसाइटी है, वह टूल पर बैठी थी । यह समाज, यह सोसाइटी कुछ न कुछ उसकी अन्तस प्रकृति को भी जरूर बाँध लेती है जो लोक-लाज एवं कर्तव्य के रूप में उसे टूल पर बिठा जाती है ।

दोनों चक्कर लगाकर फिर स्टेशन में वापस आये । वह बेनाम लड़की उसी जगह खड़ी थी । शायद वह डाक्टर की ही प्रतीक्षा कर रही थी। उसकी आँखें भी बहुत कुछ कह रही थी। आज जैसा उद्वेलित वह कभी नहीं लगी। उस लड़की की नजर डाक्टर पर कम रचना पर ज्यादा पड़ी। उसे लगा कि रचना एक नर्स के अवाला कुछ और भी है । तीनों की नजरें एक दूसरे से मिली और लड़की पता नहीं बिना कुछ बोले वहां से वापस मुड़ गयी । रचना की उपस्थिति उसे रास नहीं आया था या उसके बाधक बन जाने पर वह अति उद्वेलित होकर मुड़ी थी । उसकी आखा का आन्दोलन बतला रहा था कि वह बहुत कुछ कहना चाहती है डाक्टर से जो यथास्थान, यथा समय की तलाश कर रही है ।

"उस लड़की को देख रही हो ? कुसी पर बैठते हुए डाक्टर ने रचना से पूछा कुछ दूर निकल जाने पर उस लड़की की पीठ दिखलाई पड़ रही थी ।

"क्यों ?"

"क्या इसमें और अपनी चौथी मां के बारे में कुछ बता सकती हो ?"

"बस इतना ही बता सकती हूँ कि इन दोनों का संरक्षक अपना दम तोड़ रहाँ है । क्या तुम्हें मेरे पिता की आँखों में जीवन का कोई चिन्ह दिखलाई पड़ रहा है ?

"जिस संरक्षक ने इनको इन चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है उस चौराहे पर जहाँ पर इनका पूरा जीवन भटकता रहेगा, उसे दम तोड़ना ही चाहिए । जिसने इन जवान पीढ़ीयों को गुमराह किया है, जिसने इन जवान जीवनों को बर्बाद किया है, उस प्रधान को जीने का कोई हक नहीं। अब इस व्यवस्था को मटियामेट हो जाना चाहिए ।

" पर हम डाक्टर और नर्स हैं पुन, कर्मचारी । हमें सिर्फ इसको बचाने के लिए ही बनाया गया है। यही हमारा कर्तव्य है, यही हमारा धर्म है । इसके सिवा हम कुछ नहीं कर सकते ।"

"काश हम कर सकते ! पर देखना एक दिन करना भी होगा ? ये लोग तभी तक जिन्दा हैं जबतक हमारी सेवायें इन्हें उपलब्ध है ।"

"नहीं पुन, अब इन्हें दुनियाँ का कोई अन्न जिंदा नहीं कर सकता । इनका जीवन उर्जा ही समाप्त हो गयी है या समाप्त कर दी गयी है ।

रचना ने देखा की इसी बहाने पुनर्नवा ने बड़ी चतुराई से राजनीतिक पहलू पर उतर आया था और अगर वह उसकी बातों का समर्थन नहीं करेगी तो वह सच्चाई से मुंह मोड़ना भी होगा ।

"यही तो एक आशा है कि हमारे कुछ किये बगैर ही ये उर्जाविहीन हो गये हैं । उर्जा संरक्षण का भी एक तरीका होता है, एक उपाय होता है। जब ये उन उपायों पर नहीं चलेंगे तो जायेंगे ही। पर अफसोस तो यह है कि जातेजाते तक ये लोग हमें नष्ट कर चुके होंगे । हमें अस्तित्वविहीन बना कर जायेंगे, तुम्हारी चौथी मां की तर ह । तब वह फिर अपने अस्तित्व की तलाश कहां करेगी ? तब किसी दूसरे से जुड़कर ही उसे अपना अस्तित्व बनाना पड़ेगा ।"

" तो चलो अभी से कोई उपाय खोजा जाय । "

"जब सारे उपाय चुक जाते हैं तो जानती हो क्या होता है ? एक ऐसी ही अन्तहीन हताशा का जन्म होता है। उपाय के लिए भी एक समय होता है । जब समय चूक जाता है तब कुछ बाकी नहीं रहता। अब वहां कुछ बाकी नहीं है । चना । कुछ बाकी नहीं है । "

जहाँ कुछ बाकी नहीं, वहां विवाद भी बाकी नहीं रह जाता ।" रचना अब इस विवाद में हिस्सा लेना नहीं चाहती थी। वह उठकर खड़ी हो गयी। डाक्टर भी समझ गया और उठकर खड़ा हो गया। फिर दोनों साथसाथ दरवाजे तक आये ।

"जहां विवाद खत्म हो जाता है, वहीं से एक चीज शुरू होती है ।" पुनर्नवा ने रचना का हाथ अपने हाथ में लेकर दवा दिया । रचना ने अपने हाथ को छुड़ाने की कोई कोशिश नहीं की। उसी तरह हाथों में हाथ थामे उसने पुनर्नवा की आंखों में झांकते हुए पूछा ।

"क्या ?"

"मौन ? और उसी मौन में एक चीज फलित होती है ।"

"वह क्या ?"

" प्रेम और उसी से एक चीज होती है ।"

"क्या होती है ।"

"रचना ।"

धत्, कहती हुई रचना ने डाक्टर के सर पर एक हल्की सी चपत जमा दी । फिर दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े। डाक्टर वहां से अपने कमरे में जाने लगा ।

"देखों जा कर सो जाना, कल भी ड्युटी, आज भी ड्युटी । आँखें अभी तक सूजी हुई हैं । देवदास की तरह पढ़ने मत बैठ जाना। इस तरह से लापरवाह नहीं होते अपने प्रति । जो भी आयेगा मैं यहां सम्भाल लूंगी ।

डाक्टर हाँ में हाँ मिलाते हुए अपने कमरे की ओर चल दिया । बाहर अहाते में वह बेनाम लड़की टहलती हुई दिखलाई पड़ी। पता नहीं क्यों उसने डाक्टर से एक शब्द भी नहीं बोला। डाक्टर ने उसे हाथ उठाकर हाय कहा तो वह एक बार हाय कह कर फिर टहलने लगी । वह काफी उद्वेलित लग रही थी । अभी डाक्टर अपने कमरे में दाखिल होकर गले का स्टेथो उतार कर रखा ही था कि वह बेनाम लड़की कमरे में बेधडक दाखिल हो गयी । एक क्षण डाक्टर आश्चर्य में पड़ गया और थोड़ी देर तक उसकी आंखों को पढ़ता रहा । दोनों एक दूसरे की आंखों में आंखें डाले हुए चुप थे । फिर दोनों की आंखें सामने की दीवार पर टंगी हुई राधा कृष्ण की तस्वीर पर पड़ी। उस लड़की की आँखों में डाक्टर ने शरारत का कोई लक्षण नहीं देखा। फिर डाक्टर ने ही कमरे के मौन को तोड़ा ।

"इतनी रात गये क्यों आयी हो यहां ?"

"तुझे अपना नाम देते ।" लड़की ने राधा कृष्ण की तस्वीर पर आंखे गड़ाती. बोली " तुमने कई बार मेरा नाम मुझसे पूछा है न, पर मैंने आज तक नहीं बताया ।

"क्या मतलब "

"क्या तुमने नहीं देखा कि यह जीवन कितना क्षणभंगुर है ?"

"हमने देखा या न देखा, पर तुमने बिल्कुल ही नहीं देखा ऐसा ही लगता है ।

"नहीं डाक्टर मैंने खूब देखा है इसलिए यहां पर आयी हूँ ।"

"खैर छोड़ो, तुमने इसे स्वीकार तो किया। जीवन क्षणभंगुर तो है, पर इसे हम तुम कर ही क्या सकते हैं ?"

"समर्पण ।"

"पर यहां पर तुझे कुछ नहीं मिलेगा । तुझे नहीं मालूम कि मेरा जीवन कितना अवसादों से भरा हुआ है । जिस अंधेरी रात में तुम यहां पर आयी हो वह उजाले की कोई किरण नहीं है। यहां पर तुम और अधिक अवसादमय हो जाओगी ।

"कुछ नहीं मिलेगा मत बोलो डाक्टर ! आज जीवन में पहली बार कुछ लेने नहीं देने आयी हूँ । जीन्दगी में बहुत कुछ लिया पर अब मैं देना चाहती हूँ । ले ले कर मेरा मन अवसादों से भर गया है। इसी अवसाद ने आज मुझे एक अज्ञात भय एवं हताशा में धकल दिया है, इसलिए मैं तेरे पास चली आयी ।"

"शायद तुम यहां भी जीवन की गलत परिभाषा बनाना चाहती हो । हमारे अवसाद और बढ़ेंगे इससे । "

"नहीं डाक्टर, आज जीवन की सही परिभाषा की रचना होगी। मैं तेरे इस अवसाद को प्रसाद में बदल दूंगी । हमारे आलिंगन में हमारे सारे अवसाद भाफ बनकर बाहर निकल जायेंगे। उस आलिंगन में ही इस क्षणभंगुर जीवन के कुछ अंशों को बांध सकेंगे हम ।"

"नहीं किल कुमारी उसमें हमारा यह जीवन भी भाफ बन कर उड़ जायेगा। तुमने भगवान बुद्ध और आम्रपाली के बारे में सुना है ?"

डाक्टर के मुख से अपने नाम का उच्चारण सुन कर किल को सुखद आश्चर्य हुआ । वह एक भावपूर्ण मुद्रा में आंखें मूंदकर डाक्टर के सीने से लग गयी । डाक्टर ने भी उसे अलग करने की कोशिश नहीं की ।

"नहीं पुन, तुम शायद भूलते हो। आम्रपाली भगवान बुद्ध के पास अपने पूरे गर्व के साथ गयी थी जिसे चूर होना था। लेकिन मैं समर्पण के साथ आयी हूँ ।"

डाक्टर किल के इस दर्शन को झूठला सकने में असमर्थ था। मन ही मन वह किल के विचारों का कायल हो चुका था। ऐसे विचार ऐसे भाव, ऐसी प्रकृति, इस सोसाइटी में पता नहीं कहाँकहाँ झटका खाती रही है, भटकती रहती है। यह सोसाइटी ऐसे विचारों की लाश पर अपनी हवस पूरी करती रही है। फिर भी डाक्टर ने कहा -

"काश किल । तुम भिक्षुणी आम्रपाली का समर्पण लेकर आयी होती ।"

"पुन, मैं भिक्षुणी आम्रपाली बनकर कपट वेष धारण करना नहीं चाहती ! औरत जिस मिट्टी की बनी होती है उसी मिट्टी को लेकर तेरे पास आयी हूँ । वही मिट्टी, वही धूल मैं तेरे चरणों में समर्पित कर सकती हूँ । पुन ! औरत सीता और सावित्री तो बन सकती है, द्रौपदी भी बनती है, राधा और मीरा तो उसका उत्कृष्टतम रूप है पर भिक्षुणी वह कभी नहीं बन सकती ।

"बस, बस, अब और कुछ नहीं । वस करो किल !"

किल ने अपने दर्शन को कितनी पराकाष्ठा, कितने ऊंचे शिखर पर पहुंचा दिया था । यह देखकर कि एक साधारण सोसाइटी गर्ल के अंदर ऐसी महानता पल रही है डाक्टर मन्त्रमुग्ध हो गया था । एक साधारण सोसाइटी गर्ल के अंदर ऐसी महानता पल रही है उसे नहीं मालूम था । उसके व्यक्तित्व से वह जितना ही आश्चर्यचकित हुआ था उतना ही पुलकित और रोमांचित होकर उसे अपने आलिंगन में भींच लिया । किल ने भी तब अपने आलिंगन को और कसना शुरू किया । आज डाक्टर का सारा बुद्धत्व किल के आलिंगन पाश में समा गया था, बंध गया था । किल वैशाली की नगरवधू, नहीं, इस सोसाइटी की सोसाइटी गर्ल थी ।

सामने दीवार पर राधा और कृष्ण की युगल तस्वीर नाच रही थी । बाहर कमरे में सन्नाटा छाया हुआ था । दोनों उस सैलाब में डूबते उतराते, डूबते उतर ाते समीप ही विस्तर पर गिर पड़े। थोड़ी ही देर में यह जीवन अपने भूत भविष्य और वर्तमान के साथ उनके आलिंगन पाश में बंध चुका था। कौन कहता है कि यह दुनिया क्षण भंगुर है ?

तभी कमरा धडाम से खुला और रचना हडबडाई हुई अंदर आई। अंदर आकर जैसे उस काठ मार गया । दरवाजा जो हर इमरजेन्सी के दिन डाक्टर हमेशा

खुला छोड़ देता था। किल के आने के बाद भी खुला ही छूट गया था । दोनों दूसरे के प्रेम में दरवाजा बन्द करना भूल गये थे । दरबाजा खुलते ही दोनों दूसरे से छिटक कर अलग हो गये। भीतर का बहता हुआ तारतम्य अचानक टुट गया । उसके अचानक ऐसे छिटकने से ठोकर खाकर समीपही टेबुल पर पड़ा छोटा सा दर्पण भी दूर छिटक कर आगे जाकर गिरा। गिरते ही वह दो खण्डों में टूट गया जिस पर एक क्षण के लिए रचना की नजर पड़ी । किंकर्तव्यविमूढ विस्तारित आँखों से उसने देखा । उसे समझ में नहीं आ रहा था कि कौन सी चीज के लिए वह रोये । उस चीज के लिए जिनकी खबर लेकर वह दौड़ती हुई डाक्टर को बुलाने आयी थी अथवा उस चीज के लिए जिसे इस कमरे के अंदर आका उसने देख लिया था। सामने के टूट हुए शीशे पर रोये या अस्पताल में टूटे हुए अपने पिता पर । उसने देखा सामने की दीवार पर पड़ी हुई राधा और कृष्ण के तस्वीर, उसने देखा कमर े में एक दूसरे से दूर छिटक कर खड़े हुए पुन और लड़की को जिसके बारे में अस्पताल में ही डाक्टर ने उससे पूछा था। कमरे में अभी भी सन्नाटा छाया हुआ था । किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था। आंखों में आँसुओं का एक समूह उमड़ गया ।

" तूने ऐसा क्यों किया पुन ?" डबडबाई हुई आँखों से रचना ने पूछा ।" " तूने देखा नहीं कि यह जवानी कितनी क्षणभंगुर है ?

" और क्या तूने भगवान बुद्ध और आम्रपाली के बारे में सुना है ?"

अब रचना ने किल की ओर मुखातिब होकर कहा । किल जो अभी तक नजर नीचे झुकाई हुई थी आंखें उठाकर एक बार रचना और फिर पुनर्नवा को देखा । उसे ऐसा लगा कि वे लोग परिचित ही नहीं एक दूसरे से घनिष्ठ भी हैं। पुनर्नवा के मौन को वह गौर से देख रही थी ।

"और क्या तुम जानती हो कि यह जवानी कितनी क्षणभंगुर है ?"

रचना ने फिर कहा "इसी जीवन में इसी देह में जब यह जवानी नहीं र हती जब यह सौंदर्य नहीं रहता तब सारी दुनिया उसे घूंट-घूंट कर मरने के लिए छोड़ देती है ?"

"क्या तुम जानती हो कि समर्पण किसे कहते हैं ?" "किसी दूसरे का अधिकार छीन कर तुम कौन सी जींदगी जीना चाहती हो लड़की ?"

अब तक बुत बनी हुई किल फफक पड़ी । अधिकार की बातें सुनकर उसकी आंखों में आंसू उमड़ पड़े । उसने सिर को ऊपर उठाकर रचना की ओर बड़ी ही दयनीय दृष्टि से देखा मानो वह उससे कह रही हो कि मुझे इतना नीच न समझो बहन !

"देख लिया, मैंने पुन देख लिया कि लोग सोमरस के प्यालों में उर्वशी की चुस्कियां कैसे लिया करते हैं ।"

रचना किल की डबड़बाई हुई आंखों की अवहेलना करके अब पुनर्नवा की ओर मुखातिब हुई थी। किल का अब कलेजा बाहर निकलने को हो रहा था। इससे अधिक वह बर्दास्त नहीं कर सकती । हिचकियां लेती हुई वह नहीं ऽ ऽ ऽ की आवाज के साथ दरवाजे की ओर भाग पड़ी । दरवाजा खुला हुआ था । उसी तरह भागती हुई, रोती हुई, नहीं नहीं नहीं की आवाजों को पीछे छोड़ती हुई वह दरवाजे से बाहर हो गयी । और फिर गिर पड़ी। फिर उठकर धीरेधीरे अंधेरों में विलीन हो गयी । इतनी हारी हुई, इतनी निढाल उसने आजतक अपने को महसूस नहीं किया था । रचना और पुनर्नवा दोनों उसे अंधेरे में विलीन होते हुए देखते रहे। किसी ने न उसे गिरते समय उठाया, न अंधेरे में विलीन होने से रोका ।

अब एक बार फिर रचना ने पुनर्नवा की ओर मुड़कर देखा और कहा-

"मैं इसलिए दौड़ती आयी थी कि वे मेरे पिता थे। पर मैं भूल गयी थी कि तुम एक डाक्टर हो और इस तरह तुम्हारे कमरे में दाखिल नहीं होना चाहिए था । तुम लोग भी "काल" लिखकर बुलाये जाते हो, उसी तरह से जिस तरह वह लड़की ।"

रचना अब वहाँ एक क्षण भी न रूक कर सर्रर से अस्पताल की ओर निकल गयी । पुनर्नवा छलनी होकर कमरे में आया । राधा-कृष्ण की तस्वीर उसी तरह निश्चल, ज्यों की त्यों निश्छल दीवार पर टंगी हुई थी ।

कुछ देर के बाद एक पिउन "कॉल" के साथ आया जिसे रचना ने लिखा था ।

"डियर डाक्टर ऑन कॉल,

दिस इज फोर योर इनफोर्मेसन दैट दी पेसेन्ट आफ वेड नं. २०, हू वाज माई फादर, गैस्पिंग ए फीउ मोमेन्ट बिफोर, इज एक्सपायर्ड । बुड यू प्लीज कम टू सर्टिफाई द डेड बडी ?

टाइम २ ए.एम.

थैंक यू

स्टाफ ऑन ड्यूटी

पढ़कर डॉक्टर के मन में कोई हलचल नहीं हुआ । जिस हादसे से वह गुजर चुका था, वह इस मौत से कम नहीं था । एक जिंदा मौत का हादसा एक मुर्दा मौत के हादसे से कम नहीं होता है। वह चुपचाप उठा और जाकर भारी मन से उस पिता के भर्ती पेपर पर मौत का सर्टिफिकेट लिख दिया। रचना वहीं थी । किसी ने किसी से एक शब्द भी नहीं बोला ।

दूसरे दिन डाक्टर जब अस्पताल में दाखिल हुआ वहां किल और रचना दोनों में से कोई नहीं थी । रचना अपने पिता का शव लेकर चली गयी थी । किल अपनी बहन को लेकर वापस चली गयी थी । किल जो बहुत कुछ लेने और देने यहाँ पर आयी थी । उस बेड से समीप ही अक्सिजन पर रही हृदय रोग की वह लड़की अब ठंडी हो चुकी थी ।

●

४

पंचायती व्यवस्था जिन्दाबाद
हाम्रो राजा हाम्रो देश - प्राण भन्दा प्यारो छ ?
श्री ५ महेन्द्र अमर रहून ।

पुस १ गते

हर साल अपने कस्बेनुमा शहर में वह इन नारों को सुनता आया है । हर साल एक और दुःख और पीड़ा उसके जीवन में घुलता आया है । पहले जब वह स्कूल में पढ़ता था, तब खुद इन नारों को दोहराते थकता नहीं था । तब ये नारे उसके लिए बाल-सुलभ मनोरंजन और कैशोर्य के उत्साह के सिवा और कुछ नहीं था । तब उसे क्या पता था कि इन नारों के द्वारा उसके अंदर कैसा जहर भरा जा रहा था । बच्चों की मानसिकता में इन सभी नारों को घोलघोल कर भर देना और उसकी अन्तसचेतना की गहराई में गहरे उतार देना, एक भयंकर पडयन्त्र है, खुद बड़ा होकर उसने पढ़ा था । पर उसने एकएक कर जब बड़े लोगों की नीचता देखी तब उसकी अन्तसचेतना में ये नारे धंसी नहीं रह गयी । जब वह बड़ा हुआ और देखा कि गाँव के चौकी के थाने में किस तरह उसके गाँव की जवान लड़की मंगली को बलात्कार करके मार दिया गया और उसके प्रेमी पर इल्जाम लगाकर जेल भेज दिया गया ? जब उसने देखा कि कैसे एक रूपया कम्पनी अपनी जेब में रखने के जुर्म में पुलिस ने भीखारी चाचा को ५ दिनों तक हवालात में बन्द रखा, जब उसने देखा कि किस तरह अपने गाँव के विनोद के मुँह से नेपाली कांग्रेस का नाम सुनकर ही पुलिस ने उसे दबोच लिया और कईकई दिनों तक उसका पीछा करता रहा कि कहीं नेपाली कांग्रेस के लोगों से

उसका सम्पर्क तो नहीं है । जब उसने देखा कि कैसे रक्सौल के बीच बाजार में दिन दहाड़े वीरगंज के अमात्य को गोली से मार कर फिर बोर्डर पार हो गया, तब इन नारों के प्रति वह वितृष्णा से भर गया ।

तब से वह खुद उसी विनोद की ओर झुका था और उसी समय से विनोद उसे इस अत्याचार और जुल्म के बारे में बताने लगा था। उसके अंदर भरे गये इन नारों को विनोद ने उस विधि से निकाला था जिसे आजकल साइकोएनालिसिस कहते हैं । बच्चों के अवचेतन में इन नारों का पागलपन भरनेवाले लोगों को यह नहीं मालूम कि हादसे का एक झटका ही इस पागलपन को उघाड़ने के लिए काफी है । डाक्टर के अवचेतन से यह पागलपन मंगली की मृत्यु के बाद ही उघड़ गया था ।

पर आज पुनर्नवा इस जुलूस, इस हुजूम में कुछ और ही खोज रहा है । खोया खोया, उदास किसी और चीज की तलाश में वह व्यग्र है। वह चीज उसे कहीं दिखलाई नहीं पड़ रही है । जहां उसे जाना है, वहां भी जाने का मन उसका नहीं करता, पर वहां वह जायेगा, जाना ही होगा। इसके पहले वह तमाशे को देख लेना चाहता है । अपने उदास पर गहरी निगाहों से वह जुलूस को देख रहा है । अपने कस्बेनुमा शहर की सरजमीन पर काले टोपियों के हजूम में उसे उन गोरे लोगों के काले दिल के अलावा कुछ नहीं दिखलाई पड़ रहा था। कहीं पर उसे रचना और किल का प्रेम दिखलाई नहीं पड़ता था ।

उस समूचे जुलूस में नफरत की बाढ़ उमड़ती हुई उसके पास आ रही थी । चौराहे पर खड़ा वह अपने उस जमाने को देख लेना चाहता था, भर आंखें । शताब्दियों के अपने इस जमाने को वह एक बार अच्छी तरह देख लेना चाहता था । एक बार वह अपने चारों तरफ की दिशाओं में नजर दौडाया। चारों ओर घना कुहरा छाया हुआ था । पुष के इस कुहरे में ही यह दिन आता है, जिसमें हमारे अपने भाई बन्धु लोग उस कुहरे में ही मनोरंजन करते हैं । एक तरफ उसने आगे देखा, सिनेमा का एक बहुत बड़ा पोष्टर लगा हुआ था। उसके बगल में ही दो बड़े बड़े साइनबोर्ड टंगे हुए थे । एक में लिखा था,

"मदरसा अरेविया"
दूसरे पर लिखा था-
"मदरसा हुसैनिया"

पुनर्नवा ने बड़े गौर से इन दोनों अरैविया और हुसैनिया को देखता रहा। उसके एकएक शब्द में वह पता नहीं क्या खोजता रहा। एक ओर से फर्मुल्लाह आते हुए नजर आया। दौरा और सुरवाल लगाये अरेविया और हुसैनिया के बड़े- बड़े अक्षरों के सामने से गुजरते हुए वह उस हुजूम में शामिल हो गया। वह सबसे आगे नारा लगाने लगा :-

हाम्रो राजा हाम्रो देश प्राण भन्दा प्यारो छ।

विदेशी दलाल - मुर्दावाद

संविधान दिवस जिन्दावाद

विदेशी दलाल - मुर्दावाद, विदेशी दलाल मुर्दावाद, विदेशी दलाल मुर्दावाद- अब केवल फर्मुल्लाह के नारे ही उसे सुनाई पड़ने लगे। सभी नारे जैसे पर्दे की ओट में छुप गये और सिर्फ यही उसके कानों में घंटों की तरह बजने लगे। अरैविया और हुसैनिया के बड़े-बड़े अक्षरों की ओर एक टक देखते हुए पुनर्नवा इस नारे को सुनता रहा। आँखें अरेविया और हुसैनिया पर गड़ी थी, कान नारों पर लगा था।

हाम्रो राजा................

विदेशी दलाल

जुलूस और अधिक नजदीक आता गया। सबसे पहले नन्हेंनन्हें उन बच्चों का जुलूस जो बाद में चलकर यहां का इतिहास बनायेंगे। फिर पीछे उनसे बड़े बच्चे, उनसे बड़े बच्चे, हाई स्कूल के बच्चे। कालेज के बच्चे उसमें नहीं हैं। वे इतिहास बनाने में लग चुके हैं। उसके पीछे विशिष्ट, फिर अतिविशिष्ट और सबसे बाद में कायालयों के कर्मचारी, नौकर ! हाथी पर कसे हुए हौदे पर सबसे आगे राजा की बड़ी सी तस्वीर सामने आती गयी, आती गयी और पुनर्नवा न जाने कहा खो गया। अब उसकी आँखों के आगे पता नहीं इतिहास के कितने ही चित्र उभरने लगे, कितने ही चित्र बनने बिगड़ने लगे। ज्योज्यों जुलूस नजदीक आता जाता था, इतिहास पीछे छूटता जाता था।

एक बार नजर राजा की बड़ी सी तस्वीर पर पड़ी।

उसने देखा एक आदमी कुछ लोगों की गर्दन, जुते उतार कर सलाम न करने के जुर्म में काट रहा है। उसने देखा वही आदमी कितने ही लोगों की नाक कटवाने की आज्ञा दे रहा है और लोग हाहाकार करके भाग रहे हैं। उसने देखा वही आदमी

अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए एक जगह पर अपना गोत्र तक बदल रहा है. एक बार फिर पुनर्नया की दृष्टि अरेविया और हुसैनिया के बड़े-बड़े अक्षरों पर पडी और फिर वह कहीं पर खो गया। उसने देखा कुछ दढियल तुर्कों को किसी देश पर आक्रमण करते हुए। उनलोगों के डर से सहमी भागती हुई एक युवती को उसने देखा। फिर उस लड़की को अपने लोगों के बीच ही उसी दढियल लोगों को रिझाते हुए देखा पर उसके बाद उसने उनलोगों का खिताब बदलते हुए देखा, शाह बनते हुए देखा। पुनर्नवा की नजर फिर अरेबिया और हुसैनिया के बड़े-बड़े अक्षरों पर पड़ी। इसी दौरान उसे फिर फर्मुल्लाह का यह शब्द सुनाई पड़ा :-

विदेशी दलाल मुर्दावाद। एक बार पुनर्नवा के होठों पर मुस्कान उभरा और फिर कहीं खो गया। उसने देखा एक सन्यासी सा आदमी बनारस के वेश्यागृह में घूम रहा है। एक रानी सी लग रही औरत को एक काजी से लग रहे आदमी के साथ हमबिस्तर होते हुए उसने देखा। जब उस आदमी को किसी ने गोली मार कर हत्या कर दी तो रानी के आक्रोश को देखकर पुनर्नवा सहम सा गया। प्रेम में पागल नागिन की फुंफकार फिर एक मासूम बाप-बेटे कटते हुए दीखे गोसाई कुण्ड के हेल्मु में उसने एक साध्वी को देखा।

फिर उसके सामने वह दृश्य आया। एक आदमी ने जेल में ही आत्महत्या कर ली। कुछ लोग घोड़े पर उसकी लाश को बोटी-बोटी करके घमा रहे हैं। उस आदमी की पत्नी को नंगा कर दिया गया है । वह निर्वस्त्र जनता के बीच में उपस्थित है। पुनर्नवा इसे देखकर विचलित हो गया। सभी लोग उसके नंगे शरीर को घूर घूर कर देख रहे हैं पर उसकी लाज रखने को, उसकी लाज ढकने को कुछ नहीं करते। फिर वह नंगी औरत अट्टहास करती हुई नाचने लगती है, पागलों की तरह दौड़ने लगती है, फिर खड़ी होकर आंसुओं की धारा बहाने लगती है, होठों से कुछ बुदबुदाती है। पुनर्नवा को कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा है पर ऐसा लगता है वह कुछ आप दे रही है। सभी लोग सहम कर पीछे हटते हैं, पर घोड़े पर घसीटते हुए. बोटियों के साथ वे लोग एक ही बार उस औरत के नंगे शरीर पर धावा बोल देते है। कोई उसके होठों से, कोई उसके उरोजों से कोई उसके बदन के और अंगों से खेलने लगते हैं। औरत थक कर चूर हो जाती है। उसके शरीर में दम नहीं है। वह निढाल हो जाती है, वह गिर जाती है। अपने नंगे शरीर के साथ, निढाल, बेदम, कहीं से कुछ ढका हुआ नहीं मानों जंगल विनाश के बाद नंगी नेपाल माता हो।

घुडसबार एक ही बार उस औरत की सबसे कीमती चीज पर ललचायी नजरों से देखते हुए दौड़ते हैं। कुछ देर के बाद वह औरत दम तोड़ चुकी होती है। सभी लोग सहमे हुए घरों में दुबके हुए हैं। घुड़सवार अट्टहास करते हुए वापस मुड़ जाते है। ऊपर आकाश से एक गिद्ध उतरता है और उस औरत के मुर्दे शरीर पर बैठ जाता है। फिर गिद्धों का तांता लग जाता है।

पंचायती व्यवस्था जिंदाबाद

हाम्रो राजा हाम्रो देश

इस कर्कश आवाज के साथ ही वह फिर एक क्षण को जैसे निंद से जागता है। सामने जुलूस नजदीक आता चला आ रहा है सबके सिर पर काली काली टोपियां गीध के डैने जैसे लगते हैं। सबसे आगे हरे-हरे सूट पहने लोग घोड़े पर सवार हैं। हसवार गिद्ध बारी बारी से पुनर्नवा के मस्तिष्क में चित्र बनने बिगड़ने लगते है।

विदेशी दलाल मुर्दावाद फर्मुल्लाह का स्वर सुनाई पड़ता है। हाथी पर सवार राजा की एक आदम कद तस्वीर की बगल में वह बैठा है। एक बार फर्मुल्लाह हाथी से उतरा और जोर से चिल्लाया

संविधान दिवस जिंदाबाद

पुनर्नवा सामने टंगे "मदरसा अरेविया और मदरसा हुसैनिया के बड़े-बड़े अक्षरों की ओर निर्निमेष निहार रहा है। कभी वह आदम कद तस्वीर की और कभी उन अक्षरों की ओर देखता है। आदम कद तस्वीर जिसका कद, जिसका माप आदम हो उसे आदम कद कहते है।

फिर वह काली काली टोपियों को निहारने लगा। उनमें से कुछ को पहचानने की कोशिश करने लगा। ज्यों-ज्यों जुलूस नजदीक आने लगा उनमें से कुछ तस्वीर पुनर्नवा की आंखों की पकड़ में आने लगी।

एक टोपी के ऊपर कुछ हरकत हुई, जैसे गिद्ध डैने पसार रहा हो।

लम्बी नाक पर चश्मा लगाये वे जिले के मत्रीं थे। अपने इसी चश्मे से वे ४० का परिचय देते हुए वे यहां तक पहुंचे हैं। अपनी राहों को लम्बे-लम्बे डगों से भर ते हुए अपनी मंजील पर पहुंच गये हैं। इसके बाद वे कहां जाये इनको समझ में नहीं

आती। आज से १० वर्ष पहले जब वे अपने चौक के बीचों बीच भरतबाबू की अकाल मृत्यु के बाद भरतबाबू की मूर्ति का अनावरण होते देखा था तो उनकी ख्वाहिस यही थी कि लोग उनकी भी मूर्ति इसी तरह से लगाकर याद करें, पर इतनी जल्दी नहीं। वे भरतबाबू के चेले थे। लोग भरतबाबू को याद कर लिए कर लिए पर इनको याद नहीं करेंगे।

उनके बगल में खड़े थे देवधारी बाबू। वे जिला के मंत्री हैं। दोनों भूतपूर्व और अभूतपूर्व मंत्री आपस में बतियाते हुए नजर आ रहे हैं। नारों के साथ नारे लगाने की मेहनत उनको नहीं करनी पड़ती। कभी किसी की दांत बिजली की तरह चमक जाती है तो कभी कोई चश्में उतारकर पोंछते नजर आते हैं। कच्ची सड़क पर उड़ती हुई धूल के गुब्बार से उनके चश्मे भर जाते हैं। वे चश्में उतारते हैं, पर अपनी आँखें नहीं उतारते। यह धूल, यह गुब्बार जो इस दिन के साथ ही उड़ा इस देश के सभी लोगों की आँखों में भर गया है। पुनर्नवा फिर कहीं दूर खो गया :-

सामने एक बहुत बड़े टीले पर एक मन्दिर चमक रहा है। घने जंगलों के बीच जगमग करता हुआ एक लम्बा चौडा दरबार चमक रहा है। दिशा से कुछ सैनिक आते हुए नजर आये। लगता था कोई सिकन्दर अपनी सेनाओं के साथ धावा बोलते, रौंदते आगे बढ़ता आ रहा है। लम्बे चौड़े दरबार में कुछ मन्त्रणा हुई, लोगों को सावधान कर दिया गया और सभी लोग आत्मरक्षा की मुद्रा में खड़े हो गये। इसमें पुलिस और जवान ही नहीं सभी लोग, औरत बच्चे भी, मानों सभी लोग मिलकर अपनी इस छोटी सी नगरी की रक्षा करना चाहते हो। लुटेरे तेज रफ्तार से आते हैं और इस नगर पर कहर ढा जाते हैं। खून की नदियाँ वह जाती हैं। और त और बच्चे अपनी आत्मरक्षा में घने जंगलों की ओर भागते हुए नजर आते हैं। दरबार के अधिकांश लोग कत्ल कर दिये जाते हैं। बहुत कम लोग भाग पाते हैं। चारों ओर चित्कार ! हाहाकार ! देखते ही देखते उस जगमग करती हुई नगरी में श्मशान की खामोशी और अंधकार छा गया। फिर कुछ लोग उस टीले पर बने मन्दिर पर जाते हैं, पुजारी को काटकर, माँ को लूट कर चलते बनते हैं। अपने कटे हुए सिर को दोनों आंखों से पुजारी एक टक माँ की ओर निहार रहा है। न कोई हरकत, न कोई अवरोध। किसी ने उस को फुटबाल की तरह मारा और वह दूर जाकर औंधे मुंह गिर पड़ा। उसकी आंखों में मिट्टी और धूल भर गयी और इस तरह वह अपनी मां को देखने में असमर्थ हो गया। अपनी मुर्दा आँखों से भी

उसे अपनी मां को देखने नहीं दिया गया। लुटेरे सब कुछ लूटने के बाद टप-टप घोड़े दौड़ाते हुए जंगलों में विलीन हो गये ।"

पुनर्नवा की आंखों में आंसू भर आये। एक बार वह चश्मा लगाये हुए एवं उनसे बात करते हुए देवधारी बाबू को देखा और घृणा से मुंह फेर लिया । लूटेरों के सहायक और सहयोगी बनकर आज वे अपने को देशभक्त समझते हैं, देशभक्त कहलाते हैं ।

बड़ेबड़े घोड़े पर सवार जवान आगे बढ़ रहे थे । हाथी पर काली टोपी लगाये राजा की आदमकद तस्वीर ! तस्वीर के पीछे काली टोपियों का सैलाव । घुड़सवार और गिद्ध, घुड़सवार और गिद्ध, काली टोपियां, घुड़सवार, गिद्ध ! काली टोपियां !

उस चौक का गोल चक्कर लगाते हुए जुलूस दूसरी तरफ मुड़ गया । सारे शहर का चक्कर लगाकर एक मन्दिर के अहाते में जुलूस एक सभा में परिवर्तित हो गया। सामने एक ऊंचा मंच बना हुआ था जिसपर राजा रानी की आदमकद तस्वीर रखी गयी थी। दोनों तस्वीर के आगे दो कलशों में पानी और आम्रपल्ल्व के ऊपर दीप जल रहे थे। अहाते के एक ओर उस मन्दिर का मुख्य भवन था जिसमें चारों दरबाजे से होकर भगवान पशुपतिनाथ दृष्टिगोचर हो रहे थे, बेलपत्रों से ढके हुए। एक दरवाजे के गेट पर बैठकर एक संयासी हिन्दू धर्म के जन्म और उत्पत्ति से लेकर पंचायती व्यवस्था के ग्रह और लग्न के बारे में बड़ा ही पांडित्यपूर्ण भाषण दे रहा था। संविधान दिवस की उपयुक्तता को वह गुरु-गम्भीर वाणियों के द्वारा धार्मिक बंधनों में बांधने की कोशिश कर रहा था मानों संविधान देवदूत द्वारा आज्ञा किए गये किसी स्वर्गलोक से सीधे उतरा था, उतरना चाहिए था हिन्दू धर्म के इस संविधान को संसार भर में लागू करना चाहिए। विश्व के एक मात्र हिन्दू देश में यह एक मात्र हिन्दू संविधान है । बाकी दुनिया में कहीं भी हिन्दू संविधान नहीं है । सभी जगह म्लेच्छों का राज्य है ।

फर्मुल्लाह अब चुप हो गया था।

पुनर्नवा अपनी ही दुनिया में खोया एक म्लेच्छ की तरह इस जुलूस की सभा को देखने चला गया था।

कपुर गौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्र हारं
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भव भवानी सहितं नमामि ।

लम्बे-लम्बे डेग बढाते हुए सीढ़ियों पर चढ़ कर इस मंत्र को पढ़ते हुए पशुपति के चरणों में वह झुक गया । उठकर उसने यहीं से चारों ओर नजरें दौड़ायी ।

दूसरी तरफ के मंच पर, बड़ी सी आदमकद तस्वीर एक ही साथ दिखलाई पड़ र ही थी । अब सभी लोग मंच पर अपनी-अपनी जगह बैठ चुके थे । नेपथ्य में एक पर्दे के ऊपर एक बड़ा सा नक्सा टंगा हुआ था । बहुत दिन पहले जब वह काठमाण्डू गया था तो अजायब घर में ऐसा ही एक नक्सा देखा था। कितना खुश हुआ था, उस दिन वह । उस नक्शे पर उसने अपना गांव खोज लिया था । पर आज कोहरे में उसे कुछ दिखलाई नहीं पड़ रहा था । उसका गाँव तो क्या पूरे नक्से की धुंधली सी तस्वीर ही दिखलाई पड़ रही थी। पहाड़ों के नुकीले नोक साफ और स्पष्ट दिखलाई पड़ रहे थे ।

धीरेधीरे उस मंच पर हरकतें शुरू हुई। पशुपतिनाथ के पास उसी तरह खड़ा वह उन हरकतों को देखता रहा । सन्यासी की गुरु गंभीर वाणी को अब बन्द कर दिया गया था। धार्मिक बन्धनों में बांधने का काम अब बन्द कर दिया गया था । माल्यार्पण का समय हो चुका था । पूर्व मंत्री महोदय ने अपने चश्मे की धूल को पोछा और अक्षत और सिन्दूर उठाकर उनकी पूजा की और हाथ जोड़ते पीछे हटते अपनी सीट पर जाकर बैठ गये । उसके बाद देवधारी बाबू खैनी खाते हुए उठे और उसी प्रक्रिया को दुहराये । इस आदम कद तस्वीर का शीशा लाल रंग से भरपूर हों गया । डाक्टर फिर कही खो गया ।

"खूनकी एक नदी बह रही है, उसमें पत्थर के टुकड़ों की तरह आदमी की लाशें भरी हुई हैं। कल-कल करती हुई खून की वह नदी उन पत्थरों से टकराती आगे बढ़ रही है। उसी नदी में एक तस्वीर तैर रही है"

पुनर्नवा ने अपने सर को एक झटका दिया तस्वीर सामने दिखलाई पड़ी। लाल-लाल अवीरों से भरपूर ।

धीरे-धीरे भाषण का समय हो गया । सबसे पहले वे मंत्री अपने चश्में की धूल झाड़ते हुए मंच पर आये । एक बार उसने अपने आगे पीछे, अगल बगल चारो तरफ की भीड़ को देखा । फिर उसने अपनी आँखों पर चश्मा लगा कर भी चारों तरफ की भीड़ को गौर से देखा मानों आंखों की कमजोरी के कारण वे पूरी भीड को नहीं देख पाये हों । एकदम सामने दूसरी ओर बेलपत्रों से ढके हुए पशुपतिनाथ को उन्होंने देख लिया । उनके चेहरे पर क्षमा याचना की रंगत दौड़ने की हुई ही थी कि उसके आगे खड़े पुनर्नवा पर उनकी नजर पड़ी । क्षमा याचना की रंगत

पीछे हट गयी और एक डर, एक भय की रंगत उनके चेहरे पर तैर गयी । एक बार उसने गले के नीचे थूक को निगल लिया और दूसरी तरफ बैठी एवं खड़ी गारद को देखकर उनके चेहरे पर सख्ती और घृणा की रंगत दौड़ गयी, पुनर्नवा के प्रति । अब उन्होंने खखार कर भाषण देना शुरू कर दिया ।

"भाइयों और बहनों,

आज के दिन इन कुहरों और कुहासों से भरे हुए दिन में भी इस ठंड से डरते हुए दिन में भी, आपलोग आकर इस दिन की शोभा बढ़ा रहे है । यही इस बात का प्रमाण है कि आज का दिन कितना महत्वपूर्ण है", एक बार फिर उनकी नजर सामने खड़े पुनर्नवा पर पड़ी। उन्होंने आगे कहना शुरू किया "यह दिन इसलिए महत्वपूर्ण है कि यह दिन उनकी दी हुई है जिनकी तस्वीर पर अभी हमने अपनी श्रद्धा के फूल चढ़ाये हैं । हम फिर अपनी एवं अपने देश की समूची जनता की ओर से एक बार इनके चरणों में श्रद्धानत होकर हम इनके इनके संविधान के एवं पंचायती व्यवस्था के ऊपर थोड़ा प्रकाश डालना चाहेंगे ।

जिस तरह से इस हिन्दूराष्ट्र के निर्माता ने छोटे-छोटे राजवाडों को जीतकर सम्पूर्ण नेपाल को एक राष्ट्र का रूप दिया, उसी तरह श्री ५ महेन्द्र ने वैज्ञानिक रूप से इस देश को एक रूप दिया। इसके पहले यह देश एकीकरण के बावजूद वैज्ञानिक रूप से अलग था। इस तरह राष्ट्रनिर्माता श्री ५ पृथ्वीनारायण शाहदेव और हमारे संविधाननिर्माता श्री ५ महेन्द्र में एक समान किस्म की समता पायी जाती है। वे एक तरह से राष्ट्रनिर्माता के ही अवतार थे ।

कुछ लोग कहते हैं कि पंचायती व्यवस्था ठीक नहीं है । "उन्होंने एक बार फिर पशुपतिनाथ की ओर नजर दौड़ाते हुए पुनर्नवा को देखा" पर मैं कहता हूँ कि कोई व्यवस्था अपने आप में ठीक और खराब नहीं होती । खराब होता है वह आदमी जो इसका पालन नहीं करता । ऐसी सुन्दर व्यवस्था, ऐसा खूबसूरत प्रजातन्त्र संसार में कहीं नहीं है। इस व्यवस्था ने भूमि सुधार करके हर लोगों को जमीनवाला बनाया । इस व्यवस्था ने हर गांव में अनिवार्य बचत बनाकर कर्ज की निश्चितता दी । अब लोगों को, बड़े लोगों के आगे गिडगिडाना नहीं पड़ता । गाउ फर्क अभियान के द्वारा अभी हम जोर सोर से बढ़ रहे थे कि जनमत संग्रह के कारण उसे स्थगित करना पड़ा। पर अफसोस की कोई बात नहीं, संसद में इसे गहराई से सोचा जा रहा है । मैं कह दु, यह बहुत ही गंभीर विवाद का रूप ले लिया है और हम अपनी ओर से

सारी शक्ति लगा रहे हैं कि हमारे दिवंगत राजा की दी हुई चीज हम वापस अपने गाँव तक पहुँचायें । अब यह हमारे सौभाग्य का अवसर कबतक आता है, इसके लिए हमें धैर्य धारण करना होगा ।

हमारे ये राष्ट्रनिर्माता, मेरे भाई, भगवान कृष्ण से भी महान थे, यह कहते मैं नहीं हिचकुंगा । भगवान कृष्ण जो एक ही देश को दो भाइयों के बीच दो टुकड़ों में बांट देना चाहते थे कैसे जीव रहे होंगे, इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है ।

फर्मुल्लाह अब सामने आ गया था। उसके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गयी थी। भाषण आगे बढ़ा :-

"इसलिए कृष्ण का अंत क्या हुआ है जानते हैं? एक मामूली भील ने कुश के एक साधारण तीर से उन्हें मार गिराया। सुदर्शन चक्र की सारी शक्ति स्वाहा हो गयी थी । जानते हैं क्यों ? इसलिए कि उनके पास, उनके साथ किसी राष्ट्र की शक्ति नहीं थी । आदमी अपने आप में कुछ नहीं होता, उसके अंदर प्राणों के रूप में राष्ट्र की शक्ति दौड़ रही होती है। इसके बगैर हम निष्प्राण हो जाते हैं ।"

एक बार बेलपत्रों से ढके पशुपतिनाथ को उन्होंने फिर देखा "हमारे राजा ने निष्प्राण होने से हमें बचाया, उन्होंने हमारे अंदर एक राष्ट्र की शक्ति को भरा । आज उन्हीं की दी हुई शक्ति हमारे बाजुओं में, हमारे खेत खलिहानों में, हमारे नहरों और सड़कों पर बह रही हैं । हमें इस शक्ति को सुरक्षित रखना है, अपने र ंगों में बह रहे अपने पिता के, अपने राष्ट्रपिता के, अपने राष्ट्र निर्माता के, अपने संविधान निर्माता के रंगों को हम किसी भी कीमत पर बचा के रखेंगे। हम किसी उग्रवाद के द्वारा, हम किसी पृथकतावादी के द्वारा, हम किसी पागल के द्वारा इस पंचायती व्यवस्था को बर्बाद होने से खत्म होने से बचाने में सक्षम हैं । बस इतना ही कहकर अब मैं देवधारी बाबू को कुछ कहने के लिए आमंत्रित करता हूँ ।"

"जय देश, जय नरेश"

मंत्री महोदय का अब चेहरा तमतमा गया था। उनके रंगों में कुछ बड़े जोर से बह गया था। पंचायती व्यवस्था उनके हृदय से पम्प होकर अब चेहरे और आँखों में उतर आयी थी। उस पार खड़े पुनर्नवा और बेलपत्रों से ढके हुए पशुपतिनाथ पर उनकी नजर पड़ी। चुपचाप पुनर्नवा पशुपतिनाथ के बेलपत्रों को देख रहा था । मंत्री महोदय ने देखा बेलपत्रों के पास ही एक लम्बा सा त्रिशूल भी

चमक रहा था, जिस पर पहले उनकी नजर नहीं पड़ी थी । त्रिशूल पर नजर पड़ते ही वे जल्दी से जाकर अपनी कुर्सी पर बैठ गये। क्षण भर पहले उनका तमतमाया हुआ चेहराआनन फानन में सफेद हो गया था ।

अब देवधारी बाबू मंच पर आये और अपना भाषण इन शब्दों से शुरू किया :-

"हम भी उनलोगों के साथी रह चुके हैं, जो हमारे सामने खड़े हैं । पर आज हमे अपनी भूल महसूस हुई कि अभी हमारे मंत्री महोदय ने जो कुछ कहा वह कितना सही है । हमने उनका साथ देकर अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को, एक कभी न आने वाले युग को बर्बाद कर दिया है। पर कहते हैं सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आता है तो उसे भूला नहीं कहते हैं । भाइयों, अब हम घर लौट आये है । मुझे उम्मीद है कि अपने घर के लोगों में, अपनी जनता में स्थान मिलेगा । जनता से नाता नहीं तोड़ा। हमने प्रजातन्त्र को नहीं छोड़ा है, छोड़ा था उस समय जब मै भुलावे में था। मैं आज भी कहता हूँ कि हमारी जनता, आपलोग, इस बात को गौर से सुनें । वे लोग जो सामने खड़े हैं, वे लोग परदेशों के पैसों पर, परदेश के लिए नाच रहे हैं। एक हम हैं जो परदेश से पैसे लेकर अपने देश को संवारने में लगे हुए हैं, एक वे हैं जो परदेश के पैसों से अपने देश को बर्बाद कर रहे हैं । इसी को कहते हैं कि सिगरेट के धुआं से स्वास्थ्य भी खराब करो और पैसे भी । ये सिगरेट के धुएं हैं जिससे हमारे देश में जहर घुल जायेगा । आप उनलोगों के झाँसे और बहकावे में मत आवें। देखिये, ये हमारे आदमकद राजा रानी किस तरह से हमारे सामने हमारे देश के सामने, हमारी दुनिया के सामने सुशोभित हो रहे हैं । सारे अन्तर्राष्ट्रीय जगत में नेपाल का नाम रोशन करने वाले हमारे ये राष्ट्र निर्माता, संविधान निर्माता हैं । आज दुनिया के सभी लोग हमको जानते हैं, इसलिए तो सभी हमारे उत्थान के लिए तरहतरह की थैलियाँ हमें देते है। जरा सोचिए अगर हम लोग इस देश को बचाकर नहीं रखेंगे जैसे ये परदेशी है । आज यु.एन.ओ. में हमारा अस्तित्व है । हमें वहाँ भी एक वोट देने का अधिकार पैसे वाले लोग करना चाहते हैं तो हमें यु एन ओ. में वोट देने का अधिकार कैसे रहेगा ? आज सिक्किम को इसका अधिकार नहीं रहा गया है, कभी रहा करता था । क्या हम सिक्किम बन जाना चाहते है ? क्या हम अफगानिस्तान बन जाना चाहते है ? क्या हम तिब्बत बन जाना चाहते है ? कदापि नहीं । हम, हम बने रहना

चाहते है । हम स्वीटजरलैण्ड बन जाना चाहते हैं । इसलिए हमने बुद्ध का सहारा लिया है, युद्ध का नहीं । बुद्ध को अपनी जन्मभूमि को यह अधिकार देने के लिए उतरना होगा और वे उतरेंगे आप लोगों के अंदर । आप लोगों की शान्ति ही देश का अस्तित्व रखेगी । हम भूखे रहेंगे, हम नंगे रह लेंगे, हम गरीबी में रह लेगें । शान्ति ही हमारा पर अशान्त नहीं । शान्ति हमारी पूजा है, शान्ति हमारा लक्ष्य है, शान्ति हमारा संदेश है । शान्ति ही हमारा खाना है, शान्ति ही हमारा पीना कपड़ा है, शान्ति हमारा लत्ता है, शान्ति ही हमारा ओढना है, शान्ति ही हमारा बिछौना है । शान्ति ही हमारा सब कुछ है- शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!"

देवधारी बाबू को लगा कि सामने खड़े पुनर्नवा को उन्होंने कसकर लताड दिया है । शान्ति, शान्ति कहते हुए उनके चेहरे पर खून उतर आया था । पुनर्नवा ने उसके चेहरे पर की इस शान्ति को बड़े गौर से देखा और मुस्कुरा कर एक टक बेलपत्रों से ढके हुए पशुपतिनाथ को देखने लगा । देवधारी बाबू ने चेहरे से शान्ति का पसीना पोंछते हुए फिर एक बार देखा । बेलपत्रों के पास खड़े त्रिशूल पर उनकी नजर पड़ी और उनके चेहरे पर उतरी भगवान बुद्ध की सारी शान्ति हवा हो गयी । जल्दी से जाकर वे भी कुर्सी पर बैठ गये ।

पुनर्नवा इसी तरह कुछ देर तक बेलपत्रों से ढके पशुपतिनाथ की ओर निहारता रहा ! कई लोग मंच पर आते और जाते रहे ! कितने ही उत्थान और पतन, कितने ही उवाल से होकर इस बीच इस पुनर्नवा को गुजरना पड़ा । नसें तन जातीं, मुठियां भींच जाती, आंखों में खून उतर आता। फिर वह अचानक मुड गया और लम्बे-लम्बे कदमों से पूरब दिशा की ओर जाने लगा, किसी अज्ञात जगह पर । ऊंचा कद, चेहरे पर लम्बी-लम्बी दाढिया, बलिष्ट भुजायें और उन्नत ललाटः सृष्टि का साक्षात पौरूप अपना कदम बढ़ाते हुए जा रहा था ? यह पौरुष जब जहा जायेगा, हवाओं के रूख को बदल देगा। सारी दुनिया इसी पौरुष के बल पर व्यवस्थित हो सकती है, कायरता से नहीं। सारी दुनिया इसी पौरुप से शान्त हो सकती है, शान्ति के पाठ करने से नहीं । सारी दुनिया इसी पौरुष से रक्षित हो सकती है, सारी प्रकृति इसी पौरुप की गोद में अपनी लाज बचा सकती है। इन पहाड़ों का सौंदर्य, इन वादियों की छटायें, इन लहलहाते खेतों की फसलें इसी पौरुप की बदौलत कायम है अन्यथा कब के अपने पतन के मार्ग पर जा चुके होते !

कब के समाप्त और मटियामेट हो गये होते। इसी पोरुष ने उन्हें आजतक जीवित रखा है ।

लम्बे-लम्बे कदम, और भी लम्बे हो गये, उसकी रफ्तार और भी तेज हो गयी। उसे जाता है, वह जायेगा । अब तक उस जुलूस में खोज रहे रचना और किल के प्रेम को उसने झटक कर दूर फेंक दिया था । वह अपने इसी पौरुष से एक नये प्रेम का निर्माण करेगा जिसमें रचना और किल सभी समा जाते हैं। वह रचना और किले के मामूली प्रेमपाश में बंध कर बैठा नहीं रहेगा। वह बुजदिल नहीं वह कायर नहीं बनेगा। इसी प्रेम की रक्षा के लिए भी उसे इस पौरुप का कवच पकड़ना ही होगा । इसी में उसकी, उनकी सोसाइटी की, देश और अन्तरदेश की भलाई निहीत है।

लम्बा, और लम्बा कदम, अब मंजिल नजदीक आ रही थी। दूर किसी गाँव की एक झोपड़ी में जाना था। अब इस देश का कोई फैसला इसी झोपड़ी में होगा । इस झोपड़ी के ही लोग जब जागेगे तब ही इन गिद्धों के चश्में उतर सकते है । इन झोपड़ी के करन्ध ही जब त्रिशूल अपने हाथों में लेंगे तभी इन लोगों की शान्ति भंग होगी ।

ज्यों-ज्यों गांव नजदीक आता गया उसके दिलों दिमाग में ताजी हवाओं की मस्ती छाती गयी। धूल और गुब्बारों को वह बहुत पीछे छोड़ चुका था । यहाँ गाँव की अमराई और बासों के झुरमुट से छनकर हवायें आती है। चारों तरफ सरसों खिले हुए थे। कहीं पर लोग अपने ही द्वारा नदी में बांध बनाये गये एवं छोटी-छोटी नालियों से खेतों के गेहूं सिंच रहे थे। पास ही बड़ा सा सरकारी नहर सूखा पड़ा हुआ था। वह नहर अभी नहीं खुलेगा, लिखा-पढ़ी चल रही है । गाँव के कुछ लोग बाढ़ से अपनी फसलों को बचाने के लिए एक जगह नहर को काट दिया था । सारे सरेह का पानी उस नहर में गिर पड़ा था और गाँव के सभी लोगों ने तब राहत की साँस ली थी । जब नहर विभाग के हेड इन्जिनियर गाड़ी लेकर आये तो उनका रास्ता ब्लाक हो गया । उनको गौर पहुंचना बहुत जरूरी था । क्रोध में वे जब गालियाँ बकने लगे तो बहुत भीड़ जमा हो गयी । कुछ लोगों की तनी हुई भौंहे और कन्धों पर कुदाल की धार देख कर उन्होंने बडी शर्मनाक स्थिति में अपनी गाडी घुमा ली थी । तब उन्हें चक्कर लगाकर ट्रेन से गौर जाना पड़ा था। पर गाड़ी पहुंचते वहां की गाड़ी छूट चुकी थी । मंत्री महोदय जिनसे मिलकर उन्हें अपने प्रोग्राम के बारे में बातें करनी थी, चले

गये थे । बड़े निराश होकर जब वे वापस लौटे थे तब उन्होंने गाँव के लोगों को सबक सिखाने की कसम खायी थी। उस गाँव के दोनों पिउन को सबसे पहले बर्खास्त कर दिया गया। उसके बाद उस नहर का प्रमोशन रुक गया, गांव का प्रमोशन रूक गया । उसी तरह टूटा हुआ नहर प्रमोशन का इंतजार कर रहा है, इन्जिनियर साहब के जैसा। लिखा पढी चल रही है। तब से दो तीन फसले किसान लोग काट चुके है । भगवान ने उसी के पास एक छोटी सी नदी बना दी है । जिसमें हिमालय से पानी बहकर आता रहता है। हिमालय का वह पानी किसी दूसरे रास्ते से आकर उस नदी में मिलता है। इस गाँववालों के लिए यह अच्छा ही हुआ कि वह कोशी और गण्डकी के बड़े रास्तों से होकर नहीं गया अन्यथा वह इन्जिनियर साहब के आर्डर का अक्षरशः पालना करता और लिखा पढ़ी होने तक का इंतजार करता । तब बेचारे गांववालों की रक्षा परमात्मा भी नहीं करते ।

पुनर्नवा उस सुखे नहर को पार करते हुए उस छोटी सी नाली में बह र हे पानी से अपना मुँह धोया। शहर के धूल उसके चेहरे पर बहुत जम गये थे। गांव के पानी से उसने उसे आफ कर लिया और आगे बढ़ा ।

“बाबुजी क्या पत्तरहटी गाँव यही है उसने पानी पटा रहे एक बूढे किसान से पूछा । समीप ही खेतों में वह अपने पूरे परिवार के साथ पानी पटा रहा था। ऐसा लगता था कि सारा का सारा परिवार इन्जिनियर साहब से बचकर निकल गये है, मत दो पानी, हम अपनी मेहनत से पानी भी उगाते है। उसने कहा

“हां, क्यों कहा घर हैं ?”

“मैं एक परदेशी हुँ ।”

“क्या नाम है आपका ?”

“पुनर्नवा ।”

“कौन जात ?”

“जी कोई जात नहीं कहते हुए पुनर्नवा ने उस बुढ़े आदमी की निश्च्छलता पर मुस्कुरा दिया । दुनियाँ कहाँ से कहाँ चली गयी, गंगा में कितना पानी वह गया, कितने धूल और गुब्बार आसमान पर छा गये पर वह ७० वर्षीय बूढ़ा अभी तक हर किसी के नाम के साथ ही उसकी जात पूछना नहीं भूलता । काश इस जात पूछने की सहज मानसिकता अब वैसी ही होती जैसी उनके जमाने में होती थी ।”

"हम कोई जात नही ? बिना जात का कहीं आदमी होता है ? आदमी हैं तो कोई जात भी तो होगी ही ऐ ? उस बूढे की लम्बी पर उतनी ही उम्र की बुढ़ी औरत ने आश्चर्य से मुंह ताकते हुए कहा फिर अपनी ठुड्डियों पर हाथ रखते हुए खुद ही बुदबुदाते हुए कहा :-

हाँ आजकल तो न जाने इन लौंडों को क्या हो गया है । जात-पात को ताख पर रखकर जो मन में आता है करते हैं । कलैया में गये तो शराब से ब्राह्मण को कुल्ला करते हुए देखा । मनमतिया कह रही थी, शराब तो नेपाल में हर पान की दुकान पर मिलती है। लोग पान खाने जाते हैं और चाहें तो उसी समय एक बोतल वहीं पर लगा सकते हैं। मैं जब आंखें फाड़ी एक युवक को लड़खड़ाते हुए देखती रही तो मनमतिया ने हमें खींच कर सड़क से इस पार लाया था। उधर से आती हुई एक बस से मैं टकराते टकराते बची थी। यह सुनकर उस बूढी की जवान लड़की ने आगे कहा "अरे हाँ भइया, यहां बिजली की रोशनी आ गयी है, टेलिफोन आ गया है। लोग तुम्हारे जैसे जात-पात थोड़े देखते हैं अब । वे लोग तुम्हारे जैसे दकियानूस थोड़े हैं। वे लोग सिनेमा देखते हैं जिसमें जब जो चाहे वे देख लेते है। तुम बूढे बूढियों ने समाज में जात-पात उतार कर, जात-पात की बातें करके, पूरे समाज में जहर घोल दिया है। वे लोग सिनेमा को उतारते हैं और इस जहर को खत्म करने में लगे हुए हैं। टेलिफोन से बतियाते हैं, रास्ते चलते किसी से जात-पात पूछने का क्या मतलब? यह सब असभ्यता की निशानी है। वे लोग सभ्य हो गये हैं। राह चलते किसी से बोलते नहीं। दो आदमी किसी से बातें करते हो तो वहां तीसरा नहीं जाता । हैलो और वैक्यू बोलकर अपने रास्ते लग जाते है । इनके होठों की मुस्कान को देखकर मन मचल जाता है। जवान लड़कियों को देखकर भले ही पूरन भैया की आँखें नीचे झूक जाती है पर वहाँ पर सलवार और जीन पाइन्टों में जब पूर्ण बहादुर उनकी पूरी जवानी को उभरते देखते है तब पूर्ण बहादुर की पूरी जवानी अपनी बहादुरी पर उतर आती है। यहाँ पर क्या है ? यहाँ तो जवान लोग रहते ही नहीं । जवान लोग तो सीधे शहर से जाते है" उसने पूनर्नवा पर कटाक्ष करते हुए आगे कहा "जब सुबह-सुबह सड़कों पर दौड़ लगाते है तो लगता है कि कहीं ये पागल तो नहीं हो गये है । इतनी सुबह-सुबह ये कहाँ भागे जा रहे हैं । ये लोग शरीर का चिन्नी घटाते है । ऊख हमारे खेतों में पैदा होता है, चिन्नी इनके शरीर में उपजता है । ऊख हमारे अपने खेतों में पेरते हैं, रस

इनके शरीर में कुलबुलाता है। गजब है, ऐसा भी कही होता है न कोई नदी न कोइ नाला, बहकर उसमें कैसे पहुंच जाता है ?"

लड़की की बातें सुनकर पुनर्नवा के शरीर में सचमुच रस बहने लगा । कितना सुन्दर । कैसा मोहक !! कितना निश्छल, निष्कपट ! बहुत दिनों पर उसने इस मिट्टी को देखा था, गांव की मिट्टी। यह मिट्टी बचपन से उसके दिलों दिमाग पर छायी रहती है । वह सारी दुनियाँ को इसी मिट्टी में बदलना चाहता है पर इस की प्रक्रिया ने उसे इसी मिट्टी से दूर कर दिया है ।

"पूरन भैया को जानती हो ?" पुनर्नवा ने उस लड़की से पूछा ।

"अरे पूरन भैया को कौन नहीं जानता। एक तो ऐसे ही गाँव के शानों शौकत है। अभी कुछ दिन पहले ही कहीं से ट्रेनिंग लेकर आये हैं । तब से उनका रूप ही बदल गया है। खादी का सफेद दक-दक कुर्ता पायजामा पहनते हैं तो लगता है कहीं आसमान से कोई उतरा है । हर समय लोगों को बुला-बुलाकर कुछ न कुछ समझाते रहते हैं । पता नहीं क्या समझाते रहते हैं। हमको कभी नहीं समझाया । क्या आप भी कुछ समझने ही आये हैं ?"

"हाँ मुझे उन्हीं के यहाँ जाना है। क्या यही है उनका गाँव ? कहां रहते हैं वे यहाँ ?"

"पर हम कैसे बता दे जी नहीं हम नहीं बतायेंगे साल भर पहले इसी तरा एक आदमी आया, उनका पता पूछा और दूसरे दिन पूरन भैया जेल में। जब भी बाहर से कोई आता है, पूरन भैया जेल में । अब हम तुम शहरी लोगों को कुछ नहीं बतायेंगे ।"

"सब कुछ बताकर कहती हो कि कुछ नहीं बतायेंगे। देखो मेरे साथ ऐसी कोई बात नहीं मैं उनका दोस्त हूँ, मैं भी दूर उस गाँव से आया हूँ ।"

"गाँव से आये हो? तब तो बताउंगी । शहर वाले लोगों को मैं कभी नहीं बताती । ये शहर वाले बात भी पूछते हैं तो ऊपर से नीचे तक देखते रहते हैं । अरे क्या देखते हो? यहां सब ढका हुआ है । चारों तरफ आम, अमराई, खेत खलिहान, सब चीज शान्त, निस्तब्ध । कोई इस खेत में कोई उस खेत में हाँ, तू देखो, वहा जो झोपड़ी दिखलाई पड़ रही है न, वहीं पूरन भैया का घर है, चले जाओ ।"

कहती हुई उस लड़की ने पुनर्नवा को उस झोपड़ी को बतलाया जहाँ उसे जाना था । जिस तरह की झोपड़ी का नक्सा उसे बतलाया गया था, वह बिल्कुल

वैसा ही है । वह आगे बढ़ गया और वह लड़की उसको थोड़ा गौर से भाँपती हुई, आयी । वह बिल्कुल आश्वस्त हो गयी, वह गांव का ही है । चलता है तो उसके कदम मुडेरों में जिस तरह उठना चाहिए ठीक उसी तरह उठते हैं। भेष-भूषा भी पूरन भैया जैसा ही है । सूट-पैंट लगाकर कभीकभी जब पहाड़िया लोग आते हैं तो इस तरह नहीं चलते। उनके पैर ऐसे उठते हैं जैसे तलवे में धूल लग जायेंगी ।

पुनर्नवा ने देखा गाँव के एक किनारे पर बनी वह झोपड़ी अपनी पूरी कहानी बता रही है। यह झोपड़ी इस देश की पूरी दुर्दशा को और दुर्व्यवस्था को बतलाती हुई यह पूछ रही है कि पूरन जैसे इमान्दार, समर्पित एवं शिक्षित लोगों को इस देश में क्या हालत है ? उन्हें किस तरह यहाँ पर अपने दिन काटने पड़ते हैं ? वे किस तरह सभी जगहों पर एक किनारे पर कर दिये जाते हैं। जब वह उस झोपड़ी में पहुंचा तब यहाँ पहले से ही पूरन उसके इंतजार में बैठा था । सब कुछ पहले से तय था । ठीक समय पर उसके सबसे बड़े नेता पहुंचेंगे और मिटिंग शुरू हो जायेगी। यह मिटिंग उनके लिए सबसे जरूरी है। इसी में अब तक की छिटपुट नीतियों को सही रूप देना है। इसी मिटिंग में उनका असली नीति निर्धारण होगा । उनका छोटा सा यह आन्दोलन कौन से रास्ते से गुजरे, इस पर पूर्ण निर्णय हो जाना था। इसलिए इसमें उनके सबसे बड़े नेता आ रहे हैं । पुनर्नवा और पूरन दोनों आपस में बैठकर बातें करने लगे ।

आप के विचार से निर्णय किस पक्ष में होना चाहिए ? हमारे नेता के निर्णय के बारे में आपकी क्या राय है ?" पूरन ने पूछा ।

"सवाल सिर्फ इतना है कि हम किसी ठोस निर्णय पर पहुंचे । वैसे मेरी राय शायद हमारे नेता की राय से भिन्न होगी । वैसे तो मैं उसे बुरा भी नहीं मानता पर आन्दोलन का वह रास्ता बहुत लम्बा होता है और बदकिस्मती से वह लम्बा रास्ता ही उस आन्दोलन की गला घोंट देता है । दुश्मनों को हमें काटने के अनेक उपाय मिल जाते हैं । हमें तोड़ने के लिए काफी अवसर मिल जाता है । इसका दुष्परिणाम महात्मा गांधी को भी भुगतना पड़ा है । हम उस रास्ते पर चलना चाहते हैं जिसमे दुश्मन को किसी कूटनीति एवं किसी षडयन्त्र का अवसर न मिले । मैं बिल्कुल इस पार और दुश्मन को उस पार रखने के पक्ष में हूँ । समझौते का कोई अवसर वहां नहीं होता, इसलिए धोखा खाने से बच जाते हैं ।"

"पर बैस आन्दोलन के लिए हमारी जनता अभी तैयार नहीं है। जिस जनता में शान्तिपूर्ण ढंग से कुछ करने में भयंकर भय एवं आतंक छा जाता है वह जनता भला उस शार्टकर्ट रास्तों के लिए कैसे तैयार हो जायेगी ?"

"तैयार वे होते नहीं पूरन, तैयार उनको होना पड़ता है, तैयार उनको करना पड़ता है और तैयार होने के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं होता । तैयार होने में भी तो गांधीवादी रास्ते में ही अधिक समय लगता है । कौन जाय लेने । पर जब किसी का अपना बेटा खो जायेगा, जब किसी का सब कुछ जायेगा तो वह तो क्या उसकी सारी की सारी पीढियाँ इसी की सौगन्ध खाकर निकलेगी। तब इस तूफान को यह सरकार तो क्या कोई सरकार नहीं रोक सकेगी ।"

"तुम भूलते हो पुनर्नवा, ऐसा अगर हमारी पूरी की पूरी जनता में व्याप्त हो तो कोई बात नहीं पर इसी समाज में देवधारी और मंत्री जैसे लोग भी हैं, जो हमें इस झोपड़ी में रखकर हलवा खाते रहेंगे । हमारे ही लोगों के द्वारा सरकार हमारे ही लोगों को बरगलाती रहेगी, मारती रहेगी पर कभी ये लोग हमें नहीं समझ सकेंगे इसलिए उनको समझाना हमारा सबसे बड़ा काम होगा। अगर जन-जन तक बातें पहुँच जाय तो फिर हमें कुछ न करना पड़ेगा। फिर तो हमें रोकते बितेगा और वे सब कुछ करते रहेंगे ।"

"खैर पूरन, हम तो इससे भिन्न विचार रखते है पर हम सबको बचके चलना है, मिल के चलना है। इसलिए सबका जो निर्णय होगा हम स्वीकारेंगे ।"

बहुत देर तक इसी तरह बातें करते-करते वे लोग उठकर अब नदी के किनारे तक अपने नेता की गाड़ी को रिसिव करने के लिए चले। काफी समय बीत गया पर गाड़ी नहीं पहुंची। मिटिंग का समय नजदीक आता गया। गाँव के सभी युवक पूरन के दरवाजे पर जमा हो चुके थे । पूरन ने बड़ी मेहनत से इन युवकों के अंद गांधी के संदेश को भरने में सफल हो पाया था। वे सभी युवक अब व्याकुल होकर अंदर आने लगे थे ।

तय हुआ कि सभी लोग मिटिंग के लिए बैठे और दो आदमी सीताराम और ठाकुर जी जाकर कलैया तक देखें कि गाड़ी क्यों नहीं आयी । सभी लोगों ने वहाँ बैठ कर पूरन की अध्यक्षता में मिटिंग शुरू कर दी। ठाकुर जी और सीताराम बाह से चले गये ।

"खबरदार, कोई आदमी भागने की कोशिश न करे जो भी भागेगा उसे गोली मार दी जायेगी ।"

सीताराम ठाकुर के जाने के दो घटें बाद ही पुलिस ने चारो और से उस झोपड़ी को घेर लिया । वे दोनो युवक जब कलैया पहुँचे ठीक उसी समय कलैया से चल पड़े नेता को पुलिस ने दबोच लिया । उनको हवालात में पहुंच कर उन दोनों युवकों के साथ उसी जीप पर जाकर पुलिस ने पुरन के घर पर छापा मार कर सभी युवकों को कागजातों के साथ पकड लिया । इस तरह बिना किसी निर्णय के ही यह सभा असफल हो गयी । पूरन एवं होकर सीताराम और ठाकुर जी की पर पुलिस ने उसको भी लाकर सबके साथ हवालात में बन्द कर दिया ।

दूसरे ही दिन पुलिस ने सीताराम और ठाकुर जी को छोड़ दिया । उनको छुडाने देवधारी बाबु आये थे । नेता का जनकपुर और पुरन एवं पुनर्नवा को काठमाण्डु जेल मे भेज दिया गया ।

इस तहर अभी-अभी हो अपने पहले ही चरण में, अपने ही लोगों के षडयन्त्र से विफल हो गया । जिस जनता के लिए यह आन्दोलन पनपने वाला था, उसी जनता के द्वारा उसे कुचल दिया गया । न जनता समझ पा रही थी, न नेता अपनी बात को पूरा समझा पा रहे थे । पर अंदर ही अंदर शंकाओं एवं उपशकाओं का जन्म हो चुका था ।

●

५

"क्यो रे फिल, आजकल तुम बड़ी गुमसुम बैठी रहती है ?" क्या हो गया है तुम्हें ? बी.ए. का इतना अच्छा रिजल्ट हुआ । तुम्हारी सभी सहेलियों के चेहरे से खुशी टपकती रहती है कि अब वे जींदगी के नये दौर में प्रवेश करेगी। नौकरी कर ेगी, शादी ब्याह करेगी। एक नयी दुनिया, एक नये संस्कार की रचना करेगी। और तुम को क्या हो गया है बोलो? क्या तुम अपनी बातें नहीं बताओगी ?"

"अरे क्या बताना माँ, इसकी सहेलियाँ जो करेंगी ये कर चुकी है। नयी दुनिया, नये संसार की रचना हो गयी है, इनकी । ऐसा ही होता है इसमें, गुमसुम, खोया-खोया सा रहना। मैं भी देख रही हूँ , एक महीने से । पर क्या करूँ, मुझे भी हुआ था, समझ गयी। इसीलिए कुछ पूछा नहीं। एक न एक दिन तो सामने आ ही जायेगा। कौन है वो, बताओ न ?"

किल को चुप देख कर उसकी भाभी ने कहा । कील का कलेजा धक से हो गया। लगा जैसे उसकी भाभी को सबकुछ मालूम हो गया है क्या ?

"अरे हमें सब कुछ मालूम है, इसमें ऐसा ही होता है। इसमें इतना घबर ाने की क्या बात है ? आखिर शादी करने के लिए तो सबको यही करना पड़ता है । यह तो हमारी सोसाइटी में होता ही है । कौनो वीरगंज का मदेसिया है कि लड़की के लिए ५० हजार तिलक की व्यवस्था कीजिए, फिर लड़के को खोजिए। उस सोसाइटी से यही सोसाइटी ठीक है । लड़के-लड़की मिले और अपनी-अपनी पसंद का खोज ले । ना कोई हिल्ला ना कोई हुज्जत, न कोई परेशानी । थोड़ा प्रेम का आनन्द भी मिलता है । जैसे हमारी नन्दी को मिल रहा है ।"

"क्यों बेकार चिढ़ा रही हो बेचारी को ? ऐसी फटफट औरत है कि उस बेचारी के पीछे पड़ी रहती है। नाकों में दम कर देती है । अरे थोड़ा जी खराब हुआ होगा ।"

"अरे ओ अम्मा, बेचारी के दूध इतने बड़े-बड़े हो गये हैं तो शादी की बात जब तक शादी नहीं हो जाती तबतक कोई इधर-उधर कदम मत उठा लेना ।"

भाभी के मुंह से दूध उतरने की बात सुनने के साथ ही किल का कलेजा एक बार फिर धक से हुआ। उसे पक्का हो गया कि शायद भाभी को सबकुछ मालूम है पर उसके अंतिम शब्दों से वह आश्वस्त होकर एक लम्बी सांस खींचती हुई अभी हो ही रही थी कि भीतर से एक जोर की उबकाई आई और मुंह में सारा पानी भर गया । वह उबकाई को रोकती हुई वहां से उठकर भागी ।

अब तक मजाक कर रही भाभी एवं उसकी मां ने उसे गौर से देखा । अब माँ का कलेजा धक से हो गया और भाभी की आखें थोड़ी बड़ी होकर, अवाक हो गयी । शशक नजरों से देखती हुई वह सहम कर थोड़ा पीछे हट गयी, दूसरी धीरे-धीरे उसके पास गयी ।

"क्यों किल, क्या बात है है जी बहुत खराब है क्या ?"

"जी नहीं भाभी, ऐसे ही थोड़ा चक्कर आ गया । कई दिनों से सोचती हूँ डॉक्टर से जाकर दिखा आर्ड पर माधवी नहीं है, इसलिए नही गयी । सोचती थी, वह आ जायेगी तो हम दोनों चली जायेंगी ।

किल ने बिल्कुल झूठ बोल दिया। वह खुद अब माधवी से मिलना छोड़ चुकी है । माधवी कहीं गयी नहीं ।

"माधवी कहा गयी है

"पता नहीं, उसके घरवालों से पूछ तो पता चला कि दो-तीन दिनों में आ जायेगी ।"

"अरे तो माधवी नहीं आयेगी, तबतक लोग मरते रहेंगे । इतने दिनों से तबीयत खराब करके बैठी है। चलो कल हम खुद डाक्टर के पास ले चलते हैं । लेभी उसके पास आ गयी थी। उसने किल को ऊपर से नीचे तक देखा भर इतनी देर से मां बहुत कुछ भांपती हुई बिल्कुल चुपचाप देख रही थी । वह अपने कमरे में चली गयी ।

दिन भर उसने बड़ी गहराई से किल पर नजर रखा । खाते समय अचार तो क्या सोते समय भी उसने किल को अचार खाते हुए देख लिया । ज्यों ही वह उसके सोने के कमरे में प्रवेश की किल ने अचार को चुरा लिया ।

"देखो बेटी, हम अपनी सोसाइटी में बच्चों को अपना पसंद खोजने के लिए स्वतन्त्र छोड़ तो देते हैं, पर यहां तक की इजाजत नहीं देते । इसको छोड़ कर हमारी यह सोसाइटी वही हिन्दू सोसाइटी है जो इस विशाल आर्यावर्त में चारो तर फ फैली हुई है । उससे एक इंच भी हम इधर-उधर नहीं है । हमारा यह समाज इसको उसी तरह बर्दास्त नहीं कर पाता जिस तरह से आर्यावर्त की कोई सोसाइटी इसे बर्दास्त नहीं करती ।"

"अगर बर्दास्त नही करती तो फिर बच्चों को इस तरह से आजादी क्यों देंती है? बच्चे तो बच्चे ही होते हैं। उनसे गलतियां भी हो सकती है । अगर गलति हो सकती हैं तो उन्हें बर्दास्त करने की क्षमता भी इस सोसाइटी में होनी चाहिए । यह कहां का न्याय है कि हम किसी को गलतियां करने के लिए छोड़ दे, गलतियाँ नहीं होने की अपेक्षा करें ? इससे तो वही सोसाइटी अच्छी है जो गलतियों का अवसर ही नहीं देती जिसे हम दकियानूस और अशिक्षित कहते हैं ।"

"देखो बेटी, शादी रचाने की विधियां भले ही अलग हो पर पूरे आर्यावर्त में जीवन की सारी मान्यतायें वही हैं । यह हमने नहीं बनाया है, हजारो साल से इस धरती पर विकसित हुई है। अगर ऐसी कोई बात है तो बता दो, इस में कौन सी बड़ी बात है। लोगों के जानने से पहले सलट जायेगा ।"

"अरे नहीं मां ऐसी कोई बात नहीं है, मैं तो ऐसे ही तुमसे इसी बहाने इस विषय पर बहस करने के लिए शुरू हो गयी किस ने बड़े खूबसूरत एवं नाटकी ढंगल से मां को फांसा दिया । "सोचा कि इसी बहाने मां की सोसाइटी के बारे में थोड़ा हो जाय । यह कहां से लड़के बड़के का चक्कर चला दिया ? जाओ अपने कमरे में ।"

माँ बेटी का कहा मान कर अपने कमरे में वापस चली आयी । अपनी ग्रेजुएट बेटी से वह जीत भी कैसे सकती थी ? ठीक ही तो कह रही थी यह । नहीं ऐसा कुछ हो गया तो वह, उसका पूरा खान्दान, इस सोसाइटी को क्या मुह दिखलायेंगे । यही सोचते हुए अनुमान लगाती हुई किल की मां सो गयी ।

उधर किल की आंखों में निंद नहीं । माँ के आने पर उसने थोड़ी जो नाटकीय सहजता को प्राप्त किया था, फिर से बेचैन हो गयी। एक अजीव किस्म का थाम पुथल उसको मथता जा रहा है । वह क्या करे क्या नहीं करें ? जो भी हो वह अपने कर्तव्य पथ से विमुख नहीं होगी । क्या होगा यह जीवन, क्या होगी यह सोसाइटी, हाँ सोसाइटी, हम पढ़ी लिखी लड़कियां इसी सोसाइटी की अपील करती

आजादी के लिए आन्दोलन करती है । खूब आजादी मिली मुझे । अब भोग इस आजादी को । यह समाज मानेगा नहीं और इस समाज को में कुछ बताउंगी नहीं । कैसे बता दूंगी मैं, कैसे बतायी जायेगी मुझसे ? बताकर भी क्या होगा ? कहीं के रह जायेंगे तो फिर उसे भी इसकी सजा क्यों दै ? क्या अकेली ही मैं इस नही पी सकती औरत इतनी कमजोर नहीं होती, में भी इतनी कमजोर नहीं हूँ ।

"और यह जीवन ! क्या है यह जीवन ? दर-दर भटकती रही कुछ न मिला । सब मिलकर भी अकेली वापस लौटी । सबसे पहचानी गयी, एक पहचानहीन लड़की और अब? अकेली होकर भी मैं अकेली नहीं हूँ। मेरे अंदर मेरी पहचान बन गयी है। तो फिर क्यों न मैं इस पीड़ा को पी जाउँ तो फिर क्यों न मैं इस चोट को सह जाउँ ?

क्या औरत इसलिए इतनी सहनशील हो जाती है ? अवश्य इसीलिए हो जाती है । और कोई कारण नहीं होता । समवेदना के सारे दरवाजे से मैं संवेदनशून्य होकर निकली, और आज यह समवेदना अपने आप कहां से उतर रही है मुझमें क्या औरत इसलिए संवेदनशील हो जाती है । अवश्य इसीलिए हो जाती है ! आजतक मुझे किसी ने नहीं रुलाया। सब इस गुडिया से खेलते रहे, हँसते रहे, हँसते रहे । झूठ सब झूठ धोखा फरेब । आज जब उसने मुझे रुलाया है, ये आंखें बूंद-बूंद ममता टपका रही है और यह और कुछ नहीं, उसी सैलाब का पानी है जिसमें हम डूबते-उतराते रहे । ममता, संवेदनशीलता, सहनशीलता, इसी समय वास्तविक रूप में उतरती है ।

अब तक बेचैन किल बिल्कुल शान्त हो चुकी थी, निंद आने लगी थी। कोई तनाव नहीं था, उसके अंदर अब ।

दूसरे दिन वह बिल्कुल तरोताजा लग रही थी । कहीं किसी डाक्टर के पास किसी को जाने की जरूरत न हुई । भावी दहशत की भावनाये माता मरियम के चरणों में टिक चुकी थी। वह प्रफुल्लित होकर माधवी के साथ सिनेमा देखने गयी । घरवालों ने मना तो नहीं किया पर अब उनकी नजरे उसकी इस खुली स्वतन्त्रता को कसने की सोचने लगी थी । पर अपनी ही सोसाइटी के नियमों के पाबंद से वे खुद कसे हुए थे। जब तक लड़केवाले, लड़कीवाले से हाथ मांगने नहीं आयेंगे तथ तक वे क्या करेंगे? पुरुष प्रधान सोसाइटी के है कि इतनी

जल्दी लड़की के घर जाकर गले का जयमाल लेकर आ जाय । वैसे सभी दुनियाँ भागती जा रही है, अकेले भागना तो दूभर हो गया है, गले में घंटी लगाकर कौन भागता फिरे। कभी कहाँ तो कभी कहा, कभी पहाड़ तो कभी तराई कहाँ-कहाँ भेटकना नहीं पड़ता । शादी तो कर लिए अब चलिए हुम्ला जुम्ला की पहाड़ियों पर वर्फ खाने । शादी तो हो गयी अब चलिए पंजाब और मलेसिया की सैर किया जाय। शादी तो हो गयी, अब चलिए हिन्दुस्तान के होटलों में वर्तन साफ किया जाय । मन मसोस कर लोगों को अपनी लड़कियों को खुला छोड़ देना पड़ता है । फिर इस जवानी की जाल में एक भी नवयुवक नहीं फंसेगा, ऐसा कैसे हो सकता है ? यह असंभव है। कभी-कभी इस जाल में खुद लड़की, उसके माँ बाप और यह सोसाइटी भी बड़े दिलचस्प तरीके से फंस जाती है।

एक बार किल के भाई ने उसे साफ मना कर दिया था और कहा था कि तुम्हे कहीं जाने की जरूरत नहीं । बस पास हो गयी हो काठमाण्डू चलकर नौकरी में लगा दिया जाता है। किल ने अपने भाई के इस भोलेपन पर मुस्कुरा कर कहा था ।

"भाई, बी. ए. में पढ़ती हूँ, अपना भला-बुरा जानती हूँ । एक तरफ आप घर से निकलने के लिए मना भी करते हैं और दूसरी तरफ आप काठमाण्डू में जाकर नौकरी भी दिलवाना चाहते हैं। आपलोग हम को कहाँ पर रखना चाहते हैं, पहले इसका निश्चित निर्णय तो करिए अन्यथा छोड़िए, यह जिधर बहती है बहेगी ।"

किल का भाई सुनकर खिसियानी बिल्ली की तरह आंखें तरेर कर चुप लगाकर खुद सिनेमा देखने चला गया था, मन कुमारी के साथ। वह करे भी तो क्या करें ?

उसके घर के सभी लोग कुछ भी नहीं कर सकते थे । लड़की अब सचमुच अपना भला-बुरा जानने वाली हो गयी थी ।

पर इसी बीच एक हादसा हो गया ।

घर के सभी लोग खाने पर बैठे थे । किल की भाभी भीतर से खाना भेज रही थी और किल परोस रही थी। सभी खाते और तरह-तरह की बातें करते जा र हे थे। इन बातों में किल से लेकर किल की भाभी के साथ भी चुहल एवं मजाक कर ने से कोई नहीं चुकता था । ऐसा ही होता है। महिनाबारी हो रही है कि नहीं, महीनावारी ठीक है कि गड़बड़ आदि बातें तो वे सीधे अपनी बेटियों से पूछते है । विल्कुल फैंक, बिल्कुल वैज्ञानिक । लड़कियां भी हंसते लजाते सबको सब बता

जाती है। इस प्रक्रिया में अक्सर लड़कियों की शादियों पर से सटे दूसरे घर या गांव में ही होती है । आजकल पहाड़ों से उतरने के बाद साइकिल पर सवार होकर वे लोग नारायणगढ़ तक भी पहुंच जाते हैं ।

दूसरी बार फिर सबको परोसकर किल वापस लौट रही थी कि वह बेहोस होकर गिर पड़ी । रंगीन बुटेदार साड़ियों एवं ब्लायज के बीच का नाभी प्रदेश साफ दिख रहा जिस पर अन्न के कुछ दाने छिटककर पड़ गये और चमकने लगे । आभायुक्त जै से मासूम सौंदर्य की किरण फूट रही थी, चुप होठो पर प्रेम समाधी का मौन सधा हुआ था। बंद आंखों में इस समाज के अंधेरे कैद में पड़ चुके थे। सभी लोग उसके पास गये और उसे होश में लाने की कोशिश करने लगे। वह बेहोश हो चुकी थी । किल की माँ की नजर एक बार बेटी के नाभी प्रदेश पर पड़ी जिस पर चावल के कुछ दाने विखरे पड़े थे। नाभी के चारों ओर उसने बड़े गौर से देखा और सहम कर पीछे हट गयी । सबलोग किल को सम्भाल रहे थे पर किल की माँ ने अपने पति को इशारे से बुलाकर उनके कान में कुछ कहने लगी ।

सभी लोग जल्दी से किल को उठाकर गाड़ी में लादकर अस्पताल ले आये । इसके अलावा इस पूरे इलाके में कोई अस्पताल नहीं है । भरतपुर अस्पताल ! इमरजेंसी में कोई आदमी नहीं था । पिउन के इधर-उधर भाग दौड़ करने के बाद भी जब बहुत देर बीत गया तो कुछ लोग हड़बड़ी में और कुछ लोग उत्तेजना में भर गये। किल की मां ने अपने पति को सबकुछ बतला दिया था, इसलिए उत्तेजित लोगों को शान्त कर दिया गया। हड़बड़ी में सभी लोग किल को उठाकर डा. सीता के क्वार्टर में ले गये । किल की माँ के लिए यह अच्छा ही हुआ। यहाँ अस्पताल की भीड़ में आकर उसकी शंका सच निकल गयी तो सारी सोसाइटी में डंका बज जायेगा ।

डा. सीता भीतर अपने सोने के कमरे से तुरंत बाहर निकल कर क्लिनिक में आ गयी । तब तक कम्पाउण्डर ने उसे टेबुल पर लिटाकर आवश्यक प्रारम्भिक जांच शुरू कर दिया था । डा. सीता ने कहा-

“अरे क्या हुआ इस लड़की को यह तो कितने दिनों तक पुनर्नवा के पास आती रही है । इसका पेट हमेशा खराब रहता था जिसके लिए यह डा. पुनर्नवा से इलाज करा रही थी। क्या डा. साहब की पहली कोई पूर्जी है ?”

किल की मां की शंका अब अपनी पुष्टि की ओर बढ़ने लगी थी। डा. पुनर्नवा के बारे में एक बार उसने कुछ कहा तो था, पर इससे उसका इलाज भी चल रहा है, यह बात घर के किसी भी आदमी को मालूम नहीं थी । घर के और सदस्य लोग तो डा. पुनर्नवा के बारे में जानते भी नहीं थे ।

“कौन डा. पुनर्नवा ? ऐसी कोई पूर्जी और इलाज के बारे में हमें नहीं मालूम ।” किल की माँ ने अपनी सशंक नजरों को किल के बदन पर फैलाती हुई बोली ।

ओ ! डा. सीता ने उस लड़की को पहले ही डा. पुनर्नवा के पास कुछ अधिक ही आते हुए देखा था । एक बार उसको लेकर उसने डा. पुनर्नवा से मजाक भी कर दिया था। पर यह बात मजाक में ही खतम हो गयी थी । इस समय डा. जैसे समाज के सम्मानित व्यक्ति से एक साधारण लड़की के साथ किसी तरह की अपमानजनक घटना की संभावनाओं के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए था। डा. सीता ने सभी लोगों को कमरे से बाहर करके सिर्फ उसकी मां को रख लिया और किल को बडी बारीकी से जांचने लगी। कम्पाउण्डर से तुरंत उसने उसे एक काम्पोज की सुई देने को कहा। फिर अपनी कुर्सी पर बैठती हुई, पूर्जी बनाकर किल की माँ के हाथों में थमाती हुई बोली ।

“आप इसकी माँ है ?”

“जी मैं इसकी माँ ही हैं ।”

जी देखिये, आप इसकी मां है, मैं यह जानती हुँ कि इस लड़की की शादी नहीं हुई है । फिर भी मैं आपको बता दूं कि इस जीव के अंदर एक और जीव आ खचुका है। मैने पूर्जीलि भर्ती करने को लिख दिया है । ठीक हो जायेगी, ऐसी अवस्था में इस तरह के दौरे पड़ जाते हैं ।”

अपनी आशंकाओं की पुष्टि से किल की मां डाक्टर के हाथों से पूर्जी थामते हुए, निश्चेष्ट खड़ी रही । अब तक उसे लग रहा था कि १२ बच्चों की एक अनुभवी माँ होती हुई भी उसकी आशंका गलत निकले। पर वह गलत नहीं निकली थी और उसके सारे अनुभव एक व्याहिता माँ के थे, अनव्याही मां के नहीं । इसलिए वह सोच नहीं पा रही थी कि क्या किया जाय । एक बार उसने बेटी के बेहोश पड़े मुखमण्डल को देखा, जिस पर उसे किसी प्रकार का शैतान नजर नहीं आया। वही निर्दोषता, वही मासूमियत, वही भोलापन ।

“कितने दिनों का है, डाक्टर साहब ?”

“दो महीने का ।“

एक बार किल की माँ ने फिर किल के बूटेदार साड़ी एवं ब्लाउज के बीच के नाभी प्रदेश को देखा और उसमें अपना अनुभव तलाशने लगी। उसने देखा था कि

इसमें इसी तरह से नाभी प्रदेश गदरा जाते है। इसी नाभी प्रदेश के इस छोटे से घुमावदार चक्कर से इस अवस्था में इसी तरह से गदराये सौंदर्य की किरणें फटती है जैसे परमात्मा के प्रभामण्डल से फूटता है। हम परमात्मा के प्रभामण्डल के गोल घेरे को देखते हैं। ईशु, कृष्ण, राम, राधा, दुर्गा, सरस्वती सब के प्रभामण्डल इस वक्त किसी भी मां के नाभी प्रदेश के गोल घेरे से फुटकर निकलते हैं। यह प्रभामण्डल ही उस समय हर मां के अन्दर समा चुके होते हैं।

किल की माँ की आँखों में आँसू आ गये। वह इस घटना को पता नहीं क्यों पुनर्नवा से जोड़ देना चाहती थी। यही एक राज था जो उसकी मां नहीं जानती थी। डा. सीता से पहली बार सुनकर उसे लगा था कि जो भी हो राज यही है। उसने पूछा- "डा. पुनर्नवा अभी होंगे ?"

"नहीं अब तो वे यहाँ पर नहीं है। वे नौकरी से बरर्खास्त कर दिए गये हैं और सुना है काठमाण्डू जेल में हैं। क्यों ?"

"नहीं मैंने यूँ ही पूछ लिया।" किल की माँ को जो थोड़ी सी आशा की सम्भावना नजर आयी थी, इस बदनामी से बचने का जो एक उपाय नजर आया था वह समाप्त हो चुका था। उसने हतोत्साहित होकर फिर डा. सीता से कहा-

"तो डा. इसके इस हमल को नष्ट कर दो। जितने रूपये लेंगी में दूंगी। अन्यथा इसकी जींदगी खत्म हो जायेगी। मैं इसकी माँ हूँ।"

"देखिये, चूंकि आप इस लड़की की माँ हैं, इसलिए आप ऐसा कहती हैं, पर इसके अंदर के जीव की माँ आप नहीं हैं। इसलिए आप ऐसा कह रही हैं। क्या आपने उसकी माँ का विचार क्या है, इसको भी जानने की कोशिश की है ? हो सकता है वह जिस लड़के का हो, वह आपकी लड़की को इसी अवस्था में स्वीकार कर ले ?"

"ऐसा बहुत कम होता है डाक्टर, इसलिए तो मैं कह रही हूँ। मैंने इसके बहुत ही भयंकर परिणाम देखे हैं। कितनी ही लड़कियों को नर्क भोगते देखा हैं मैंने।"

"देखिये यह नर्क और स्वर्ग हमारी ही बनायी हुई चीज है और अगर मैं ऐसा करूंगी जैसा कि आप कह रही है तो यही सोसाइटी हमें नर्क में डाल देगी। यह कानून हमें इसकी इजाजत नहीं देता। कई डाक्टर हमारे खिलाफ हैं और ऐसी गलतियों के लिए मौका ढूंढते रहते हैं। दूसरे दिन से मैं जेल में नजर आ सकती हूँ। मुझे आप लोगों के साथ पूरी हमदर्दी है, पर ऐसा नहीं करने के लिए में मजबूर

हूँ और फिर देखिये लड़की बेहोश पड़ी हुई है, समय खतम हो रहा है। जल्दी है जाकर इसका इजाल करने दिया जाय नहीं तो अधिक देर तह वेहोशी ठीक नहीं होती।"

डा. सीता किल की मां को और अधिक विवाद का अवसर नहीं देना चाहती थी, इसलिए उसने बाहर से किल के सभी आदमियों को बुला लिया। सभी लोग प्रश्न भरी नजरों से डा. सीता को देखने लगे।

"देखिये मैंने सारी बाते इनको बता दी है। जल्दी से भर्ती कर के इलाज शुरू कर दीजिए। सब कुछ ठीक हो जायेगा।

"क्या ठीक हो जायेगा डाक्टर ?" कहकर किल की मां किल के वस्त्रों को ठीक करते हुए उसे ले जाने का उपक्रम करने लगी।

थोड़ी देर में किल उसी अस्पताल के उसी जनाना वार्ड में उसी २० नम्बर सीटपर पड़ी थी जिस पर उसने २० वर्षीय युवती को अक्सिजन सिलिण्डर के साथ देखा था डेक्सट्रोज की कई बोतले चढ़ जाने के बाद जब उसके होश वापस आये, उसने उस कमरे, उस सीट और बगल के अपनी बहन की सीट को चारों ओर निहार कर पहचाना। आज वहां कोई नहीं था न उसकी बहन, न डा. पुनर्नवा न वह युवती जो अक्सिजन पर रही थी। उसने अलग बगल अपने संबंधियों को देखा और चित लेटी हुई ऊपर छत की ओर निहारने लगी। छत से उसपार आसमान होगा। उस आसमान पर उसने न जाने कितनी ही उड़ानें भरी थी। यही वह जगह है, यही वह सीट है, यही वह अस्पताल है जिसने उसको आसमान से नीचे उतारा था। आसमान से नीचे उतर कर ही, वह धरती का रूप धारण कर, धरती का वास्तविक आनन्द, धरती का वास्तविक अमृत पा सकी थी।

आकाश पर प्रकाश होता है जो सीधे धरती पर उतर कर उसको उर्वर बना जाता है। धरती के भीतर प्रवेश कर वह एक नयी फसल पैदा करने का संकेत दे जाता है। खिड़की से छनकर आती हुई किरणों की झिलमिलाती किरणें अब बेहोशी से लौटी किल के नाभी- प्रदेश पर पड़ने लगी थी। वे किरणें अथ धरती में प्रवेश करने लगी। मां की नजर हमेशा उस धरती प्रदेश के चारों तरफ चक्कर काट रही थी।

सब चुप थे। कोई किसी से कुछ नहीं बोलता था। पाँच दिनों के अंदर सर्व लोग सबकुछ जान गये। कई बार अपने भाई की लाल आंखा की गरमी को किल

ने भाँप लिया था। पर वह सब कुछ सहने के लिए तैयार थी। वह इसी तरह निष्काम, निष्कलुष भाव से छत की ओर देखती रहती और किसी गहरे लोक की सैर कर र ही होती थी।

पाँचवें दिन अस्पताल से छुट्टी लेकर सभी लोग उसे घर ले गये। घर पर कुछ लोगों ने उस हमल को अवैध तरीके से समाप्त करने ही बात सोची पर किल ने इस कार्यवाही को साफ मना कर दिया। अब उसे फिर एक बार सारे घरवालों का सामना करना पड़ा।

“तो तुम क्या चाहती हो, अपने साथ हमारी भी नाक कट जाय ? अगर नहीं तो तुम उस आदमी का नाम बता दो। अगर उसने तुम्हारे साथ मुंह काला किया है तो तुम्हें स्वीकार करना ही होगा। हम है, हमारी पूरी सोसाइटी है, कानून है, वह भाग कर कहा जा सकता है ?

“जी मैं देख रही है, आप है, आपकी सोसाइटी है, आपके कानून भी है, और वह भाग कर भी कहीं नहीं गया है।”

“तो फिर तुम उसका नाम बताना क्यों नहीं चाहती ?”

“संसार में कुछ चीजें किसी की चाह से भी बड़ी होती है। हो सकता है वह नाम मेरी इस चाह से बड़ा हो ?”

“तो क्या तुम उसका नाम भी अपने मुंह से कहना नहीं चाहोगी ?”

“हो सकता है, मेरे अंदर जो घटनायें घट रही है, वही घटनायें उसका नाम हर हिन्दू औरत के होठों से छीन लेती हो। हो सकता है मेरे पास जो किरण आ र ही है, मेरे अंदर प्रवेश कर रही है, जिन किरणों की छत्रछाया से मैं विभूषित हो चुकी हूँ, हो सकता है उन्हीं के कारण अब उस नाम में कोई सार्थकता नहीं रह गया हो, वह नाम तो किसी का भी हो सकता है ?”

“इन दार्शनिक अंदाज को छोड़ो अब। तब तुम किसी का नाम भी बता तो, हम उसी से निपट लेंगे। आखिर किसी से तो तुम्हें व्याह करना ही होगा ?”

“मेरी बातों के ऐसे अर्थ न लगायें। जब मैं यह बात कहती हूँ, उसका अर्थ भी में ही समझती हूँ। आप इसे गलत समझ रहे है। अगर किसी का भी नाम ले लेना होता तो में कब का वह नाम ले चुकी होती। अपने इस अपूर्व सुख का अपार हिस्सा मैं किसी भी अनाम आदमी को कैसे दे दूं ?”

जिससे पिता की नाक कट रही थी, जिससे सारी सोसाइटी में अपमान होने जा रहा था, जिससे सारी विरादरी कलंकित होने जा रही थी उसे अपूर्व सुख की संज्ञा देकर किल ने अपने पिता को आश्चर्य में डाल दिया था। पहले की किल और आज की किल में वह इतना अंतर पा रहा था कि उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। किल की मां ने उसे जो कुछ भी बताया था उसी के आधार पर वे बेटी को फिर से समझाने की कोशिश करने लगे।

“बोलो बेटी, क्या वह डाक्टर पुनर्नवा है ? अगर वही है तो हम उसे खोज लायेंगे। वह हरामी मदेसिया जायेगा कहाँ ? इस देश में ऐसी हरकते करके वे जिंदा नहीं रहेंगे। क्या सोच लिया है अपने आपको ?” बेटी के प्रति हमदर्दी, पर पुनर्नवा के प्रति घृणा का प्रदर्शन कर ही दिया उन्होंने।

“पिता जी......।” कह कर किल ने बड़े जोर से चिल्लाया “अपनी नीच एवं घृणित मानसिकता से किसी महामानव का अपमान मत करिए। आप नहीं जानते कि ये बातें कहाँ तक पहुँच कर मुझे छलनी कर गयी है। जब ये बातें डा. पुनर्नवा या किसी भी मदेसिया के पास पहुंचेगी तो उसके मर्म के किस कोने को वेध डालेगी, आप नहीं जानते।”

पिता उसकी प्रतिक्रिया पर इतने अवाक हो गये कि मूल प्रश्न दब कर र ह गया। किसी मदेसिया के लिए इतनी हमदर्दी उसने किसी भी पहाड़ी वर्ग के लोगों में न देखा था न देखना चाहता था। अपने इन्हीं हाथों से उसने कितने मदेसिया, कितने थारुओं को भगाकर, चितवन में अपने घर परिवार को फैलाया था।

“क्या नहीं जानते ? अब हम यही जानते हैं कि अब तुम्हें इस घर से निकलना होगा। मुँह भी काला किया तो धोती वाले के साथ। अरे डूब मरो।” उसी समय उसका भाई भी अब वहाँ पहुँच गया था।

“काले और गोरे का भेद आप क्या जाने भाई! यह आपके बस से बाहर की बाते हैं। कहाँ डूब मरुँ ? हम शराब तो पीते नहीं जिसमें आपकी तरह डूब मरें ?” तड़ाक ! चटाक !! तड़ाक ! चटाक !!

शराब की बातें सुनते ही उसके भाई ने कई झापड़ किल के चेहरे पर लगा दीये। मुँह से शराब की बू आ रही थी। एक शराबी को शराब की बातें अच्छी नहीं लगी थी।

“जवान लड़ाती है, रण्डी कहीं की, चल निकल मेरे घर से।”

उसने बहन के बाल पकड़ कर दरवाजे के बाहर धकेल दिया। पढ़ी लिखी ग्रेजुएट एवं कुशागबुद्धि किल को पहली बार लगा कि वह उसका घर नहीं है । एक बार वह अपने आपको ऊपर से नीचे तक देख कर सोचा कि सचमुच वह एक ऐसी औरत है जिसके लिए किसी पिता के घर में जगह नहीं होती । पिता एवं भाभी ने उसे छुडाने की कोशिश भी की पर शराब का नशा उसने किल पर उतार ही लिया। किल चुप-चाप सब सहती रही, मार खाती रही। इस बात की पड़ोसवालों को जानकारी न हो जाय इसके लिए किल अपनी तरफ से एक सिसकी भी नहीं ली ।

दूसरे दिन वह बाहर निकली पर शाम को लौट कर घर नहीं आयी ।

X X X

"किल, तुम तो अब सती साध्वी हो गयी हो । कितने ही दिनों से तुम्हारा कुछ पता नहीं चलता । किसी के मुख से कुछ नहीं सुना। क्या अब कहीं आना जाना नहीं ? अरे ! यह सावित्री का अवतार लेकर इस जमाने में क्या करोगी ?"

"सावित्री का नहीं, माता मरियम का अवतार, माधवी ! अब मैं आने जाने से मुक्त हो चुकी हूँ । इस आवागमन की प्रक्रिया ने कुछ भी नहीं दिया मुझे । जमाने की तो बात ही छोड़ो। इस जमाने में, उस जमाने में, सब जमाने में हम एक हो गयी हैं ।"

शाम को किल घर पर नहीं आयी। वह माधवी के यहाँ चली गयी । क्यों जायें वहाँ, जहाँ पर उसका घर नहीं उसकी जगह नहीं सोचा माधवी के यहाँ ही मन बहलाकर फिर लौट जायेगी । किल की बातें सुनकर माधवी को भी आश्चर्य हुआ । उसने बड़े गौर से देखा किल को। मैं सावित्री की बात कर रही हूँ, यह माता मरियम की । यह अटपटी बात उसकी समझ में नहीं आयी । उसने कहा

"अच्छा माता मरियम जी छोडयि जमाने और आवागमन की बातें । हम दूसरे आवागमन की बातें करती हैं । हेमा भी हमारे साथ है, हम तीनों जायेंगे । अरे आज तक तुम रानी न बनी होगी । इस बार रानी बनने को मिलेगा । समझो ताज तुम्हारे सर पर बंधेगा । अरे गर्व से फूलों कि हमने इतना तहलका मचा दिया है ।"

"क्या मतलब ?".

"मतलब यह कि हम लोग पोखरा जायेंगे । बहुत दिनों से हम तीनों साथ नहीं गयी। इस बार चाहती हूं कि तुम भी चलो । जब हम लोगों ने तुम्हारा भी फोटो भेजा तो हम से ज्यादा तुम्हारा ही डिमाण्ड किया उनलोगों ने। तुम्हारा डिमाण् सबसे आगे है किल"

"माधवी !" किल ने कच्चा चबा जाने की मुद्रा में माधवी को देखा, "एसी फूहड़ बातों को मेरे नाम के आगे संलग्न मत करना । कैसा दरबार, कैसा राजा । हम अपने दरबार में परमात्मा पालते हैं, तुम उस दरबार की बात करती हो जहाँ पर शैतान पलते हैं। हम उस दरवार की रानी है जहां पर किसी की पहुंच नहीं होती, तुम उस दरबार की बात करती हो जहाँ से निकलकर लोग कुत्तों की तरह हमें ढूंढते हैं। हम आनंद से प्रफुल्लित होती है, तुम फूलने की बात कहती हो ।

भूलो मत माधवी । वे गिद्ध की तरह हमारी बोटियों को नोचते हैं और हम गई से फूली नहीं समाती है । अरे मूर्ख कभी आनंद का स्वाद चख के देखो तो पता चलेगा कि यह धूल आर गर्द किस तरह से जमा करती जाती हैं हम । फिर कभी ऐसी बात मत करना, नहीं तो मैं यहाँ से चली जाऊंगी। घर से मैं थोड़ी देर के लिए रूठकर तेरे पास मन बहलाने चली आयी थी ।

माधवी विस्तारित नेत्रों से किल को देखती रही। यह क्या, वही किल है ? नहीं यहां पर बैठी किल और हमारे साथ कितनी ही वार बोटियों को नुचवानेवाली किल यह नहीं हैं। उसे थोड़ा दहशत भी हुआ । अगर उनलोगों को पता चलेगा तो वे लोग सचमुच ही हमारी बोटियों को गिद्ध से नुचवा देंगे । अगर उनलोगों को पता चलेगा कि उनकी मनपसंद किल उसके साथ नहीं आयी तो हमें इसकी सजा भुगतनी होगी। जिन लोगे के लिए मैं खुद किल के यहाँ जाने वाली थी, वह किल खुद यहाँ पर आयी हुई है और अब यहाँ से जाने की बात कर रही है । नहीं नहीं, किल को हमारे साथ रहना ही होगा। अपने लिए हमारे लिए । उसने पैतरा बदल कर कहा :-

"हा हा, अरे किल तुम तो खामखाह नाराज हो गयी । अरे मैं तो यह देखना चाहती थी कि तुम सचमुच माता मरियम की अवतार हो गयी हो या नहीं । कैसा दरबार, कैसा राजा और कैसी रानी, कैसा गर्व कौन आनंद ? हम इतने खुशकिस्मत नहीं हैं । हमारे जीवन में न राजा-रानी है, न दरबार है, न गर्व है, न आनंद है। हेमा से बातें हुई भी थी कि हम लोग पोखरा घूमने जायेंगे। थोड़ा मन बहलाव हो

जायेगा । तुम भी हमारे साथ होगी तो कल्पनाओं में ही सही, एक बार पुरानी चुहलबाजिया करके, फेवाताल घूम के थोड़ी हल्की हो जायेंगी। तुम भी तो रूठ कर आयी हो, चलो मन बहल जायेगा । क्या तुम मुझे इतना नीच समझती हो ? ओ, किल की कोई अंतरंग सहेली है तो वह माधवी ही है ।"

अंतिम बात सुनकर किल पर कुछ असर हुआ । इसी अंतरंगता में तो वह रंग गयी है। वह भी पोखरा की प्रकृति को थोड़ा नजदीक से देखना चाहती थीं । प्रकृति को प्रकृति से प्रेम हो गया था ।

"तो ठीक है, परसों हम लोग चलेंगे ।"

"ठीक है, तू कहती है तो चलेंगे ।"

किल भी लौट कर घर जाना नहीं चाहती थी । वह देखना चाहती थी कि उसके घरवाले उसको बुलाने आते हैं कि नहीं । वह देखना चाहती थी कि सचमुच वह घर से बेघर हो गयी है या नहीं । लोग घर से बेघर इसी तरह तो होते हैं । तीसरे दिन हेमा, माधवी और किल तीनों एक बस के द्वारा मुगलिंग बाजार पहुंची । वहाँ पर एक चमचमाती हुई कार तीनों की प्रतीक्षा कर रही थी ।

"अब हम लोग इस कार से जायेंगे ।" कहती हुई हेमा और माधवी उस चमचमाती हुई कार की ओर लपकी । किल की आँखें उस कार की चमक से चौंधियाँ गयी । नेपाल राज्य में उसने अभी तक ऐसी कार नहीं देखी थी । ऐसी कार उसने अभी तक सिर्फ बड़े बैनर की फिल्मों में ही देखी थी । उसकी चौंधियायी आँखें कुछ सशंकित तो हुई पर वह भी हेमा और माधवी के साथ इसलिए चली गयी कि वे लोग बड़े बाप की बेटियाँ थी और क्या पता, ऐसी कारें आजकल कोई बहुत बड़ी बात नहीं हैं । विदेशों में तो हर आदमी ऐसी ही कार पर चढ़ता है । यह तो हमारा ही भिखारी देश हैं जहाँ ऐसी कारों को देखते ही हमारी आँखे चौधिया जाती है ।

"क्यों हम बस से भी तो जा सकती है ? इस कार के बारे में तो तू ने कुछ भी नहीं बताया था ? यहाँ से लिफ्ट लेने का इरादा है क्या ?"

"अरे, हाँ, हाँ हम लिफ्ट माँगने जा रही हैं ।" देखो हमें लिफ्ट देते है कि नहीं ।

वैसे वह कार हमारे एक सम्बन्धी की है । वे मिलिटरी के बहुत बड़े ओहदे पर हैं फिर भी अगर और लोग नहीं है तो हमें लिफ्ट जरूर मिलेगा ।"

"अब हमें यह सिफ्ट लिफ्ट की बातें ठीक नहीं लगती । ये लिफ्ट देने वाले लोग भी हमारी खूबसूरती और जवानी पर ललचाकर ही हमें लिफ्ट देते हैं ।"

"ओ तो क्या वे तेरी लाश को लिफ्ट देगें ? खूबसूरत है, जवान है, हंसती खेलती, इस जवान जिंदा अस्तित्व को ही कोई लिफ्ट देगा मुर्दे और लाश को कब्र में लिफ्ट मिलता है। यह क्या सुबह से कोई न कोई शंका की ही बात लेकर बोल पड़ती है । माथा खराब न करो किल, शुभ यात्राओं का आनंद तो लो । यह यात्रा बड़ा आनंददायक है। देखो सामने की वादियों को उन पहाड़ियों से कोई वाहें फैलाये हमें पुकार रहा है ।"

अब तक चुप पड़ी हेमा ने किल को झिड़कती हुई एवं फिर पुचकारती हुई सामने की वादियों की ओर इशारा किया । उसके पहले के शब्दों से चुप लगा गयी किल, पुचकार की बातों के साथ ही उन वादियों को निहारने लगी । इन वादियों की पुकार हेमा और माधवी को सुनाई भी पड़ती है ? काश इन वादियों की पुकार इन्हें सुनाई पड़ जाती तो यह जीवन, यह जीवन यात्रा कैसा सुखद हो जाता ? कितने आह्लादों से भर नहीं जाता । काश उन पहाड़ियों के बीच से निकलते सूरज की रोशनी इनके अंदर भी पड़ जाती तो इनकी यात्राओं के सारे संदर्भ बदल जाते । वह एक क्षण को उस सूरज की ओर निहारने लगी । सूरज की किरणें रंगीन बूटेदार साड़ी एवं ब्लाउज के बीच के उसके नाभी प्रदेश पर पड़ रही थी ।

"अरे चल न" कहती हुई माधवी ने उसे खीच लिया । उसने देखा भी नहीं कि कब माधवी ने उस कार वाले से लिफ्ट मांगी अथवा मांगी या नहीं । माधवी ने किल को खींच कर कार के दरवाजे को बंद कर दिया । बंद दरवाजे में किल बाहर के सौंदर्य को निहारने लगी । उसके और इन वादियों के सौंदर्य के बीच शीशे की एक दीवार पड़ गयी थी जिससे वह सौंदर्य धुंधला हो रहा था । किल ने कार के शीशे को थोड़ा नीचे किया ताकि उसकी आंख और सौंदर्य के बीच कोई दीवार खड़ा न हो। कार की तेज रफ्तार के कारण माधवी ने उस शीशे को फिर ऊपर उठा दिया । शीशे की दीवार फिर सबकी आँखों पर एक पारदर्शी पर्दे का खोल चढ़ा गयी। सौंदर्य धुंधला हो गया, सत्य फिका पड़ गया । सत्य और सौंदर्य के रिश्ते खराब कर दिए गये ।

आगे सामने की सीट पर केवल एक ड्राइभर बैठा था जो सबको दूर लिए चले जा रहा था। सबको मालूम था कि कहाँ जाना है फिर भी किसी को यह मालूम नहीं था कि कहाँ जाना है । किल ने केवल ड्राइभर को देखकर थोड़ी और सोचने के लिए मजबूर हो गयी । आखिर इन लोगों को लिफ्ट किसने दिया ? इतनी चमचमाती हुई कार पर दूसरा कोई नहीं केवल एक ड्राइभर जिसने सिर्फ हम

लोगों को लिफ्ट दिया । क्या मुगलिंग बजार में लिफ्ट लेनेवाला और कोई नहीं था ? फिर इतनी विशाल एवं शाही कार पर लिफ्ट कौन मांगने की हिम्मत करता है ? हेमा और माधवी को ही यह हिम्मत कैसे हुई ? पर वे तो कहती है कि यह कार उनके किसी सम्बन्धी की है तो सम्बन्धी कहाँ है ? किल के मन में बहुत सी आशकाये पैदा होने लगी । फिर भी उसने आशंकाओं को इसलिए झटक दिया कि मैं इतनी नादान और बच्ची नहीं । हेमा और माधवी को जो करना होगा करेगी, मैं उनके रास्ते पर न बाधा डालूंगी और न उनको अपने रास्ते पर आने दूंगी ।

किल जो उन्हीं लोगों के साथ, उसी रास्ते पर सरपट भागती जा रही थी, अपने को उस रास्ते से अलग करना चाह रही थी । जो कभी डा. पुनर्नवा के रास्ते को भी अपने ही रास्ते से गुजरना देखती थी, वही आज उस रास्ते को पृथक कर ना चाहती थी। अपने को लोग इसी तरह झूठलाते हैं ।

"क्यों कार में तो ड्राइभर के अलावा और कोई नहीं है ?"

"तो और कितने लोग चाहिए तुम्हें ?" हेमा ने किल के इस प्रश्न का टका सा उत्तर दे दिया ।

" "किल इस जवाब पर बिल्कुल चुप हो गयी ।

"धत ऐसा भी कहीं दिल तोड़ते हैं किसी का ?" माधवी ने कहा ।

"अरे दिल भी कहीं टूटने की चीज है ? अरे यह हर्ट ट्रान्सप्लान्ट का जमाना है, टूटेगा तो बदलवा लेंगे ।"

"चुप भी रहो, ज्यादा बक बक मत करो ।" हेमा को डाँटती हुई बोली पर किल की नजर बचाकर अपने बंद होठों के ऊपर उंगली रख दी ।

हेमा का दिल एक बार धड़का और अपने टूटने का संकेत दे गया । उसके बाद किसी ने किसी से कुछ नहीं बोला । एक अनकही खामोशी छा गयी, कार के अंदर बाहर की हवाओं की सरसराहट भी सुनाई नहीं पड़ रही थी । बिना घरघर ाहट की भागती हुई कार अपने उच्चतम तकनीक का परिचय दे रही थी । २१ वीं शताब्दी की निकली हुई यह उच्चतम तकनीक यह साफ दर्शा रही थी कि इनका मालिक कोई ऊचा आदमी होगा । अंदर की खामोशी तोड़ने के लिए, ड्राइभर ने मडिम स्वरों में कार के ट्रान्जिस्टर को खोल दिया। भीतर एक सुनहला माहौल तैर गया। बम्बई की लता मंगेशकर और आशा भोसले उन खामोश लोगों का मनोरंजन करने बटन दबाते ही पहुंच गयी थी ।

आगे भी जाने न कोई, पीछे भी जाने न कोई ...

तीनों खामोश सहेलियों ने एक दूसरे को बारी-बारी से देखा । इन गाने के साथ ही कार के अंदर की खामोशी सन्नाटे में बदल गयी । तीनों सहेलिया अपने-अपने ढंग से अर्थ लगाती हुई, चुप बैठी थी ।

थोड़ी ही देर में कार पोखरा पहुंच गयी। बीच चौक में ही तीनों कार से उत्तर गयी । हेमा ने कार के ड्राइवर को एक ओर से जाकर उससे कुछ बातें की और कोड्राइवर कार लेकर चला गया । तीनों सहेलियां अब घूमने के लिए चल दी । फेवाताल का प्रोग्राम बना और तीनों ने उधर के लिए एक टैक्सी पकड़ ली । कार से उतरने के बाद किल थोड़ी आश्वस्त हुई। उसे लगा जैसे गले से फांसी का फंदा हट गया है। माधवी की बातों पर उसे विश्वास होने लगा कि वह कार उसके किसी रिश्तेदार की थी ।

अब तीनों बिल्कुल नर्मल हो चुकी थी । दिन भर इधरउधर घुमते बतियाते किल काफी हल्की हो चुकी थी । शाम के झुटपुटे में तीनों नौका विहार करने फिर चली गयी। एक गहरे झील में एक छोटी सी नौका इधर से उधर तैर रही थी । ऊपर आकाश से चांदनी छिटक रही थी । सामने विशाल पहाड़ियाँ दृष्टिगोचर हो रही थी । झील के बीचों बीच एक टापुनुमा जगह पर एक छोटा सा मन्दिर दिखलाई पड़ रहा था । नौका धीरेधीरे उस मन्दिर की ओर बढ़ने लगी। वहां पहुँच कर तीनों सहेलियाँ उतर कर मन्दिर में गयी और अपनी अपनी प्रार्थनायें चढ़ाकर फिर नौका में वापस लौट गयी ।

"कितनी सुन्दर, कितनी मनोरम लग रही है यह जगह मानो पृथ्वी पर साक्षात स्वर्ग उतर आया है। "किल चारों तरफ निहारती हुई बोली ।

"पर आज तक तो स्वर्ग को किसी ने नहीं देखा ।"

"नहीं देखा, तो देख आज माधवी, जी भरकर देख, देख वह ऊपर चाँद किस तरह से निमन्त्रण दे रहा है, स्वर्ग का निमन्त्रण, सामने पहाड़ियों को देख, सब हमारे लिए और सिर्फ हमारे लिए ही स्वागत द्वार बनाये खड़े हैं ।"

"अरे क्या खड़े हैं चलो जहाँ हमारे लिए कार खड़ी है । हमें बुला रही है वहीं । यह क्या हो गया है इसे ? हमेशा दार्शनिकों जैसा बातें करती रहती है । अरे कुछ मजाक बजाक करो कि मनोरंजन हो । इन दर्शनों से मनोरंजन ज्यादा मार करता है । क्या तुम्हे नहीं मालूम ?" हेमा ने उसे झिड़कते हुए कहा ।

"अरे हो क्या जायेगा, लगता है प्रेम का गहरा रोग लग गया है इसे । अरे किल ऐसी कोई बात है तो बताओ, हम तुझे तुम्हारे स्वर्ग तक पहुंचाने के लिए सहयोग देंगे । कौन है वह लड़का ?" माधवी ने पूछा ।

"अरे इस स्वर्ग तक कोई किसी को नहीं पहुंचाता है । वहां अपने जाना पड़ता है, अपने कदमों से चलकर, जिस तरह तुम लोग खुद चलकर यहां आयी हो ।" किल ने जवाब दिया ।

हेमा और माधवी ने एक दूसरे को एक अजीव दृष्टि से देखा जैसे कोई अपसकुन बोल दिया हो । इसी तरह बातें करते वे लोग किनारे तक पहुंच गये । नौके वाले को पैसे देते समय तीनों ने पीछे मुड़कर दूर तक फैली गहरी झील को देखा । आंख जहा तक जाती थी वहां तक पानी चांद की रोशनी में झिलमिल कर रहा था । उन लोगों ने उस प्रकृति के आनंद को अपने अंदर भर लिया था और प्रफुल्लित हो गयी थी। हेमा और माधवी हाथों में हाथ डालकर झूमती हुई आगे बढ़ी। उसके पीछेपीछे किल चली आ रही थी ।

ऊपर आने पर वही चमचमाती हुई कार उन लोगों की प्रतीक्षा कर रही थी । कार को देखकर किल फिर थोड़ी आशंकित हुई, पर तबतक रात बढ़ने लगी थी और मजबूर होकर उसे उन लोगों के साथ उस कार में बंद होना पड़ा । कार तीनों को लेकर चाँदनी रात के अंधेरे में चल पड़ी ।

मिन्टों में यह कार एक बहुत बड़े बिल्डिंग के खूबसूरत लान में रुकी । हेमा और माधवी कार से मुस्कुराती हुई उतरी। पीछे से मन मसोस कर किल को भी उतरना पड़ा । एक बार उसने आलिशान महल के चारों ओर नजर दौड़ा कर देखा । ऊपर जगमग करती रोशनियों के बीच लिखा हुआ था “होटल पैनोरमा ।” उसके ऊपर एक पाँच कोनों का स्टार चमक रहा था । लान के चारों ओर खूबसूरत ढंग से काटे गये तकनीकी पौधे ताजमहल के अहाते की तुलना कर रहे थे । बीचोंबीच एक युवती के अर्धनग्न उरोजों से सटे पड़े एक बड़े से घड़े से पानी के रंगीन फर वारे फूट रहे थे । होटल के दरवाजे के एक तरफ दो सांड लड़ने की सजीव मुद्रा में भीड़े हुए थे । दूसरी तरफ पिकाशो के एक बड़े से पेंटिंग से मानव की करुणा फूट रही थी। सामने गेट पर संतरी अपना बन्दुक लिए खड़ा था जिसने कार के अंदर आते ही, गेट को बन्द कर दिया था । किल ने सोच लिया कि अब वह इस पिंजड़े में बंद हो गयी है। अब उसको इस बात की रत्ती भर भी शंका नही रह गयी थी कि माधवी ने अपने घर में जो कुछ कहा था, वह झूठा था । थोड़ी ही देर में रात गहराने लगेगी और निशाचरों की चहल कदमी शुरू हो जायेगी। दिन में तने हुए लोगों की तनाव यहां पर उतरेगी । सोमरस का प्याला खुलेगा, उर्वशी की चुस्कियां शुरू होगी । अब किल अपने ऊपर किसी भी आनेवाले हादसे का सामना करने के उपायों को सोचती हुई उन दोनों के साथ उस आलिशान महल के अंदर दाखिल हुई ।

कमरा नं. ४२०, तीनों के लिए बुक था। कमरा क्या था एक पूरा घर ही था जिसमें एक पूरा परिवार रह सकता था । तीनों अपने कमरे में जाकर थकान को मिटाने के लिए गद्देदार विस्तर पर पसर गयी । नौकर ने दरवाजा बाहर से बंद कर

दिया । फिर एकएक करके उनकी खातिरदारियों के पैगाम आने शुरू हुए । हेमा और माधवी चहकचहक कर उन पैगामों को स्वीकार करती गयी । कोको-कोला फ्रुट्स स्नैक्स सब कुछ। सबको किल ने बड़े ही निरपेक्ष भाव से अस्वीकार कर दिया । हेमा और माधवी के किसी भी जोर से वह विचलित नहीं हुई । अपने विस्तर पर दुबक गयी ।

अब तक रात गहरा चुकी थी। सबसे अंत में जो दौर आया, वही हेमा और माधवी के लिए सबसे महत्वपूर्ण होता है । उस दौर के साथ ही उनका मन भर पाता है । वैरा के उन्हीं प्यालों के साथ, अपने चमचमाते हुए पोशाक में एक युवक ने प्रवेश किया । वैरा प्यालों को रखकर चला गया। युवक हेमा और माधवी के सामने अपने सिंहासन पर बैठ गया ।

उस युवक के प्रवेश करते ही दुबकी हुई किल हडबड़ा कर उठ बैठी । माधवी ने उसे जो कुछ कहा था, उसपर उसने भरोसा तो कर लिया था पर उसकी सोच यहां तक नहीं पहुंच सकी थी । वह भय और दहशत से ठंढी हो गयी । आते समय अपने बचने की सारी योजनाओं को काठ मार गया। कौन बचा सकता है अब उसे ? क्यों वह हेमा और साधवी के बहकावे में आ गयी? हे परमात्मा, हे पशुपतिनाथ, अब यहां पर यही होगा ? उसने आंखों को नीचे कर लिया। उसके सामने अपने को धूल समझ कर, धूल की ओर आँखें कर लेनी पडती है ।

हेमा और माधवी ने भी आँखें नीचे करके कनीज की मुद्रा में सलाम किया । बैरा प्यालों को रखकर चला गया । युवक हेमा और माधवी के सामने अपने सिंहासन पर बैठ गया। कनीज उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगी ।

अब चारों तरफ कमरे में नजर दौड़ाते हुए आज्ञा प्रसारित होने लगी और उस कमरे की जनता उसे शिरोधार्य की मुद्रा में सुनने लगी ।

“हम तुम लोगों से खुश हुए । हम रात भर के लिए तुम लोगों को उन सारी बंदिशों से मुक्त करते हैं जो हमारे सामने करना पड़ता है । अब तुम लोग अपनी नजर, मेरी नजर से मिला सकती हो। हम तुम्हें अपने सामने की इन कुर्सियों पर बैठने की भी इजाजत देते हैं । हम तुम लोगों को वे सारी आजादी देते हैं जो तुम लोग मुझसे करना चाहती हो ।”

हेमा और माधवी ने इस राजाज्ञा को शिरोधार्य करके नजरे ऊपर उठायी । दो आँखें, चार आँखों से बारीबारी से टकरायी पर उन चारों आंखों में अभी भी वह आजादी नहीं झलक पायी थी जिसकी ख्वाहिश सिहासन पर बैठे युवक को था ।

जब तक यह आजादी नहीं आयेगी सबकुछ फीका होगा । यही तो एक क्षण है जब कि दोनों तरफ, आँखों में आजादी की मात्रा बराबर हुए बिना आनंद बराबर नहीं होता । इसलिए एक दूसरी राजाज्ञा जारी करनी पड़ी.-

"नो डियर, इन आखों में आजादी नहीं उतरी। हम इसे पूरी तरह से उतारेंगे । चलो, आगे बढ़ो । ये प्याले हमारा इंतजार कर रहे हैं । कम कम डान्ट हेजिटेट । हाँ, हाँ, चलो ।"

हेमा और माधवी नाचनेवाली गुडियों की तरह बढ़ कर प्यालों में उच्चतम तकनीक के सोमरस को भरने लगी ।

"सभी में सभी में", तीसरी राजाज्ञा । हेमा और माधवी ने मूर्तिवत चारों प्यालों को भर दिया ।

"कम, कम तुमने सुना नहीं ? हम चारों एक साथ पियेंगे ।"

अब तक नजरें नीचे झुकायी, मूर्ति की तरह खड़ी किल ने अपनी नजर ऊपर उठायी । भय और दहशत से उसने कमरे की चारों तरफ नजर दौड़ायी । कमरे में राधा और कृष्ण की मूर्ति एक दूसरे को निहार रहे थे । भगवान बुद्ध से लेकर पिकाशी तक के पेंटिंग से कमरा बड़ी बारीकी से सजाया गया था। हजारों साल की कहानियां लेकर वह कमरा चकमक कर रहा था । आँखें चौधियाँ-चौधियाँ जाती थी । सबसे बीच में भगवान पशुपतिनाथ के शिवलिंग पर नाग देवता अपना फन फैलाये खड़े थे ।

बहुत दिन पहले गोरखा के अपने छोटे से गाँव से दिन भर पैदल चलकर महाराजा पृथ्वी नारायण शाहदेव का ऐतिहासिक दरबार देखने के लिए वह गयी थी । ऐसे ही नाग देवता के फनों के नीचे उसने पृथ्वी नारायण शाहदेव की ऐतिहासिक राजगद्दी को देखा था। उसकी गोरखाली आँखें श्रद्धा एवं गर्व से अश्रुपूरित हो गयी थी । दिन भर पैदल चलकर आयी हुई किल का श्रम सार्थक हो गया था ।

"हम तुमसे ही कह रहें हैं लड़की, तुमने सुना नहीं !"

इस बार किल हड़बड़ा गयी। वह कुछ भी बोल पाने में असमर्थ थी ।

"सरकार रहने दीजिए, उसकी तवीयत आज थोड़ी खराब है । फिर सरकार को देख कर वह हड़बड़ा एवं घबड़ा गयी है । थोड़ी देर संयत हो लेने दीजिए ।

हेमा ने, जो उस ग्रुप की सबसे मुँहफट सहभागी थी, हिम्मत करके उस युवक से कहा ।" हम सरकार की खातिर कर दे तब तक ?"

हेमा के इन शब्दों से अपने बिगड़ते हुए भावों पर काबू करके संयत होकर उसने इशारा किया । हेमा और माधवी दोनों अगल बगल सामने कुर्सियों पर बैठ गयी ।

"तुम सभी अपने चेहरे, मेरे इन कपड़ों में देख सकती हो ।"

सभी ने उस युवक के चमचमाते हुए पोशाक पर नजरें दौड़ायी, किल भी । उच्च तकनीक से बने हुए उन कपड़ों में उस कमरे की सभी जनता की तस्वीर साफ दिखलाई पड़ने लगी । हेमा और माधवी की तस्वीर तक उन दकदक करते कपड़ों में दिखलाई पड़ रही थी । आश्चर्य से दोनों ने एक दूसरे को देखा । किल ने भी उस पोशाक को देखा । स्कूल में उसने उसके बारे में पढ़ा था। एक बच्चा अपने बाप के कंधे पर बैठकर उसे देख रहा था । वही पोशाक आज इस कमरे की सारी जनता देख रही थी ।

अब प्यालों का दौर पर दौर चलने लगा। हर दौर के बाद हेमा और माधवी के भी गाँठ धीरेधीरे खुलने लगे। हर दौर के बाद उस युवक का अहंकार भी थोड़ा ढीला होता गया ।

तभी खड़ी किल ने अपने बिस्तर पर बैठ जाना चाही ।

"खड़े हो जाओ तुम बैठ नहीं सकती । जब तक तुम संयत नहीं हो जाओ, इसी तरह खड़ी रह । उसे बैठते देखकर युवक का कसाब एक बार फिर गया पर फिर तुरंत उसने ही कहा- शुरू हो गया पर फिर तुरंत उसने ही कहा-

"बैठ जाओ ।"

किल अपने विस्तर पर दोनों हाथ टिकाकर बैठते हुए फिर कमरे की दीवारों को देखने लगी। इस दरगाह की कब्र में अब वह दफन हो गयी है, वह समझ चुकी थी । उसने देखा दीवारों पर सभी देवताओं से घिरी हुई एक तरफ माता मरियम अपनी गोद में प्रभु यिशु को लिए करुणा की मुद्रा खड़ी थीं ।

"अरे लड़कियों, तुम लोग इतनी डरती क्यों हो । हम भी इंसान ही हैं । शेषनाग के फनों के नीचे का विष्णु, शेषनाथ की तरह जहरीला नहीं होता ।"

"हाँ हजुर, जहरीला तो वह फन होता है । विष्णु तो करुणा के अवतार होते हैं । अगर विष्णु की रक्षा उस जहर से न हो तो वह विष्णु नहीं रह जायेंगे ।"

"खैर छोड़ो उस जहर को, अब इस जहर को इसमें भरो ।" कहते युवक ने अपने खाली प्याले की ओर इशारा किया ।

अब तक सभी के ऊपर काफी जहर चढ़ चुका था । इस जहर से अछूती सिर्फ किल रह गयी थी । अब उस कमरे में राजा प्रजा का भेद मिट चुका था । सब बराबर

हो गये थे। हेमा और माधवी जो मन में आता कहती और वह दक दक पोशाकोंवाला युवक एक सर्वसाधारण ही नहीं एक गिर हुए व्यक्ति की तरह सुन और बोल रहा था ।

"अब इस जहर की क्या जरूरत है हजुर ? अब तो यह हमारी आंखों और होठो पर ही वह जहर आ चुकी है। अब तो इस जहर को इससे ही पीजिए ।"

कहती हुई माधवी ने अपनी कर्सी को उस युवक के पास खिसकाती हुई आयी और उस युवक के होठों पर उसने अपने होठ रख दिये। कुछ देर तक वह उसी होठों से ही सचमुच पिता रहा । इसी तरह फिर हेमा भी आयी और युवक ने अपनी प्रक्रिया को उसी तरह दुहराया। जब माधवी फिर दूसरी बार अपने होठ रखना बाही, युवक ने बड़ी तल्खी से मना कर दिया ।"नहीं अब तो हम उस पैमाने से पीयेंगे ।" उसने किल की ओर इशारा किया ।

"नहीं, नहीं परमात्मा के लिए मुझे छोड़ दें जहाँपनाह ।" अब तक किल जो बुत बनकर खड़ी थी, सहम कर पीछे हट गयी । किल ने बड़ी करुणाभरी दृष्टि से उस युवक को देखा ।

"देखो, इस कमरे में बंद तीन जनतायें हैं । दो से मैंने अपना बजूद असुल कर लिया, अब तुमसे असूल कैसे नहीं करें ? अब वह युवक कुर्सी पर से उठकर किल की ओर बढ़ने लगा ।

"नही प्रभु, प्रभु के लिए, पशुपतिनाथ के लिए मुझे हाथ न लगाये । देखिये आपका सबकुछ पूरा करने के लिए एक नहीं, ये दोदो सुन्दरतायें आपके सामने हैं । आप इनमें से कुछ भी चाहे कर लें केवल मुझे छोड़ दें । मैं अपनी मर्जी से नहीं आयी थी यहां। मैं यह सब कुछ नहीं जानती थी ।"

"अरे, यह तो हमें भी मालूम था । इसलिए तो इन दोनों को तेरे ऊपर लगाया था। इन दोनों को तो कब से पीता रहा हूँ , आज हम तुमको पीयेंगे । शर ाब के साथ अगर हम तुमको नहीं पीयेंगे तो नशा अधूरी रह जायेगी ।"

"नही सरकार, मैं आपको हाथ जोडती हुं । देखिये जरा सामने की दीवार पर, देखिये माता मरियम खड़ी है । पशुपतिनाथ को देखिये । वे क्या कह रहे हैं, यह देखिये ।"

"अरे क्या कहेंगे वे यही न कि हजार ज्योतिर्लिंगों की स्थापना करो । हम तुम्हारे अंदर वही स्थापना करेंगे। क्या देखेंगे उस मरियम को, उस कुआरी मां को ? उसने भी कभी ऐसा ही किया होगा ।" कहते हुए उस युवक ने किल का हाथ पकड़ लिया । किल ने अपना हाथ छुड़ाकर एक भरपूर तमाचा उस युवक के गाल पर ऐसा जड़ा कि युवक अपने दक-दक पोशाकों के साथ गिर पड़ा । उच्चतम

तकनीक से सजे हुए लोगों की नीचता देखकर वह तमतमा गयी थी । बाप रे बाप । कैसे होते है ये लोग । जिनके सहारे ये टिके हुए होते हैं, उस मां के बारे में, जिनके सहारे ये बचे हुए हैं, उस प्रभु के बारे में ऐसी पागल बातें ? क्या यही वे लोग है जिनपर हम नाज करते हैं। राम ! राम !! किल ने अपने दोनों हाथों से अपना कान थाम लिया ताकि उस परम पिता के बारे में कोई अनर्गल बात उसके कानो तक न पहुँचे ।

उधर हेमा और माधवी भय और दहशत से काँपने लगी । तमाचा उस युवक को लगा था, नशा हेमा और माधवी का उतर गया था । बाप रे बाप, हमने किल को लाया था, पर बात यहां तक पहुँच जायेगी, यह नहीं जानती थी । अब वे खड़ी खड़ी अपनी मौत की प्रतीक्षा करने लगी ।

अबतक उस युवक का सारा नशा उतर गया था । उसने खड़ा होकर अपने दकदक करते हुए कपड़े को झाड़ा और उसी में से अपना पिस्तौल निकाल लिया । धीरेधीरे वह किल की ओर बढ़ने लगा । "हम तुम्हें अपने दिल की रानी बनाना चाहते थे, और तुमने हमारे साथ ऐसा सलूक किया । क्या तुम जानती हो तुमने किस के साथ यह घृष्ठता करने की जुर्रत की है ? गुस्ताख लड़की हमारे एक इशारे पर सियासत का सूरज उगता है और दूसरे इशारे पर सियासत का सूरज डूबता है ।"

"उस परमात्मा को देखते हो, जिसके इशारे पर तुम और हम भी डूबते हैं।' अब किल आश्चर्यजनक रूप से सख्त हो गयी थी । मरने से पहले वह सिंहासन के उस भूखे भेड़ियें को उसका असलियत बता देना चाहती थी । "काश इस सियासत का सूरज डूब जाता, जिस पर हम कभी अश्रुपूरित हो गयी थीं ।"

वह युवक अब गुस्से से घर थर कांपने लगा । इतना बड़ा अपमान उसने अपने दस पुस्तों में न कभी सुना था न कभी पढ़ा था । थर थर कांपते हुए उस युवक ने गोली दाग दी। उस असंगत हाथ से गोली छुटी और किल के पैर में लग गयी । किल रे प्राण रक्षा में दरवाजे की ओर भागी । युवक ने अपने पिस्तौल का घोड़ा दूसर ी बार दबा दिया । हेमा को दूर ढकेल कर किल दरवाजे से बाहर भागी । गोली हेमा के सीने पर लगी और वही ढेर हो गयी । युवती कहाँ भागी, इसका कुछ भी खयाल नहीं करके उस युवक ने उस घटना का एक मात्र गवाह माधवी को भी मार गिराया ।

तबतक उस युवक के अंगरक्षकों ने उसपर किसी संभावित खतरे के डर से उसे चारों तरफ से घेर लिया। कोई इसमें से भागी है, इसका होश किसी को न रहा । लड़ाई में हारे हुए जवान की तरह वह युवक भी किंकर्तव्यविमूढ हो गया ।

इस बीच भागती हुई किल सीधे जाकर गेट पर खड़े पहरा दे रहे उस बूढे बन्दुकधारी के चरणों में गिर पड़ी । वह जानती थी कि गेट बंद है, वह कही भाग नहीं सकती ।

"आप हमारे पिता समान है। आज एक बेटी आपसे प्राणों की भीख मांग रही है । मेरे पाण एवं मेरी अस्मत दोनों पर सियासत के इन भूखे लोगों की नजर पड़ गयी है । मेरे प्राणों की रक्षा न करें पर क्या आप मेरी अस्मत की भी रक्षा नहीं करेंगे ? मै जानती हुं कि आप उन्हीं के पहरेदार है, पर क्या आप मेरे भी पहरेदार नहीं है? न जाने कहां-कहां पर भटक भटक कर दूसरे दूसरे देशों की अस्मत की रक्षा की होंगी आपने ! आज आपकी बेटी की रक्षा खतरे में पड़ गयी है। क्या इसकी रक्षा नहीं करेंगे ?"

इतनी करुणापूर्ण आवाज, इतनी कारुणिक उलाहना । एक बार उसने अपना बंदूक सावधान की मुद्रा में तान दिया फिर उसे एक तरफ रख कर चरणों में पड़ी हुई उस लड़की के सर पर हाथ रख दिया ।

"उठ बेटी, हम पहाड़ों के आदिवासी हैं, मगर । हमने आजतक दूसरों की रक्षा की है, आज अपनी भी करेंगे। कौन हो तुम? तुझे जाते हुए मैंने देखा तो था, पर तुमको भी मैंने उन्हीं लोगों में से एक समझा था- ।"

"मैं सुबह की भटकी हुई आपकी बेटी हूँ और तराई में रहती हूँ। उन लोगों ने आज मुझे वहां से यहां पर लाकर मेरी..........."

"क्या तराई, क्या पहाड़ ? उठो बेटी, जल्दी करो नहीं तो पहाड़ के ये र खवाले यहाँ पहुँच जायेंगे ।

जल्दी से समीप के ही अपने क्वाटर में उसने उसे छुपा दिया ।

दूसरे दिन अखवारों के मुख पृष्ठों पर छपा था-

"हेमा और माधवी की रहस्यमय हत्या । लाश सेती के खण्डहरों से बहकर , मुख्यधारा में मिली। दोनों को फुसला कर लाने वाली युवती फरार ।"

शाम को किल ने उस शहर को छोड़ दिया । द्वारपाल भी उसे कैसे रोकता । शहर में खुफियां गतिविधियां बढ़ गयी थी ।

●

६

जो हलचल हो चुकी थी, वह धीरे-धीरे बढ़ रही थी । हलचल की यह छोटी सी लहर, क्या पता अपने किनारे तक पहुंचेगी या बीच में ही समाप्त हो जायेगी ।

प्रेम, ममता, सहानुभूति, क्रोध, आक्रोश, सबके जवान बंद थे । सिर्फ धोखा गद्दारी, चाटुकारिता ने अपनी रफ्तार तेज कर ली थी ।

७० वर्ष की वह बूढ़ी औरत इन्हीं रास्तों से होती हुई रोज उस टीले पर आती थी और अपनी उदास एवं मोतियाविन्द से पथरायी आंखों से चारों तरफ देखा करती थी । कहीं उसे इस बुढापे का सहारा नहीं मिलता था । शाम गहराने के पहले ही वह फिर उसी तरह अकेले अपनी झोपड़ी में लौट जाती थी । कभी-कभी जब भी देर हो जाती एक गुमसुम लड़की अपनी चुप जुवानों के साथ बिना टोके उसे लेने आ जाया करती थी । उसका चहकना खो गया था, और जिस तरह से वह अपने आपको अकेलेपन के सैलाव में बहा देना चाहती थी, जिस तरह से वह चाहती थी कि दुनिया के किसी भी जीव से उसकी मुलाकात न हो उसी तरह से वह उस बूढ़ी औरत को भी, उसके अकेलेपन को छेड़ना नहीं चाहती थी । वह जानती थी कि वह औरत दिन भर उस टीले पर कौन सी रोशनी खोज रही होती है। लेकिन शाम गहराने पर थोड़ी देर होने पर भी वह घबड़ा जाती थी और खुद उस टीले की ओर अनायास ही चली जाती थी ।

आज उसी टीले पर बैठकर अपने ५५ वर्षों के अनुभवों को वह देख रही थी । बहुत कुछ देखा था, उसने । जब १५ वर्ष की चकमक जवानी थी तो इस गांव में वह आयी थी । इसी टीले पर बैठ कर उसने इन खेतों और खलिहानों, उनमें काम करते हुए बूढे एवं जवानों को तथा दूर से दिखलाई पड़ रहे पहाड़ों को देखा है ।

तब सारी दुनियाँ के रंग, तब सारी दुनियाँ के रूप एक दिन इस तरह से मुरझा जायेंगे वह नहीं जानती थी । अपने साथ काम करते हुए बूढ़े एवं जवानों को देखा था आज उसमें से कोई नहीं है । एक-एक कर सभी छोड़कर चले गये। गंगीया की नानी मां ही मेरी सबसे बड़ी सहेली थी और वही सबसे पहले चली गयी । दो बर्षों का भी साथ नहीं हुआ । जिस बच्ची को छोड़कर वह चली गयी, उसकी शादी हमें ही करनी पड़ी। बाप ने दूसरी शादी कर ली। जब वह इसको अधेड़ उम्र में ही छोड़कर चल बसी, तो अब किस बूते पर शादी करते । अब गंगिया ही अपने नाना की सेवा कर रही है। दम रहते गंगिया की मां को पूछा भी नहीं । नहर की रट लगाते लगाते बेचारी चली गयी, पर सौतेली मां जब तक जिंदा रही मजाल नहीं कि वे उधर कदम उठा पाते । कदम उठा पाये, उसके इस दुनिया से उठने के बाद ही । अब उसी की बेटी को गंगिया को बुढापे का सहारा बना कर लाये है ।

गंगिया नाम लेते ही वह उठ बैठी, नहीं तो शाम गहराते ही वह उसी तरह हमें खोजती हुई चली आयेगी जिस तरह मैं अपने बुढ़ापे के सहारे को खोजती हूँ । पर कहाँ खोजें, उसे कहाँ रखा है लोगों ने ? क्या खाता होगा, क्या पीता होगा, कैसे सोता होगा ? जब तक खाने के बाद मैं सुपारी नहीं दे दूं, उसका खाना नहीं पचता था । जब तक सोने के बाद सिरक मैं नहीं ओढा देती तब तक उसको नींद नहीं आती थी ।

लोग कहते हैं कि उसने माता से गद्दारी किया है। सीताराम और ठाकुर उस दिन यही कह रहे थे । तिरपट और देवधारी बाबू जब यहाँ पर आये थे तो उनलोगों ने भी यही कहा था । लेकिन उसने मुझसे कभी भी गद्दारी नहीं किया । पूछा तो उनलोगों ने बताया कि नेपाल माता से । ७० वर्ष की उम्र में तब पहली बार पता 'चला कि उसके अलावा एक और भी उसकी मां है नेपाल। पर वह कहा है ? कैसी है, पूछने पर तिरवट बाबू ने कहा यह देश । इस देश के प्रति, इस नेपाल के प्रति उसने गद्दारी की है और धोखाधड़ी और देवधारी बाबू ने डपट कर कहा था कि नेपाल माने की है। इसलिए वे जेल में चक्की पीस रहे हैं । तब जाकर उसे पता चला कि नेपाल भी माता होती है। १५ वर्ष की चहकती हुई उम्र में जब वह रमगढ़वा से पत्रहटी गांव में आयी थी तो उसे सिर्फ इतना ही पता था कि रमगढ़वा ओह पानी मे और पत्रहट्टी यह पानी में पड़ता है। यह "ओह पानी और यह पानी" जब वह

अपने नैहर में जाती थी तब अपने उलटे क्रम में चलने लगता था । उसके आने के ५-७ वर्षों के बाद फिर कभी रमगढ़वा जाना नहीं हुआ । एक-एक करके नैहर के सभी लोग हैजे की चपेट में चले गये थे। तब से नैहर का दरवार नहीं देखा । २०-२५ वर्ष की उम्र में जब उसके गांव का कन्हाई भाग करके आया तो उसी ने एक बार उसे बतलाया था कि गांधी जी के कहने पर वह भारत माता को आजाद करा रहा है । अंग्रेजों के पकड़ने के डर से वह इस पानी में भाग आया था । उसी ने बताया था कि भारत भी एक माता है । उसके बाद मैं यह भूल है गयी थी । बचपन में माँ के साथ गाँव की माता को पूजने जाती थी । वह वनस्पति माता, दुर्गामाता सबको जानती थी । एक बार डंकन से ठीक होकर आने पर उसने डंकनी माता का प्रसाद खिलाया था । पर नेपाल माता और भारत माता भी होती है, उसे आज ही पता चला था ।

यही सब सोचते हुए वह चली जा रही थी । अमराई को पार करते-करते गंगिया ने उसे सम्भाल लिया । मोतियाविन्दु की पथरायी आंखों से, गहराते शाम के घूंधलके में उस बूढे जर्जर शरीर को कहीं भी ठोकर खाकर गिर जाने का खतरा था ।

"क्यों कब तक ऐसा चलेगा ? तुम्हें देखकर अब धीरज टूटा जाता है । आखिर कब तक रास्ता देखोगी ? उस कैदखाने से छुटकर आने की कोई उम्मीद नहीं कहती हुई गंगिया सिसकने लगी थी पर उसे कहीं पर लगा था कि वह आखिरी शब्द उस मां को नहीं पचेगा, उसने गलती कर दी है ।

"नहीं बेटी, ऐसा मत बोलो। हम उम्मीद लगाये बैठे हैं, जबतक वह नहीं आयेगा, ये प्राण अटके रहेंगे। क्या करूं, इसी रास्ते पर बैठकर वह मेरा रास्ता देखता था । तब अपनी जवान विधवा हाथों से जब मैं बाजार करके आती थी, उसके हाथों में लडडू थमाकर अंगुलियां पकड़े इसी अमराई से होकर गुजरती थी। अब कहा है वह अंगुली ? कौन छीन लेता है हमसे हमारे सारे सहारे ? भरी जवानी में जब पूरन के बाप हमें छोड़कर चले गये तो पूरन को देखकर मन को तसल्ली कर लेती थी । भगवान जब कोई चीज छीन लेता है, तब उसके बदले दुसरा दे जाता है । पर ये लोग हमारे पूरन को छीन कर हमें क्या दे रहे हैं ? उनके पास क्या है ? हमारे पूरन के बदले ?"

"यहां कोई कुछ नहीं देता मां, यहां सब छीनने वाले पैदा होते हैं। परमात्मा के सिवा यहाँ सब लूटेरे है। चल, रात होने लगी है। कहती हुई गमिया ने सिसकती हुई उस बूढ़ी औरत को संभाल कर ले जाने लगी। उस बूढ़ी औरत को लगा कि उसकी हालत को देखकर ही गंगिया सिसक रही है। पर सिसकते सिसकते गगिया जब फूट-फूट कर रोने लगी तब उसे लगा था कि इस लड़की का मर्म भी कहीं गहरा चोट खाया है। खेतों के मुंडेरों से सम्भालते उसे ले जाते हुए शारदा ने उसे देखा। अमराई में ही एक कोने पर खड़ी शारदा ने उन दोनों के वार्तालाप को सुना वही खड़ी उसने गगिया को फूट-फूट कर रोते हुए देखा।

शारदा के सिवा गंगिया का मर्म कौन जानता है ? गाँव का कोई भी नहीं जानता। जब तक गंगिया ने उसे नहीं बताया था तब तक वह भी नहीं जानती दी। उसी ने उसे बताया था कि सीताराम कैसा आदमी है। जिस दिन वह शहर वाला युवक आया था, और ठाकुर ने ऐसा करवाया था मैं उसी दिन से सीताराम से छुट्टी कर ली थी। पूरन भैया जैसे लोग बुरे कैसे होगे नहीं नहीं में नहीं बोलूंगी। अभी हमारे पास से हटो, अभी यहां से भागो नहीं तो हल्ला करके सारे गाँव के लोगों को इकट्ठा कर दूंगी। जिस तरह तूने पूरन भैया को पुलिस से गिरफ्तार करवा दिया, उसी तरह से मैं तुझे पुलिस का चक्कर लगवा दूंगी। जिस तरह से तू ने गगिया को दुःख दिया, उसकी माँ को दुःख दिया, उसी तरह से मैं भी तुझे तड़पाउँगी। लूच्चे भाग यहाँ से नहीं तो मुँह नोच लूंगी। पूरन जैसे देवता को जब तूने नहीं छोड़ा तो मेरी अस्मत की सैदाई तुम नहीं हो सकते।

वह धीरे-धीरे कदम बढ़ाते और अपनी आंखों से घूरते हुए चला गया था। मैंने घृणा से अपनी आँखें फेर ली थी फिर उन्हीं आंखों में बड़े-बड़े आंसू टपक गये थे।

अब शारदा भी चुपचाप उनके पीछे पीछे चलने लगी। तभी खेत के मुंडेरों पर जाती हुई गंगिया के साथ पूरन की मां गिरने गिरने को हो गयी। शाम के धुँधलके में दोनों ने ही अपना संतुलन खो दिया। दौड़कर शारदा ने उन दोनों को पकड लिया।

"गंगिया न तुम्हें होश है न इसे क्यों ऐसी हालत बना ली है तूने अपनी"?

"देखती नहीं है तु इसकी विरह को अपने बछड़े को देख कर रम्भाने की भी शक्ति नहीं है। पर इसे कौन रोके, कैसे रोके, क्यों रोके ?"

"और अपनी विरह को तु क्यों छिपाना चाहती है ? क्या मैं रोज देखती नहीं। रोज पसाह के किनारे जाकर उत्तर की ओर मुंह किये घण्टों खड़ी रहती है। उन्ही पहाड़ियों में कहीं तुम्हारा पूरन खो गया है। उन पहाड़ियों में बनते बिगड़ते बादलो में क्या तुम पूरन के चेहरे की तलाश नहीं करती ? चलते समय पसाह के पानी को चरणामृत बनाकर पीती हुई तुम वापस मुड़ती हो। कहती हो कि यह पानी उन पहाड़ों से वह कर आ रहा है, जहां पर हमारा पूरन खो गया है।"

एक क्षण के लिए मोतियाविन्द से भथरायी दो बूढ़ी आँखों में दृष्टि की उर्जा अपनी पूरी शक्ति लगाकर बह गयी। बिजली की तरह चमकी वे आखें। उसी के साथ ही दोनों पाँव ठिठक गये। उसने नजरें ऊपर उठाकर गंगिया को देख ही लिया। सीता, सावित्री जैसा एक धुंधला सा चेहरा अपने अप्रतिम सौंदर्य, मासूम आँखें एवं चुप होठों से उसे देख रहा था। एक क्षण को उसे उसकी जवानी का चेहरा उसके सामने कौंध गया और आँखों के कोर भीगने लगे। उसे याद है, उस जवान आंखों के कोर भी उस दिन उसी तरह भींग गये थे जब पूरन के बाप के मरने के बाद, पूरन पैदा हुआ था। आज ये बूढ़ी आंखें भी उसी तरह भींगी हुई है। कोई फरक नहीं, कोई अंतर नहीं। उसने अपनी आंखों के कोर को आँचल के पल्लू से पोंछ लिया और धीरे से पूछा -

"क्या यह सच है बेटी ?"

गगिया चुप थी

"हाँ माँ, यही सच है ! मेरे सिवा गांव का कोई भी इस सच को नहीं जानता। पूरन यह नहीं जानते होंगे क्योंकि वे इतने भोले हैं कि हर लड़की को देख कर आँखें नीचे कर लेते हैं। उन्होंने गंगिया के किसी इशारे को पहचाना ही नहीं। तबतक पुलिस ले गयी। अब इसकी दशा मुझसे देखी नहीं जाती।" शारदा ने कहा।

अब दोनों विरहणी गले मिलकर फूट-फूट कर रोने लगी। पहली बार दोनों एक ही परिवार के सदस्य हो गयी थी। शारदा ने उनलोगों को बड़ी मुश्किल से चुप कराया। फिर दोनों पूरन की माँ को दोनों तरफ से सहारा देकर घर की ओर चली।

घर पहुंचकर दोनों ने उसे एक टूटी सी खाट पर लिटा दिया। दो कमरेवाले इस फूस में पूरन ने एक आगन्तुकों के स्वागत एवं मिटिंग के लिए रखा था। दूसरे कमरे में वह और उसकी माँ दोनों सोते थे। खाना पकाने का काम आगे बची थोड़ी

सी जगह तुलसी मे बने तुलसी के एक ऊंचे चबूतरे के पास, उसकी मां कर लिया करती थी । जाड़े में सोने के कमरे के एक कोने पर ही यह काम हो जाता था ।

कमरे में फूस के टाट पर ही तीन तस्वीरें लटकी हुई है । एक भगवान विष्णु की जिसकी पूजा उसकी माँ सुबह शाम धूपवती दिखा कर करती है । उसे याद नहीं कि कौन सा वह दिन है जिस दिन वह विष्णु को अगरबती न दिखाई हो । रोज अगर बती दिखाकर तुलसी के चबूतरे पर उस अगरवती को वह गाड़ आती थी। नेपाल का नक्सा भगवान विष्णु के बगल में लटका हुआ है । जब पूरन स्कूल में पड़ता था, तो इसे बड़े प्रेम से लाकर विष्णु भगवान की बगल में ही लटकाया था । उसके बाद उनको साफ करना पोछना भी छोड़ दिया। उसी की बगल में खुद पूरन की माँ की तस्वीर है। इन दोनों के बीच में वह तस्वीर धुंधली सी पड़ी हुई है । पूरन के जेल चले जाने के बाद गर्द गुब्बार से दिखलाई भी नहीं पड़ रही हैं। उसे खांट पर लिटाकर गगिया पाँव दबाने लगी। मिट्टी के तेल की एक छोटी सी डिबिया शारदा ने जला दिया था। उस डिबिया के मद्धिम प्रकाश में मोतियाविन्द से भथरायी दो सूनी आँखें ऊपर विष्णु को देख रही थी। आज वह इस दुःख में भी थोड़ा खुश थी और उसी तरह वह उन्हें धन्यवाद दे रही थी ।

"माँ आज यहाँ खाना नहीं बनेगा। मैं अपने घर से दोनों के लिए खाना लाती हूँ ।" कह कर शारदा घर से बाहर हो गयी। वह जल्दी जल्दी अपने घर की और पाँव बढ़ाने लगी थी ।

उसके चले जाने के बाद पूरन की माँ बड़ी देर के बाद गंगिया की ओर मुखातिब हुई । इस बीच पता नहीं कहाँ खो गयी थी ।

"बेटी कल ही में राम रतन से भेंट करके कहूंगी । हम दोनों आखिर कब तक जीयेंगे । मेरा बेटा इतना बुरा नहीं है। सीताराम और ठाकुर झूठ बोलते हैं । निरपट बाबू और देवधारी बाबू भी गलत कहते हैं । मेरा बेटा किसी माता से गद्दारी नहीं किया है। एक दिन वह आ जायेगा । तब........। मैं उनसे कहकर तुम्हें कल ही यहां ले आउंगी ।

"पर मां नाना जी यहाँ लाने के लिए नहीं मानेंगे। आखिर वे भी तो अकेले है ?"

दूसरे दिन से गंगिया पूरन के घर में चली आयी । और उसी के साथ पुलिस ने उस झोपड़ी को चारों ओर से घेर लिया ।

सारे गांव में तहलका मच गया। पुलिस पूरन को तो ले ही गयी है, अब यहाँ पर क्या करने आयी है ? क्या वह उसकी बढ़ी मां को भी ले जायेगी ? नहीं ऐसा कभी नहीं करने देंगे । अब इससे अधिक ज्यादती पुलिस नहीं कर सकती । वह सिर्फ पूरन की मां नहीं है, हम सारे गांववालों की माँ है । उस बूढ़ी जजर मो को क्यों ले जायेंगे ?

आनन-फानन में गाँव के कुछ नवयुवक पूरन के घर की ओर जाने लगे । एवं अधेढ लोग खामोश थे या अपने-अपने लड़कों को डाँट फटकार रहे थे ।

"अरे कैसे नहीं ले जायेंगे ? इस पूरन के बच्चे ने सारे गाँववालों को तबाह कर दिया है । जब मन में आता है, इस गाँव में पुलिस घुस पड़ती है । सारे गाँव की इज्जत मिट्टी में मिल गयी है । जहाँ पुलिस की घुसपैठ हो जाय, वहाँ की इज्जत की रक्षा, भगवान ही करें । यह बूढ़ी जब तब अनजान नवयुवको को अपने घर में बुलाती रहती है। रात भी कोई युवक आया था और सुबह होते ही भाग निकला । जब पुलिस को पता चला अपना काम करने चली आयी । हम और तुम उसे रोक कैसे सकेंगे ?"

"अरे कैसे नहीं रोक सकेंगे ? चलो हम पुलिस वालों से लोहा लेंगे ।" कुछ खौलते नवयुवकों ने लाठी- बल्लम निकाला और पुलिस से लोहा लेने चल पड़े ।

गंगिया सभीत हिरनी की तरह पुलिसवालों को देख रही थी । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि पुलिस अब यहाँ क्यों आयी है ? रात तो ऐसा कोई भी आदमी नहीं आया था ? सिर्फ मैं और शारदा काफी देर तक माँ को खाना खिलाती एवं पैर दवा रही थी । फूस की टाट के नक्से से सटकर जिसे पूरन ने लटकाया था, पूरन की माँ सब तमाशा टुकुर-टुकुर देख रही थी । जब से पूरन गया है तब से इस तरह कई बार पुलिस आई और चली गयी । पर इस बार तो इन लोगों ने चारों तरफ से इस घर को घेर लिया है । नहीं नहीं हमने तो किसी को नहीं छुपाया ? एक बार पूरन का कोई साथी आया था और उसके मना करने के बाबजूद उसके हाथों पर हजार रूपया रख गया था ।

"नहीं माँ पूरन की अनुपस्थिति में, तुम्हारे देखभाल के लिए।" उसके बाद तो फिर कोई नहीं आया ।

"क्यों इन्सपेक्टर साहब अब क्या लेने आये हैं ? पुरन को तो आप ले ही गये। कई बार आप यहाँ पर आये पर कुछ हाथ नहीं लगा ।" लाठी लिए एक गवरु जवान ने पुलिस को टोकने की हिम्मत की ।

"तुम कौन होते हो हम से जवाब-तलब करने वाले ? हम अपना काम बेरोक-टोक करते है। तुम्हारे प्रश्न और प्रतिप्रश्न के जवाब हम नहीं देते। इस बार हमें पक्की खबर मिली है कि बाहर का कोई युवक यहा पर आया है। रात देर तक इस घरमें प्रकाश जलता रहा है।" इन्सपेक्टर मल्ल ने खुद युवक को डाँटते हुए कहा।

"तो क्या आप इस घर में, इस गाँव में प्रकाश भी नहीं जलने देंगे ? कौन है वह गद्दार जो प्रकाश जलने की खबर लेकर आपके पास जाता है ? क्या आप उसका नाम बतायेंगे ? हम आपसे पहले उस आदमी से ही निपटना चाहते हैं।"

"ऐ कौन है ? पकड़ लो इसे कौन है यह जो टॉय-टॉय करता है। इसे भी इन लोगों के साथ ले चलो।" इन्सपेक्टर मल्ल ने एक सिपाही को हुक्म दिया। इतनी बातें उन्होंने अपनी जिंदगी में कभी नहीं सुनी थी।

"ओ कैसे पकड़ लेंगे ? पुलिस है तो क्या हुआ ? आप ज्यादती नहीं कर सकते। चलो बढ़ो और पूरन की माँ को सब घेर लो। पुलिस वहाँ तक कैसे पहुँच जायेगी ? वह हमारी मां है। माँ की रक्षा करने के लिए बनी इस पुलिस से आज अपनी माँ की रक्षा करो, युवकों आगे बड़ो।"

अपने सरदार के इतना कहते ही लाठी और बल्लभों को लेकर सभी युवक आगे बढ़े। उधर से पुलिस भी लाठियाँ लेकर सभी पर टूट पड़ी। दोनों तरफ से जमकर लाठियां चलने लगीं। पुलिस और गांव के जवानों की यह लड़ाई एक अजीव रूप ले रही थी। "मारो मारो इन पहाड़ियों को, हमारी तराई में हमारी माँ को मार ने आये हैं। हमारा हक छीनते हैं। ज्यादती की भी कोई हद होती है। आखिर हम कब तक सहते रहेंगे ?"

"अरे एक भी मधेश की पुलिस नहीं है, नहीं तो वे ऐसा नहीं करते। सबको शाले पहाड़ों पर बर्फ खाने के लिए भेज देते हैं। हरामजादे अपने यहाँ आकर हलवा खायेंगे और हम वर्फ खायेंगे ?" भीतर बहता हुआ सारा आक्रोश अब बाहर बहने लगा था। सदियों से बनती हुई लकीरें अब अपना आकार ग्रहण करने लगी थी। तभी एक सनसनाती हुई गोली आकर एक युवक के सीने में लगी और वह वही धराशायी हो गया :-

"अब तक सहते रहे। तुम नहीं जानते की हमारे पास क्या है ? तुम्हारी जुवानों को हम खामोश भी करना जानते है।" इसपेक्टर ने कहा।

इसके साथ ही भीड़ में हाहाकार और चित्कार शुरू हो गयी। इसके साथ ही सारी भीड तितर-बितर होने लगी। पर कुछ लोगों ने जाकर पूरन की मां को धेर लिया।

इक्सपेक्टर साहब अपने जवानों के साथ उस छोटी सी झोपड़ी में घुसे और एक-एक करके घेरे हुए युवकों को अपनी गोली का निशाना बनाया और पूरन की मां का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खीच लिया। उसी के पास खड़ी, गंगिया को जब किसी पुलिस ने खिंचना चाहा, एक युवक ने अब भी अवरोध उत्पन्न कर दिया। इस्पेक्टर साहब ने उसको निशाना बनाकर गोली चलायी, पर पह गोली उसे न लग कर उस नक्से पर लगी जिसे पूरन ने लटका रखा था और धुंधला हो गया था। नक्से का शीशा चकनाचूर हो गया, पर वह टोट की दीवार पर उसी तरह डगमगाता र हा। इक्सपेक्टर ने एक दूसरी गोली दागी और उस युवक ने तड़पकर गगिया का हाथ छोड़ दिया। गंगिया अब पूरी तरह से पुलिस की गिरफ्त में आ गयी। युवक गिरने से पहले अपने आप को सम्भालने के लिए टाट पर लटके नक्से को पकड़ा पर टाट की दीवार पर टीके होने के कारण वह टूट गया और उस नक्से को लिए दिये ही वह युवक धराशायी हो गया। उसकी आखे पथरा गयी और नक्सा हाथ से छूटकर गिर गया।

घर्रर्र ऽ ऽ ऽ, मोटर गाड़ी खुली और थाने की ओर रवाना हो गयी। उसपर गंगिया, पूरन की मां और कुछ युवक अभियुक्त बने बैठे थे। और युवकों को हवालात में रखकर दो सिपाही पूरन की माँ और गंगिया को धकेलते हुए डी. एस. पी. कार्यालय में ले गये। दरवाजे पर ले जाकर दोनों सिपाहियों ने दोनों को जोर से धकेला। दोनों घुटने के बल कमरे में कुर्सी पर बैठे डी. एस. पी. साहब के आगे गिर पड़ी। डी.एस.पी. साहब घुमावदार कुर्सी को घुमाते हुए उनलोगों की ओर मुखलिव हुए गंगिया घुटने के बल टिकी हुई ही अपनी सभीत आंखो से कमरे में चारों तर फ नजर दौड़ायी। डी.एस.पी. के अगल-बगल कुछ चीजे पर्दे में ढकी हुई थी। उसकी कुर्सी के ऊपर राजा-रानी का फोटो टंगा हुआ था। उसके एक तरफ एक बोर्ड टंगा हुआ था जिस पर लिखा हुआ था :-

"राजमुकुट और देश की स्वतन्त्रता की रक्षा करना ही, वीर सिपाहियों की बहादुरी है।"

"कौन है वह युवक जो तुम्हारे यहाँ आता है ? हमें उसका पता चाहिए। तुम्हे बताना होगा।" अट्टहास करते हुए, डी. एस. पी. साहब ने पूछ दी।

"हम किसी युवक को नहीं जानते, हजूर।" संभीत नजरो से देखती गंगिया ने कहा।

"पर हम जानते है कि तुम कैसे बताओगी।" कहते हुए डी.एस.पी. साहब अपनी कुर्सी से उठकर गंगिया की ओर लपके। घुटने के बल पड़ी उस युवती की चोली पकड़ कर उसने ऊपर उठाया तो वह अपने को छुड़ाती हुई एक ओर छिटक गयी जहाँ पर पर्दे के नीचे कोई चिज छपी हुई थी। डी.एस.पी. साहब ने उसकी चोली पकड़ कर उसे एक तमाचा लगाया। युवती पर्दे से टकरायी, पर्दा हटा और उसमें से पुलिस रिकार्डो से भरे हुए एक नक्से ने झांका। पुलिसवाले इन नक्सों में अपने गोपनीय रिकार्ड भरे हुए होते हैं।

अब तक मौन पड़ी पूरन की मां बहू की इज्जत लूटती देखकर उठी और झपट कर उसकी ओर जाने लगी। तभी एक पुलिस ने एक डंडा चलाया। डंडा उस बूढ़ी औरत की पीठ और सर पर लगी। बेदम शरीर सर पर लगते ही बेहोश हो गयी। लड़खड़ाती हुई वह बहू के पास के पर्दे से टकरायी। पर्दा एक बार फिर हट गया और उसमें से वही नक्सा फिर दिखलाई पड़ा। बेहोश मां को गंगिया ने लपक कर सम्भाला, पर्दा फिर अपने नक्से को ढक लिया।

डी.एस.पी. और वे दोनों सिपाही सकते में आ गये।

अरे यह तो मर गयी बाप रे बाप अब क्या होगा ? गाँव के मरे हुए लोगों को तो हम कह देंगे कि लोगों ने दंगा किया और पुलिस को गोली चलानी पड़ी। पर यहाँ सुबह होते ही अखबारों में हमारी धज्जियां उड़ने लगेगी। गंगिया यह सुनकर, फूट-फूट कर रोने लगी। डी.एस.पी. साहब ने उसे डाँट कर चुप कराया। ऐसे केश वे पता नहीं कितने डील कर चुके होगे। डर से भयभीत गंगिया अपनी माँ की लाश लिए चुपचाप पड़ी थी। डी.एस.पी. साहब सोचने में मग्न थे।

तय हुआ कि लाश को इसी तरह रख दिया जाय। शाम होते ही लाश को उस गाँव की झोपड़ी में पहुंचा दिया जायेगा, ताकि मौत डी.एस पी कार्यालय में हुई है , यह कोई नहीं कह सके। गंगिया को ले जाकर एक अलग कमरे में बंद कर दिया गया। डी.एस.पी. कार्यालय में ताला लगा दिया गया। किसी को कुछ पता नहीं चला।

आधी रात को सिर्फ उन दोनों सिपाहियों ने चोरों की तरह उस लाश को जीप के अंदर रखा। डी.एस.पी. साहब की उपस्थिति में जीप पत्तरहट्टी की ओर चल

दी। गांव की अमराई के इधर उस टीले के पास वह गाड़ी रूकी जिस टीले पर वह रोज अपने पूरन की प्रतीक्षा करती थी। दोनों सिपाहियों ने उसकी लाश को नीचे उतारा और ले जाकर उस टीले पर रखा। उसकी गर्दन अपनी भथरायी आंखों के साथ नीचे लटक गयी। आंखें एक टक, उत्तर दिशा की ओर निहार रही थी। ठीक उसी तरह जिस तरह जीवित रहते वह वहाँ जाकर निहारा करती थी।

एक क्षण वहाँ सुस्ताकर दोनों सिपाहियों ने उसे फिर उठाया और उस अमराई को पार करते हुए उन डंडेरों पर चले गये जिसपर उसे सम्भालते हुए गंगिया और शारदा एक दिन पहले उसे उसकी झोपड़ी में पहुंचाने ले जा रही थी। आज भी ये दोनों सिपाही आधी रात में उसी रास्ते पर उसकी लाश को सम्भालते हुए ले जा रहे थे। कल शारदा की बात सुनकर उस माँ की आंखें, एक बार अपनी पूरी शक्ति के साथ चमकी थी। पर इस अंधेरी रात में आज उसकी आंखें........।

गाँव में बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ था। कुछ लोग गांव छोड़कर भाग गये थे। जो लोग थे वे सब अपने-अपने घरों में किसी बड़ी विपत्ति के अंदेशा से दुबके पड़े हुए थे। चुप-चाप दोनों सिपाहियों ने उस झोपड़ी में कदम रखा, टार्च की धीमी रोशनी जलायी और दबे पांव लाश को उतार कर जल्दी से रखा और चलने के लिए मुड़े ही थे कि लगा किसी ने उन्हें देख लिया है। दोनों एक क्षण को ठिठके औरस्ते से टार्च जलायी। वहां पर गोली खाया वह युवक ही उन्हें देख रहा था। लाश उस अही नक्से पर पड़ गयी थी। नक्सा लाश के नीचे पड़ गया था और खड़ा खड़ा हट घर किसी के वहाँ होने का आभास दे गया था। चोरों की तरह भयभीत सिपाही इसी आवाज से डर गये थे।

अब आश्वस्त होकर इधर-उधर देखते हुए वे फिर उसी तरह दवे पाँव घर में से निकले और इस बार लम्बे-लम्बे कदम बढ़ाते हुए, सर से उस टीले पर पहुँच गये। ड्राइवर ने गाड़ी को स्टार्ट किया और उनलोगों ने एक बार भी मुड़कर पीछे नहीं देखा। अब कोई उन्हें पकड़ने वाला नहीं था। वीर सिपाहियों ने राजमुकुट एवं देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई बड़ी बहादुरी और इमान्दारी से जीत कर वापस लौट रहे थे। दूसरे दिन दूसरे युवका एवं गंगिया को भी छोड़ दिया। युवकों को कुछ गया पता नहीं था। गंगिया सबकुछ देख कर भी चुप थी। घर जाकर वह मां के शरीर पर छापड़े खाकर रोने लगी। एक दिन पहले ही तो वह इस घर की बहु बनकर

आयी थी । उसके शरीर पर पछाड़े खाते समय पूरन की मां एवं उससे दबे नक्से में हरकतें होने लगती थी। शारदा ने आकर बड़ी मुश्किल से उसे चुप कराया ।.

X X X

घर्रर, घर्रर, घर्रर ....

"एक जीप जेल के दरवाजे से खुली। उसके खुलते ही जेल के अंदर की कैदियों में खलबली मच गयी । इतनी रात को लोग उन्हें कहां ले जा रहे हैं ? दाल में अवश्य कुछ काला है।" सभी लोग अपने-अपने कमरे एवं अपने सेलों में गुफ्तगू करने लगे । सभी लोग धीरे-धीरे इस बात पर निर्णायक ढंग से सोचने लगे कि अगर इन्हें कुछ भी हुआ तो हम जेल में भूख हड़ताल से लेकर उन सभी आन्दोलनों का प्रदर्शन कर ेंगे जो जेलों से बाहर होते हैं ।

दोनों कैदियों की आँखों पर काली पट्टियां बांध दी गयी। आगे की रोशनी काली स्याह अंधकार से घिर गयी। कुछ देर तक उन्हें उसी तरह इधर-उधर घुमाते रहा गया। मोटर की घर्घराहट को छोड़कर उन्हें कोई शब्द सुनाई नहीं पड़ता था । अंत में उन्हें एक जगह पर उतारा गया और आंखों पर काली पट्टियों के साथ ही पकड़ कर आगे चलने के लिए कहा गया। एक दरवाजे के भीतर प्रवेश करने के बाद पहली बार उसे गरजते हुए शब्दों की आवाज सुनाई पड़ी ।

"अब यहाँ से तुम्हें अपनी गर्दन एवं कमर को नीचे झुका कर चलना है ।"

"कौन हैं आप ? मैं नहीं जानता, पर सुन लीजिए। यह गर्दन परमात्मा के सिवा किसी के सामने नहीं झुकती । कमर अभी इतनी जवान है कि झुकने की अस्वाभाविकता हासिल नहीं करेगी ।"

"कैसे हैं ये लोग ? जब से आये हैं तब से अपने मन का राजा ये खुद हैं । जो मन में आता है, वह कहते हैं । किसी बात को मानत नहीं है। अरे अब तुम लोग परमात्मा के ही पास जा रहे हो ।" वह आवाज फिर गरजती हुई आयी ।

अंतिम वाक्य को सुनकर दोनों कैदियों ने काली पट्टियों के स्याह अंधकार में ही एक दूसरे की ओर मुँह घुमाया। तो क्या हमें कही पर हत्या के लिए ले जाया जा रहा है ? फिर उनके चेहरे पर एक सख्ती दौड़ गयी ।

"हम केवल अपने मन के राजा ही नहीं बल्कि पूरी अवज्ञा के सतर्क दूत भी हैं । आप अपनी बेबकूफ बातों को हमसे जबरजस्ती मनवाने की कोशिश न करें ।"

"ओफफोह ! अच्छा, चलो भाई, नाकों में दम कर दिया है। अगर उनके सामने हाजिर न करना होता तो इनकी बातों से इन्हें हम यहीं गोली मार देते ।"

फिर दोनों कैदी उसी तरह सीना ताने वहाँ पर ले जाये गये जहाँ के अपूर्व प्रकाश उनकी पट्टियों को छेदकर उनकी आँखों में पहुंचती थी। फिर भी उन्हें सही पहचान में नहीं आते थे । काली काली छायाओं के रूप में लोग पंक्तिबद्ध खड़े थे। सबकी कमर में म्यान जैसी कोई चीज लटकी हुई थी। सामने कोई उच्चतम चबूतर ा बना हुआ था जिस पर कोई जवान आदमी बैठा हुआ था । जिन लोगों ने उन कैदियों को लाया, उनलोगों ने अचानक कैदियों को इस तरह ढकेला जिसके लिए वे कैदी तैयार नहीं थे । दोनों अपनी काली पट्टियों के साथ ही उन काली काली छायाओं के बीच में उस चबूतरे पर बैठे युवक के सामने गिर पड़े। फिर तुरंत वे लोग अपने आपको सम्भालते हुए सीना तानकर खड़े हो गये ।

"आँखें नीचे करो गद्दारों । यहाँ हर किसी की कमर हर किसी की नजर झुकी होती है ।" एक स्वर से उन काली काली छायाओं की ओर से आवाजें आयी ।

"हम अपने पूरे अनादर एवं हिकारत के साथ इस हुकम की अवज्ञा करते हैं । जब आंखोँ पर काली पट्टियाँ बाँध दी गयी हो, उसे झुकाने की क्या जरूरत ? हम उस जगह की अवज्ञा करते हैं जहाँ पर लोगों की कमर, लोगों की नजरें झुकी होती हैं ।"

"क्या कहते हो गद्दार ? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि तुम कहाँ पर उपस्थित हो ?"

पुनर्नवा ने देखा, उन सभी काली काली छायाओं के हाथ अपनी-अपनी बगल में गये और खड़ खड़ करने लगे । सामने चबूतरे पर बैठी काली छाया ने इशारे से उन्हें रोका ।

"इस स्याह अंधकार में हमें तो यही लगता है कि हम भूतबंगले में उपस्थित हैं जहाँ पर भूत हमारे चारों तरफ काली काली छायाओं के रूप में खड़े जर आ र हे हैं ।"

"बस, अब और आगे नहीं युवक, क्या तुम जानते हो कि तुम कौन हो ? क्या तुम जानते हो कि इस गुस्ताखी की सजा क्या है ?" पुनर्नवा ने देखा अब उसे चबूतरे की छाया उसकी और मुखातिब हुई है ।

"हम वही है जो आपसे नजर मिला सकते हैं। हम वही हैं जो आपकी सजाओ को भुगत सकते हैं और हम वही हैं जो एक दिन आपको भी सजाय दे सकते हैं ।"

“बहूत खूब ? क्या तुम मुझे जानते हो ? क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ ?”

“इन छायाओं को देखकर हमें पता चलता है कि आप इन पहरेदारों के बीच में हुक्मनामा जारी करने वाले एक कैदी हैं । और हम इस हुक्मनामें से वंचित दूसरे कैदी हैं । कौन है आप मैं नहीं जानता पर क्या आप बतला सकते हैं कि आप कौन हैं ? क्या आपको अपनी पहचान पता है ?”

चटाक ! चटाक !! चटाक !!!

चबूतरे पर बैठा युवक उछलता हुआ आया और पुनर्नवा के गालों पर कई चाटें जड़ दिया। पुनर्नवा के शरीर के सारे खून का बहाव उसके चेहरे की ओर होने लगी । उसके पास खड़े पूरन का भी सारा शरीर सख्ती से तन गया। मारते हुए युवक ने अब एक आदमी को हुक्म देकर उनकी आंखों की पट्टियों को खुलवा दिया। पुनर्नवा और पूरन की आँखें तेज रोशनी में चौधियां गयी। उससे भी ज्यादा चौधियां गयी उनकी आँखें अपने सामने खड़े व्यक्ति के पोशाक को देखकर । उस पोशाक से झिलमिल झिलमिल रोशनियाँ निकलकर सबकी आँखों को चौधियाँती हुई अपने अंदर सबकी छवियां बना रही है। उस व्यक्ति की आँखों में खून उतर रहा था, फिर भी संयत ही था। दोनों ने अब उस व्यक्ति को पूरी तरह पहचान लिया था, फिर भी वे चुप थे ।

“पहचानो मुझे मैं कौन हूँ, पहचानो इस पोशाक को, देखते हो इसे ? उस व्यक्ति ने पुनर्नवा की ओर मुखातिब होकर कहा ।

पुनर्नवा ने प्रकट में कुछ भी नहीं बोला। पर मन ही मन उसने सोचा कि इसी पोशाक के बारे में उसने बचपन में पढ़ा था जिस पोशाक की सत्यता को एक बच्चे ने अपनी पूरी वेदरदी के साथ अपने पिता को प्रकट कर दिया था ।

पुनर्नवा को चुप देखकर उस व्यक्ति की आँखों में और खून उतर गया । वह अपनी क्रोधित लाल आँखों के साथ ही पुनर्नवा का हाथ पकड़ कर उस दीवार की ओर ले गया जहाँ पर एक बहुत बड़ा नक्सा टंगा हुआ था ।

“क्या तुम देखते हो कि यह क्या है ?”

“उन काल्पनिक रेखाओं का जोड़ जिसे हम नेपाल कहते हैं ।”

“चटाक”

उस व्यक्ति ने उसे एक तमाचा और लगाया ।

“नेपाल नहीं, मातृभूति बोलो ।”

“ओ तो आज मुझे समझ में आया कि मातृभूमि अलग होती है। नेपाल अलग होता है। अगर यह मातृभूमि है तो फिर नेपाल किधर है।” पुनर्नवा ने बड़े हिकारत एवं उपेक्षा की दृष्टि से उस व्यक्ति को देखा ।

“युवक, हम इस मातृभूमि को शान्त बनाना चाहते हैं। हम देश-विदेश मे घूम-घूम कर शान्ति का प्रचार करते हैं और तुम अपने पृथकतावादी आन्दोलन के साथ ही हमारी सारी योजनाओं पर पानी फेर देना चाहते हो ? जानते हो इसकी सजा क्या है ?” आँखों में उतरे खून की लालिमा के साथ ही उस व्यक्ति ने कहा ।

“शान्ति का यह संदेश तो आपकी आंखों से निकलता हुआ नजर आ रहा है। शान्ति का यह प्रचार तो आपके तमाचों के साथ मेरे चेहरे तक पहुंच गया है। जहांपनाह शान्ति का यह हिपोक्रेटिक रूप लेकर चलने से नहीं होगा। शान्त तो इसे हम भी देखना चाहते हैं पर इस पर मौत का ठंडापन देखना नहीं चाहते ।”

“चटाक“

“एक थप्पड़ और, हम किसी भी तरह से इसे शान्त देखना चाहते हैं। पर हमारी आत्मायें गंगा जल से शान्त होती है क्या आपको पता है ?”

“चटाक“

“गुस्ताख युवक, अपनी जुबान पर लगाम दो, नहीं तो अब हम तुम्हें शान्त कर देंगे ।” उस व्यक्ति की आंखों में खून उतरता जा रहा था। पुनर्नवा मुस्कुराता जा रहा था। पता नहीं किसके ऊपर शान्ति सवार थी। उसी समय एक आदमी दौड़ते हुए हाँफते हुए उस बड़े से हाल के भीतर प्रवेश किया। उसके हाथ में अखवार के कई पन्ने फड़फड़ा रहे थे। उस विचित्र पोशाक पहने हुए व्यक्ति के हाथों में उसने उस अखबार को थमा दिया। उस अखबार के मुख पृष्ठ पर ही लिखा था-

“बारा जिला में पुलिस का घोर अत्याचार। मधेशी नवयुवकों के दिल का राजा पूरन की माँ की पुलिस के द्वारा निमर्म हत्या। कई अन्य कतल तथा कई घायल। तिरपट और देवधारी बाबू के द्वारा पुलिस को शह। अगल-बगल पहाड़ी एवं मधेशी गांवों में साम्प्रदायिक तनाव। स्थिति कभी भी विस्फोटक रूप लेगी ।”

उस व्यक्ति ने बढ़े ही निरपेक्ष भाव से अखबार को पढ़ा और थोड़ा शान्त होते हुए पूछा -

"क्या तुम ही पूरन हो ? " अब इशारा पुनर्नवा के साथ खड़े खामोश युवक की ओर था । वह खामोश खड़ा सारे तमाशे देख रहा था ।

"तुम्हारी माँ का देहांत हो गया है, इसलिए हम अभी तुम्हें छोड़ते हैं । अन्यथा इस युवक के चलते आज इसके साथ तुम भी कत्ल हो जाते । खैर अभी छोड़ो, जाओ अपनी माँ की आत्मा को शान्त करो । सिपाहियों इनको अभी छोड़ दिया जाय, हम फिर कभी बुलायेंगे ।"

दोनों अब वहाँ से गाड़ी पर बैठाने के लिए ले जाये गये। चलते समय उसने कुछ देर तक उस नक्से पर नजर गड़ायी और फिर एक लम्बी साँस लेकर वापस चल पड़ा। वापस लौटने पर जेल के अंदर की कैदियों में व्याप्त खलबली समाप्त हो गयी और प्रश्न बनकर उनलोगों से पूछने लगी । उसी दिन पूरन अपनी माँ के दाह-संस्कार के लिए रिमाण्ड पर छोड़ दिया गया । पुलिस के कड़े पहरे में वह अपने गाँव आया। उसके आते हीं जिले के सभी युवक उसके स्वागत में गाँव में उमड़ पड़े थे । सीताराम और ठाकुर उस गाँव को छोड़कर भाग चुके थे । बूढे लोगों के मन में उसकी माँ के दुर्दान्त अंत पर उसके प्रति सहानुभूति तो उपजी थी, पर वे डर एवं भय से ग्रसित भी लग रहे थे ।

सिसकिया लेती हुई गंगिया, पूरन के चरणों में गिर पड़ी "इन जल्लादों ने माँ को मार दिया, मेरी इज्जत लूटने की कोशिश की इन लोगों ने ।"

पूरन सब कुछ समझ गया। उसने एक दो बार गंगिया को अपने प्रति आकर्षित होते हुए देखा तो था, पर बात यहाँ तक पहुँच चुकी है, उसे क्या मालूम ? अकेले में शारदा ने उसे सब कुछ बताया ।

युवकों की एक अंतहीन संख्या अब पूरन की माँ का अंतिम संस्कार करने के लिए तैयारी करने लगे । पूरन ने देखा, उसकी माँ के शव के नीचे उसके द्वारा बड़े प्रेम से टंगा हुआ नक्सा दबा पड़ा है। बगल में पड़े गोली लगे युवक के खून बह कर उस नक्ने को भींगो दिया है । अब उस नक्से में कोई कड़कड़ाहट नहीं थी । ऊपर भगवान विष्णु की वह तस्वीर वैसे ही पूरन को देख रही थी, जिस तरह से उस विचित्र पोशाक वाले व्यक्ति ने उसे देखा था । पूरन ने उस फोटो को भी उतार लिया, उस खून से लथपथ नक्से को भी अपने हाथ में ले लिया । अब वहाँ बच गयी सिर्फ उसकी माँ की अकेली तस्वीर ।

फूलों से भरपूर लदी उस माँ की अर्थी को चार लोगों ने कंधा दिया । हजारों नवयुवकों का झुण्ड पीछे-पीछे चला । नवयुवकों ने दाह संस्कार के बाद बगल के बघुवन गांव में धावा बोलने का प्रोग्राम बना लिया था। बघुवन गाँव पसाह के उस पार पहाड़ियों का गाँव है । ज्योंही पूरन को पता चला वह उस निर्मम घड़ी में ऐसा करने से मना कर दिया ।

पसाह के किनारे चिता धूं-धूं कर जलने लगी । एक-एक करके सभी लोग, उस पार्थिव शरीर को लकड़ी देने लगे। पूरन ने अपने हाथ में लिए भगवान विष्णु के साथ ही उस नक्से को भी उस चिता में झोंक दिया । उसने देखा उस समय उसके साथ ही सिपाहियों की आंखें खौफनाक तरीके से चमकी ।

"माँ भगवान विष्णु की पूजा करती थी। जब वह ही नहीं रही तो उनका क्या काम ? रही बात उस नक्से की तो वह ऐसे ही हमारे खून से गल चुका था, खत्म हो चुका था ।" पूरन ने एक सिपाही के कंधों को थपथपाते हुए बोला । सिपाही सबकुछ समझ गया और बड़ी खुशी से चुप हो गया ।

गंगाजल तो वह अपनी माँ को नहीं दे सका था, पर दूसरे दिन उसने बहुत चाहा था कि उसकी माँ की अस्थियों को उसकी इच्छा अनुसार गंगा में प्रवाहित कर दूं । गंगाजल से ही हम हिन्दुओं की आत्मायें शान्त होती हैं। पर नहीं हो सका । गंगा उसके मुल्क में नहीं पड़ती, वह कैदी है। उसने गंगिया को देखकर सब कर लिया । गंगा उसके पास थी ।

७

दर्द से छटपटाती, इधर-उधर सहायकों की खोज करती उन आँखों ने ज्योंही उसे कमरे में प्रवेश करते देखा, हडबड़ा कर उसने अपने चेहरे को अपनी साड़ी के आंचल से ढक लिया । जो आंखें बड़ी ही दयनीय दृष्टि से अपने किसी सहायक की खोज कर रही थी, उसी ने उस सहायक के आते ही खुद अपने आपको ही छिपा लिया। कमरे में चहल-पहल करती लड़कियों ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया । आंचल में छुपी आँखें अब उसे गौर से देखने की कोशिश करने लगी । कुछ देर के लिए सृष्टि की कराह बंद हो गयी थी। हाँ वही तो है पर यह कैसा वेष ? गले में तो प्रभु यिशु का क्रॉस लटका हुआ है । पर वह वहां पर कैसे आयी ? पर अपने आप पर हँसती हुई उसने खुद अपने आप से ही पूछ लिया कि तुम यहाँ पर कैसे आयी ? वैसे नहीं आयी है । उसका इस अस्पताल में ट्रान्सफर हो गया होगा । पर जब वह मुझको देखेगी, पता नहीं क्या सोचेगी ? जब वह कुछ पूछेगी, मैं क्या जवाब दूंगी ? जवाब तो मैं सारी दुनियाँ को दे चुकी हूँ, फिर इनको भी क्यों न दे सकूंगी ?

तभी दर्द का दूसरा दौर शुरू हुआ, प्राणलेवा दर्द! उसे लगा जैसे प्राण निकल जायेंगे। उधर लड़कियाँ अपने काम में तैयार थी । दर्द शुरू होते ही लड़कियां तरह-तरह की बातें सिखलाने लगी। ऐसा करो, वैसा करो, टाँगे ऐसे नहीं करते, यह कहां टांगें पसार देती है ? ओ ऐसे पुश करो, ऐसे कहीं करते हैं? पहले पहल ऐसा ही होता है, आदि आदि ।

"अब प्राण निकले जा रहे हैं दीदी" उसने बगल में खड़ी स्टाफ का हाथ जोर से पकड़ लिया ।

"अरे प्राण नहीं निकले जा रहे हैं, अब बच्चा निकले जा रहा है ।" स्टाफ ने भी उन हाथों को सहरा दे दिया । वह अपने दूसरे हाथ को उसके माथे पर रखकर सहलाने लगी

तभी उस दर्द का सबसे अतिम दौर आया। युवती ने अपने दांतों को जोर से किटकिटाती हुई गर्दन को एक तरफ से दूसरी तरफ लाया । दूसरी ओर लाकर उसने स्टाफ के हाथों को और भी जोर से दवाया और एक जोर की आवाज के साथ उसके मुंह खुल गये। उधर सृष्टिद्वार से बच्चा बाहर हो गया । चेहरे को इधर से उधर करने में अब उस युवती के चेहरे पर से आंचल हट गया था। अचानक ही स्टाफ ने उस युवती का चेहरा देख लिया था । एक क्षण को दोनों की आंखें बिजली की तरह चमकी । मां बनी आंखों ने जिसमे अभी-अभी ममता आकर जुट गयी थी स्टाफ की पहचान को स्वीकारती हुई अपने को बंद कर लिया। प्रश्नों से भरी स्टाफ की आंखों ने अपना जवाब पा लिया था। अपने कोमल हाथों के स्पर्श से उसने वंद आंखों के ऊपर शीतलता को बरसाना शुरू कर दिया। उस शीतलता को पाकर मे बनी औरत के रंगों में ममता अपने दुगुने वेग से बहने लगी ।

उधर लड़कियाँ बच्चे को सम्भालने में लग गयी। किल कुमारी चुपचाप उस बच्चे के रोने की आवाज सुनती रही। और रचना की गले में लटके क्रॉस की ओर ताकती रही। कोई किसी से कुछ बोल नहीं रहा था। ममता और करुणा, प्रश्न और उत्तर फिर भी दोनों के अंदर वह रहे थे ।

"क्या कुछ और पूछना है

"जो कुछ भी उस बच्चे ने कह दिया है, उसके बाद भी कुछ बाकी रह जाता है क्या है ?"

"लगता है, मुझे माफ नहीं किया गया ?"

"यहां कौन गुनहगार नहीं है किल तूने शायद मुझे समझा नहीं ?"

"फिर गले में लटकता हुआ यह क्रॉस ? लगता है हमारी सोसाइटी सें ही नफरत है ।"

"ऐसी बाते नहीं करते। मुझे मुजरिम के कटघरे में खड़ा न करो किल" नफरत की सारी दीवारें गिर जाती है, तब यह क्रांस उतरता है । उस दिन मेरे गले में भरे जहर को काटने के लिए इसमें लटकता हुआ क्रॉस उतरा है । ऐसा लगता है, जैसे तूने मुझे माफ नहीं किया ?"

मेरी बहन, दर-दर भटकती हुई आत्मा, अपना पनाह आप खोजती हुई आत्मा को इतने बड़े सिंहासन पर मत बैठाओ। मैं तुम्हारा गुनहगार हूँ, क्षमाकत्री नहीं! खैर छोड़ो भी, तेरे साथ कोई नहीं ?"

"सी ऽ ऽ ऽ........ ऐसा मत बोलो बहन। तेरे गले में लटकता हुआ यह कांस, उस कैंडल में हाथ-पाँव चलाता हुआ वह मेहमान, मेरे ही साथ तो हैं। इसी क्रॉस के साथ वह आकर जुट गया है ।"

"अच्छा हम फिर बातें करेंगे ।"

उस कमरे में लड़कियों की उपस्थिति में अधिक बाते करना उसने मुनासिब नहीं समझा । जब सभी लड़कियों, लड़के को सम्भाल कर केंडल तक पहुंचा रही थी, किन और रचना में ये बातें हो गयी । अब रचना खुद उस क्रैडल के पास जाकर उस भूक्कर खेलाने लगी। उसे पुचकारने लगी । उस समय उसके गले में लटका वह क्रास, उस बच्चे के गले को भी छू रहा था । सामने दीवार पर क्रूस पर लटके समाधि की मुद्रा में प्रभु यिशु का भव्य शरीर, लटका हुआ था । उसे रचना ने अपने हाथों से लगाया था । जब कभी कोई बिन व्याही मां बच्चे को जन्म देती है उसके दुख को रचना उसी भव्य तस्वीर पर इशारे करके समझाती थी । देख, उस दीवार की ओर देख कितना भव्य, कैसी समाधि लगाये भगवान का वह पुत्र कुस पर लटका हुआ है। उसके चेहरे पर दुःख-दर्द की कोई निशानी दिखलाई पड़ती है ? तो फिर तुम्हारे ही चेहरे पर इतना दर्द क्यों उभरा है ? भूल जा समाज की सारी छलनाओं को । खो दे उसको इस आते हुए मेहमान की मेहमानबाजी में ।

किल ने क्रैंडल में खेलते हुए बच्चे को देखा, उसको पुचकारती हुई रचना को देखा । उसके गले में लटकते हुए क्रूस को देखा और चुपचाप दोनों आँखों से दो बड़ी बड़ी बूँद लुडका दिए । ये दोनों बूंदे सोसाइटी की सारी वर्जनाओं को नकार कर निकली थी। जिस आंचल से किल ने उस चेहरे को ढक लिया था, उसी के एक कोर से किल ने अपनी आँखों को पौंछ लिया । ये दोनों बूँदें अब उस आँचल में उतर गयी थी ।

रचना ने अब बच्चे को पुचकारती, दुलारती हुई लाकर उस आंचल में रख दिया । किल का रोम-रोम झनझना उठा । आँखें बंद करके वह स्वर्ग में विचरण करने इस स्वर्ग का आभास उसे इसके पहले नहीं हुआ था । लगी स्वर्ग में विचरण कर ती हुई ही उसने उस बच्चे को अपनी छाती पकड़ा दी। स्वर्ग की धार धरती की छाती फोड़कर उस बच्चे के अंदर प्रवाहित होने लगी ।

रचना ने तभी स्टेरियो खोल दिया । सृष्टिघर का कोना-कोना मर्मीक स्वरों में प्रभु विशु के अमृत वचनों से आप्लावित होने लगा ।

यह कौन सा मुकाम है ? कि तुम नहीं कि हम नहीं कि सब नहीं, कि गम नहीं, खुशी नहीं ....

कहाँ से लेके आ गयी, यह पालकी बहार की ।
गुजर रही है, तुम पर क्या ?
भुला के हमको दर-बदर ।

किल को उसी आनंद सागर में छोड़कर, रचना थोड़ी देर के लिए रोगिया को देखने चली गयी । एकाएक किल का चेहरा सख्ती से तन गया। आनंद में बहती हुई किल है ।

ऊपर, देवत्व में डबती उतराती किल के ऊपर जैसे एकाएक शैतान सवार हो गया। वह होशोहवास खो बैठी । देखा उसने कमरे में चारों तरफ, कोई नहीं था । लड़कियाँ दूसरी दूसरी मरिजाओं को देखने चली गयी थीं । किल भी अभी अभी बाहर निकली है। उसने बच्चे को छाती से छुड़ा दिया। स्वर्गीक प्रवाह एकाएक बंद हो गया । बच्चे को लिए वह टेबुल पर से उतरी और कैंडल की ओर बढने लगी । एकबार तो उसे लगा कि बच्चे को यहीं से फेंक दूं, पर उसकी ममता के डोर की मजबूत पकड़ कहीं से काम कर रही थी । उसने धीरे से बच्चे को कैंडल में रखा और मुड़कर दरबाजे की ओर कदम बढ़ाने ही वाली थी कि उसका माथा घूम गया। वह चक्कर खाकर गिरने ही वाली थी कि दौड़ती हुई रचना ने उसे सम्हाल लिया । क्या हुआ, क्या हुआ, कहती हुई और लड़कियां भी चली आयीं । किसी ने ब्लडप्रेसर इन्सट्रमेन्ट लाया, कोई नाड़ी की गति देखने लगी, कोई अक्सिजन सिलिण्डर को ठीक करने लगी । किल का बेहोश शरीर रचना की गोद में पड़ा था। उसे समझ में सबकुछ आ गया था ।

सभी मिलकर उसे फिर टेबुल पर लिटा दिया। एक पिअन को बुलाकर रचना ने तुरत डाक्टर को कॉल भेज दिया। आनन-फानन में डाक्टर आया और निदान लिखकर चला गया । अब रचना सब कुछ बिल्कुल साफ-साफ समझ गयी । सभी दवा उसे देने की भरपूर कोशिश करने लगी । ग्लुकोज की बोतलें अब किल को चढ़ायी जाने लगीं । अक्सिजन सिलिण्डर खोल कर प्लाष्टिक के ट्युब से प्राण वायु उसके अंदर जाने लगे ।

"क्या हाल है डाक्टर ? कोई उम्मीद ?" अभी-अभी ही उसका किल से परिचय हुआ था और अभी ही वह किल जाने की तैयारी करने लगी थी । रचना ने बड़ी व्यग्रता के साथ डाक्टर से पूछा था। उसने क्रैडल में हाथ-पाँव चलाते हुए बच्चे को एक बार देखा ।

"देखो स्टाफ बचने की उम्मीद तो है, पर पाराप्लेजिया डेवलप हो गया है । पैर ठीक नहीं होंगे । पैर इनके हमेशा के लिए चले जायेंगे ।"

रचना जिसने किल के बारे में अभी बहुत कुछ नहीं समझा था, बहुत कुछ नहीं सुना था, उसने उदास आँखों से क्रूस पर लटकते हुए प्रभु यिशु को देखा और किल के पैरों के पास जाकर उन पैरों को सहलाने लगी । कुछ ही देर पहले वह

उसके चहरे पर उभरते दर्द को सहला रही थी । अब उस निर्जीव और निष्काम पैर को सहला रही थी जो अभी-अभी निष्काम हो चुके थे। उन पैरों को उसी तरह ही हुई ही उसने देखा कैंडल में दो नवजात पैरों की सक्रियता बढ़ गयी थी । उसी तर ह पैरों के पास खड़ी खड़ी अब वह किल का होश वापस आने की प्रतीक्षा करने लगी । डाक्टर अब जाने लगा था ।

"लूक दिस मदर सिरियसली । स्टील सी इज इन डेन्जर ।"

"थैन्क्यू सर ।" अभी तक डाक्टर की उपस्थिति में उसने अपनी भावनाओं को रोक रखी थी । डाक्टर के जाते ही उसकी आंखों के कोर भींग गये और दो बड़ी-टपक कर किल के पैरों को धो दिया ।

आंसू जहाँ पर पड़े थे, रचना ने देखा वहाँ पर किल के पाँव में घाव का एक निशान बना हुआ है । रचना के आँसू उसी निशान पर पड़े थे । घाव जिसने बनाया, जिस घाव को किल अपने पैरों पर ढो रही थी, उसे धोनेवाला भी इस संसार में कोई होता है ।

बड़ी देर तक रचना इसी तरह इंतजार करती रही । एक बार किल की आंखें खुली और रचना की आँखों से टकरायी । रचना ने जैसे मन ही मन कहा कि मैं यहाँ पर हूँ तुझे किसी बात की चिंता नहीं । अबतक उसका कोई भी अपना नहीं देख कर उसने किल की असहायता का भी अंदाजा लगा लिया था । फिर किल ने भी अपना नाम पता लिखाया तो था, पर उसका साथी अभी कोई नहीं, यह भी लिखवाया था ।

धीरे-धीरे किल के होश लौटने शुरू हुए । उसे ट्रान्सफर करके अब वार्ड में ले आया गया । बच्चे को रचना ने सम्भाल लिया । उसको पूरी तरह होश में आने के बाद अब रचना ने ही उससे पूछा ।

"कैसी हो अब ?"

"ठीक हूँ पर इन पैरों को क्या हो गया ?"

"परमात्मा को जो मंजूर होता है वही होता है । मन छोटा नही करते ।"

"मेरा मन इतना छोटा नहीं है बहन । बच्चा कहाँ है ?"

"कैंडल में खेल रहा है ।"

"अब उसे कौन सम्भालेगा ?"

"मेरे गले में लटकता हुआ क्रस ।"

"मतलब मैंने समझा नहीं बहन !"

"मतलब तो मै भी अभी तक समझने की कोशिश कर रही हूँ पर पूरी तरह समझ में नहीं आयी है । बहुत कुछ मैंने समझा है तेरे मन में उठते हुए इस पाव के घावों को मैंने समझा है । पर पहले तुम ठीक हो लो ।"

"पांच के घाव" शब्द सुनकर किल का तो क्या इसे सबकुछ मालूम है । उसने पूछा :-

"क्या कहा तूने?"

"यही कि पहले ठीक हो लो। फिर अब मेरा घर तेरा ठिकाना होगा । वहीं हम सभी बातें विस्तार से करेंगे ।

किल ने ऐसी नजर से रचना को देखा जैसे साक्षात माता मरियम उसकी सहायता के लिए आ गयी हो। कितना फर्क है उस रचना और इस रचना में । पुनर्नवा के घर से निकलते समय ठोकर खा कर गिरने पर भी उसने मुझे बढ़कर नहीं उठाया था । उसका नाम भी मुझे बाद में ही पता चला था । आज वही नाम इस रूप में मुझे उठायेगा मैं सोचती भी नहीं थी । हे प्रभो ! तेरी महिमा भी अपर म्पार है ! किसने भर दिया इतनी दया, इतना सेवा भाव इसके अंदर ? नहीं रचना के अंदर ये भाव बुनियादी रूप से रहे होंगे। उस दिन की घटना परिस्थितिजन्य आवेग में उत्पन्न हुई होगी । कोई भी मनुष्य उस परिस्थिति में उस आवेग को नहीं रोक सकता । आज इस समय हम उसी क्षण, उसी समय और उन्हीं परिस्थितियों की जन्मी परमात्मा के खेल हैं । इस क्षण का जन्म, उसी क्षण हो गया था ।

ठीक ही तो है, इस परिस्थिति में हम कहाँ जायेंगे ? जब हाथ पाँव ठीक थे तो इस दुनियाँ में कही ठिकाना न मिला, और अब सोचती हुई रचना की ओर देखती हुई उसकी आंखें बड़बड़ा आयी।

"पर बहन क्या मैं एक बोझ बनकर ही तेरे घर पर आनेवाली थी ? काश किसी दूसरी परिस्थिति में हम तेरे मेहमान होते !

"परिस्थितियां हमारे बस में नहीं होती वहन । इस बोझ की बात कहकर तूने एक तमाचा लगा दिया मुझे । क्या मैं आशा करूँ कि अब तुम इस तमाचे को फिर नहीं लगाओगी ? तुम्हें नहीं मालूम कि इस बोझ को उठाकर हम अपने बोझ को हल्का कर लेते हैं ?"

इस बात को कहती हुई रचना, किल की डबडबाई आँखों को पोछने लगी । सारा बाँध तोड़कर किल ने रचना की बाहें पकड़ कर खिंच लिया और लिपटकर फूट-फुट कर रोने लगी । रचना ने भी अस्पताल के विमारों की कोई परवाह न कर के उसके सीने से लिपट लिपटकर रोने लगी । अगल-बगल के रोगी उन्हें उस तर ह से बिलखती हुई देख कर खुद भी बिलखने लगी । करुणा के समुद्र फूटकर आंखों के रास्ते बहकर आ रहे थे । करुणा की सजीव मूर्ति !

रचना हल्की होकर चली गयी और क्रैंडल से बच्चे को उठाकर किल को थमा दिया। अपाहिज पैर के सक्रिय हाथ बढ़कर उसको थाम लिया और अपना स्तन पकड़ा दिया। ममता की धार उस शिशु के अंदर बहने लगी ।

करीब १५ दिनों के अनवरत श्रम से वह अस्पताल से विकलांग बनकर छुट्टी कर देने लायक हुई और उसे उसी अवस्था में छुट्टी दे दी गयी। इससे अधिक दुनियाँ का कोई विज्ञान उसे ठीक नहीं कर सकता । विकलांग कुसी पर रचना ने ही उसे बिठाया और उसे लेकर अपने क्वार्टर की ओर चल दी । उसकी छुट्टी के दिन रचना ने भी छुट्टी ले ली थी। नये मेहमान की मेहमानवाजी में वह इतना तो कर ही सकती थी । उसके अलावा समाज का हर आदमी व्यस्त था, कार्य कुशलता में व्यस्त ।

अपने एक कमरे के क्वार्टर में रचना ने पहले से ही एक तरफ अपना और दूसरी तरफ किल के लिए विस्तर लगा दिया था । बीच में कैंडल पर बच्चा सोयेगा जिसे एक तरफ से किल और दूसरी तरफ से वह खुद उसे झुलायेगी। उस कमर े में एक ओर एक टेबुल और उस पर एक पंखा रखा रहता था जिसे उतार कर र चना ने नीचे रख दिया था। दिसम्बर के महिनों में रक्सौल तो क्या दुनियाँ की किसी भी जगह पर पंखा नहीं चलता। बच्चे का जन्म दिसम्बर में हुआ था ।

कमरे में पहुँच कर दिन भर वह किल और बच्चे की खातिरदारी में लगी रही । उसने जो कुछ अनुमान लगाया था, वह सिर्फ अनुमान था पर अब वह किल के प्रत्येक दुख को सुनकर उसे बांटना चाहती थी । बच्चा पालने में खेल रहा था । दिन गुजर गया, शाम आयी। रात गहराने लगी । रचना किल को खिलाने के बाद उसी की बगल में बने अपने विस्तर पर गयी। दोनों की आंखें एक दूसरी से टकरायी । बच्चा सो चुका था । किल ने कुछ समझा, रचना ने भी और दोनों की बातें शुरू हो गयी ।

"पहले कौन बोलेगा ?"

"तुम जैसा कहो, हमें तुम्हारी आज्ञा शिरोधार्य है ।"

"मैंने अखबार में तेरा नाम और तेरी तस्वीर देखी थी । मुझे उस समय उस अखवार के सभी शब्द सच लगते थे, पर धीरे धीरे जब उस घटना की पूरी बातें दवी जवानों से जनता के बीच चर्चा का विषय बन गयी तो मुझे उसकी सत्यता पर संदेह होने लगा । कहीं न कहीं ऐसी बातें हैं जिसने मुझे उस घटना की सत्यता पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया । किल क्या में उसकी सत्यता को मान लू ?"

"सारी दुनिया मान लेती है तो फिर तुम ही नहीं मानने के लिए क्यों तैयार हो ?"

आज के तेरे चेहरे को, आज की इन आंखों को, आज की इन हालातों को देखकर मेरा मन इसकी गवाही नहीं दे सकता। उसके बाद क्या हुआ, क्या मैं जान सकती हूँ ?" रचना के कहा ।

"उसको मैं किसी को बतला सकुँ, इसके लिए मैं कितने ही दिनों से तड़प रही थी । मन ही मन घुलती हुई मैंने इस भयंकर सत्य को छुपाया है । मेरी हर लड़ाई अब इसी सत्य को लेकर होगी । इस अपाहिज पैरों से मैं तेरे द्वारा लडूंगी । मैं भी वहीं की हूँ जहाँ का वह युवक था जिसके चमचमाते हुए पोशाक के अंदर का नंगापन हमारी अस्मत, हमारे अस्तित्व को लील रहा है । तुमने जो कछ सुना है, इस जनता के अंदर जो कुछ चर्चायें हो रही है, वही सत्य है। ये जनश्रुतियां उन अखबार के पन्नों को नकार कर निकलती है, जो अखबार पैसों में विकते हैं । जनश्रुतियां पैसों में नहीं बिकती, इसलिए वही सत्य होती है । अखबार में जो कुछ निकला था वह उस धुएं की ही एक तस्वीर थी, पर वह धुंआ किस घर से निकला था उसकी नहीं । जनश्रुतियां उस घर तक पहुँचकर उस धूएं की खबर लेती है ।" किल ने उत्तर दिया ।

"तो फिर तुम वहां से बचकर कैसे निकल गयी, कहां रही ?"

"मारनेवाले से बचानेवाले का हाथ लम्बा होता है बहन । मुझे उनके ही पहरे दारों ने बचाया पर तब खुद उसके ही ऊपर खतरा मंडराने लगा । उसने मुझे छुपाकर एक ट्रक से पाल्पा की पहाड़ियों से होते हुए बुटवल की ओर भेज दिया । बुटवल से ट्रक आगे जानेवाला नहीं था । एकबार ट्रक के ड्राइवर ने ललचायी आंखों से मुझे देखा था । मैं बुटवल में ही ट्रक से उतर गयी। सोचा किसी दूसरे सहारे से घर पहुँच जाउँ, पर घर से निकली हुई और इतनी बड़ी घटना के बाद घर कैसे पहुंचूंगी और बचूंगी ? अखबार का पन्ना घर-घर पहुँच चुका था ।"

किल अपनी सारी कहानी सुनाने लगी "इस बात से मैं इतनी आतंकित हो गयी थी कि ऐसा लगता था, जैसे हर चेहरा मुझे ही ढूंढ रहा है । बुटवल के समीप ही एक गाँव में मेरे रिश्ते के एक फूफा रहते हैं । मैं कुछ दिनों तक वहीं जाने की सोची थी और वहाँ पहुंची भी । वे मुझे देखते ही दहशत से भर गये । चाय- पाउरोटी की दूकान पर हमेशा कोई न कोई आता ही रहता है । तुम यहाँ से चली जाओ किल नहीं तो हम बर्बाद हो जायेंगे ।

मैंने कहा यहाँ से निकल भागने के लिए कुछ सहायता भी तो दीजिए । उन्होंने तुरंत दो सौ रूपये मेरे हाथों पर रख दिये। दिन भर मैं उनके घर में छिपी

रही । अंधेरा होते ही अपने जीवन के अंधरे को, एक दिशाशुन्य अंधेरे को लेकर मैं वहाँ से चल पड़ी । फूफा जी ने मेरे साथ सरेह के खेतों की कुछ दुरियाँ नापी थी, फिर उस अंधेरे में छोड़ कर वापस लौट गये थे । लौटते समय उन्होंने गोरखपुर के एक ट्रेन का समय बता दिया। ट्रेन का समय तो वहाँ वैसे ही मालूम हो जायेगा । अगर नहीं तो फिर इस समय के कुछ घंटों को ट्रेन के ही इंतजार में काट लिया जायेगा। वक्त बतलाने की क्या जरूरत ? अपने देश की अंधेरी राहों को चिरती जिसमें मुझे यह देश, मेरा परिवार, मेरा संबंध और यह सोसाइटी सबने मिलकर मुझे ढकेला था । मैं आगे बढ़ती रही । रात भर चलने के बाद जिस जगह पर सुबह हुई, जहां पर सूरज के उगते हुए गोले का दर्शन हुआ, राहगिरों से पता चला वह देश मेरा नहीं है । तब उस उगते हुए सूरज के साथ ही मेरे अंदर के गहराते हुए भय का अंधेरा दूर हो गया। अपने ही देश में भयभीत किल, दूसरे देश की सरजमीन पर पाँव रखते ही अभय प्राप्त कर ली थी ।

वहाँ से मैं सीधे गोरखपुर स्टेशन पर पहुंची । आदमियों की खचाखच भीड़, मुझे अकेली युवती को देख कर पहचानने की कोशिश कर रही थी । मैंने समझा ये आँखें सिर्फ मेरे यौवन को पहचान रही थी । मेरे चेहरे को नहीं, जो अखबार के पन्नों पर छपा था । हम उस पहचान की सीमा से परे आ चुकी थी । उस पहचान से इनका कोई मतलब नहीं था । जिस पहचान से उनका मतलब था, उसको मैंने बोल्ड बनकर दबा दिया । एक पत्रिका की दूकान से हिन्दी और अंग्रेजी की कई पत्रिकायें लेकर मैं पढ़ने लगी । जब लोगों ने देखा कि मैं अकेली नहीं बल्की अंग्रेजी डिगियों का अनुभव भी मेरे साथ है तो वे मुझे पहचानने से इनकार करने लगे । सभी लोग मेरी बगल से मेरे हाथ में रखी पत्रिका को पहचानकर खिसक जाते थे । कुछ लोगों को भय होता था कि कहीं मैं कोई अफिसर भी हो सकती हूँ ।

कुछ ही देर में गाड़ी आयी। मैं उस पर सवार हो गयी । खिड़कियों से झाँक कर देखा सब कुछ पीछे छुटता जा रहा था । आगे का गन्तव्य क्या है, इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है । ट्रेन गोरखपुर से बनारस होती हुई कहीं जा रही थी । तो क्या गंगा को मैं अपना गन्तव्य बना लूं ? नहीं ?

मेरे पेट में पलते हुए इस मेहमान ने मेरे इस विचार को कुचल दिया । अपने ही गदराये हुए नाभी की ओर मेरी दृष्टि चली गयी । लगा जैसे प्रकाश पुञ्ज निकल रहा था मेरे पेट में पलते हुए इस मेहमान ने मेरे इस विचार को कुचल दिया । अपने कर मेरी आँखों में टकरा रहे हैं और मेरे अंदर की कमजोरी को बल दे रहे हैं । अब अखबार पलट कर पढने लगी थी । ट्रेन सरपट भागी जा रही थी। एक-एक करके स्टेशन आते जाते थे। कुछ लोग उस पर चढ़ते और कुछ लोग उतर रहे थे ।

इन मुसाफिरों के आवागमन के बीच मैं अकेली उसमें चुपचाप बैठी थी । कौन सा स्टेशन आ गया और कौन सा आयेगा, इसके बारे में कुछ जानना नहीं चाहती थी। धीरे धीरे मेरे डिब्बे से सभी लोग उतर गये । सभी लोग अपने अपने सफर तय कर चुके थे। सब ने उस सफर में मुझे अकेली छोड़ दिया था । कोई मेरा साथ देनेवाला नहीं था । धीरे-धीरे रात गहराने लगी और उस गहराती रात में मेरे सफर में साथ देने के लिए एक व्यक्ति ने उस डिब्बे में प्रवेश किया । अब तक मैं अपने ही घुटनों के बीच, अपना मुँह छुपाये उकडू बैठी हुई थी । वह डिब्बे में प्रवेश किया । मैं इससे बेखबर थी। जब उसने मेरे सर पर हाथ रखकर "बेटी" कहा तो मैं हड़बड़ा कर उठ खड़ी हुई"

"कौन हैं आप ?"

पर उसके बेटी शब्द एवं उतरती उम्र को देखकर, मैं खुद ही आश्वस्त हो गयी । उसकी लम्बी लम्बी दाढियों के बीच से सूफियों की गम्भीरता टपक रही थी ।

"घबराओं नहीं बेटी मैं एक फकीर हूँ । आगेवाला स्टेशन मेरा गन्तव्य है ।

उसी के पास मेरा एक छोटा सा गाँव है, जहां मैं रहता हूँ । बड़ी देर से मैं देख र हा हूँ ! तू उसी तरह बैठी रही। मेरे आने की कोई खबर नहीं हुई जब मुझे पक्का हो गया कि तुम एक दुखियारी लड़की हो, तो ही मैंने अपनी दुआओं के हाथ तेरे सर पर रखा। कौन हो तुम, कहाँ जाओगी ?"

"कौन हूँ मैं, यह तो देख ही रहे हैं बाबा । कहां जाउंगी, यह तो मैं भी नहीं जानती । शायद जहाँ तक यह ट्रेन चली जाय ।"

"और उसके बाद ?"

"उसके बाद के बारे में मैंने कुछ नहीं सोचा है ।"

"यह दुनियाँ बड़ी अंतहीन है बेटी ! क्या तुम्हें कहीं भी पनाह मिलेगा ?"

"पनाह मिले या न मिले बाबा फिर भी हम सभी इसी पनाह को तलाशते तो है । किसी मन्दिर या मस्जिद ....।"

"नहीं बेटी, अब इसे तलाशने तुझे और आगे मैं नहीं जाने दूंगा । तुम नहीं जानती कि तुझे पनाह न ये मंदिर देंगे और न मस्जिद देंगें और न गुरुद्वारा ही । सब इस दुनिया में शिकारी हैं जो अपना शिकार इन मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारो के द्वारा करते हैं । मैं इन शिकारियों का शिकार तुझे नहीं होने दूंगा । आगे स्टेशन आयेगा और तुम मेरे साथ उतरोगी । हम तुझे पनाह देंगे ।"

फकीर ने ऐसा कहते हुए फिर अपना हाथ मेरे सर पर रख दिया । पता नहीं क्यों मुझे उसके शब्दों में एक बाप का अधिकार लगा । उसने बिल्कुल साफ कर

दिया कि अगले स्टेशन पर उतरकर उसके साथ जाना ही है। ठीक ही तो है, मैं ऐसे आदमी के पनाह में न जाकर फिर कहाँ जाऊँगी ? मेरे अंदर जैसे एक आवाज आई कि मैं उस फकीर की बात मान लूं। दूसरा स्टेशन आया और सचमुच फकीर के साथ उतर गयी। थोड़ी दूर पैदल चलकर हम लोग एक गाँव में पहुँचे। गांव को पार करते हुए हम लोग थोड़ी दूर पैदल चलकर एक दूसरे गांव में पहुंचे। उस गांव को भी पार करते हुए हमलोग थोड़ी दूर पर चले गये जहां बिल्कुल एकांत में एक कुटिया बनी हुई थी।

"यही है मेरा पनाहगाह।" कहते हुए फकीर मुझे अंदर ले गया। हे भगवान, यही है मेरा पनाहगाह ?" मैं किसके चक्कर में फँस गयी। क्या यहीं पर मैं रहूंगी ? बाहर श्मशान था। अंधेरा छाया हुआ था। ऊपर आकाश पर टिमटिमाते सितारे इस अंधेरे को चिरने का असफल प्रयास कर रहे थे। फकीर ने खुद एक छोटा सा दिया जला दिया। कमरे के अंदर मद्धिम प्रकाश फैल गया। उस मद्धिम प्रकाश में ही मैंने उस कुटिया को देखा। एक ही नजर में उस कुटिया की सारी पूँजी दिखलाई पड़ गयी। टाट पर एक झोला लटक रहा था। अपने झोले की पूजी को उसने उस झोले में रख दिया। फिर उसमें से थोड़ा निकालकर वह खाना पकाना शुरू किया। खाना तैयार होने के बाद उसने मुझसे क्षमा मांगते हुए खिलाया।

" बेटी, कल से हम तुम्हारी सारी व्यवस्था करेंगे। आज तो मैं जैसा खाता था, बैसा ही खिला सका।" खाना खिलाकर उसने मुझे अपने बिस्तर पर सुला दिया और खुद दरबाजे के पास सो गया। मैंने एक बार उसे सोते हुए देखा। ऐसा लगा जैसे परमात्मा ने कोई पहरेदार भेज दिया है। मेरे अंदर अब किसी प्रकार का भय, किसी प्रकार की शंका नहीं रह गयी थी। उसके सोये हुए चेहरे से मैंने देखा, परमात्मा की तेज निकल रही है। मैंने धीरे से बगल में जलते दीपक को बुझा दिया। अब अंधेरे का कोई भय नहीं रह गया था।

सुबह गाँव से कई लोग उस फकीर के पाँवों पर माथा टेकने आये। लोग फकीरु के पाँव पर सिर टेकते और धीरे से मेरी ओर कनखियों से देख लेते थे। ऐसा जवान सौंदर्य ! कहीं फकीर का मन डबाडोल तो नहीं हो गया। धीरे-धीरे सारे गांव में बातें फैल गयी। एक-एक करके सभी लोग मुझे देख गये और फिर उस दिन से लोगों का आवागमन बंद हो गया। उस दिन वह फकीर कहीं नहीं गया। दूसरे दिन जब वह अपने गाँव में झोली लेकर चला, किसी ने उसे कुछ नहीं दिया।

"आज तो किसी ने मुझे पनाह नहीं दिया बेटी।" फकीर ने मुझसे कहा -

"बाबा तो फिर आप मुझे अपने पनाह से निकाल क्यों नहीं देते ? अभी तो आयी हूँ। कुछ दिन के बाद लोग आपको चलने तक नहीं देंगे।"

"बेटी इनके चलन चलाने से यह दुनियां नहीं चलती। दुनियां चलती है जैसे मेरे पनाहगारों से और दुनियां चलती है तेरे जैसे गुनहगारों से। अगर कोई फिर दुनियां के इन तेवरों के अनुसार चलने लगे तो फिर दुनियाँ हम फकीरों के अनुसार नहीं चलेगी।"

मैं क्या जवाब देती मैं तो सब जानती थी। फकीर दूसरे दूसरे गांवों से जुगाड़ करके जाने लगा। धीरे-धीरे उस गांव से फकीर का नाता टूट ही गया। उसकी कुटिया में कोई नहीं आता। कभी कभी किसी किसी को उस कुटिया पर थूकते हुए भी मैंने देखा। इतना उपहास सहकर उस फकीर ने मुझे पनाह दिया था। कई बार मैंने सोचा कि उसकी अनुपस्थिति में ही मैं कहीं चली जाऊ, पर धीरे-धीरे उसकी फकीरी मेरे भी अंदर उतर गयी थी। अब मैं भी इस दुनियाँ के बेपरवाह, बेखबर , उस कुटिया में रहने लगी थी।

धीरे-धीरे जब मेरा शरीर प्रकाश में आने लगा। लोगों की बची खुची शंकावे भी मिट गयीं। हाथ कंगन को आरसी क्या पर तब उस फकीर की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने अपनी सारी शक्ति लगा कर मेरी सेवायें शुरू कर दी। फकीर कैसे होते हैं, मुझे पहली बार पता चला।

एक दिन कुछ लोग लाठियाँ लेकर आये और फकीर से जवाब तलब करने लगे :-

"कौन है यह लड़की ?"

"किसी की बेटी हो सकती है।"

"क्या यह आपकी बेटी है ?"

"इसमें हर्ज ही क्या है ?"

"तो फिर इसके पेट में यह बच्चा कैसा है। गांव में इस तरह रासलीला कर ते हैं, जुल्म करते हैं ?"

फटाक !

देखते ही देखते एक युवक ने उनके सर पर एक लाठी लगा दिया। मेरी आँखों के सामने वे गस खाकर गिर पड़े थे। सभी लोग अपना आक्रोश उतार कर चले गये। मेरी समझ में नहीं आया कि मैं क्या करूँ ? अपनी गोद में उनका सिर रखकर , मैंने उनके माथे पर बहते हुए खून को पोंछा और उस पर पट्टी बाँधी। मेरे जाघों के सिरहाने पर ही उसने कुछ देर के बाद अपनी आँखें खोली। उनकी आंखें मेरी आँखों से टकरायी और मेरी आँखें डबडबा गयी।

"मेरे लिए इतना कुछ सहने की क्या जरूरत है बाबा ? आखिर मैं लगती कौन हूँ। छोड़ दीजिए मुझे इस वियावान संसार में कहीं भी चली जाऊँगी।"

"इन डबडबाई आंखों से तुम पूछती हो कि तुम कौन लगती हो ? काश ! ये आंखें डबडबायी न होती तो तुम मेरी कुछ नहीं लगती होती। क्या तुम बता सकती हो कि तुम मेरा कुछ नहीं लगती ? सहने और न सहने की बात छोड़ पगली। तुमने अगर सबकुछ न बता दिया होता तो कुछ हो सकता था, पर सब कुछ जान लेने के बाद तुम कहती हो, इस वियावान संसार में छोड़ देने के लिए? फकीरों का यह धर्म नहीं होता।"

मैंने उस दिन सख्ती भी बरती और चली जाना चाही पर उस फकीर में कुछ इस तरह का आकर्षण था जिसने मुझे बाँध लिया था। सोसाइटी के सारे बंधनों से मुक्त उस फकीर के बंधनों में मैं बंध गयी थी। मुक्ति और बंधन का अपूर्व मिलन था वहाँ। फकीर मुक्त होकर भी बंध गया था, मैं बंधन में पड़कर भी मुक्त हो गयी थी।

धीरे-धीरे इस मेहमान के आने का समय होने लगा। अब केवल एक महीना बाँकी रह गया। फकीर ने अब मुझको कोई भी काम करने से मना कर दिया। खाना बनाना इत्यादि वर्तन साफ करने से लेकर सब कुछ वही करने लगा। जब तक मैं सो न जाती तब तक वह मेरी सेवाओं में जुटा होता। मेरे सोने के बाद वह उसी दरवाजे पर सोकर पहरा देता, वहीं सोता।

तभी मुझे उस हादसे से भी गुजरना पड़ा। यह हादसा मेरे जीवन का सबसे बड़ा हादसा है। उस समय की उसकी आँखें, उसके चेहरे मेरे अंतस्तल तक उतर चुके हैं। एक दिन मैं उसी तरह सोयी हुई थी और फकीर बाबा दरवाजे पर सोये हुए थे। कुछ लोगों की उन्मत भीड़ उस कुटिया से होकर गुजरी। उन लोगों ने मुझे और बाबा को पकड़ लिया। सभी लोग तरह-तरह की बातें करने लगे।

"मार शाले को, फकीर है, अरे पहुंचे हुए फकीर इसी को कहते हैं। फकीर होकर जवान लौंडिया को पेट बना दिया।" एक आदमी ने फकीर को पकड़ लिया था। तब तक मैं जग चुकी थी पर दहशत से दुबकी पड़ी थी।

"अरे उस कुतिया को भी मार डालो।" कहते हुए एक युवक ने एक लात मेरी पीठ पर लगाया। में हडबडा कर उठ बैठी।

"उसे मत मारो बदमाशों। उस माँ को नौवा महीना चल रहा है।"

"बीवी को माँ बोलता है ? फकीर के बच्चे, आज हम तुझे नहीं छोड़ेंगे, इसको भी। आज हम खून की होली खेलते आ रहे हैं। आखिर तुम्हारी कोम ने ही पहल किया था, मियाँ ?"

"जो भी यह खून की होली खेलता है वह हमारी कौम नहीं है। हम अल्लाह के बंदे हैं। हमारा धर्म गायों और सुअरों पर टिका हुआ नहीं। जिन लोगों ने गाय काट कर हिन्दुओं को भड़काया है, वे हमारी कौम नहीं है। हम शहर गये थे, वहा भी कुहराम मचा हुआ है पर मेरे भाई ये हिन्दू, य मुसलमान सब क्या उस अल्लाह के बंदे नहीं।"

अरे मार शाले को, हमको भी अल्लाह के बंदे बोलता है। जीभ खींच ले इसकी। अरे अल्लाह के बेटे जिवह करने पर तुम लोग दोजख में नहीं जाते। फिर उसने कहा, हम तुझे दोजख नहीं भेजेंगे। जिवह करके हम तुझे स्वर्ग में भेजेंगे।

"पहले इस कुतिया, को फिर बाद में उसे.....।" एक युवक ने आगे बढ़कर मेरी गर्दन पकड़ ली और खाट पर दबोच लिया। बड़ी फूर्ती से फुफकारते हुए फकीर ने मेरी गर्दन उस युवक के पंजे से छुड़ाया और फिर बोला -

" मेरे साथ तुमलोग जो कुछ कर लो, पर उसे हाथ न लगाओ भाई। अगर मजहब के नाम पर ही तुम्हें लड़ना है तो सुनो वह एक हिन्दू औरत है जिसे मैंने पनाह दिया है। इसके गर्भ में क्राईष्ट पल रहे हैं। हिन्दू मुसलमान और इसाई तीनों यहाँ मौजूद है। मोहम्मद, कृष्ण और क्राइष्ट तीनों यहाँ मौजूद हैं। तुम्हें मेरे साथ जो करना है करो।"

फिर बाबा आँखें बंद कर के खड़े हो गये। उन लोगों में से एक आदमी मेरी ओर बढ़ा, ऊपर से नीचे तक उसने मुझे देखा। मेरी नाभी पर आकर उसकी नजर टिक गयी। मेरी देह चुपचाप उसकी आँखों के आगे प्रदर्शित होने को मजबूर। ऊपर से नीचे तक देखकर वे लोग फिर फकीर की ओर मुड़ गये। फकीर निश्चल। खड़ा था। मेरी आँखों के सामने सबने उन्हें पकड़ा और जमीन पर पटक दिया। फकीर के शरीर में इतना दम था कि वे उन लोगों का कुछ देर रोक सकते थे पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। चुपचाप आँखें बंद किये पड़े रहे। तेज धार चाकु लिए एक युवक आगे बढ़ा और उनकी छाती पर सवार हो गया। कुछ चाकू लिए लोग उनके पैर और हाथों को पकड़ लिए। मैं भय और दहशत से एक कोने में दुबकी इस मानवता को देख रही थी। फिर धीरेधीरे एक युवक ने उनकी गर्दन को रेतना शुरू कर दिया। ऐसे काटा था उनलोगों ने गायों को, हम तुझे वैसे ही काट रहे हैं। जीवह करने पर तुम दोजख में नहीं जाओगे। अब फकीर का शरीर

छटपटाने लगा । सभी लोग उनकी टांगों को मजबूती से पकड़े हुए थे । छटपट कर रहे हैं, शाले । अरे यह तो दोजख में जा रहा है। देखा कैसे छटपट कर रहा है हमारे स्वर्ग में लोग शान्ति से जाते हैं । हम तुझे स्वर्ग में पहुंचा देगे । और तेज करो छुरे को ताकि स्वर्ग में चला जाय। दोजख की छटपटाहट से इसे मुक्ति दे दो । उस युवक ने छुरे को सचमुच और तेज कर दिया और कुछ ही देर में दोजख की छटपटाहट बंद हो गयी और उसके बाद ही बंद हो गयी मेरी आंखें। मैं बेहोश होकर गिर पड़ी । उसके आगे अब क्या देखने को बाँकी था ?

कुछ देर के बाद आँखें खुली तो मैंने अपने आप को फकीर के सीने के ऊपर पाया । उनलोगों ने उसके शरीर को बिल्कुल नंगा कर दिया था । मेरे बेहोश शरीर को शरारत में उनलोगों ने उनके शरीर के ऊपर रख दिया था । उनकी जीवह की हुई गर्दन से लिपट लिपट कर मैं बहुत देर तक उसी तरह रोती रही । पर कितनी देर तक रोती रहती मैं । मुहम्मद की हत्या हो चुकी थी ? क्राइष्ट को गर्भ में छिपाये मुझे बाहर निकलना पड़ा । रात के अंधेरे में एक छोटा सा दल आया था, दिन के उजाले में जो हुजूम आयेगा वह कृष्ण और क्राइष्ट को भी नहीं छोड़ेगा । इसकी भयंकरता को भाँप कर मैंने उस लाश को वहीं पर छोड़, उस कुटिया को छोड़ दिया । क्षमा ! क्षमा ! क्षमा ! क्षमा! हे देव दयानिधि ! क्षमा करना बाबा मुझे । मैंने थोड़ी सी मिट्टी को उठाकर उसकी लाश की ओर फेंका । धरती के नीचे रख कर लाश को मिट्टी देते हैं, हम धरती के ऊपर ही मिट्टी देंगे क्या फर्क पड़ता है ? कफन में लपेट कर लोग मिट्टी देते हैं, हम नंगी लाश को मिट्टी देंगे, क्या फर्क पड़ता है ? चिटकी भर उस मिट्टी ने उनके गले से वह गये रक्त के कुछ भाग को तोप दिया मानो उसने मेरी सोसाइटी, मेरे हिन्दुत्व के ऊपर थोड़ा पर्दा डाल दिया हो। उस नंगी लाश पर पड़कर मिट्टी ने हमारे नंगेपन को थोड़ा ढक लिया था । चलते वक्त मैंने सामने जल रहे दीपक को बुझा दिया। फकीर का नंगा शरीर प्रदर्शित होने से बच गया ।

उसके बाद में क्या बताउँ कि यहां तक कैसे पहुंची ? चारों ओर कुहराम मचा हुआ था । ऐसे में भी वहाँ से बचकर मुझे यहां तक आना ही था । अपने समाज के कृष्ण, काइष्ट और मुहमदों से बचते हुए में तुम्हारे पास तक पहुंची हूँ । यहां का रास्ता मैने इसलिए चुना कि यही पुनर्नवा का घर है । उसका भी तो कुछ पता चलेगा ।"

दीवार पर लटके, क्रूश पर क्राइष्ट को देखा, मुर्दा क्राइष्ट ! किल ने क्रैंडल में सोते इस कहानी के अंत के साथ ही रचना एक लम्बी साँस खिचती हुई ऊपर हुए बच्चे को देखती हुई पूछा :-

"और तुमने इस कुस को क्यों लटका लिया ?"

"किल, दुनियाँ में हम सभी कुल पर ही लटके हुए हैं । जो नहीं लटके हुए हैं, उसे हम लटका देते हैं, हमारी यह सोसाइटी लटका देती हैं ।"

रचना ने फिर एक बार, क्राइष्ट की तस्वीर को देखा और आगे कहना शुरू किया, "क्या तुम मेरी कहानी जानना चाहती हो ?"

"सिर्फ इतना कि तूने इस कुस को क्यों लटकाया ? उसके पहले की कहानी नहीं भी जानता चाहती । उसके पहले की, अपनी सोसाइटी की पूरी पहचान मुझको है ।

"तो सुनो, रचना ने कहना शुरू किया, "तुझे दुत्कार कर आने के बाद अस्पताल में मेरे पिता की मृत्यु हो चुकी थी । दूसरे दिन मैं अपनी चौथी मां के साथ उस लाश को लेकर रामपुर चली गयी जहाँ मेरा घर पड़ता है। मेरे पिता की इच्छा थी कि उनकी लाश को वही जलाया जाय जहाँ पर उनका मन अपनी बिबियों की याद में भटकता रहा है । मेरे भाइयो ने दाह संस्कार की रश्म अदायगी करके किनार हो गये । चौथी माँ वहीं के उपप्रधान के साथ भाग गयी। सुनते है आजकल वह इसी वीरगंज में है। गण्डक पर चाय की दुकान है उसकी । वहाँ से रवाना (ट्रान्सफर) लेकर आते समय जब बस रूकी थी, मैंने देखा था एक युवक के साथ मुस्कुराते हुए उसे । दूसरा महीना आते आते मेरी माँ भी चल बसी । अब घर मेरे लिए घर नहीं रह गया था। भाइयों को मुझसे कोई मतलब नहीं रह गया था । जब तक माँ बाप जिंदा थे तबतक मैंने अपने को उस घर में अकेला महसूस नहीं किया पर अब वास्तविक अकेलेपन ने आकर घेर लिया था । पुनर्नवा के व्यवहार से मैं दुःखी थी ।

एक दिन मैं पाल्पा आयी। रास्ते में ही एक संजीदा इन्सान ने मेरा पीछा कर लिया । दिनभर का रास्ता, कई बार मैंने उसे चकमा देना चाहा, पर हर बार उसने मुझे खोज लिया । रास्ते भर चुहल, रास्ते भर मजाक, तंग कर दिया उसने मुझे और सच कहूँ उसकी बातें अब मुझे सम्मोहित भी करने लगी ।

"उस पहाड़ी को देखती हो ?" उसने अंगुली से एक पहाड़ी पर बने मंदिर को दिखलाकर कहा ।

" देखती ही नहीं जानती भी हूँ । आखिर यह हमारे ही घर के परिवेश में पड़ता है ।"

"यहां पर जन्माष्टमी में मेला लगता है । वह मंदिर रम्भादेवी का मंदिर है । यह मेला सिर्फ युवक और युवतियों का होता है। जब वे एक दूसरे को भा जाते

है, तब इस मेले में रम्भा देवी का आशीर्वाद लेने आते है। क्या हम इस आर्शीवाद को ले सकते हैं।"

मैं भौचक होकर उसके मुँह की ओर देखती रह गयी। उसने बड़े बेवाकी से मुझे वह सब कुछ कह दिया था जो उसके मन में था।

"कौन हैं आप, बड़े संजीदा पर लफ्फाज हैं आप ?"

" जी मैं पाल्पा के मिशन अस्पताल में काम करता हूँ। यहाँ वीर कोट में एम.सी.एच क्लिनिक देखने गया था। चलो, आपने मुझे संजीदा तो माना। वैसे आपकी सुंदरता को देखकर मैं काफी मुग्ध हो गया हूँ। मेनका और रम्भा ऐसी ही नहीं होगी क्या ? अब वह काफी मादक हो चला था।

"कैसी हूँ भला, कितना सुंदर हूँ मैं ?" मन ही मन अपनी सुंदरता को उसके मुख से सुनने की दिलचस्पी मेरे अंदर पैदा हो गयी।

"नहीं ऐसे नहीं, आप आँखें बंद करके उस जगह पर खड़ी हो जाइए फिर मैं बताऊँगा कि आप कितनी सुन्दर है।" उसने एक ऊंची जगह की ओर इशारा किया।

मैं उसके इशारे पर नाच गई और बताउ अब उसके संजीदा व्यक्तित्व ने मुझको बाँधना शुरू कर दिया था। मैं एक जगह पर आँखे बंद करके खड़ी हो गयी। मेरा मुख रम्भादेवी के मंदिर के सामने था। धूप की हल्की किरण के साथ, पहाड़ों की शीतल हवायें मुझे छू रही थीं।

वह कुछ देर तक मेरी और एक टक देखता रहा। रम्भा ! साक्षात रम्भा रम्भा की इस सुंदरता का वर्णन करने के लिए मुझमें हिम्मत नहीं है। मेरे पास कोई अल्फाज नहीं है। बस इस सौंदर्य का इसी तरह कुछ देर दर्शन करने दो। मैं भी भावविह्वल हो गयी। उसके शब्द सीधे मेरे मर्म में उतर गये थे। मैंने आँखें बंद कर ली। वह उसी तरह निहारता हुआ मेरा चक्कर काटने लगा। मेरी परिक्रमा कर ने लगा।

लाजवाब, अनुपम ! अनुपम रम्भा, अनुपम ! वह सांचा कौन सा है जिसमें तुम ढाली गयी हो ? "उसके शब्द के साथ ही मेरी विह्वलता इतनी बढ़ गयी कि मैं अपना संतुलन खोने लगी। कटी हुई मूर्ति की तरह पता नहीं क्यों मैं गिरने-गिरने को हो गयी। लपक कर उसने मुझे संभाल लिया। मैं अब उसकी बाहों में थी।

"नहीं, इतना करीब नहीं।" कहते हुए उसने मुझे अपनी बाहों से छोड़कर दूर बड़ा हो गया। मैं उसके इस बरताब को समझ न सकी। फिर धीरे-धीरे हम संतुलित होकर बातें करने लगे।

उसका नाम था युसुफ। पाल्पा के मिशन अस्पताल में इशाई धर्म स्वीकार कर ने के बाद, उसका नाम यही रखा गया था। पुनर्नवा के साथ बातें करते जिस जगह पर तूने देखा था वहीं पर आकर वह कितनी ही बार मुझे मिला। कितनी ही बार हम एक दूसरे को प्रेमालिंगन में बांध गये पता नहीं।

फिर वह दिन भी आया। आज से केवल ५ महीने तो हुए। जन्माष्टमी का दिन हम दोनों सचमुच पैदल चल कर रम्भा देवी के उस मेले में गये। नवयुवक नवयुवतियों का अम्बार लगा हुआ था वहाँ। साथ-साथ इन्द्रलोक में विचरण कर ते हुए हमने रम्भा देवी के मंदिर में प्रवेश किया और वही अंतिम रूप से हम विवाह बंधन में बंध गये। रम्भा देवी के चरणों में सिर टेक कर हम चहकते हुए बाहर निकले। बाहर निकल कर मैंने देखा, मेरी विदिया रम्भा देवी के चरणों में चढ़ गयी थी। तो रम्भा देवी ने हमें स्वीकार कर लिया। वहाँ से थके हारे हम पाल्या के क्वार्टर में आ गये। उसी दिन हम लोगों ने अपने विवाह की पार्टी सबको दिया। मिशन के अफसरों एवं मेम साहबों ने हमें हमारी शादी पर बधाईयां देते हुए हमें विदा किया। कमरे में आकर युसुफ ने मुझे अपनी बाहों में भर लिया। मैं उसकी बाहों में निढाल हो गयी। वह तुरंत मुझे छोड़ते हुए कहने लगा, नहीं इतना करीब नहीं। मैं उसके इस व्यवहार पर भौचक होकर उसे देखने लगी। वह धीरे से जाकर अपना रेडियो खोल दिया। अब हम फिर धीमे स्वरों की धून पर विध्वल हो गये। जितना वह मेरे करीब आया, उससे दुगुना करीब मैं चली गयी। मैं अपना संतुलन खोने लगी, अब उसने भी अपना संतुलन खो दिया। हम दोनों संतुलन खोये इंसान, कुछ ही पलों में वह सभी कुछ खोने लगे जो हमारे पास था। मैं नारीत्व खोने लगी, वह पुरुषत्व खोने लगा। अपने पुरुषत्व के सम्पूर्ण उत्तार पर वह एक और लुढ़क गया, मैं दूसरी ओर थोड़ी ही देर में उसी तरह लुढकी हुई मैंने अपने इस आनंद का शब्दांकन करना चाहा -

"हमने क्या खोया और क्या पाया युसुफ ?"

"जब तक इंसान अपना संपूर्ण खोता नहीं, संपूर्णता को प्राप्त नहीं होता। आज हम अपनी संपूर्णता को प्राप्त कर रहे हैं। फिर मैंने उसे अपनी अंगुलियों से छेड़ना चाहा। जब उसने उस छेड़खानी का भी कोई जवाब नहीं दिया तब मैंने उसके पेट में जोर से गुदगुदाने की शरारत करने लगी। अरे कोई इतनी जल्दी इतनी गहरी निंद में सो जाता है कि गुदगुदाने की संवेदना भी न हो ? खिलखिलाती हुई अब उसे जोर से खींच कर अपनी तरफ करना चाही। हे प्रभु! देखकर मेरा सारा शरीर सुन्न हो गया। उसकी गर्दन मेरी बाहों में झुल गयी।

ऐसा भी कहीं होता है ? वह तो सारी संवेदनाओं से दूर हो चुका था । उसकी पथराई आंखें देखकर दहशत से मेरी आंखें खुली की खुली रह गयी। यह क्या हो गया ? रेडियो अभी भी बज रहा था ।

हम जींदगी से ऐसे मजबूर हो गये !
इतने हुए करीब कि हम दूर हो गये !
कब उड़ जाये सांस का पंछी क्या जाने ?
क्या जाने माटी की काया, कब माटी में मिल जाये !

अब युसुफ मुझसे दूर जा चुका था । मैं चिल्लाती हुई भागी। कुछ ही देर में मेरा कमरा साहबों और मेमसाहबों से खचाखच भरा हुआ था । अब मैं तमाशवीन की तरह खचाखच भरे कमरे का तमाशा देख रही थी ।

अस्पताल की नन बड़ी देर से मुझे देख रही थी। उसने धीरे से आकर मेरे कंधे पर हाथ रख दिया ।

- दिस इस द वर्ल्ड ! उदास मत हो बेटी । उधर देख क्रूस पर लटका क्राइस्ट तुझे देख रहा है । तुम्हारे भीतर अनन्त प्रकाश बन कर वह आयेगा ।"

"दूसरे दिन ताबूत में रखकर युसुफ की लाश को मैंने दफनाया और गले में यह क्रुस लटका कर मैं भी नन हो गयी । हाँ पति धर्म को स्वीकार करके ही हम अपने खोये हुए पति के करीब जा सकती है । पति नहीं तो पति के धर्म को तो स्वीकार करना ही होगा । हम हिन्दू नारी पतिधर्मी ही होती हैं, ! जब नन से मैंने ये बातें कहीं तो उनकी आंखें डबडबा गयी ।

उसके बाद मैं यहाँ पर चली आयी । दीवार पर जो क्राइष्ट की तस्वीर देख र ही हो, यह वही तस्वीर है जो मेरे पति की दीवार पर टंगी थी । हमें इसी तस्वीर को दीवार पर लटका कर क्रुस को अपने अंदर उतारना होता है । हम सभी क्रुस पर ही लटके हुए हैं । जो नहीं लटका होता है, उसे हम लटका देते हैं । नियति भी वही काम करती है, जो हम करते हैं। निर्यात के उसी क्रुस पर लटके उसका खिलौना बने हम चारों तरफ चलते फिरते नजर आते हैं ।

अब तक रचना और किल दोनों की आँखों में बरसात शुरू हो गयी थी । दोनों ने एक दूसरे के आंसू पोछने के लिए अपने-अपने हाथ आगे बढ़ाये और वे एक दूसरे से लिपट कर रोने लगी ।अब तक रचना किल के विस्तर पर ही चली आयी थी । बड़ी देर तक वे दोनों उसी तरह रोती रही । एक दूसरे के आलिंगन में न जाने कब उन दोनों की आँखें लग गयी । क्रैडल पर बच्चा सो रहा था, दीवार के क्रुश पर क्राइष्ट लटका था । गहन अंधकार के बीच एक छोटा सा बल्व चल रहा था ।

●

८

"शारदा, अरे ओ शारदा, अरे कई बार कहा कि बिटिया अब सिवान के बाहर नहीं जाते। वैशाख का वियाह, आँधी-तूफान आया तो सारे बराती साराती लोगों की दुर्दशा हो जायेगी । पर यह है कि मानती ही नहीं, लगन चढ़ गया, चल देती है फुदुकते हुए पसाह के ओह पार । शारदा, अरे कहां गई रे ऽ ऽ ऽ ।"

चूल्हा फूंकती हुई शारदा की माँ ने जब शारदा को पुकारा और शारदा नहीं बोली तो वह निकल कर बाहर आयी। दरवाजे के बाहर कदम रखते ही अब वह मन ही मन बुदबुदाने और झुंझलाने लगी । "न जाने क्या करेगी यह बिटिया, जब देखो तब लापता, जब देखो तब चहकना, जवान हो गयी, पर वजन भारी नहीं हुआ । अरे अब शादी करेगी, पाँव भारी होगा, चहकना नहीं छुटेगा, जहाँ जायेगी नाक कटवायेगी । जिसको जो मन में आता है जवाब दे दिया, हर किसी का नकल उतार दिया। अरे इतना चहकना ससुराल में नहीं चलेगा ।"

"अरे क्या नहीं चलेगा, शारदा की माँ ? इतनी सुबह-सुबह कौन सा सिक्का खोटा हो गया ?"

"अरे कौन सा सिक्का बताउँ बहिना, एक ही बेटी है । हमारे लिए तो खोटा क्या होगी, पर जब ससुराल जायेगी तो खोटा हो जायेगी । तुम्हीं बोलो न इतना कौन बरदास करेगा ? कब से पुकार रही हूँ, पता नहीं रात को नींद भी आती है कि नहीं । सुबह-सुबह विटिया लापता ।"

"अरे, नींद क्या तुझे आती थी इस समय । चुप रह, बिटिया नहाये धोये नहीं ? ससुराल जाने से पहले ऐसे ही होता है । शारदा की माँ अभी-अभी गंगिया के साथ सरेह में देखा था, दोनों एक ही साथ थीं ।"

"ओ तो चल दिया फिर पसाह में। अब १० बजे से पहले नहीं आयेगी। परवान का तीन घण्टा से कम में होता है ? अच्छा सब निकलेगा वैशाख के बाद।"

"अरे जाने भी दो जीवन के गरभ में क्या छिपा है किसे पता ! मां बाप के घरों में थोड़ी स्वतन्त्रता से घूम नहीं ले तो फिर क्या करे ये लोग ? मैं तो उनकी शुद्ध सात्विक अल्हड़ता को देखकर निहाल हो जाती हूँ। बीते दिन याद आने लगते हैं। शारदा की माँ। तुम्ही याद करो न अपनी उस अल्हड़ता के दिन। फिर क्या तुम लड़कियों को मना कर सकोगी ?

"वह तो है बहिना।"............... कहती हुई शारदा की माँ कही खो गयी। उसकी सारी झुंझलाहट एक अनिर्वचनीय उदासी में बदल गयी। "हाँ तुम ठीक कहती हो, मैं ही नहीं कोई भी उन दिनों को नहीं भुला सकती। पावों में जैसे पंख लग जाते हैं, नदियों में जैसे बाढ़ आ जाती है, हवाओं में तैरने को जी करता है, आंखों में सपने बसे होते हैं। कोई भी उन सपनों को न तोड़े, किसी का भी वह सपना न टूटे। जो भी उस सपने को तोड़ता है उसके जैसा जल्लाद, जिसका भी वह सपना टूट जाता है उस जैसा अभागा कोई नहीं। शायद वह सपना ही सच होता है।"

"अगर सच न भी हो तो भी इसे ही हर किसी के अंदर उतरना चाहिए। शायद वह सपना ही सच का आधारशिला बनाता है।"

बचपन की ये दोनों साथिन अब घुलमिल कर अपनी जवानी की मधुर स्मृतियों की बातें करने लगी। शारदा की माँ की सारी झुझलाहट अब एक अपूर्व संवेदना में बदल गयी थी। दोनों बातें करती-करती कभी आँखों से आँसुओं को पोछती जाती और बातचीत करती जाती। बात-बात में आँसू निकालना ही औरतों की प्रगाढ संवेदनशीलता की कहानी कह जाती है। संवेदना सिखना हो तो किसी गंवार औरत से सिखो, जिसके पास डिग्रियों का अहंकार नहीं होता, संवेदनाओं का गुब्बार होता है जो बात बात पर आँखों के रास्ते बाहर आ जाता है।

दोनों बड़ी देर तक इसी तरह बातें करती रही। उन बातों में गाँव के हर घर की समीक्षा हो गयी। खेतों में बालियों की कटाई से लेकर खलिहानों में उसकी तौल तक सब संपन्न हो गया। उतरवारी टोला के शिवशरना से लेकर दक्षिणवारी टोल के थुकरन देवान अदालत में खड़े हो गये। फुलबारी के अखाड़े से लेकर झनक दास की कुटिया तक में सवारी पहुंच गयी। वहाँ पर जानकर जीभ की यात्रा

के साथ-साथ आँसुओं की यात्रा फिर शुरू हो गयी। बीच-बीच में जब आसू थम जाते तो फिर जीभ तेजी से चलने लगती।

उधर वैशाख महीने का सुनहला सूर्योदय फूलवारी में पहुंच कर हुआ। अमराई के मादक सुगंधों के बीच से होती हुई दोनों सखियाँ वहां पर मिली। दोनों ने उठकर एक दूसरे को गले लगाया। शारदा को लगा जैसे अपनी मां की आंखों में धूल झोंककर बसंत के आंगन में प्रवेश कर गयी है। फूलवारी से दोनों साथ साथ पसाह की ओर जाने लगी। यहीं पर शारदा की मौसी ने उन्हें देख लिया था। दोनों बोड़ी देर के लिए चुप हो गयी थी और फिर बातें होने लगी थी।

"आज माँ की आखों में ऐसी धूल झोंक दी कि अब वह बुला रही होगी और मैं यहाँ। मां कहती है कि आंधी आयेगी। आंधी आये या पानी, मैं क्या करूं। नहाना-धोना छोड़ दूं ! हे सूर्य देवता तुम्हीं देखना। अरे पूरन भैया को कोई खबर आयी कि नहीं ? इधर पंद्रह दिनों से कोई चिठी पत्री नहीं आयी।"

"कल ही तो एक चिठी आयी । पढ़ना लिखना में क्या जानू। खूंट में बांध कर रख लिया है कि शारदा से पढ़वाउंगी। वे भी कहते हैं कि इसे शारदा से ही पढ़वाना। शारदा के सिवा मेरी चिठी कोई नहीं पड़ेगा। अरे शारदा के सिवा दूसरा है कौन जो मेरी चिठियों को पढ़ेगा।" गंगिया अब चलते-चलते चिठी को खंट से खोलने लगी।

"तुम वही भाग्यशालिनी है गंगी। हम इतनी भाग्यशालिनी कहा ?"

"क्या इसी को भाग्य कहते हैं कि वे जेल में, मैं यहाँ, उस पर भी अकेली ? न कोई ननद न कोई भउजाई। भाग्यशालिनी तो तुम हो। अब शादी हो रही है भरा-पूरा परिवार है। ब्रह्म बाबू सारी दुनियां बनाकर बैठे है ननद, भउजाई सास-ससुर सबके बीच रहना सार्थक होगा। मैं तो अभागी हूँ अभागी न प्रितम से न मिलने का आसार।

"अरे तुझे क्या मालूम, मुझे तो ऐसा लगता है कि अब कैदखाने का समय, आ गया है।" शारदा ने कहा

"चुप कैदखाना मिले तेरे दुश्मन को मेरे सामने बस इस कैदखाने का नाम मत लेना। इस कैदखाने ने मुझे कैदखाने में डाल दिया है। स्वतन्त्र रह कर क्या मैं स्वतन्त्र हूं ? ऐसी बातें नहीं करते शारदा ब्रह्म बाबू बहुत पढ़े लिखे आदमी हैं। सुनती हूँ कि तिरपट बाबू का भाषण वही लिखते हैं। बहुत बड़ा कारखाना है। जिसमें से फटाफट फटाफट छपकर अखबार निकलता है।"

"हो तुम भी क्या बात करती हो गंगी शारदा में पढ़े लिखे वो है । इसलिए मैं कहती हूँ कि अब कैदखाना के दिन आ गये । वह कारखाना नहीं कैदखाना है गंगी । अब उसी में में कैद हो जाउंगी । सच कहती हूँ इस शादी को करना में चाहती नही मै तो इन्हीं खेतों में काम करना चाहती है । माँ बाप की सेवा करना चाहती हूँ । इस गाँव में इन खेतों में फुदकना चाहती हूँ । हम हर जगह धोखा खाती है गंगी । सीताराम की तरफ थोड़ी में झुकी थी पर जो आदमी अपनी पूरी डोसाइटी को धोखा दें सकता है वह तो मुझे बेच भी सकता है । इस शादी के लिये भी कैसे कहु ? हम चारों तरफ से मजबूर होती हैं। यह शादी मेरी मर्जी के खिलाफ है । अच्छा लाओ अपनी चिट्ठी दो, क्या लिखा है ?

गंगी शारदा का मुँह ताकती रह गयी। क्या कहती है ? इतना भरा पूरा परिवार । जिला जवार पूरे देश में ब्रह्म बाबू की तूती बोलती है । बड़े बड़े लोगों की बुलाहट उनके पास आती रहती है । तिरपट बाबू उनके बिना तो कुछ है ही नहीं। एक वे नहीं रहे तो तिरपट बाबू किसी सभा किसी मंच पर नहीं जाते । पर साल पूस में राजदरबार में भी उनकी बुलाहट हुई थी । खकुरेल तो ऐसा कह रहा था । विचित्र है यह शारदा । अब तक वह साड़ी के खूंट में बंधी चिट्ठी निकाल चुकी थी । उसने शारदा का मुँह ताकती हुई शारदा की ओर उस चिट्ठी को बढ़ा दिया। सिर्फ साक्षर शारदा गाँव भर की चिट्ठियों वाँचती है । चिट्ठियों को पढ़ते पढ़ते उसकी साक्षरता में निखार आ गया है। अब वह रूक रूक कर नहीं पढ़ती । किसी का लड़का पंजाब गया है, किसी का आसाम, कोई चितवन, कोई पोखरा में जाकर राजमिस्त्री का काम करता हैं । वहाँ से वे लोग जो कुछ लिख कर भेजते हैं, उसे लेकर सभी शारदा के पास भागे आते हैं। कभी कभी वे शारदा को ही अपने घर पर बुला लेते हैं । इस तरह शारदा को पंजाब, आसाम, चितवन, पोखरा का पूरा नवलेज हो गया है । हर घर में आने-जाने से हर घर का खाका उसके दिमाग में क्लियर कट है । पसाह से उस पार का गांव पहाड़िया गांव है, पर शशि के यहाँ उसका आना जाना होता है । बचपन में पढ़ते समय, दोनों सहपाठिन थी तब तक किसी प्रकार की समस्या नहीं उठी थी । इधर कुछ दिनों से पता नहीं क्यों दोनों गावों में हमेशा तनाव ही रहता है । पतरहट्टी वाले बधुवन वाले को शंका की दृष्टि से तथा बघुवन वाले पतरहट्टी वाले को घृणा की दृष्टि से देखते है । जब से पूरन भैया जेल में गये हैं तब से दोनों गांवों के तनाव का पूछना ही क्या ? फिर भी

शारदा शशि के यहां जाती है । कुछ ही दिन पहले काठमाण्डू में उसकी शादी हो गयी थी । घर पर आकर उसने बुलाया था । कितना चम चम पोशाक पहने थी । उसी साल मुझे पता चला कि ये काठमाण्डू वाले कितने चम चम होते हैं । लंदन, अमेरिका घूमते हैं और चम चम रहते हैं । शारदा गंगी के हाथ से चिट्ठी लेकर पढने लगी ।

"गंगी,

तुझे कैदखाने का प्यार पहुंचे ।

मैं चाहकर भी ऐसा कुछ नहीं लिख सकता जो हमें बताना चाहिए । मेरा यह पत्र सेंसर हो जायेगा और इसलिए मैं तुझे कुछ बता नहीं सकता । कागज के इ पन्नों पर मैं तुझे नहीं पूरे गाँव के लिए अपना संदेश भेज रहा हूँ ।

तुम्हारा कैदी

पूरन

प्यार शब्द के साथ ही शारदा के सारे शरीर में सिहरन दौड़ गयी। हर प्यार से वह रोमांचित हो जाती है । देख तो तू कहती है, तू कितनी भाग्यशालिनी है ? क्या तुम सोचती हो कि ऐसा प्यार मुझे ब्रह्मबाबू के कारखाने में मिलेगा ? नहीं- नहीं गंगी, जो प्यार कागज के इन पन्नों पर तेरे लिए आया है, वह कारखाने में निकलने वाले अखबारों में कभी नहीं होता । वहाँ फैक्टरी में तैयार मेकानिकल अक्षर होते हैं ।

अब तक वे दोनों बतियाती हुई उस बगीचे में पहुँच गयी थी जहां पर पुरातन गढ़ीमाई का मेला लगता है । बड़े-बड़े विशाल वृक्षों के बीच में, एक छोटा सा मंदिर , जिसमें गढ़ीमाई की एक छोटी सी प्रतिमा स्थापित है । सुबह की बासन्ती धूप वृक्षों से टकराती हुई, माँ के चरणों पर पड़ रही थी। चारों ओर का माहौल जैसे बतला रहा था कि किसी जमाने में यहाँ विशाल जंगल रहा होगा । कोई गढ़ रहा होगा । उसी गढ़ की यह परम्परा रही होगी । आज भी वह परम्परा कायम है । लोगों को इतिहास विस्मृत हो चुका है पर अभी भी ५ वर्षों में मेला लगने का क्रम नहीं टूटा है । अभी भी लोग उसी तरह इनके दरबार में मनौतियाँ लेकर आते हैं । और अपने घरों को लौट जाते हैं । पता नहीं, इसी तरह लौटते घरों में कितने इतिहास बने और बिगड़े होंगे । उसकी गवाही के रूप में अभी भी माँ अपनी पूरी भव्यता के साथ यहाँ मौजूद हैं । आते ही लगता है जैसे किसी शक्ति के भव्य और

भयावह वर्तुल के अंदर प्रवेश कर गये । इस बल के अंदर आकर सभी अनायास ही उसके चरणों में झुक जाते हैं । गंगी और शारदा दोनों ने वहां आकर उनके मंदिर में माथा टेका । गंगा ने पुरन की रिहाई और शारदा ने हमेशा सत की विजय की भीक्षा मांगी । मां की आंखों से अग्नि निकल रही थी, दोनों ने देखा, फिर एक दूसर े को देखा । दोनों का रोआ-रोआ खड़ा हो गया। दोनों ने फिर माथा टेक दिया । अब दोनों फिर बतियाती हुई आगे निकल गयी । थोड़ी दूर पर पसाह नदी अकुलाई हुई थी । बाढ़ से नहीं, गर्मी में बाढ कहाँ से ! स्थानीय लोग आगे एक बाँध, बाँध देते हैं जो रवी के फसल से लेकर वैशाख के मकई की फसलों तक चलता है । जब बरसात में बाढ आती है तब यह बाध टूट जाता है । तब तक कार्तिक से जेष्ठ तक यह एक बड़े झील में परिवर्तित हो जाती है । तब यह झील अपने वास्तविक नदी से ज्यादा लाभदायक होता है । इतने दिनों तक इसमें गाँव के बच्चों से लेकर हंस तक तैरते रहते हैं। युवक-युवतियों की अठखेलियों से लेकर बूढे-बुजुगों के अर्घ्य भी सूर्य देवता को चढ़ते रहते हैं। इस तरह इसका पानी जीवन बरसाता है । जीवन का खेल इस तरह इसके पानी में चलता रहता है । कुछ लोग इसी में पुरइन डालकर , पुरइन के पत्ते उगा डालते हैं जो लोगों की शादी व्याह में भोजपत्तों के काम आते हैं। उन पत्तों के बीच में इधर-उधर हंस की जोड़ियाँ तैरती रहती हैं । लाल कमल के फुल हर जगह मुस्कुरा रहे हैं । सामने किनारे पर कितनी ही झाड़ीनुमा जगह हैं जो पहले के जंगलों की कहानी कहती है । लोग कहते है यहाँ खैर का भी बन था । असली खैर का वन परसौनी में है जहाँ खैराती माई हैं । गढ़ीमाई और खैराती भाई बहने हैं । उसी जमाने से दोनों जगहों पर मेला लगता है ।

नदी के किनारे-किनारे अरहर और मकई की बालियाँ लहरा रही हैं । अरहर अपने पूरे सुहावने घनेपन से फैले हुए हैं । अब कटने में एक डेढ़ महीने की देरी है । गंगिया और शारदा झुरमुट की ओट से एक एकान्त जगह पर जाकर इधर-उधर देखने लगी । कोई नहीं था । इतनी सुबह-सुबह बूढ़े लोग सूर्य देवता को अर्घ्य देकर जा चुके थे । बच्चे और जवान लोगों का भैंसिया नहान कड़ाके की धूप में होता है । तब तक किनारा करीब करीब खाली था ।

दोनों सखिया झील में उतर गयी । दोनों के आभायुक्त, मुखमण्डल पुरइन के पत्तों के बीच में कमल की तरह खिल गये । जलक्रिणयें होने लगी। दोनों तरह-तर ह की बाते करती नहाती जाती थी । दोनों को पता नहीं, उन्हें कोई देख भी रहा है । उसी

समय अपन खेतों को देखने आये वघुवन का खरेल उनको देख कर ठिठक गया था । झाड़ियों में छुपकर कबसे वह उनकी जलक्रिड़ायों को देख रहा था ।

मुकुन्द खकुरेल ! वघुवन का खकुआइल पहाड़िया ! कहता है चलो चलो पोखरा, चलो चितवन, चलो बम्बई, कहीं भी बड़ी-बड़ी जगहों पर चलो सद जगह फ्रीनेस है । फ्री इज ब्युटी। मैट्रिक में फेल हो गया तो बाप दादे ने खेती बाड़ी में लगा दिया । खेती बाड़ी करते करते मैट्रिक पास कर गया तो मिडिन स्कूल में पढ़ाने लगा । एक लड़की को छेड़ दिया तो मदेसिया लोगों ने उसका सिर तोड़ दिया । तभी से वह मदेसिया लोगों का पक्का दुश्मन हो गया । मदेसिया लोगों को देखना नहीं चाहता है । टीचरी तो उसे छोड़ देना पड़ा पर मुकदमा काठमाण्डू से जाकर जीत आया । हैं, शाले मदेसिया लोग क्या कर लेंगे ? कहाँ हम नहीं है? चलो, चलो दर बार के अंदर चलेंगे ? कहाँ चलेंगे ? जहाँ चलोगे, वहाँ चलो। अद भी वह मूँछे ऐंठकर चलता है। बड़ी देर तक वह उनलोगों को देखता रहा। जाकी रही भावना जैसी प्रभु मुरत देखी तिन तैसी ।

“शारदा, इस बार सरस्वती पूजा में हम कैसे सरस्वती बनी थी ? बताओ तो कैसे लोग कैसे विद्यार्थी, हमारे कदमों में सिर टेक दिये थे ? क्या गजब, वाह ! वाह ! सभी लोगों की आँखें भर आयी थी तुझे देखकर, साक्षात सरस्वती है शारदा । सभी लोग वाह वाह करते हुए सरस्वती पूजन का उत्सव देख कर गये थे । सरस्वती पूजा ने लड़के भी हमें पकड़ लेते है । सरस्वती तो हमें बनना ही पड़ता है । चले तो उनके चार हाथ बनाये ?”

कहती हुई गंगिया ने शारदा की पीठ से पीठ ठिका दी । शारदा का मुँह पूरब की ओर गोगिया का पश्चिम की ओर । दोनों ने हाथ की ऐसी मुद्रायें बना ली जैसे साक्षात सरस्वती वीणा, पुस्तक और स्फटिक की माला लिए खड़ी है । सुबह की सुनहली धूप शारदा के मुखमण्डल पर पड़ती हुई प्रभामण्डल बना रहा था । सर स्वती की मुद्रा में भावविह्वल होकर शारदा आँखें मूदी खड़ी थी । वालों में दो कमल के फूल उन्होंने इसके लिए तोड़ कर लगा लिया था। झील के अंदर समीप ही हंस की जोड़ियां तैर रही थीं ।

सरस्वती ! साक्षात सरस्वती !

पर जाकी रही भावना जैसी ....। इस दृश्य को देखने के लिए खकुरेल बड़ी उत्सुकता से आगे बढ़ आया। उनकी हरकतों पर अब वह शरारत पर उतर

आया। अरहर की झाडियों में थोड़ी हरकत हुई। शारदा की आँखें खुली, उसने देखा वघुवन का खकुरेल उसे एक टक निहार रहा है। उसने हड़बड़ा कर गंगिया की पीठ से पीठ हटा ली। खकुरेल फिर अरहर के खेतों में छुप गया। पर अब दोनों जान गयी थी कि खकुरेल उन्हें अपनी लिप्सा की आँखों से देख रहा है। मुबा उफर नही पड़ जाता है ? पहाड़िया अपने गांव की लड़कियों से जो करता है, करता है, हम पर भी नजर डालता है। जानता नहीं कि हम कच्चा खा जायेगी। जो करना है। अपनी सोसाइटी में करो, हम वैसे नहीं है। शिवा पड़ोस से लक्ष्मण जी से प्रेम विवाह कर लिया और मामा से पकड़ाने पर फिर छोड़ भी दिया। शशि हमारी सहेली है तो क्या हुआ ? मैं जानती नहीं हूँ ? पाँचवी क्लास में ही रोज महेन्द्रा उसके पैर में पैर रगड़ता था। वह भी सटकर बैठती थी। चमचमाते हुए कपड़े में उसके अपने दुलहा के साथ आती है। है जानती हूँ उन कपड़ों का राज मैं भी। खबरदार, हम वह राजवाली नहीं। कह देती हूँ, ऐसा पाठ पढाउँगी कि छठी का दूध याद आ जायेगा। एक डंटा कपार पर लगेगा तो सब पहडीयाई निकल जायगी। इधर-उधर किया तो सारे वधुवन में आग नहीं लगवा दूं तो मेरा नाम शारदा नहीं।

चल गंगिया, अब हो गया। देखो, अब माँ बिगड़ने लगेगी। सूरज की गर्मी तेज होने लगी है। दोनों अब जल्दी जल्दी कपड़े लगाकर जाने लगी। अब वे मंदिर के रास्ते न होकर उसी रास्ते जल्दी जल्दी जाने लगी जो जल्दी घर पहुंचता है। वह रास्ता अरहर के खेतों से होकर जाता था। शारदा चलती जाती और मन ही मन बुदबुदाती जाती थी। गंगिया अब चुपचाप उसका अनुसरण करती जाती थी। वह जानती है, इस समय इसके गुस्से को। शारदा बुदबुदाती जाती, इधर-उधर देखती जाती।

उधर सूरज की गर्मी तेज होती जा रही थी। इधर खकुरेल के जीवन भर का संस्कार गर्म होता जा रहा था। उसने दोनों को अरहर के खेतों में जाते हुए देखा और दूसरे रास्तो से आगे बीच में ही छेड़ने का विचार कर उनलोगों को घेरना चाहा। इधर-उधर देखती, फुफकारती शारदा चली जा रही थी। गुस्से से उसके से गिर पड़ी। अंगुली पर मोच आ गया। शारदा को छूने का अच्छा मौका देखकर पाँव ठीक से नहीं पड़ रहे थे। तभी खकुरेल को उसने आगे देखा कि वह खकुरेल ने दौड़ कर शारदा को पकड़ कर उठा लिया और शारदा की चोट लगी। अंगुली को पकड़ कर सहलाने लगा। शारदा को लगा जैसे आग में घी पड़ गया हो। अपनी चोट खायी हुई अंगुलियों को छुड़ा कर भरपूर तमाचा उसने खकुरेल के गाल पर जड़ दिया।

"खकुआइल मुआ, तुम क्या समझते हो ? हम वघुवन की रंडी है। पकड़ो जाकर अपनी सोसाइटी की छोकरियों को जो दिन भर में पता नहीं कहों. कहाँ जाती है। हमारे गांव की ओर, हमारी ओर आँख उठाई तो हम तेरा मुह नोच लेंगे, समझे ?"

"मैं जानता हूँ कि तुम ऐसा करके अपनी बेइज्जती नहीं करवाओगी। तुम्हारी नस नस मैं भी पहचानता हुँ। क्या तुम चाहती हो कि तुम्हारी शादी नहीं हो ?" खकुरेल ने अब उसका हाथ पकड़ कर अपने सीने पर लगा लेना चाहा कि शारदा ने दूसरा तमाचा जड़ दिया।

"बेइज्जती से डरनेवाली अवलाओं को सताने वाले शैतान हम किसी से भी नहीं डरती। आज मुझे अपना रूप दिखलाना ही होगा।" कहती हुई वह आवाज देने लगी। इसी बीच गंगिया दौड़कर खेतों में काम कर रहें अपने गाँव के लोगों को कहने लगीं। कुछ लोग सुबह-सुबह खेतों में आये थे, कुछ लोग खेत जोतने के लिए बैलों को जोड़ रहे थे, वे सभी छोड़कर दौड़े आये।

खकुरेल जो भागा तो मुड़कर नहीं देखा पर नदी के किनारे जाते-जाते कुछ लोगों ने उसे दबोच लिया और उसके मुंह पर कपड़ा ठूंस कर अपने गाँव की ओर लेकर चलते बने। खकुआइल साहब चलिए आज हम आपकी भुजिया बनायेंगे। शाले गाँव की बहु बेटियों को छेड़ता है। लाज शरम को बाप दादे की चिता में जला दिया। अरे था ही कहाँ लाज शरम कि जलायेंगे। बाप भी वैसे ही, दादा भी वैसे ही। दादा ने सलोनी को रख लिया। बाप माँ को कलपते छोड़कर काशी वास चला गया। साथ में मोहन बहु को भी लेता गया। जब वह मोहन वहू को भी लेता चला गया तो माँ बेचारी कितने दिनों तक रोती कलपती ? सो अब वही मोहन बहू हो गयी। होना भी यही चाहिए। पूरा न्याय इसी को कहते हैं। ओ खकुआइल तू बोल तो किसका लड़का है ? मोहन बाबू का कि केशव बाबू का ? शाला हो सकता है दोनों का बेटा हो, दोगला। इसलिए तो ऐसा करता है। चलिए आज हम गाँव में बतलाते है कि आप किसके लड़के हैं। अरे सिंहासना जरा एक बोझा कइन काट कर लेते आओ।

में सिंहासना कइन काटने चला गया। कुछ लोगों ने खकुरेल साहब के मुँह में कपड़ा ठूस दिया और गाँव की ओर चल दिया। कुछ वघुवन वाले लोगों ने भी झील के उस पार से देखा। कुछ लोग रोष से भरे तो पर अधिकांश लोग खकुरेल

साहब के कुछ ज्यादा ही आशिकमिजाजी से तंग थे। उनकी आशिकमिजाजी उसकी अपनी ही सोसाएटी में रास नहीं आती थी तो उस पार के मधेश के लोगों साहब की तो बात ही क्या ? आज तो भुर्ता बना देगा लोग नहीं, जो भी हो हमारी कौम है। कुछ भी हो हमें उसे बचाना होगा। दो आदमी खबर लेकर कलैया पहुँच गये। मान लिया जाय कि उसका दोष है तो भी लोग कानून को अपने हाथ में नहीं ले सकते दूसरी बात होती तो हम भी खुकरी लेकर चल देते पर खकुरेल साहब की ओर से हमें अप्रत्यक्ष वर्क करना होगा। आखिर पुलिस किस लिए है ? वही मशी आले लोग जाँय ? १० दिनों तक किल्ह काटने पर भी सुन ले तो गनीमत समझिए। कम से कम हमें इनका फायदा तो उठाना ही चाहिए। कलैया पहुँच कर कुछ लोगों ने पुलिस को इतल्ला कर दिया। हमको क्या है, इज्जत वाली अपनी इज्जत नहीं बचायेगी तो हम कैसे बचायेंगे। अब पुलिस जायेगी और छिया लेदर होगा। हाँ, शार दा अब हवालात की हवा खायेगी तो पता चलेगा कि अपनी इज्जत कैसे बचायी जाती है। थोड़ी छेड़खानी क्या कर दिया, आसमान सिर पर उठा लिया। थोड़ा छू क्या दिया, मानों अपवित्र हो गयी। अब बचाइए अपनी पवित्रता।

गंगिया को भी यह बुरा लगा था। चलते वक्त उसने कितना समझाया था। छोड़ो जाने दो, बात का बतंगड़ मत बनाओ। देखो अब रोज संझा-पराती होने लगी है। सब औरतें क्या कहेगी ? कहीं खबर ससुराल वालों के यहाँ पहुँच गयी तो क्या होगा ? बोलो, तब तो सब किया कराया माटी हो जायेगा। बधुवनवाले को जानती नहीं हो ? साँप मार कर लाठी बचाने वाले लोग हैं थे। फिर हमारे जैसे गौ हिरनियों का तो वे रोज शिकार करते हैं। सारे जंगलो को सफा कर दिया। बाघ, हाथी, गैंडा, सब उनसे डरते हैं। कुछ ऐसा कर देंगे कि तुम तो बदनाम होगी, हो, मुझे भी नहीं बनसेंगे ये लोग खबर पहुंचेगी जेल में तो वे क्या कहेंगे? वहां वे जेल में बैठे-बैठे समझेंगे कि सचमुच ऐसी तैसी हूँ पर वह क्या करे, शारदा तो बस शारदा है। जब बरसती है तो फिर बरसती ही है, डरती है तो बस डरती है।

उधर गाँव के कुछ लोग भी मना किये पर नवयुवक कहाँ मानने वाले थे। वे तो आगे-पीछे का परिणाम भूलकर कुछ भी करते हैं। उनको परिणामों से क्या मतलब ? प्रधानपंच के यहाँ नहीं, ले चलो सिंहासना के दुआर पर। प्रधानपंच तो साला खुद मेंउगा है, तिरपटवा का चेला। उसका बेटा सितरमवा और सितरमवा का साथी ठकुरा................ नहीं नहीं ले चलो सिंहासना के यहां। पर बहुत से

नवयुवकों ने ऐसा नहीं किया। फिर भी कुछ लात, जूते पड़ ही गये। जल्दी से एक आदमी ने कइन के बोझ को सिंहासना के घर के अंदर ले जाकर छुपा दिया। फिर भी खकुरेल साहब की देह पर कुछ निशान बन ही गये। क्या किया जाय, क्या नही किया जाय, अभी इसी में लोग लगे हुए थे तब तक पुलिस आनन-फानन में पहुंच गयी। सभी लोग मुंह ताकते रह गये। सभी लोग चकित थे। यही पुलिस जब हम कोई शिकायत लेकर जाते हैं तब दश-दश दिनों तक कहां रहती है ? ऐसी मुस्तैद कारवाई! क्यों नहीं, क्यों नहीं, आखिर इस देश की पुलिस जो है, उस पार की पुलिस बघुवन की पुलिस। आइए आइए इन्सपेक्टर साहब एक इक्स्पेक्टर साह १ चले गये तो क्या हुआ, आप भी तो इन्सपेक्टर साहब ही है। दोनों में कोई फर्क मो होना चाहिए। वे चले गये तो उनसे भी मुस्तैद आप आ चुके हैं। वे तो बेचारे की मां के मरने के चलते सरुवा हो गये, नहीं तो सुना था यहीं पर उसको गोद-वा मिलने वाला था। आखिर वह मिला, पर यहाँ से चले जाने के बाद पोखरा में। अब आप आये है, बोलिए आप क्या लेंगे ? आपको क्या चाहिए ? हम सभी गुनहगार लोग आपके सामने है। ऐ, छोड़ दो इन सज्जन खकुरेल को देखो कालिन से मुँह को पोछ दो, दाउरा सरवाल पहना दो, अब इनके संरक्षक आ गये हैं।

इन्सपेक्टर साहब को लगा कि ऐसी लताड़ उनको जीवन में कभी नही मिली थी। फिर भी उन्होंने कड़क कर कहा -

ऐ, ज्यादा बक-बक सुनना मैं नहीं चाहता। तो क्या मैं कानून आपके हाथों में दे दूं ? इसने जो कुछ किया है, उसका फैसला वहाँ इजलास में होगा। आप लोग चाहेंगे तो सी.डी.ओ. कार्यालय में ही हो जायेगा। पर यह सब मनमानी नहीं चलेगी। वहीं पर तिरपट बाबु बैठे थे। जब जाकर लोगों ने कहा तो उन्होंने मुझे तुरंत एक्सन लेने के लिए कहा क्योंकि उनका कहना है कि अब इस गाँव पर उनका खास इन्टरेस्ट है। अब इस गाँव में उनका कोई सम्बन्ध होने वाला है।

लो अब बात तिरपटवा के पास भी पहुंच गयी। हो गया अब कबाड़ा। कितनी ही बार कहा कि छोड़ दो इसे। इस बदमाश के चक्कर में पड़ कर अब मैने सारा गांव बदनाम होगा। सभी जिला जवार अब हमारे गांव की ओर अंगुली उठायेंगे। यह गंगिया और शारदा कहाँ है शारदा, पकड़ के ले आओ। क्या मतलब है उसे वहां जाने की ? क्या वह जानती नहीं ? क्या मतलब दो कौड़ी के लोगों को मुँह लगाने की ?

"ऐ, हमको दो कौड़ी का मत बोलो, नहीं तो कह देता हूँ।" अब खकुरेल निडर हो गया था। इक्सपेक्टर साहब पसाह में नहाते समय इसी ने इशारा करके बुलाया था। कई दिनों से मैं इसके पीछे लगा था। इसने हाथ उठाया तो मुझे लंगा कि बुला रही है। जब मैं उसके पास गया तो दोनों गालों पर थप्पड़ मारा। देखिये, अभी तक मेरे गाल पर निशान बने हुए हैं। फिर उन लोगों ने मेरे मुंह में कपड़े ठूस कर यहाँ तक लाया। मुझे चिल्लाकर अपने गाँववालों को बुलाने का भी समय नहीं दिया। एक आदमी पटक कर अपना पूरा गमछा मेरे मुँह में ठुस दिया। देखिये, देखिये। "खकुरेल ने बताया, इन्सपेक्टर ने देखा। खून का खून देख कर उसका चेहरा तमतमा गया। पर संयम से काम लिया। हम कुछ नहीं जानते, सारी बातें अब वहीं जाकर होगी। हम दोनों को ले जायेंगे। खकुरेल साहब और शारदा दोनों को। जरूरत पड़ी तो गंगिया को भी।

सुनकर कुछ लोगों की भौंहें तन गयी। कुछ लोग एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। कुछ लोग इस बात का विरोध करने लगे। पर हुआ वही जो इन्सपेक्टर चाहता था। कहाँ संझा-पराती का समय, शारदा ने यह क्या किया ? बात ही बात में हवालात का चक्कर लग गया। अब शारदा के माँ-बाप शादी व्याह का चक्कर छोड़, पुलिस वालों के चक्कर में पड़ गये। बेटी के भाग में अब बह्मबाबू, जैसा वर नहीं लिखा है। सुनेंगे वे तो क्या अब शारदा का हाथ थामेंगे ? वही क्या, कोई भी अब शारदा का हाथ नहीं थामेगा। यही हमारी सोसाइटी है, यही हमारा समाज हैं, यही हमारा देश है। तिरपट बाबू से ही कुछ कहना होगा। उनके अलावा अब कोई सहारा नहीं लगता। के चाहे तो शारदा को छुड़ा भी सकते हैं, तथा उसकी लाज भी रख सकते हैं। आखिर ब्रह्मबाबू उन्हीं का तो भाषण लिखते है। पर शारदा को बदलना होगा। जो-जो तिरपट बाबू कहेंगे करना होगा। नहीं करेगी तो अब हम भी कुछ नहीं करेंगे। कैसे नहीं मानेगी? मर जायेगी तो मर जायेगी, पर झुकेगी नहीं। हाँ यह दुनियाँ है, झुक कर काम निकालो, मार-मार के भुर्ता बना दूंगा अगर नहीं मानती तो।

तो रहे थे, पर कुछ कर नहीं रहे थे। दरवाजे पर बैठ कर शारदा के मां-बाप दोनों कर दूसरे दिन शारदा की मां तिरपट बाबू के यहां हाजिर। नवयुवक लोग तिलमिला दरवाजे पर तिरपट बाबू के निकलने का इंतजार करने लगे। लोगों ने कहा कि भीतर खबर पहुंचा दी गयी है, पर सच क्या है, शारदा के मां-बाप को समझ में नहीं आया। इंतजार करते-करते काफी देर हो गयी थी। उसी समय ब्रह्मबाबू आये और शारदा

के माँ-बाप की ओर से मुंह फेरते हुए कोठी के अंदर चले गये। लगा जैसे उन्होने उन्हें पहचाना ही नहीं हो। वैसे भी वे उनको पहचानना नहीं चाहते थे। पहचानते तो है उनकी बेटी को। वह भी अगर दूसरी शादी नहीं होती तो, बाल सफेद नहीं हो गये होते सुन तो उनकी बेटी को भी नहीं पहचानते। पर अब मजबूर होकर पहचानना ही पड़ता है। एक बार तो देखा कि घूंघट तान दिया उसने। बस रूप आंखों से दिल तक पहुंच गया था। पर अब यह उल्टी यात्रा कर रहा था। जब तिरपट बाबू से उन्होंने कहा कि शारदा जी हवालात की हावा खा रही हैं, वह भी अरहर के सत्य पर तो उनका मुँह भी खट्टा हो गया।

"मैं तो कहता हूँ कि अब शारदा वारदा का चक्कर छोड़ दीजिए ब्रह्म बाबू। अब क्या बाल सफेद हो गये हैं। देखिए न, पुलिस वालों के यहां पड़ी हुई है। वह तो मैंने कह कर उनकी खास हिफाजत करवायी है, आपके चलते। अगर आप उसे छोड़ दें तो फिर कौन पूछे।

"पर मंत्री जी, अभी पूरा कारखाना चलाना है। जब ऐसी घटना हो गई है। तो छोड़ना ही पड़ेगा, पकड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता। फिर भी एक बार देखा जाय कि वह शारदा कैसी है जिसने शादी से पहले ही ऐसा नाम कमा लिया। मैं सिर्फ अब उसे देखने के इन्टरेस्ट से जाना चाहता हूँ और कुछ नहीं। तमाशबीन बनकर।"

तय हुआ कि चला ही जाय, दोनों भीतर से निकले। दरवाजे पर ही शारदा के माँ-बाप मिल गये। अरे तो आप लोग कब से ...? यहाँ आने की क्या जरूरत ? जो करना है सो करिए, कराइये, नाक कटवाइए। हम तो हइए है चलिए चलते हैं, हाँ-हाँ, वहीं चलते हैं। बात पूरन बाबू का मानिए, बोट देवधारी बाबू को दीजिए, पुलिस से बचाने तो हम ही चलेंगे। ब्रह्मबाबू से सगाई नहीं हुई होती तो हम छोड़ देते। कितना आपलोगों के लिए दौड़ता फिरु, ऊपर से क्या कहते है ? तिरपटवा। आपके गाँव के सभी लोग, मुझे मालूम है, तिरपटवा छोड़ कर कुछ नहीं कहते ? अरे राजा ने त्रिशक्ति पट देने को कहा कि हम तीनों शक्तियों के संवाहक है - ब्रह्मा, विष्णु, महेश। हो चाहे नहीं हो, हम ये नहीं कहते कि हम ब्रह्मा, विष्णु, महेश जैसे ही हैं, पर एक आदर है, एक मान है।

................पर लोगों की तिरपटवा चलिए चलिए तिरपटवा चल रहा है।

"शारदा के मां-बाप क्या जवाब दे ? शारदा होती तो इसका भरपूर जवाब उसके पास मौजूद रहता है पर हम आये है जवाब देने ? अच्छा बबुआ, हम तबतक

पीछे से आते हैं । कहाँ आउँगा हम में थोड़ा लेट होगा ।" चुपचाप दोनों उनके पीछे-पीछे चलने लगे ।

अरे आइएगा कहाँ ? जहां आपकी सुपुत्री ने डेरा डाला है, हवालात में । तिरपट बाबू ने मोटर साइकिल उठाया और पीछे ब्रहमबाबू को बैठा कर फट-फट- फट हुर्र घर घिरं करते हुए चल दिये । शारदा के माँ-बाप ने पगडण्डी का रास्ता पकड़ा, और युद्ध सड़क पर बस की इंतजार करने चले गये ।

X X X

"बोल छोकरी तूने क्यों ऐसा किया ? खकुरेल साहब को बदनाम करके तुम को क्या मिला ? क्या तुम नहीं जानती कि इसमें तुम खुद भी बदनाम होती है ?"

"ऐ लुच्चा, छोकरी बोकरी मत बोल । मेरा नाम शारदा है समझे ? कौन बदनाम होता है कौन नहीं, इससे मुझे मतलब नहीं । मतलब है सिर्फ सच और अस्मत से । सच जो था उसे मैंने कहा । मैंने अपनी अस्मत बचायी है। तुम क्या समझते हो कि अस्मत लुटाकर, बदनामी बचाया जाय । तुम बदनाम करके मुझे क्या करोगे ? मैं तो समझी कि तुम इन्सपेक्टर हो लेकिन तुम तो लुच्चे हो लुच्चे । छोकरी बोलता है ? कानून के ये रखवाले छोकरी बोलता है । खकुरेल साहब, मैं छोकरी । हराम जादे छोकरी बोलता है । कह दिया सो कह दिया, फिर कभी छोकरी बोला तो यही पर जान दे दूंगी, पूरन की मां की तरह । पहले के इन्सपेक्टर जैसा तुझे भी यहाँ से मुअतल न कराउं तो मेरा नाम शारदा नहीं। मैं शारदा हूँ, शारदा किसी से नहीं डरती । सच ही मेरा जीवन है, सच ही मेरी रोटी है सच ही मेरा कपड़ा है, समझे ?

बाप रे बाप यह लड़की है या जलती हुई आग । इन्सपेक्टर को लगा जैसे जलती हुई आग में हाथ डाल दिया हो । जैसे आग में हाथ डालते ही उसे तुरंत खींच लिया जाता है, वैसे ही इन्सपेक्टर साहब ने खींच लिया। बिल्कुल बोलती बंद हो गयी, मौन धारण कर लिया। बोलती है कि मुहत्तल करवा दूंगी। इसकी तो जीभ काट लेनी चाहिए ? न रहेगी बाँस न बजेगी बसुरी ।

तभी तिरपट बाबू ब्रह्म बाबू के साथ प्रवेश किये । एक बार शारदा को देखकर रास्ते में उसे छोड़ देने का जो विचार बनाया था, वह बदलने लगा । ऐसी कर दोनों की आँखें चौधियाँ गयी । ऐसा रूप ! गुस्से से तमतमाये हुए चेहरे को सुन्दर, नहीं, नहीं मैं तो इसी से शादी करूंगा । ऐसा तमतमाया हुआ चेहरा सिर्फ

सत्य के साथ ही हो सकता है । सब बिल्कुल झूठ बोल रहे हैं लोग। ब्रह्म बाबू तिरपट बाबू से ज्यादा अनुभवी आदमी थे । वैसे ही वे उनका भाषण नहीं लिखते रहे है। वह तो तिरपट बाबू के पुरस्कारों का नम्बर ज़्यादा हो गया । फिर पड़ते हैं । थोड़ा बुजुर्ग, नहीं तो आज तिरपट बाबू की जगह पर वही रहते । कई बार उन्हें लगा कि जब उन्हीं के भाषणों से तिरपट बाबू को त्रिशक्ति पट तक मिलने की बात हो जाती हो तो सीधे वहीं क्यों न इसका इस्तेमाल करें। पर इनके मनसूबे को तिरपट बाबू खूब अच्छी तरह जानते हैं और साथ ही उस पर पानी फेरने के तरीके भी । जब ब्रह्म बाबू उनका भाषण लिखने में मशगुल होते हैं तब तक तिरपट बाबू उनके मनसूबों पर पानी फेरने के तरीके सोचते रहते हैं ।

"नहीं-नहीं तिरपट बाबू, इस लड़की को देखकर ऐसा नहीं लगता कि यह गलत है । इस खकुरेल साले को हम पहले से जानते हैं । हमारे कारखाने में ही काम करता था । इसी लुचई के चलते मैंने निकाल दिया । इस लड़की को मुक्त कराना ही होगा ।"

"घबड़ाइए नहीं ब्रह्म बाबू, मैं आपके मनसूर्वे को खूब अच्छी तरह जानता था और यहाँ पर आते ही आप के मनसूबों पर पानी कैसे फेर दिया जायेगा ? मैं इसलिए आपको साथ लाया कि देख आप किस धातु के बने हुए हैं । वैसे मैं भी यही चाहता हूँ कि आप शारदा में उलझें रहें तो हमारे हक में अच्छा होगा ।"

"क्या मतलब ?" ब्रह्म बाबू की आँखे चमकी । उन्हें लगा कि वे ब्रह्म बाबू की कलई खोल रहे हैं । और साथ ही बतला रहे हैं कि वे कितने पानी में हैं ।

"नहीं, नहीं कुछ नहीं, यही कि यह लड़की हमारे लिए बहुत फायदे की होगी । चुनाव आ रहा है, आपकी शादी हो जायेगी तो इस नाते से भी हम इसके गाँव जा सकेंगे । तब आपके साथ लोग कुछ न कुछ हमारी स्वागत भी करेंगे ही । अभी तो खाली तिरपटवा कहते है लोग, तिरपटवा ।............. "शारदा ने आँखें नीचे कर ली"

ब्रह्म बाबू खुश हो गये, वे सब कुछ समझ गये । तिरपट बाबू ने इशारा दिया और इन्सपेक्टर भी सब कुछ समझ गया । ब्रह्म बाबू अपनी सारी समझ भुला कर शारदा की ओर देखने लगे । कैसा मोहक, कैसा अनिवर्चिनीय रूप ! सत्य का रूप ऐसा ही होता है । इन्सपेक्टर सबकुछ समझ कर उसे फिर कभी ऐसा नहीं करने की हिदायत देते हुए स्वतन्त्र कर दिया । उसी समय उसके माँ-बाप भी वहा

पहुँचे । तिरपट बाबू, ब्रह्म बाबू और इन्सपेक्टर तीनों की पूरी समझ उन पर ही निकली । तीनों के डांट खाते हुए वे बेटी को लेकर, घर की ओर चल दिए ।

सझा और पराती फिर शुरू हो गया। गांव में फिर सब कुछ पूर्ववत होने सभा संगों लगर पर इधर ब्रह्म बाबू की खुशी और उधर शारदा के दुःख का ठिकाना न रहा। शारदा को पता नहीं क्यों उस दिन इन्सपेक्टर और तिरपट बाबू के साथ देख कर म बाबू बिल्कुल ठीक नहीं लगे । उनके आते ही चुप हो गयी थी । झुक न जाती तो क्या होती ? दूल्हा खड़ा हो तो किसकी जीभ चलेगी ? अगर वे नहीं आते तो इन्सपेक्टर का अच्छा हजामत बनाती । उसी दिन से शारदा को ऐसा लगने लगा कि ब्रह्म बाबू के साथ उसकी अभिव्यक्ति की मौत होगी । तब वह सच को न बोल सकेंगी । शायद इसी षडयन्त्र से तिरपट बाबू आदि मिलकर ऐसा कर रहे हैं । नहीं तो फूल से सफेद बाल और हमसे तिगुने उम्र का क्या मेल हो सकता है ? न हम मिलते हैं, न हमारी अभिव्यक्ति मिलती है, न हम मिलते है, न हमारी सम्पति मिलती है । फिर भी वे लोग पिता जी के आगे पीछे करते रहते हैं । पर वह क्या करें ?

संझा और पराती....................

....

आखिर वह दिन भी आया । दोपहर के बाद से ही गाँव की सड़कों पर घुड़दौड़ शुरू हो गयी । कोई मोटर साइकिल, कोई गाड़ी तो कोई साइकिलों पर धीरे-धीरे पतरहटी गाँव में उतरने शुरू हो गये । शारदा के बाप तो गरीब थे पर उनकी इस तमन्ना को कि उनकी एक मात्र बेटी की शादी चढ़कर होगी की पूर्ति के लिए ब्रहम बबू ने विशेष रूप से अपनी ही ओर से आयोजना कर रहे थे । स्वागत के लिए सभी लोग ब्रह्म बाबू की ओर से तैनात थे । शारदा के मां-बाप को कुछ सोचना नहीं था । उनको सिर्फ अपनी इच्छा की पूर्ति होते देखना था । किसी धनी से धनी के जीवन में उतारा था । तिरपट बाबू के भाषण लिखने वाले, अपने प्रेस के सबसे आदमी के घर में भी इस खुशी का आगमन दुर्लभ था जो शारदा ने अपने माँ-बाप बड़े प्रोप्राइटर की शादी क्या इसी तरह हो जायेगी ? देश भर के मंत्री भूतपूर्व मंत्री माननीय सभी लोग आमंत्रित थे । पत्रहीट गांव का भाग जाग गया था। सड़के ऐसी कर दी गयी थी ताकि धूल और गुब्बार कुछ कम उड़ सके । मोटरों के लिए रास्ता खुला था, फिर भी पसाह में पुल बन गया। कलैया से पत्रहीट तक

तोरणद्वार बना दिया गया । वघुवन वालों ने अपने गांव की सीमातक तोरण द्वार नहीं बनाने दिये हैं । कोई राजा की सवारी है ? बाबू साहेब के लिए तोरण दबार बनेगा ? नहीं बनने देंगे हम अपने गांव में । कुछ तोरण द्वार को उनलोगों ने भी उखाड दिया । इसी तोरण द्वार से होते हुए शारदा को ब्रह्म बाबू पकड़ के ले जायेंगे । शारदा इन्हीं द्वारों से होती हुई उस कैदखाने में जायेगी जहां पर ब्रह्म बाबू की हवेली के अंदर खट-खट-खट करता हुआ प्रेस का मशीन चलता है ।

दिन ढलता गया, शाम होती गई । चमचमाती कार पर ब्रह्म बाबू का जुलूस गाँव की ओर बढ़ने लगा । विभिन्न तरह की फुलझड़ियों, पटाखों एवं कृत्रिम रोशनियों के बीच आज पत्तरहटी की रात गहरायेगी । फूल मालाओं से सजी कार के अंदर ब्रह्म बाबू अपने सफेद बालों को खिजाब से रंगे हुए एवं सिर पर राजमुकुट लगाये हुए अपनी दोनों आँखों की तेज चमक को छिपा पाने में असमर्थ थे । वे उचक-उचक कर कार से बाहर सर को निकालते और अपने उस इंतजाम को निहारते थे कि वह शारदा को बाँध कर ले जाने लिए प्रयाप्त है या नहीं ? ज्यों- ज्यों वे आश्वस्त होते जाते थे, त्यों-त्यों उनकी आँखों की चमक तेज होती जाती थी, युद्ध के मैदान में जीते हुए किसी विजेता की तरह । इस विजय पर्व के सभी खर्चों को उन्होंने खुद बहन किया था ।

शारदा के मां-बाप इस चौधियां देने वाले जुलूस को देख कर गद्‌गद हो रहे थे । शारदा की आँखों में निर्झर बरस रहे थे । उस जुलूस में कैद करके ब्रह्म बाबू उसे हमेशा अपने सफेद बालों का खिजाब बना लेना चाहते थे । उनके गद्‌गद होने और उसकी आँखों के बरसने में कोई सम्बन्ध नहीं था । माँ-बाप उसकी आँखों के निर्झर को देख कर और गद् गद् हो गये । ऐसा ही होता हैं । जब गम और खुशी दोनों गड़मड़ होकर भीतर वह रहे होते हैं तो आंखों के बांध तोड़ कर बाहर छलकते हैं । एक दिन यह सभी लड़कियों के जीवन में होता है । पर गंगिया उदास है। उसे शारदा के मन की पूरी थाह है । बाँकी लोग तो बस नाच गान, ढोल तमाशे, भोज, जलपान के लिए व्यग्र दीख रहे थे । थोड़ी ही देर में परछावन और द्वार पूजा के बाद बारात सामियाने में लग गयी ।

डिमिक, डिमिक, ताधिन, ताधिन धिन धिनता
अब चैन पड़े, तब ही जब उनसे मिलन होले
सखी रे मोरा मन उलझे, तन डोले.............
अब चैन..

हम प्यार में जलने वालों को चैन कहाँ,.......

आराम कहाँ । जब खास तौर से ब्रह्म बाबू के द्वारा बाँध कर लायी गयी तान महफिल में छूटने लगी तो ब्रह्म बाबू की चैन सचमुच गायब होने लगी । भूल गये कि वे आज है और उन्हीं के ऊपर आज का सारा ताम-झाम बना हुआ है । उनकी कोई भी हरकत पूरे गाँव वालों में ही नहीं, पूरे इलाके भर में मशहूर हो जायेगी । पर वे मशहूर तो थे ही कुछ और मशहूर हो जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता । अपने द्वारा खास तौर से बाँधने का उनका मनसुवा, आज और अधिक मशहूर बन जाना भी था ।

जबतक ब्रह्म बाबू इधर उलझे हुए थे, उधर कन्या निरीक्षण का समय हो गया । लोग उनको मुजफ्फपुरवाली का निरीक्षण करते हुए छोड़ कर, मड़वा में कन्या को निरीक्षण करने गये। यह रश्म तो होना ही था, और यह रश्म सब शारदा की मडैया में ही होनी थी । सारे जलसे, सारे आवभगत, सारे ताम-झाम भले ही कन्हाई बाबू के आलिशान मकान में हो रहा है पर रश्म, चौका पूरन तो अपने ही आंगन में होगा, यह हर माँ-बाप की तमन्नता होती है । यही तमन्ना शारदा के माँ- बाप की भी थी । सभी लोग उस मडैया में अपने-अपने चमचमाते पोशाकों के साथ किसी थर्ड क्लास डिब्बे में प्रवेश कर रहे यात्री की तरह प्रवेश किये । बहुत से लोगों ने कन्हाई बाबू के फस्ट क्लास डिब्बे में बैठे रहना ही उचित समझा । महत और कर्णिकार उससे भी बेहतर क्लास की खोज में लगे हुए थे । कहाँ पर चले आये, इन मदेसियों की शादी इसी तरह होती है हमें पता नहीं था। नहीं तो नहीं आते । अरे ऐसे कहीं किसी की शादी होती है ? दरबाजे पर एक घंटा पुजाई, एक घंटा पर छावन, थोड़ा महफिल में मन रमने को हुआ तबतक छोरी निरीक्षण ? क्या कर्णिकार जी, ओ क्या निरीक्षण ? हा कन्या निरीक्षण ! फिर विवाह का रश्म, कैसा ? अरे शादी तो चटपट मंदिर में जाओ, दरबाजे पर ही सिंदूर मिल जाता है, पता नहीं खाना कब मिलेगा ? न दारु, न पानी, न माँस न मछली, फिर उत्सव मांग में लगाओ । देवी के चरणों में सिर टेकने से पहले भागे-भागे सुहागरात के बेड पर सब कुछ निपटाओ, फिर दसरे दिन शाम को पार्टी दे दो, ७ बजे । किसी को कोई दिक्कत नहीं, किसी को कोई बेचैनी नहीं । इन मदेसियों की शादी क्या होती है जैसे उपवास व्रत पर बैठे हुए हैं । धत तेरी की कर्णिकार जी चलिए थोड़ा, हम खुद ही अपना बंदोवस्त कर लेंगे । उस पार के बघुवन गाँव में हमारा भगिना

रहता है । भीमसेन थापा के समय से वे लोग यहां चले आये हैं । आया तो था, पर हम क्या जाने कि ऐसा होता है, नहीं तो नहीं आते कर्णिकार और महत उठकर अपना बन्दोवस्त करने चले गये ।

थर्ड क्लास के डिब्बे में ठसाठस भरे लोग रश्म पूरा कर रहे थे । रश्म तो पूरा करना ही था । तिरपट वा अगुआ थे । उन्होंने तो शारदा को देखा ही नहीं बल्कि अपना पोलिटिक्स लगाकर यह शादी भी ठीक की थी, फिर भी वे सबसे आगे निरीक्षण की कतार में बैठे थे। उनको छोड़ कर और किसी ने शारदा को देखा नहीं था ।

"पंडित जी अब निरीक्षण का काम जल्दी से निपटाइए । इस थर्ड क्लास में दम घूंट रहा है । देखिये न कितने लोग ठूस ठूस कर भर गये हैं ।"

शारदा ने सुना । लाल जोड़े में घूंघट के अंदर ही उसने उस व्यक्ति को देखा जिसने यह कहा था । दम घूटता है तो क्यों आये हैं यहाँ ? दम तो मेरा घुटता है । इन सब लोगों ने मेरा दम घोट दिया आज । उसने इस बात को कहने वाले महाशय को देखा और पहचाना । वे देवधारी बाबू थे, अपने ही देवधारी बाबू ! कोई दूसरा कहता तो और बात होती । ये तो अपने ही देवधारी बाबू है । ये तो हमेशा पिता जी से वोट मांगने आते हैं और हम देते भी है । लाल घूंघट के नीचे चमकी आंखें फिर नीची हो गयी। वह कर भी क्या सकती है ? और दूसरी जगह होती तो कर मैं देवधारी बाबू को इसका जवाब देती, पर अब इस लाल घूंघट में मजबूर आंखें, माँ-बाप के चरणों में समर्पित शारदा क्या कर सकती है ? धीरे से दो-दो बूँदे आखों से आँसू गिर पड़े। उसके अपने ही हाथों द्वारा बनायी अंजली में वे दोनों आंसू गिर पड़े । पंडित जी उस अंजली में तरह-तरह की हरकत करते हुए अपने मंत्रों को पूरा कर रहे थे । कभी कलश से पानी निकाल कर हाथों में, कभी-कभी अक्षत के दाने अंजली में रखते जिसे शारदा सामने की कलश पर फेंकती थी । मण्डप में सारे कलश पर चावल के दाने फेंक कर शारदा अपने हाथों को खाली कर रही थी । डिब्बे के सभी ठूसे हुए आदमी उसके हाथों को देखकर खुश हो गये । यह हाथ, इतना खूबसूरत हाथ तो आज तक हमने नहीं देखा । ग्रहम बाबू के द्वारा दिये गये कंगन के बीच में चूड़ियों की कतार इस हाथ में चार चाँद लगा रही है । सभी लोग अब उस हाथ के बारे में ही चर्चा करने लगे । हाथ हो तो ऐसा, इस हाथ को बहम बाबू का कंगन ही बांधने योग्य है । वाह ! हमने तो सोचा ही नहीं था कि एक

मदेसिया हाथ ऐसा होगा । अरे कभी कभी इधर भी लोग होते हैं। ऐसा सिर्फ पहाड़ों पर ही नहीं होता । अब सभी लोग दम घुटने के बावजूद भी उस हाथ में दिलचस्पी सेने लगे थे। एक-एक कर के दूल्हे की ओर से गहने चढाये जाने लगे । अचानक शार दा का पांव उघड़ गया । दोनों पांव के कुछ हिस्से दिखलाई पड़ने लगे । लाल साडी के वोर्डर से ढके, ब्रह्म बाबू के द्वारा पहले से पहनाये गये पैजेब का थोड़ा सा हिस्सा भी दिखलाई पड़ रहा था। यह पैजेब शारदा के पैर को पूरा घूम कर बांध दिया होगा। सभी लोगों के चेहरे पर खुशी नाच गयी । उसी समय एक सखी ने सर से साड़ी का बोर्डर खींच कर पैर को ढक दिया । पैर के अंगूठे भी सबसे नहीं दिखलाते ।

अरे क्या पैर नहीं दिखलाते। कुछ देर में तो पूरा चेहरा दिखलाना पड़ेगा । कुछ लोग पैर ढकते समय पैर को देख कर कँप गये। उन्हें लगा जैसे कोई उनके मुँह पर तमाचा मार दिया हो । एक-एक कर ब्रह्म बाबू के द्वारा भेजे गये गहने शारदा की जोड़ी हुई अंजली में रख रखकर बक्से में वापस रखा जाने लगा। शारदा के माँ-बाप बलैया लेते हुए, मूछों पर ताव देते हुए रश्म की भव्यता को देख रहे थे । जब २५ थान सोने के गहने, बक्से में रख दिये गये तो डिब्बे से एक आदमी ने कहा :

“अरे रहने भी दीजिए, २५ थान हो गया, अब क्या मुंह नहीं दिखलायेंगे ? इतना सब मुँह दिखलाई होता है, बाप रे बाप इन मदेसियों के यहाँ भी क्या-क्या होता है ?”

“अरे भाई रश्म पूरा हो गया, इसी को मुँह दिखलाई कहते हैं, इसी को कन्या-निरीक्षण कहते हैं । बाकी हमलोग और कुछ नहीं करते । इतने लोगों के बीच में कन्या का मुँह उघाड़ेंगे ? अरे हमारा सारा देखने दिखाने का कोरम पहले ही हो जाते हैं । अब कन्या बीच बाजार में खड़ी होकर निलाम नहीं होगी ।”

“अरे कैसे निलाम नहीं होगी । जो देख लिया सो देख लिया है । हम तो नहीं देखे हैं । जब इसका नाम ही कन्या निरीक्षण है तो आप कन्या का निरीक्षण कैसे नहीं करायेंगे, निरीक्षण माने देखना, समझे ?”

“अरे समझे-समझे, जाकर अपने बाप को देखो । हमारे यहाँ ऐसा ही होता । बड़ा आये, शारदा को बीच बाजार में खड़ी करने ।”

“अरे कैसे नहीं करेंगे, क्या मंगनी है ? देखा कितने गहनों से लाद दिये हैं, हमारे ब्रह्म बाबू ने । मालूम होता है कहीं का खैरात आया है ? हम देखेंगे, कयों नहीं देखेंगे ?”

तिरपट बाबू और देवधारी बाबू ने दोनों नौजवानों के साथ बीच-बचाव करते हुए पंडित जी को कन्या को दिखला ही देने के पक्ष में राय दे दिया । अब उनकी बातों को जिला जवार के सभी लोग स्टाम्प समझ कर, मानकर चलते थे । और यह तो उनका अधिकार था । इतने लकदक गहने पहन कर जब हमारी शारदा चलेगी तो हाथ तो क्या पांव भी उठने मुश्किल हो जायेंगे । नहीं-नहीं, अरे चुप र ह सिहासना, क्या-क्या बक-वक करता है ? तुम नहीं जानते हो, आज कल सभी पढे लिखे लोगों को कन्या को दिखलाना ही कन्या निरीक्षण कहलाता है । इसमें है भी क्या चलो छोड़ दो, देखने दो । आखिर ब्रह्म बाबू ठहरे प्रेस वाले कल से तो लोग ही नहीं देखेंगे बल्कि अखवारों में छपकर सारी दुनियाँ में घूम आयेगी शारदा । अब सारी दुनियाँ के लोग देख लेंगे । तब आप क्या करेंगे ? अरे छोड़यिे छोड़यिे बचकानापन । अब इस गाँव, सरेह, अमराई पसाह में ही भूले मत रहिए । अब इनका लम्बा चौड़ा संसार बनेगा । हो, पंडित जी करिए, रश्म, पूरी करिए ।

लाल साड़ी के घूंघट में टुकुर-टुकुर शारदा देख रही थी । अपने हाथों को अब उसने साड़ी के अंदर खींच लिया । अब चेहरा उघड़ने वाला है, हाथों को छुपाने के अलावा दूसरा उपाय नहीं ।

गगिया ने धीरे से अब लाल आंचल को उठाया । जैसे अरुणाचल के पर्दे से चीर कर उषा निकलती है । शारदा के मुखमण्डल की उषा को देखकर सभी दंग रह गये । तिरखी भौंहे, बड़ी-बड़ी मछलियों सी आंखें, उन्नत ललाट, पतले पतले होंठ, कानों में कर्णफूल, वालों में पसाह के झील से तोड़कर लाये गये कमल के फूल खिले हुए थे । माथे पर मुकुट पहनाकर साम्रागी बना दिया गया था । शारदा ने एक बार उस आंगन की जनता को देखा । उसमें जाने अनजाने सब थे । कुछ को उसने पहले से पहचाना था, कुछ को बारात आने के बाद पहचाना और कुछ को अनपहचाना ही, उसने एक बार देखा और फिर अपने चेहरे को ढकने का कोई प्रयास नहीं करती हुई आँखों को उपर उठा लिया । इन आंखों का सौंदर्य और भी महिमामंडित !

पंडित जी ने अब धीरे से घूंघट को मन्त्रोच्चारण के साथ ढाक दिया । सभी लोग धीरे-धीरे फूस के डिब्बे से निकलने लगे । कन्या निरीक्षण सम्पन्न हो गया था ।

यह तो हुई उस सोसाइटी की बात। अब हमारी’ भी अपनी कोई सोसाइटी है । बड़े की बात मैंने बहुत मानी पर अब बिदाई हमारे अनुरूप होगी । डोली में चढ़कर जायेगी गवना में । यह भी कोई इच्छा है ? दकियानूस कहीं का सास

कहती है, वह शारदा की डोली में चढ़ना देखेगी तो गदगद हो जायेगी । हर माँ अपनी बेटी को डोली में चढ़ना देखना चाहती है । खोइछा का चावल लेकर जब यह डोली पर चढ़ती है तो साक्षात लक्ष्मी लगती है । लगती रहे लक्ष्मी कोई, शार दा की मैं लक्ष्मी नहीं होने दूंगा । चुपचाप अभी बिदा कराइए, मोटर गाड़ी में बैठा कर सर से घर पर । वहा पर मेहमानों की पार्टी भी हैं । डोली पर चढ़कर दउर ा में डेंग वेग धरते रह जायेंगे। मेहमानों की मेजवानी कौन करेगा ?

लाख कहने पर भी शारदा के मां-बाप की यह इच्छा नहीं पूरी हुई । ब्रह्म बाबू फूलों से लकदक जीप पर शारदा को अपनी बगल में बैठाये, पेट्रोल की धुँए उड़ाते हुए चल दिये । शारदा के मां-बाप को जी भरकर रोने का भी समय नहीं मिला जो डोली पर चढ़ने के समय होता है । आनन-फानन में गाडी, देखते-देखते आंखों से ओझल हो गयी । और उसी रफ्तार में ब्रह्म बाबू के गांव भी पहुंच गयी । रात भर की थकी आँखें, शादी की सारी रश्म को पूरा करती, टुकुर-टुकुर ताकती एवं थकी हुई आँखें ब्रह्म बाबू के शरीर पर टिक कर बंद हो गयी। शारदा को नींद आ गयीं । नींद अभी पूरी भी नहीं हुई थी कि ब्रह्म बाबू का आलिशान मकान आ गया ।

शारदा और गंगिया को गलत कहा गया था कि ब्रह्म बाबू का भरा-पूरा परि वार है । यहाँ विरान हवेली में ब्रह्म बाबू के सिवा उनका कोई नहीं था । सफेद बालों के साथ भी अभी तक तिरपट बाबू के साथ देश सेवा में इतने व्यस्त रहे कि इस तरफ उन्होंने ध्यान नहीं दिया । माँ-बाप बहुत पहले ही उनको छोड़ कर चले गये । बस खट-खट-खटा-खट करते हुए प्रेस की आवाजों के साथ ब्रह्म बाबू अपने वालों को सफेद करते रहे। बस उसी हवेली में कभी कभी वे खिजाब लगाते हुए पाये जाते थे । अब खिजाब शारदा लगायेगी । वे बहुत खुश थे । नौकर चाकर शाम की पार्टी में व्यस्त थे । छुई-मुई शारदा एक तरफ बैठ गयी और अपने गाँव के सपनों में खो गयी । ब्रह्म बाबू, तिरपट बाबू के यहाँ आवश्यक सल्लाह-मशविरा के लिए चले गये । आखिर देश भर के लोग जमा हैं और बाकी उनसे भी बड़े लोग आने वाले हैं ।

शाम आयी, लोग आये । सबसे शारदा को परिचय होने लगा । सबने शारदा को देखा । शारदा को परिचय जैसी किसी चीज का पता नही था । डरी हुई, सहमी हुई वह सबसे हाथ जोड्ती देखती जाती, लोग अपना उत्तर न पाकर एक विचित्र भावना लेकर अपनी अपनी जगह पर चले जा रहे थे ।

“ओ तो आप शारदा है ? आज हमने देखा ।”

“अरे आप ही शारदा है ? लगता है आपने हमें कभी देखा नहीं ?”

आदि कितनी ही फब्तियों भरे शब्द को शारदा ने सुना । अगर अपने गाँव होती तो मैं इन लोगों को जवाब देती। ये मुए लोग सूट-बूट टाई लगाकर अपने आपको समझते ही क्या है ?

थकी हारी शारदा, इस सोसाइटी के लिए पान सुपारी अपने हाथों से उठाया । और सबको सामने परोसती हुई उस पार्टी को सम्पन्न किया । तिरपट बाबू और ब्रह्म बाबू ने पान-सुपारी बाँटती हुई शारदा को देखा । तिरपट बाबू ने एक बार अपना चश्मा उतार कर फिर से आश्वस्त हुए। यह शारदा है कि नहीं ? तिरपट बाबू ने अपने पास उस अखवार को खींच लिया जिसके मुखपृष्ठ पर शारदा की शादी की खबर फोटो सहित छपा था । यह अखबार सारी दुनियाँ में वितरित हो चुका था ।

१

जिस दिन पहाड़ियों ने काठमाण्डू में केदार और दिलीप की धोती खोल दी थी, उसी दिन मूरली बाबू ने वीरगंज में अपने दरवाजे के सामने रखे एक पहाड़िया की गुमटी को जबरदस्ती हटा दिया । वैसे भी मूरली बाबू उसके स्वभाव से काफी क्षुब्ध थे। जब गुमटी रखना था उस समय अगर वह आया होता तो वे उसका चेहरा देखकर ही मना कर देते । परंतु दिलमाया ने जब जाकर मुरली बाबू से आग्रह किया तो वे ना नहीं कर सके। पर थोड़े ही दिनों में दिलमाया की भी कलई खुल गयी । एक दिन जब वे यूँ ही बरामदे पर टहल रहे थे तब दिलमाया की शरारती आंखों को देखकर उसके प्रति उपजी हुई सारी सहानुभूति तिरोहित हो गयी। जब यह दिलमाया आयी थी, कितनी भोली भाली लगती थी, पर अब तो इसकी सारी कहानी, सारी कलई खुल गयी है । अब तो पता चला है कि इ पहाड़िया, मेरे लाख मना कर ने के बाबजूद भी छिप कर इस गुमटी में दारु बेच रहा है । जब उसने यहाँ पर चाय की दूकान की थी, मुरली बाबू ने साफ मना कर दिया था कि यहाँ पर इससे अधिक और कुछ नहीं चलेगा। पर मुरली बाबू को क्या मालूम कि उनके पारिवारिक घर के दरवाजे के सामने ही दारु तो क्या रात-रात भर कुछ और चलता है जो आंखों में चुभ गयी। बाप रे बाप मेरे परिवार की आंखों के सामने उसकी दरवाजे है। सुनते ही बरामदे पर टहलते समय दिलमाया की आँखों की शरारत मुरली बाबू के सामने यह पहाडिया यहाँ पर, यह खेल खेलता है ? अरे इ लोग आदमी है कि जानवर ? अरे, जानवर में भी थोड़ी शर्मा, लाज होती है, पर यह आदमी होकर...... शाला कहता है कि हम रामपुर में प्रधानपंच थे। यह तो पेट की भूख हम खींच लायी है । कौन सी भूख आप को खींच लायी है, यह तो तब पता चला जब गण्डक

पर की चाय वाली ने आकर कहा था कि हजरत तो दिलमाया के मोहजाल में फंस गये। जब उसके पति का देहांत हो गया तो बेचारे की चौथी बीवी को लेकर यहां पर चले आये । अरे कहते है कि अगर रखना होता तो वही रख सकता था, यहाँ आने की क्या जरूरत ? वह तो भूख की आग ने यहाँ खींच लाया । अरे दोनों आ जब आपस में मिल जाते हैं तो ऐसे ही होता है । प्रधानपची जाये चूल्हा भाड़ में उस चुल्हे में जल जाये पंचायती । हम दिल माया के साथ रातो रात अरुण खोला होते हुए बीरगंज पहुँच गया । वीरगंज में पहुंचने पर पता चला कि तराई के लोग कितने उग्र होते हैं । कहीं पनाह नहीं देते, उसमे पैसे चुरा लेते हैं । जब चार लोगों ने दिलमाया को घेर लिया तो हम भी सरेन्डर कर दिये । उन्हीं चार लोगों ने कुछ दिन बीरगंज में रहने के लिए गुमटी ठीक कर दिया ।

आनंद ही आनंद था वीरगंज में । सारी दुनियादारी तो वीरगंजवालों ने ही हमें सिखलाया था नहीं तो मैं क्या जानू यह सब लवरपेंच ! दिल माया को भगा कर लाया तो वह दूसरी बात थी, किसको नहीं होता, इस तरह की मजबूरी । पर बीरगंज ने मजबूरी में हमें जिस चीज को सिखलाया उसे हम नहीं भूल सकते ।

क्या आनंद था वीरगंज में, सिनेमा देखना वही सीखा, ट्रेन भी वही पर देखा । उनलोगों ने चाय के साथ पान की भी दूकान करवा दी । फिर तो पहले बनाने नहीं आता था जब बनाने आया तो दिलमाया ने सारे वीरगंज वालों के होठ लाल कर दिये। वहा सब लोग उसकी सराहना करते अघाते नहीं थे । थोड़े ही दिनों में जब मैंने अपनी ही एक गुमटी खरीद ली तो पता नहीं वे चारों जिसने हमें पनाह दिया था, क्यों मुँह मोड़ने लगे । वैसे भी हमारी दुकान से पान अब वे बुहत खा चुके थे । अब उसकी लाली उन्हें फीकी लगने लगी थी । पर जिस दिन उनलोगों ने मैं पिपर ा गाँव में थोड़ा खेत लेना चाहता हूँ, जिस पर मैं अपना घर बनवाउँगा और सुना कि उसी में थोड़ी बारी रखूंगा, खेती करूंगा तब वे दिलमाया के पास से बड़ी गम्भीर मुद्रा में उठ खड़े हुए थे । दिलमाया ने उनलोगों को समझाया कि पिपरा कोई बहुत दूर थोड़े ही है, दो माइल की तो बात है । उसे लगता था कि दिलमाया की जुदाई की खबर सुनकर वे लोग उदास हो गये हैं । कितना प्रेम करते हैं । हमारी जुदाई की खबर सुनकर ही उदास हो गये। अगर ये लोग नहीं होते तो वीरगंज में हमें कौन पनाह देता । मदेसिया, ठग, चोर उच्चका, छिनाल पर इसी में सबके हमदर्द होते हैं । कुछ लोग, सबसे हमदर्द होते हैं ।

उसी रात अपने होंठो को लाल करते वक्त ही जब सारे रूपये चोरी हो गये दिलमाया का दिल टूट गया। तब वास्तविक रूप से दिलमाया का दिल इन देसियों से टूट गया। उसे क्या पता था कि उन चारों में से एक को होंठ लाल करते वक्त ही ऐसा हो गया। एक जब उसके होठो पर हाथ फेर रहा था, तब बाकी लोग उसके रूपयों पर। चरम शिखर पर पहुंच कर जब मैं वैसे ही सो गयी तो सुबह पता चला कि सब कुछ लूट गया। काश ! मुझे उसी समय पता चल पाता कि मेरा सब कुछ लूट रहा है। पर क्या किया जाय ऐसा ही होता है। सब कुछ तुटकर ही पता चलता है कि सब कुछ लूट गया।

उसी दिन शेर बहादुर ने दिलमाया को मुरली बाबू के पास भेजा था। उसे पता था कि अब उस शहर में मुरली बाबू के अलावा दूसरी कोई जगह सेफ नहीं है। पर मुरली बाबू तो एक ही नजर में सब कुछ देख लेते हैं। मैं जाउंगा तो मुझे जगह मिलेगी, ऐसा नहीं लगता। दिलमाया ही जायेगी। वहां गुमटी रख दूंगा, तभी मैं मुर ली बाबू के पास जाउँगा।

दिलमाया आयी और उसकी आंखों के आंसू ने उन्हें पिघला दिया। आनन-फानन में गुमटी लाकर रख दिया गया। कहाँ उसी गांव में खेत खरीद कर शेर बहादुर विल्डिंग बनवा रहे थे, कहाँ अब उसी छोटी सी गुमटी को उठाकर मुरली बाबू के घर के आगे रख कर, गुजारा करना पड़ रहा है। अब वह तिरपट बाबू से मिलकर कुछ काम करेगा। एक बार पाल्पा के जिला सभा का उद्घाटन करने गये थे तो मैं रामपुर से प्रधानपंच का अधिकारी बन कर गया था। पर उनसे कैसे मिलूँ। जब वे सुनेंगे कि मैं............ नहीं नहीं अब यहाँ हमारा गुजारा नहीं होगा। बस हम लोग रामपुर ही चले जायेंगे। पर वहाँ भी गुजारा कैसे होगा ? जब वीरगंज में ही गुजारा नहीं होता तो वहाँ पहाड़ों पर कैसे होगा ? झख मार कर तो यहाँ रहना ही है। न जाने कब सरकार तराई को पूरी तरह मे हमें स्थानान्तरण करेगी ? अच्छा, कोई बात नहीं, पहले गुमटी तो रखें, फिर देख लेंगे मुरली बाबू को। हाँ मना किये हैं, यहाँ चाय के अलावा किसी चीज की दुकान नहीं रहेगी। हो मुजी मदेसिया चाय पीते होंगे, इसीलिए। अब रात इतनी चोरी चली गयी, खेती बाड़ी सभी चाय की दुकान से खरीद लेंगे ? चल चल पहले गुमटी रख तो।

बड़ी मुश्किल से शेर बहादुर ने दूसरों के द्वारा अपनी गुमटी को मुरली बाबू के दरवाजे के सामने रखवाया था। फिर शाम को शेर की तरह गुमटी में जाकर

सो गया था। दो चार दिनों में चुल्हे चौके सब बन गये। कृषि औजार कारखाने मे लोग रोज टिफीन में चाय पीने आने लगे। धीरे-धीरे जब लोग, कुछ और पीने की जिद करने लगे तो एक दिन दिलमाया ने ही शेर बहादुर से कहा -"अरे डरने की क्या बात है ? हम सब संभाल लेंगी। मुरली बाबू भी तो आखिर आदमी ही है। चाहेंगे तो उन्हें भी पिला दूंगी। कैसे आदमी होंगे कि पियेंगे नहीं पियेंगे तो देखेंगे ज़रूर। फिर हमें उतने पैसे कहाँ से आयेंगे जो आपके पंचायती प्लान में लगेगा। खेत, घर ऐसे ही नहीं होगा। उसके लिए पाई चाहिए पाई। ऐसे नहीं चलती दुनियाँ समझे? हमें सब कुछ बेचना होगा।

फिर शेर बहादुर वह सब कुछ करने लगा जो दिलमाया कहती गयी। दोमजीला गुमटी बन गया। एक में शेर बहादुर अपना माँद अलग कर लिया, दूसरी में दिलमाया का घर बन गया। पान की दुकान नहीं खोलनी है। होठ लाल करके दिखलाने से क्या होगा।

उसी के बाद मुरली बाबू ने दिलमाया की आंखों में उस शरारत को देखा था। फिर जाकर पिछवाड़े नहाने लगी थी। अजीब बात है, मैं यहाँ टहल रहा हुँ और वहीं पर नहाती जाती है, ताकती जाती है, हँसती जाती है। अरे जाओ, पाल्पा के खोला नाला में सबके सामने नहाना, यहाँ इस तराई में नहीं चलेगा, बेवकूफ औरत, मुरली बाबू को नहीं जानती है। यहीं पर सारा परिवार रहता है। जल्दी हटाओ यहाँ से गुमटी को। हम कुछ नहीं जानते, कुछ सुनना नहीं चाहते ? पूछता है कि हुआ क्या है? यह भी बताने की जरूरत है। यह भी कही बताने की बात है ? पूछना है तो पूछो अपनी दिलमाया हजूर से। अरे हमें तो उसी दिन शंका हो गया था जिस दिन नथुआ ने आकर कहा था कि बाबू साहब चाय दिन में और शराब रात में बेचने लग गये है। अरे यहाँ से जाते हैं कि गुमटी उमटी तोड़ दूं।

शेर बहादर, मुरली बाबू का उग्ररूप देखकर भिगी बिल्ली की तरह गया और गण्डक पर गणेश बाबू से बातचीत कर आया। इलाके भर का हमदर्द गणेश बाबू ने उसे थाम लिया। अब दिलमाया गणेश बाबू की दीदी बन गयी। गणेश बाबु, सभी को अपनी दीदी मानते हैं। वे होठों को लाल नहीं करते। क्या होगा, पान खाकर अरे बचपन से पहलवानी करता हूँ। खेला खाया हुआ शरीर, जितना पेट के लिए मांगता है, उतना होटों के लिए नहीं मांगता। रोज मांस-चिउरा चाहिए। तुम मांस चिउरा की दूकान कर लो। अरे पान बेचने से क्या होगा? मांस बेचो, माँस

। और दिलमाया अब गण्डक पर मांस बेचने लगी । जब गणेश बाबू से उबर जाता था तो बाकी लोगों को बेंच देती थी । गुमटी शान से उठाकर शेर बहादुर ले गया । जाते समय शेर की तरह देखा था उसने मुरली बाबू को और मुरली बाबू ने धीरे से मुस्कुरा दिया था । गजब होते है ये लोग भी, गोरखाली लोग !

गणेश भैया, दिन दहाड़े जब कपिला की हत्या करके इलाके भर में अपनी बहादूरी का डंका बजाया तो सभी लोगों में दहशत फैल गयी थी । पर उससे भी दहशत तब फैल गयी जब पहाड़िया जमीन्दार साहब की अनुकम्पा से फांसी के फंदे से बच गया था । तभी से वह इलाके भर का खौफनाक पर शालीन दादा बना हुआ है । लोग कहते हैं कि वह पोलिटिक्स भी जानता है और तिरपट बाबू और देवधारी बाबू से उसका मुलायम सम्बध है । पर वह उनसे भी ज्यादा पोलिटिक्स का ज्ञाता है । जब चुनाव आता है तभी वह उनलोगों को अपने पास फटकने देता है । उसके पहले वे अपने घर में, हम अपने घर में । क्या मतलब है उनसे, जरूरत होगी वे खुद हमारे पास आयेंगे। गाँव भर की विरादरी और इलाके भर के मेरे खौफ का फायदा उठायेंगे तो बदले में कुछ चाहिए भी तो ? इसके पहले न हमें उसकी जरूरत न उनको हमारी । अपने जमींदार साहब से भरपूर हो जाता है । लोग कहते हैं पहाड़िया है, पहाड़िया न होता तो आज हम न होते। न तिरपट बाबू बचा पाते हम को, न देवधारी बाबू। गया नहीं था उनलोगों के पास ? गया तो था, पर दोनों भीगी बिल्ली बने बैठे थे। बाँकी सब काम करा लो, लेकिन इस काम में हमारी दाल नहीं गलेगी । कोई नहीं सुनेगा । इतनी पहुंच हमारी नहीं है । हाँ, इतनी पहुंच नहीं है तो क्यों बने हैं मंत्री ? घर पर रहिए और अपने चाचा भतीजों से लड़िए ।

शाले कपिल जी, जिस थाली में खाते थे, उसी थाली में छेद करते थे । चले गये स्वर्गवास । नहीं चले जाते तो हम चले जाते ? एक दर्जन बच्चों का परवरिस क्या इसी तरह होता ? चले गये तो चले गये, आज हमारी एवं हमारे बाल बच्चों की आत्मा तो तृप्त है । खाने को दाना नहीं था, आज पक्का का मकान हो गया है । हमारा तो क्या, बाल बच्चों का भी रोब पूरे गाँव भर में है। पुनर्नवा तक के पास खबर जाते ही दौड़े हुए आना पड़ता था । गणेश भैया है, आना ही पड़ेगा । इधर कुछ दिनों से उसका भी तेवर बदलने लगा था ।

हम खायेंगे नहीं तो क्या करेंगे ? पहाडिया, हमारे अन्नदाता । लोग कहते है मदेसिया, पहाड़िया के अन्नदाता है, पुनर्नवा भी कहता था । उलटी बातें: करता था । पुनर्नवा चले गये जेल की हवा खाने । अरे हम खायेंगे, खायेंगे नहीं तो क्या करेंगे ? अरे वही खाते ही खाते तो यहां तक पहुंचा हूँ । अब दिलमाया दीदी का मांस भी खा जाता हूँ तो कुछ नहीं होता । माँस, फ्लेस, हाँ अंग्रेजी में इसे फ्लेस ही कहते हैं, कहता था कि हम लोग फलेस के व्यापारी है । अब जाकर समझ में आया कि फ्लेस और फ्लेस का व्यापारी क्या होता है । दिलमाया दीदी का फूलस, अहा कितना मीठा होता है ? जिसने भी खाया है, सरहाना करते अघाता नहीं । पर दिलमाया दीदी थोड़ा दुखी रहती है, चलते है वहां, हमें उसका दुख देखा नहीं जाता ।

उठते समय गणेश भैया की नाक में फ्लेस का सुगंध महका । वे जल्दी से उठकर गण्डक का रास्ता पकड़ लिए ।

“अरे आइए गणेश भैया । आइए बोलिए क्या दूं ? माँस दूँ ? वही आपका फ्लेस ?”

“अरे नहीं नहीं रहने दो दीदी उसका उचित समय नहीं हुआ है । कहाँ इतनी सुबह-सुबह कोई फ्लेस खाता है? अभी नहाना धोना बाकी है। अभी क्या कोई खाने का समय है ? बोलो तुमने क्यों बुलाया ? रोज तो हम आते ही हैं, फिर बुलाया क्यों ?”

“अब क्या बताऊँ गणेश भैया, बहुत दिनों से सोच रही थी, आप तो सब जानते ही हैं । आपकी जानकारी से पहले से ही मैं कितना दिखाया पर कुछ नहीं होता । होठों की लाली भरपूर होने पर भी कोख अभी तक भरपूर नहीं हुआ । सुनती हूँ मदेसिया ओझा लोग ठीक होते है । वे लोग पहाड़िया झाखी लोगों से गुनगर होते हैं। मुरली बाबू के औरत के पास, जब मैं जाती थी तो कहा करती थी । कारी राउत आपके गाँव के अच्छे जानकार है, थोड़ा उनको बुलाने के लिए ही मैंने आपको बुलाया है । मैंने कई बार खबर भिजवाया, आते ही नहीं हैं । कहते हैं, ऐसे ही थोड़े जायेंगे, नेग लगेगा नेग, और नेग लगेगा सो उसे नहीं देगी, हम नहीं जायेंगे । हाँ कोख पूरा करेंगे, नेग पूरा करेंगे नहीं, सो हमने अब यह धंधा ही छोड़ दिया ।”

“अरे, कैसे छोड़ दिया ? कौन, ऊ करियावा ? अरे मैं अभी गया, और कालर पकड़ कर लाया । अरे उसका ओझई तो हम जानते हैं। पर हमने जगाया नहीं है । अरे नेग क्या माँगता है, अरे यही न माँस-बॉस ?”

"कहते हैं मांस वास से काम नहीं चलेगा । हमारी देवी के लिए पंच मकार चाहिए, पंच मकार। एक मकार से कहा होता है ? कुछ नहीं ।"

"अच्छा तो उनको पंच मकार चाहिए ? अच्छा में अभी जाता है, उनको पंच मकार खिलाता हूँ। फिर देखना मुँह से वकार नहीं निकलेगा ।"

गणेश भैया उनको लाने चले गये । हूँ पंच मकार चाहिए बाह, साथ ही साथ खेले खाये, मंतर भी साथ ही साथ सीखे । अब ये पंच मकार वाले हो गये । सिर्फ हमने जगाया नहीं, वह भी इसलिए कि जगाकर क्या होगा, यहीं न कि किसी से पंच मकार, किसी से दुत्कार, धिक्कार !

थोड़ी ही देर में गणेश भैया के साथ कारी राउत हाजिर । हमने ऐसा कहाँ कहा ? वैसे पंच मकार से जल्दी काम हो जायेगा । हमने अपने लिए थोड़े कहा था । इसी के लिए, भलाई के लिए कहा था । बेसी दिन तक इंतजार करने से अच्छा है कि तुरंत काम कर दिया जाय । यह इमरजेन्सी इलाज है। क्यों अधिक दिनों तक हैरान किया जाय ?"

फिर शाम को पंच मकार का अर्ध्य चढ़ गया । दिलमाया का दिल तृप्त हो गया । हाँ, इसे कहते हैं तृप्ति । सच में लोग कहते हैं, लोग झूठ थोड़े बोलते हैं। ऐसा खेल खेल कर तो कभी नहीं............. अब की आश जरूर पूरा होगा । क्यों पूरा नहीं होगा ? आखिर कोख भरता कैसे है ? ऐसे ही तो, धर्म-कर्म में कोई कमी नहीं । जब से मुरली बाबू के यहाँ आयी, उनकी पत्नी ने मुझे धर्म-कर्म में लीन कर दिया । हर व्रत, हर त्योहार सब करके हार गयी । डाक्टर सब झूठ बोलते हैं। कहते हैं नली बंद हो गयी है, क्या बीमारी बतला रहे थे शेर बहादुर ? बंद हो गया तो फिर १२-१२ लाख की सुई लेने पर तो खुल जाना चाहिए ?

क्या कहेंगे वे लोग ? नली तो आज ही खुली है । ऐसा हमको लग गया । कैसा सारा देह झकझोर दिया कारी ओझा ने ? मेरा तो सारा बदन टूट रहा है । जरूर नली खुल गयी है । अब तो नींद आ रही है। ऐसा लगता है जैसे सात दिनों तक सोयी रहूँ। अब सात दिनों तक मांस बेचने की शक्ति नहीं लग रही। सात दिनों तक अब फ्लेस बिक्री बंद । सात दिनों तक अब केवल हम बनायेंगे और खायेंगे । खैर यह सब किसके लिए ? जब बच्चा पैदा होगा, हम दुगुन उत्साह से मांस बेचेंगे । मैं तो कहती हूं कि अब यह मांस बेचना ही बंद कर दिया जाय। मांसाहार से शायद देवता लोग नाराज है । मैं तो कहती है कुछ दिनों तक बिल्कुल उसी तरह

रहा जाय, क्या कह रहे थे उसे वे लोग ? वीरगंज में वे चारों हमेशा इस बारे में बातें करते थे । हां याद आया, भेजिटेरियन, भेजिटेरियन ही कहते थे वे । हमलोग भेजिटेरियन नहीं होंगे, तब तक देवता लोग खुश नहीं होंगे । अभी दूसरे महीने में संक्रान्ति है, उसी दिन से देवघाट नहा कर आऊंगी तो हम भेजिटेरियन हो जायेंगे। हा देवघाट एक बार मैं गयी थी । वहां से आने के बाद भेजिटेरियन बनेंगे । वहाँ तो गजब होता है । उसके बाद ही बनेंगे ।

हाँ उसके बाद ही बनेंगे ? मैं भी एक बार गया था। अगर वहीं जाना है तो अभी भेजिटेरियन बनने की बात दिल से निकाल ही दो । नहीं जाना हो तो अभी से बन सकती हो। अरे देवघाट, हमारा बहुत बड़ा तीर्थ है, संगम-तीर्थ । जब हमारे पूर्वजों को भारत छोड़कर आना पड़ा तो गंगा-यमुना का संगम भी छुट गया । आखिर बहुत खोज बीन करके उनलोगों ने देवघाट का संगम खोज लिया । मोक्ष का रास्ता खोजना ही पड़ता है। क्या गंगा और यमुना के संगम में नहाने से ही मोक्ष होता है ? अरे, हम अपने तरीके से भी मोक्ष को प्राप्त करते हैं । वहाँ के सँगम, यहाँ के संगम में, वहाँ नहाने में, यहाँ नहाने में, वहाँ के लोगों में, यहाँ के लोगों के तरीके में बिल्कुल उल्टी बात है, फिर भी मोक्ष कहाँ जायेगा ? वह तो वहाँ भी मिलता है और यहाँ भी । आह ! मोक्ष ही मोक्ष ! चारों तरफ लोग तो कुटिया बनाकर बसे हुए होते है । रात भर की गहमा-गहमी और पंच मकार के पान के बाद सुबह जब काली गण्डकी और त्रिशूली के उस संगम में डूबकी लगा कर लोग निकलते है तो मोक्ष सामने हाजिर रहता है । कहाँ जायेंगे मोक्ष महाराज ? क्या कहीं के लाट साहब हैं कि नहीं मिलेंगे ? मिलना ही होगा । जाओ जाओ सो जाओ बहुत थकी हुई हो ।

हाँ कहाँ जाओ सोने ? अरे अभी हम तो सोये ही नहीं, कैसे सो जाओ ? चलो-चलो दीदी चाय बनाओ थोड़ा पी लिया जाय । अभी-अभी मालिक के खेतों से आ रहा हूँ । कहते थे लोग कि बोझा उठाकर ले जाते हैं । मैं तो बोझा बाँध कर पाँच दिनों तक छोड़ देता हूँ । देखें कौन ले जायेंगे, ये गीदड़ लोग ? जब कपिला जोतता था तब ले जाते होंगे । अरे वह भी कपिला खुद ही ले जाता था, और लोगों से कहता था कि चोर ले गया । अब क्यों नहीं ले जाते ? फिर भी कहा कि एक बार देखता ही जाउँ, क्या ठिकाना कहीं ले ही जाय ? खेत भी देख लेंगे और थोडी चुस्की भी ले लेंगे ।

थकी हुई दिलमाया अब गणेश भैया के लिए चाय बनाने लगी । आधी रात हो चुकी थी । शेर बहादुर सोने चले गये । दिलमाया और गणेश भैया में बाते होने लगी ।

“बड़ी थकी हुई लगती हो दीदी ?”

“नहीं तो, अपने गणेश भैया के लिए मैं कभी थकी हुई नहीं हो सकती । आखिर इस मधेश में किसके सहारे रहती ? चारों ओर से भागी भागी अब आपके शरण में आयी है तो किसी का मजाल नहीं कि एक शब्द बोल दे। पहले लोगों की दादागिरी से थकती रही अब अपने गणेश भैया की छत्रछाया में थकने लगूंगी तो फिर काम कैसे चलेगा ? नहीं, नहीं मैं नहीं थकी हूँ । ओ आंखें तो ऐसे ही थकी- थकी लगने लगती है। शरीर देखिये, देखिये क्या थकी हुई हूँ ?”

गणेश भैया ने शरीर को बड़े गौर से देखा फिर उसे छू कर देखा । जैसे बिजली का झटका लग गया । नहीं नहीं थका हुआ नहीं है, कौन कहता है थकी हुई है ? हाँ आँखें तो ऐसी ही होती है, थकी-थकी लगने लगती है । थकी हुई देह से ऐसे विजली का झटका लगेगा ? अरे थकेगी कोई बूढ़ी । चलो चाय पीओ फिर हम अब क्या घर जायेंगे ? सब सो गये होंगे ।

देह की सराहना सुनकर सचमुच दिलमाया का शरीर ताजगी से भर गया, आँखें चमक उठीं । कैसे चमकती है आंखें वाह । गणेश भैया की आँखें उसी तरह चमकने लगी जैसे किसी शिकार को तलाशती किसी जंगली जानवर की आँखें अचानक शिकार देख लेने पर चमकती है । दोनों चमकती आँखें, थोड़ी देर तक आपस में चमकती रही और हाथों ने अपना काम शुरू कर दिया। तबतक शेर बहादुर पंच मकार के नशे में खर्राटे भरने लगे थे । आंखों ने हाथ को मजबूर किया, और हाथों ने अब और अंगों को मजबूर करना शुरू कर दिया । थोड़ी देर पहले भेजिटेरियन बनती और देवघाट में डुबकी लगाती दिलमाया अपने गणेश भैया की बांहों में डुबकी लगाने लगी। मोक्ष उतरने लगा ।

“इस बार, देवघाट चलिए न गणेश भैया, देखियेगा । हम पहाड़ियों की पूरी के बाद चलिए हमारे साथ । शेर बहादुर तो गया ही है, वह दुकान देख लेगा ।” सोसाइटी को आप वहाँ देख लेंगे ? अरे यह क्या देखते है, देखना हो तो एक महीने

“अरे कुछ नहीं होगा । वैसे अब वहां क्या देखूंगा ? सब तो देख ही रहा हूँ । नहीं, हमको दूकान तो हमारा नाम से देख लिया जायेगा । ऐसे ही छोड़ दो तो भी और कहीं नहीं जाना । हमें तो यही....................।”

“नहीं, इस बार आपको वहां चलना होगा । मैं तो आपको लेकर ही जाउंगी । अपने गणेश भैया को देवघाट दिखाउंगी ।”

“हाँ, हाँ दिखाना, दिखाना । अभी तो अब वह दिखाओ जो रोज दिखलाती हो । अरे वही देखने तो हम यहाँ आते है ! नहीं तो घर पर ही नहीं सो जाते ? दिलमाया की यही माया तो हमें खींच लाती है ।”

फिर दिलमाया ने अपनी उस माया को दिखलाना शुरू किया । गणेश भैया अभिभूत हो गये । कैसी माया है तेरी, हम मानते हैं तेरी माया को । उस माया के नशे के साथ ही नींद की नशा भी आँखों में उतर आयी । फिर दोनों, दिलमाया दीदी और गणेश भैया दोनों एक दूसरे की बाहों में सो गये । सबेरा होने पर जब गणेश भैया घर गये तो उनकी श्रीमती ने पानी ला कर दिया । कितना जागरम करना पड़ता है खेतों में । गणेश भैया ने उस पानी में पहले अपने मुँह को देखा फिर उसी से अपने मुँह को धोते हुए सोचने लगे । रोज दिलमाया के यहाँ से आकर वे उसी गंगा में अपना मुँह धोते और देखते थे। दिलमाया गणेश भैया को कैसे कह सकती है कि जाओ गंगा में नहा कर आओ, आइने में अपना मुँह देखा है कभी हिम्मत नहीं है किसी की, दिलमाया की भी ।

एक महीने बाद ! माघ महासंक्रान्ति के एक दिन पहले एक बस सरपट भागी जा रही थी । लोगों की आँखें बस एक ही सीट पर रह रह कर टीक जाती थी । आज कोई रोक-टोक नहीं था । गण्डक पर तो दिन में कुछ कह भी नहीं सकते थे । अभी दिन ही है तो क्या है, कब तक शाम और मुन्हार होने का इंतजार किया जाय ? चलो-चलो कौन क्या कर लेगा? एक दो आदमियों ने घूर कर देखना चाहा तो ऐसी जलती आँखों से दोनों ने देखा कि फिर घूरने की हिम्मत नहीं हुई । पीछे की सीट पर बैठी युवती ने, अपनी आँखों को नीचे कर लिया । उसने पहचान लिया था, पर आगे की सीटवाली ने पहचान कर भी पहचानने से इंकार कर दिया था । पहचानने का इंकार तो उसने अस्पताल में भी कर दिया था । पर यहाँ पर कुछ दूसरी ही बात है । कैसे पहचान लूँ ? सारा मजा किरकिरा हो जायेगा । फिर पहचान कर होगा ही क्या, क्या मिल जायेगा ? वह लगती ही कौन है हमारी ? जब तक उसके बाप जिंदा थे तब तक मैं जबरदस्ती इनलोगों को पहचानती रही । अब क्यों पहचानूँ ? सुना है बेचारी के पति का सुहागरात के दिन ही देहांत हो गया । हो नहीं जायेगा ? आखिर धर्म कर्म का भी कुछ भैलू है कि ऐसे ही । देखिये न किस

तरह कुस लटका कर अंग्रेजिन बनी है । धर्म बदलेगी तो ऐसे होगा । पर आज हम लोगों के साथ, यह कहाँ जा रही है ? यह बस तो देवघाट जायेगी । अब इस क्रिस्तान को हमारे धर्म से क्या मतलब ? कौन पूछने जाय, कहीं जाती होगी ट्रेनिंग में वहाँ भी कम ट्रेनिंग नहीं होता । अरे में सब जानती हूँ सुना था, एक डाक्टर से इश्क लड़ाती थी । सब ऐसे ही करती है। चलो, चलो क्या करेंगे देखकर लोग ? क्या सभी नहीं जानते कि संसार में सब यही करते हैं ।

कहती हुई दिलमाया अपनी बगल में बैठे युवक की गोद में सो गयी । सोकर फिर उठ गयी । और युवक का गाल चूम लिया। सभी लोगों ने एक बार फिर उन लोगों को देखा, फिर जैसे देखा ही नहीं का बहाना बनाकर सामने देखने लगे । पीछे बैठी युवती ने भी आंखें उठाकर उनकी इस हरकत को देखा और आंखें फिर नीचे कर लिया । कौन कह सकता है कि दोनों एक ही मिट्टी की उपज हैं । गणेश भैया में ही झिझकने का संस्कार थोड़ा ज्यादा नजर आता था। पर झिझक को तो दिलमाया ने रामपुर में ही उतार दिया था । पीछे खड़ी रचना यह जानती तो थी पर इस कदर भरे बाजार की नीलामी वह पहली बार देख रही थी । सबकी आंखों के सामने अपनी सोसाइटी के खुले प्रदर्शन को वह देख कर भी अनदेखा करना चाहती थी । बस सरपट भागी जा रही थी । ड्राइवर को छोड़कर सबको इस बात की खबर थी । ड्राइवर को खबर हुआ तब जब चुरिया माई के मंदिर में खड़ा कर के उसने माई को पैसे चढ़ाया था । पीछे मुड़कर उसने देखा, एक युवक की गोद से उठकर एक नवयुवती अपनी बगल की सीट वाली लड़की को पैसे दे रही है । इसे भी चढ़ा देना । रचना अपना पैसा चढ़ा चुकने के बाद दिलमाया का पैसा भी तब तक अपने हाथों में ले लिया था । उसकी समझ में नहीं आया था कि इसे वह क्या करे ? क्रिश्चियन हो कर भी अभी उसे अपने देवी देवताओं के प्रति बड़ी श्रद्धा है, वही माँ मेरी चौथी माँ, अपना पैसा मेरे हाथों में दे दिया, इसे भी चढ़ा दो । क्या ये अपने बचपन के संस्कार, बचपन के भाव कुछ बन जाने से नहीं मिटते । पर देवी-देवताओं के लिए घड़ी दो घड़ी के आलिंगन से भी अलग नहीं हो सकते है अपनी सोसाइटी को पतन के इस चरम विन्दु पर न पहुंचाओ मेरी माँ । क्या इसी सोसाइटी पर हम लोग नाज करते हैं । मां का मंदिर हमे देख रहा है, पर हम उसे देखना नहीं चाहते। उसका दरवाजा हमें पुकार-पुकार कर बुला रहा है पर हम उस दरबाजे के चौखट पर भी नहीं जाते । अरे मूरख फिर क्यों उसे

दोष देते हो ? उसने पैसा अपने हाथों में लेकर दरवाजे की ओर फेंक दिया । बस आगे निकल गयी । पता नहीं देवी के चरणों पर वह चढ़ गया या नहीं । ड्राइवर गाड़ी हांकते समय भी पीछे मुड़कर देख रहा था ।

सामने बस के हूड पर भगवान शंकर, ध्यानमग्न अधखुली आंखों से बस के पूरे यात्रियों की ओर देख रहे थे । उनकी जटाओं के ऊपर से गंगा बह रही थी । चाँद चमक रहा था । गले में नाग देवता अपनी लपलपाती हुई जीभ से हर किसी को डंस देने की मुद्रा में तैनात थे । बस सरपट भागती हुई हिचकोले ले रही थी । हर हिचकोले के साथ दिलमाया भी अपने गणेश भैया के साथ हिचकोले ले रही थी । ऐसे हिचकोलों का अपना एक अलग लुत्फ होता है, उसे बस महसूस कर रही थी ।

आखिर शाम भी हुई मुन्हार भी हुआ और..........और क्या क्या हुआ रचना ने देखना नहीं चाहा । किल ने ठीक ही कहा था, दीपक के बुझा देने पर जो अंधेरा हुआ उस अंधेरे में हमारी सोसाइटी का नंगापन छुप गया था । मुँहार के अंधेरेपन में यहां भी छुप गया है । वह खिड़की खोल कर खुली हवा की सांस लेने लगी । बहुत से लोग अब सबकुछ भूलकर उघने लगे थे । थोड़ी ही देर में नारायणघाट आ गया। सभी लोग उतरे, बस को खाली छोड़ कर । ड्राइवर बहुत देर तक दिलमाया को देखता रहा ।

गणेश भैया, अब यहाँ से हम पैदल जायेंगे । यही है नारायणघाट और वहाँ दिखलाई पड़ रही है नारायणी नदी । इसी में गजग्राह की लड़ाई हुई थी तो भगवान गरुड़ को छोड़ कर आये थे । आप कभी यहाँ पर आये थे ? नहीं न ? तो चलिए अब चुप-चाप, सब मैं बतलाती चलती हूँ । बतलाना क्या है, सब तो खुद दिखलाई पड़ रहा है । देखिये सड़क ठसाठस भरा चल रहा है । आदमी तो यहीं से इतने है, वहां कितने होंगे ? वहाँ रहेंगे हम लोग, धत वहाँ रहते की क्या जरूरत है ? देखिये ये सब आदमी हैं ? आदमी तो हैं पर आदमी से बेसी मादा है । तो बताइए भला किसी को रहने की जरूरत क्या है ? आँखों ही आँखों में रात कट जायेगी । चलिए देखियेगा । अरे जरा सामने भी देखिये । ठोकर लग जायेगा और गिर जाइएगा ।

गणेश भैया, सब कुछ देखते चले जा रहे थे । नारायणघाट कभी नहीं आये थे । तो यही है नारायणघाट ? इसी में गजग्राह की लड़ाई हुई थी ? वाह इसी में ग्राह को मुक्ति मिली थी, मोक्ष ? हाँ, समझ गया इसलिए लोग देवघाट में नहाने

आते हैं। मोक्ष इसलिए मिलती है ? कैसे नहीं मिलेगी ? जब ग्राह को मिल गया तो हम तो आदमी है ? अरे क्यों गिरेंगे ? गिरा हुआ भी कहीं गिरता है ? गण्डक पर गिरे तो यहाँ पर क्या गिरेंगे ? वाह ! सचमुच लोग कहते हैं, क्या कहते है कभी कभी दीदी ? हाँ वियूटी, वियूटी देखना हो तो पहाड़िया वियूटी देखो। यहाँ तो हम सभी एक ही बार देख रहा हूँ। मालिक के साथ कभी कभी न्यूरोड में दिखलाई पड़ता है, तो सभी मालिक ही देख लेते हैं। हमें नजर नीची रखनी पड़ती है। फिर भी कभी न कभी देख ही लेता हूँ। पर वहाँ तो इसका एक टुकड़ा दिखलाई पड़ता है। पूरा तो यहीं दिखलाई पड़ रहा है। वाह ! वाह ! दीदी 'तुम भाग्यशालिनी हो, कितने सुन्दर कुल में पैदा लिया है तूने ? एक हम है, काला कलूटा, किसी का गाल पिचका हुआ, किसी की आँख धंसी हुई, गर्भ से काला। खेतों में काम से थका पड़ा लू से झूलसा हुआ। जो थोड़ा बहुत दिखलाई पड़ता है तो पाँच बरस में वियाह करके खतम। यहाँ तो किसी के मांग में सिंदूर नहीं देख रहा हूँ। अरे इसमें वियाह किसी का अभी तक नहीं हुआ ? इसलिए इतनी मस्त मस्त है। पहाड़ की हवा भी तो कम नही है। पुनर्नवा कहता था पाल्या का पानी और हमारे यहाँ का दूध बराबर होता है। देख लिया दीदी मैंने देख लिया। रास्ते में ही देख लिया इसी का तो विस्तृत रूप वहाँ भी देखेंगे ?

अरे क्या देख लिया गणेश भैया, अभी तो जंगल आना बाकी है। जंगल में देखना कितना आनंद है। दरख्तों के साये में ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती हैं।

सचमुच जंगल आया तो गणेश भैया दंग रह गये। धूप अंधेरे में काली काली परछाइयाँ भी दिखलाई नहीं पड़ती थी। जब शरीर से शरीर रगड़वा जाते थे तभी बिजली पैदा होती थी। इसी विजली में गणेश भैया देखते थे कि कोई अप्सरा उनसे टकरा कर डगमगाती हुई आगे बढ़ गयी। तो आज ये लोग, पीते भी है, राम, राम ! हम लोग संक्रान्ति में नहाकर अक्षत छूते हैं, पंडित जी को दान देकर खिंचडी खाते हैं, और ये लोग ? इसलिए दीदी भी वैग में पंच मकार लेती आई है।

फिर गणेश भैया, ज्यादा सावधानी से चलने लगे। क्या पता कब कोई अप्सरा टकरा जाये ? वे रेडीमेड की मुद्रा में चल रहे थे। इस बार टकराई तो छोड़ेंगे नहीं। अरे कौन कहेगा, आपको कि छोड़िए, पकड़े रहिए जब तक पकड़े रहना है। रात भर की तो बात है। साल भर में एक ही बार यह रात आती है। फिर सबेरे देवघाट में नहा कर तो हम लोग घर चले ही जाते है दिखलाई। क्या नहाने के बाद कुछ दिखलाई

पड़ता है। दिखलाई भी पड़े तो क्या हुआ ? सब तो यही करते हैं। क्या हम ही है? हमारे साथ हमारी पूरी सोसाइटी है। कुछ नहीं होता यहाँ :

बड़ा फ्रैंक है भाई, गणेश भैया दंग रह गये। बाहों के घेरे से छोड़ दिया। दीदी मुस्कुराती हुई चली जा रही थी।

कोई बात नहीं, कोई बात नहीं गणेश भैया, यह तो होता है। ओ ऽऽ..... अब बत्ती की रोशनी दिखलाई पड़ रही है। उसमें भी कुछ चलकर देख लीजिए। उसी रोशनी के नीचे हमारा सब खेल चलता है। उस बंगले में कोई नहीं रहता, पर बत्ती जलती है। पहरेदार पहरा देते हैं। धीरे-धीरे लोग वहाँ पहुंच ही गये। बंगले की बती का प्रकाश पूरे जंगल में फैल गया था। दरख्तों के नीचे के मोटे-मोटे तने दिखलाई पड़ रहे थे। इसके बीच कहीं दो-चार, कहीं दश लोग गोल घेरा बना कर बैठे हुए थे। बीच में पंचमकार रखा हुआ था और मर्द लड़कियां सभी उस प्रसाद को एक साथ खा रहे थे। इस तन्त्र की नशा जवान लड़के लड़कियों के ऊपर इतनी अधिक चढ़ी जा रही थी, कि वे लोग गोल घेरे से उठकर, लड़खड़ाते हुए दरख्तों के मोटे मोटे तने की ओट में चले जा रहे थे। वहाँ पहुँचने के बाद किसी को कुछ दिखलाई नहीं पड़ता था। बस मोटे मोटे तनों का कालापन ही दिखलाई पड़ता था।

फिर दोनों उसी बंगले की बंगल से जाती हुई सड़क पर मुड़ गये। थोड़ी ही देर में वे लोग उस देवघाट पर पहुँच गये, जिसमें डूबकी लगाकर लोग सीधे स्वर्ग में पहुंचते हैं। चारों ओर कुछ अंधेरा था। टिमटिमाती रोशनी, दूकानों से आ रही थी।

इन दुकानों में केवल पंच मकारों की बिक्री हो रही थी। खरीददार भी मुग्ध, दूकानदार भी धुत्त। ऐसे स्वर्गीक वातावरण में पहुंच कर लोग स्वर्ग में ही तो जा सकते हैं, और भला कहाँ जायेंगे ? छोडीये गणेश भैया, अब हम लोग उस पार चले। असली आनंद तो उसी पार है कहिए, कौन चीज से वैतरिणी तरिएगा ? उस झुलुंगे पुल से चलिएगा या नांव से ? मैं समझती हूँ नाँव से ही ठीक होगा। वह देखिये पूरब की ओर चाँद उगा हुआ है। अहा ! कैसी गोलाकार छटा ऊपर उठ रही है। थोड़ी ही देर में यहाँ के सभी लोगों के ऊपर चाँदनी बरसेगी।

चाँदनी नहीं बरसेगी दीदी, अब कुहरा बरसेगा। ठंढ से अब मुझे बरदास नहीं हो रहा। देखो रात में ही कुहरा धिरता हुआ आ रहा है। सबेरे कैसा होगा ? धुंध में तो कुछ भी दिखलाई नहीं पड़ता होगा।

धत्त तेरी की गणेश भैया, धुंध में ही तो सब कुछ दिखलाई पड़ता है। क्या देखना चाहते हैं आप ? चलिए मैं दिखलाती हूँ, अगर न दिखलाई पड़े तो मुझसे कहिएगा। सच-सच बताइएगा फिर झूठ नहीं बोलिएगा। सबलोगों को इसी में दिखलाई पड़ता है, मैं कई बार आ चुकी हूँ। आप पहली बार यहाँ पर आये हैं। इसलिए। मैंने तो कई बार इस धुंध में देखा है। ये सभी लोग हर साल देखते हैं।। कैसी बातें कहते हैं ? नाँव पर चढ़ते ही ठंढ खतम। ठंढ नहीं रहे, कुहरा नहीं रहे तो फिर कुछ दिखलाई पड़ेगी ? गर्मी में सिर्फ लोगों का पसीना बहता है। ठंढ ! में ही तो वह सब कुछ बहता है, जो स्वर्ग में बहता है।

फिर दोनों नाव में बैठ गये। हाँ, अब ठीक हुआ। सचमुच ठंढ खत्म हुआ। पहले तो दीदी तूने बताया ही नहीं। देखो अब चाँदनी उतर रही है। थोड़ा और करीब आओ तो जरा। अब ठीक है।

फिर दोनों उस पार गये। चाँदनी फैल गयी, धूंध फैल गया। और उसी में फैल गया देवघाट का पूरा स्वर्ग। जहाँ देखिये वही पर स्वर्गिक आनंद लूटा जा रहा था।

“बोलिए, अभी भी आपको कुछ दिखलाई नहीं पड़ा ?”

“पड़ गया दीदी, सब कुछ दिखलाई पड़ गया। ठंढ, अरे उसका तो अब नामों निशान मिट गया। उर्वशी की एक घूँट में ही स्वर्ग की हवायें बहनी शुरू हो गयी। अब तो हवायें सीधे इन्द्र के सिंहासन से टकरा कर लौट रही है। वह देखो इन्द्रासन, इन्द्र भगवान अपने सिंहासन पर विराजमान, अप्सराओं के बीच में डोल रहे हैं।”

“भाव मत बनाइए भैया, इन्द्र उन्द्र नहीं डोल रहे हैं, आप डोल रहे है। छोड़िए, हटिए, अब भोर होने जा रहा है। देखिये अब उषा की लाली दिखलाई पड़ते लगी। हटिए भी कि ऐसे ही डोलते रहिएगा ? अरे भाई, अब सबेरा हो गया। क्या हद करते हैं ?”

दोनों ने हटकर देखा, सबेरा होने वाला है। रात की तन्द्रा टूट चुकी है। उषा की लाली दिखलाई पड़ने लगी है। सभी लोग न जाने कब से देवघाट के पानी में डुबकियां लगा रहे हैं। आज की रात से लेकर पिछले जीवन तक की सभी गंदगियों की, सभी पापों को डुबकी लगाकर, मल मल कर धो रहे हैं। हाँ, हां चलो चलो हम भी धो लें। जल्दी से रवाना भी हो जाना है। तुम्हारी भाभी लोटा में पानी लेकर मुँह धोने का इंतजार कर रही होगी। कल उससे कह कर ही नहीं आया। वह

सोचती होगी, मैं मालिक के खेत पर ही सोया हूँ। गजब है यह मालिक की खेत सब जगह देख लिया इसी के चलते। सारी दुनियाँ को समझा दिया इसने।

अरे, रे गणेश भैया वह देखो, वह कौन नहा रही है। अरे यह भी नहा रही है ? वह भी देवघाट में। इसी को भैया आप लोग भोजपुरी में क्या कहते हैं ? हँ याद आया, इसी को कहते हैं सात मूस खा के बिलाई बनली भगतिन। अरे, उसके साथ एक बच्चा भी है। वाह यह बच्चा कैसे आ गया ? न शादी न व्याह इतना बड़ा बच्चा ? पर कल तो मैंने सिर्फ इसी को देखा था। बच्चा तो नहीं देखा था।

मैंने देखा था बच्चा। तुम्हें कुछ खबर कहाँ थी। जब तूने चुरिया माई को चढ़ाने के लिए उसके हाथों में पैसा दिया था, उस समय मैंने देखा था, उसके सीट पर एक बच्चा सोया है। वही बच्चा है। पर इसके प्रति तुम इतनी उत्सुक क्यों हो ?

अरे उत्सुक कैसे नहीं होउं ? सात मुस खाके विलाई भगतिन बनने चली है। वह भी देवघाट में। अरे, हम हिन्दू हैं, हिन्दू यहाँ पर सिर्फ हिन्दुओं को नहाने का अधिकार हैं। क्रिश्चियन बन कर गले में क्रूस लटका कर, देवघाट में डूबकी लगा रही हैं। रण्डी कहीं की, जब हिन्दुओं से मन नहीं भरा तब क्रिश्चियन बन गयी। डंकन चली गयी। अंग्रेज लोग बड़े बड़े होते हैं। देखिये, गणेश भैया सूर्य भगवान को भी जल चढ़ा रही है। अरे वह बच्चा भी चढ़ा रहा है। गले में कुश लटका कर सूरज भगवान को जल चढ़ा रहे हैं।........... देखिये, देखिये, यह भी देख लिए यहाँ पर। तनी बार मैं भी यहाँ पर आयी, पर यह पहली बार देख रही हूँ।

अरे, इसे तो मैं भी डंकन अस्पताल में देखा हूँ। कोई नर्स है। पर इस नर्स-ओर्स से तुमको क्या लेना देना ? रात की परियों में से एक यह भी होगी, बात खतम। चलो-चलो, अब हम लोग भी जा कर डूबकी लगा लें। सूर्य देवता को हम लोग भी जल चढ़ा आयें।

हाँ चलिए गणेश भैया, हम लोग भी, पर है यह विचित्र बात। मुझे सब कुछ समझ में नहीं आ रही, पर बहुत कुछ तो पहले से ही जानती थी। एक डाक्टर के साथ इसका.......... । यह मेरी ननद है।

ननद ? ओ, तब यह कौन सी बड़ी बात है। तुम्हारी ही जैसी होगी, चलो, चलो।

दोनों वही पर नहाने गये जहाँ पर रचना नहा कर वापस लौट रही थी। रात बस पर से उतर कर जब गणेश भैया और दिलमाया भीड़ में लापता हो गये थे,

रचना बच्चे को लेकर एक होटल में चली गयी थी । सवेरा होते ही देवघाट पहुंच कर उसन, देवघाट का स्नान कर आगे बढ़ने का प्रोग्राम बनाया था । वह किश्चियन बन गयी थी । गले में कुश लटका लिया था उसने, पर सदियों के संस्कार भी कुश पर नहीं लटक गये थे । दिलमाया, वह जहाँ पर नहा कर कपड़े बदल रही थी, आयी और मुँह विचका कर पानी में समा गयी । रचना भी मूक बनकर दिलमाया को देख रही थी । आंखें मिल-मिल जाती थी पर दोनों के बीच का कोई सम्बन्ध सेतु टूट गया था और भाषाओं का संचार नहीं हो रहा था । क्यों कोई किसी को पहल करे ? सभी अपने-अपने रास्ते अपने-अपने घाट चुन लेते हैं । चुनने का अधिकार है उन्हें । दिलमाया पानी में डुबकी लगाने लगी, गणेश भैया भी । दोनों के शरीर से कुछ निकलकर पानी में बहने लगा। रचना ने बच्चे को कांध पर उठाया और नार ायणघाट की ओर चल दी ।

"कहाँ जाना है आपको ?"

"जी भृकुटी मण्डप ।"

"क्या आप अकेली है ?"

"जी नहीं, मेरे साथ यह बच्चा भी है ।"

"मेरा मतलब, क्या आपके साथ और कोई नहीं ? क्या इस सीट पर बैठ सकता हूँ ?"

"जी सीट खाली है, बैठ जाइए ।"

"जी आपको एतराज नहीं हो तो ?"

"जी बैठ जाइए नहीं तो, कोई बिना पूछे भी बैठ सकता है । वह यात्री धन्यवाद देते हुए बैठ गया ।

"बड़ा सुन्दर बच्चा है, क्या आपका है ?"

"जी हा, मेरा ही बच्चा है ।"

"पर आप तो ऐसी नहीं लगती......"

"कि मैं माँ हूँ ?"

"जी आपने ठीक समझा है ।"

"पर मैं इसकी मां हूँ ।"

"भृकुटी - मण्डप से कहाँ जाना है आपको ?"

"आपको कहाँ जाना है ? आप तो अपने बारे में कुछ बताया ही नहीं । पूछे चले जा रहे हैं सब कुछ मुझी से ।"

"जी" युवक झेंप गया । "माफ कीजिएगा में भारत से आया हू । पशुपतिनाव का दर्शन करने पहली बार काठमाण्डू जा रहा हूँ । सोचा आपसे काठमाण्डू के बारे में कुछ पूछ लू । रास्ता कट जाएगा । आप अकेली है । आप अकेली है तो हो सकता है आपके साथ थोड़ा घूम भी लूँ ।"

"क्षमा करेंगे, मैं डंकन-अस्पताल में एक शादीशुदा नर्स हूँ । यह बच्चा मेरा है और काठमाण्डू एक जरूरी काम से जा रही हूँ । आप मुझे गलत समझ रहे हैं ।" बस चली जा रही थी । नारायणघाट से बस खुली तो बीच रास्ते में दोनों में यह वार्ता शुरू हो गयी थी । अब कुछ देर तक दोनों चुप्पी साधे रहे फिर वह भारतीय यात्री ने ही मौन को तोड़ा ।

"आप बड़ी शालीन हैं ।"

"जी शालीनता से ही दरकिनार हो जाने में समझदारी समझती हूँ । आपने जो कुछ भी कहा वह रोज-रोज की बाते हैं । मैं कहाँ-कहाँ किनसे लड़ती फिरूंगी मेरी जगह मेरी ही सोसाइटी की कई लड़कियाँ आपकी इंतजार कर रही होंगी । फिर कैसे लड़ सकती हूँ ? बस शालीनता के सिवा हमारा कोई हथियार नहीं हो सकता ।"

रचना की बातें सुनकर वह यात्री प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। उसने र चना को हाथ जोड़ कर नमस्कार किया और बच्चे को अपनी गोद में ले लिया। र चना ने भी कोई प्रतिकार नहीं किया । बच्चा तब तक सो चुका था और रचना की गोद से उस यात्री की गोद में आ गया। फिर वे दोनों भी झपकियाँ लेने लगे । तर ह-तरह की और परिचयात्मक बातें होने लगी । काठमाण्डू पहुँच कर दोनों ने एक दूसरे को नमस्कार किया और अपने-अपने रास्ते चले गये ।

रचना ने वहाँ से एक टैक्सी को पकड़ा और टैक्सी अपने गन्तव्य की ओर भागने लगी और थोड़ी ही देर में गन्तव्य आ गया ।

"सुनिये, मैं पुनर्नवा से मिलने आयी हूँ ।"

"पुनर्नवा से ? कौन हैं आप ? आजतक तो उससे मिलने कोई नहीं आया ?"

"जी आप गलत कह रहें हैं, उनसे मिलने के लिए छूट दे तो हजारों लोग उनसे मिलने आये । पर मैंने सुना है कि उससे लोगों को मिलने नहीं दिया जाता ।

अभी-अभी खबर मिली है कि अब उससे कुछ खास-खास लोगों से मिलने दिया जायेगा, जिससे वह मिलना चाहेगा । एक कैदी उन सभी लोगों से मिलना चाहता हैं जो उससे मिलने आता है । उस पर भी वह इतना क्रान्तिकारी नेता भला क्यों नहीं किसी से मिलना चाहेगा ? ऊपर से वह एक नरम दिल डाक्टर भी है । आप अपनी बात बताइए कि आप किस-किस से उससे मिलने देते हैं ?

"जी आपका उससे क्या सम्बन्ध है ? क्या लगती है आप उसकी ।"

"जी मैं कुछ नहीं लगती ।"

कुछ नहीं लगती तो आप अपनी तशरीफ यहाँ से ले जाइए। न जाने कहाँ कहाँ से कौन कौन आ जाता है और हमारा माथा खाने लगता है । लगती कुछ नहीं, मिलना चाहती है । कोई जासूस हो सकती है। कोई षडयन्त्रकारी हो सकती है । कोई उसे भगा कर ले जानेवाली हो सकती है । मिलने दूँ भाग जाने दूँ । जाइए, जाइए, यहाँ से जाइए । ऐ दरवान गेट बंद करो ।

"नहीं नहीं जेलर साहब, आप तो खामखाह बिगड़ गये । इस बच्चे को नहीं देखते ? यह उसी का बच्चा है । मैं इस बच्चे की माँ हूँ ।"

"हँ ? यह बच्चा उसका बेटा है, आप उनकी माँ है, पर आप उसका कुछ नहीं लगती ? यह क्या मामला है ? दिमाग तो खराब नहीं हो गया आपका ? न जाने कहाँ-कहाँ से पागल लोग आ पड़ते हैं ।"

"जेलर साब, अगर आप कुछ भी समझते होंगे तो समझ गये होंगे । मैं उसकी दोस्त हूँ ।"

दोस्त ? ओ तो हजरत को महिला दोस्त भी है । हजारों नवयुवकों के दिलों में हुंकार भरने वाले, हजारों जनता के नेता और क्रान्तिकारी का एक खूबसूरत दोस्त भी हैं। इसलिए तो कुछ होता ओता नहीं है । नेतागिरी करेंगे ? साले सड़ियें जेल में ।

"अच्छा दोस्त साहिबा जाइए मिल लीजिए । ऐ दरवान ले जाओ मेम साहब को नख्खु का गेट दिखला दो ।"

इतनी देर तक बच्चा जग चुका था । वह टुकुर-टुकुर चारों ओर देख रहा था । उसकी समझ में यह नहीं आ रही थी कि यह सब क्या है । वह टुकुर-टुकुर चारों तरफ देखता जा रहा था ।

"कैसी हो तुम ?"

जेल की सलाखों के इस पार खड़ी रचना की मोटी-मोटी आँखों में इस के साथ ही मोती तैरने लगे । बच्चा बगल में खड़ा था । अपने दोनों हाथों से दो सलाखों को रचना इस पार और उन्हीं सलाखों को पकड़ पुनर्नवा उस पार खड़ा था । इस प्रश्न ने उसके भीतर के तार को झंकार कर दिया था । इस पार की आबाज मुंह से नहीं आंखों से फूट रही थी । अनायास ही पुनर्नवा के दोनों हाथ खलाखों पर सरकने लगे जहां नीचे रचना के हाथ उन सलाखों को पकड़े हुए थे । उसके दोनों हाथ, रचना के दोनों हाथों से टकरा कर जैसे पूरी वीणा को छू दिया हो। इस अनमोल घड़ी की सुखानुभूति का ज्वार एक बार रचना की आंखों में फिर उमड़ा । तभी पुनर्नवा ने अपना हाथ खींच लिया ।

क्षमा करना रचना, एक क्षण को मैं भूल गया था कि मैं इस रचना के पास खड़ा हूँ । मुझे ऐसा लगा कि मैं ५ वर्ष पूर्व अपनी उसी रचना के पास खड़ा हुं जिसकी हथेलियों को भींचकर मैंने हिमालय की ओर देखा था ।

रचना की आंखें अब बरसने लगी । बंद होठ बरबराने लगे। जैसे भीतर से कुछ बाहर आना चाह रहा हो, पर आ नहीं पाता हो ।

"मैं भूल गया था रचना कि रचना अपने गले में क्रुस लटकाये एक बच्चे की मां है ।"

अब रचना हिचकियाँ लेकर रो पड़ी । भीतर से जो आना चाहता था आखिर उसने रचना के बंद होठों का दरवाजा तोड़ ही दिया ।

"बस-बस ! अब इतना कलेजा बाहर न निकालो डाक्टर । वर्षों बाद हम मिले है, गले में यह क्रुस और यह बच्चा भी मेरे साथ है, पर मैं अब भी तुम्हारी बही रचना हूँ। कहीं कोई फर्क नहीं है ।"

"कौन रचना ? जो मेरे कमरे से मुझे तिरस्कार पूर्ण नजरों से देखती हुई चली गयी और आज तक कोई खबर नहीं ली मेरी ?"

"भगवान के लिए चुप रहो । सच तो यह है कि एक पल भी मैंने तेरे बिना नहीं गुजारा । वर्षों बाद आयी हूँ इसलिए कि तुम से मिलने की पाबंदी थी । पत्र कितना लिखा पर कोई जवाब नहीं मिला तो समझ गयी कि पत्र तुम्हारे पास नहीं पहुँचाये जाते हैं । मन मार कर आज तक की प्रतीक्षा करती रही । इधर जब पता चला कि पाबंदी हट गयी है, मैं दौड़ी हुई आयी हूँ। इतना कठोर न बनो पुन । देखो यह कौन है ? कितनी देर से यह देख रहा है कि उसके पिता उसकी मां को कितना रुला रहा है ।"

पुनर्नवा ने उस बच्चे की ओर देखा। गले में कुस लटकाये अपने घुंघराले बालों सहित ऐसा लग रहा था जैसे वृदावन के बालकृष्ण ने इसाई धर्म स्वीकार कर लिया है। वह उस बच्चे के रूप रंग और चेहरे पर टपकते बालसुलभ तेज पर मोहित हो गया।

"अच्छा, तो यह तेरा बच्चा है ?"

"हाँ, मैं इसकी माँ हू और तू इसका पिता।"

"यह क्या कहती हो रचना ? ऐसा कह कर तू मेरा दूसरी बार तिरस्कार कर रही हो। एक बार तूने किल कुमारी के सामने किया था।"

"हाँ, मैं तो केवल तेरा तिरस्कार ही करती हूँ। कभी तो समझने की कोशिश की होती। क्या तूने ही मेरी कोई खोज खबर ली ? मैं कहाँ-कहाँ रही, नियति ने मेर े साथ क्या क्या किया, क्या कभी पूछा तूने ? क्या ऐसा कह कर तू मेरा तिरस्कार नहीं कर रहा ? मैं कितनी दूर से चलकर आयी हूँ तुम्हारी यह अमानत दिखलाने। यह दिखलाने कि इसके पालन पोषण में मुझसे कोई गलती तो नहीं हो रही ?" इस बात ने पुनर्नवा के ऊपर थोड़ा प्रभाव दिखलाया "अच्छा, क्षमा कर दो, मैने तुम्हें दुःख दिया। कौन है यह बच्चा ?"

यह किल का लड़का है। तू इसका पिता है। मैं भी इसकी माँ हुँ। पुनर्नवा एक ही बार खुशी, आश्चर्य, एवं गम में डूबने उतराने लगा। पहली बार अब वे मोटी सलाखों के उस पार की आँखों में उतरे जो सलाखों के इस पार उतरे थे। रचना का प्रेम सलाखों को पार कर इस पार से उस पार तक पहुंच गया था। रचना ने जो कुछ कहा था, उसकी जटिलता को न समझते हुए उसने अपनी प्रश्न भरी निगाहों से रचना की ओर देखा।

"हाँ पुन, यह तुम्हारा लड़का है। जब मैं तुम्हारे कमरे में पहुंची थीं, तुम इसका जन्म दे चुके थे। उस समय तुम इस बात का अपराधी बन चुके थे। मैंने न तुम्हें क्षमा किया न किल को। क्षमाहीनता के इस अपराध ने मुझे जो दण्ड दिया है, उसके लिए मैं तुमसे क्षमा माँगने आयी हूँ। पुन किल को ठोकर लगकर गिरते समय हम दोनों में से किसी ने उसे नहीं उठाया, पर नियति ने उसे उठाकर हमारे पास ला दिया। किल गर्भ में इस बच्चे को लिए पारिवारिक दुत्कार का शिकार बनकर सियासत के भूखे भेडियों के बीच में पड़ गयी। वहां से भागकर वह कहाँ- कहा की ठोकरे खाती हई मेरे अस्पताल में पहुंची और इसका जन्म दिया। इसका

जन्म दे चुकने के बाद नियति ने उसके भागने का हथियार छीन लिया। वह पक्षाघात का शिकार हो गयी। तबतक नियति ने मेरा भी सब कुछ छीन लिया था। हम दोनों लुटी हुई औरतें उसके बाद तुम्हारे नाम पर, इस बच्चे के सहारे जी र ही है। अब यह वहीं डंकन अस्पताल के कन्वेन्ट में पढ़ता है। बाप से मिलने का जिद करता रहता है। जब पाबंदी हटने का समाचार सुना तो आज ले आयी हूँ।"

पुनर्नवा दुःख-सुख के मिश्रित पुलक से भर गया। सामने खड़े बच्चे की ओर अपने आंसू भरी आंखों से देखते हुए उसे पास बुलाया। उसने उसे छू कर देखा कि वह कोई सपना तो नहीं देख रहा है। पर वह सपना नहीं, सच था।

"पर तुम्हारे और इसके गले में यह क्रुस ? समझ में नहीं आया कुछ।"

"हाँ यहाँ पर तुम मुझे अपनी अपराधी मान सकते हो। हाड़-मांस के इस पुतले ने अपना धर्म भी बदल दिया। पर पुन, मेरे अंदर और कुछ भी नहीं बदला है। अगर इस अपराध की सफाई देने का मौका तुम देते हो तो मैं यही कहूंगी कि मेरे अंदर का और कुछ भी नहीं बदला है। भीतर मैं वही की वही हूँ। तुम्हारी रचना। तुमसे दूर रहकर मैं जीवन को झूठलाना चाहती थी। मैंने ऐसा किया पर उसे झूठला न सकी। शादी की रात की सुबह नहीं हुई......... सुबह होने से पहले ही वह चल बसा। उसका नाम युसुफ था।"

आँखों में आसू लिए अब तक पुनर्नवा के हाथ सरक कर सलाखों को पकड़े र चना के हाथों को पकड़ लिया था। वे हाथ उन हाथों की महानता को स्पर्श कर रहे थे।

"क्या नाम है इसका ?"

"मैंने इसका नाम यिशु रखा है, कुंआरी मां से जन्मा यिशु।" कहती हुई रचना ने बच्चे को अपने पिता को नमस्कार करने को कहा। बच्चे ने वैसा ही किया और अब तक टुकुर-टुकुर देख रहा। यह बच्चा अपने पिता का आशीर्वाद पाकर खुश हो गया। उसने झट से एक पेपर बढ़ाया और कहाः-

"यह मैंने आपके लिए लाया हूँ पापा।"

"क्या है भला ?" पुनर्नवा बच्चे के हाथ से उस कागज को लेते हुए कहा।

रचना खुश हो गयी। उसने उसे एक चपत लगाती हुई कहा, बड़ा शरारती लड़का है। हमेशा कहता रहता था, पापा से मिलूंगा, उनको अपने हाथ से बनाया हुआ चित्र दूंगा। कब मिलाओगी मां पापा से ? कहाँ रहते हैं पापा ? बताओ न, इस

चित्र पर हमारे टीचर सोग बड़े-बड़े इनाम दिये है। मैंने इस चित्र को पापा के लिए रखा है। कितने दिन बीत गये। कब ? कब ? के इसके प्रश्नों से तंग आ गयी थी। आज वही लेता आया है।

पुनर्नवा ने उस चित्र को देखा और दंग रह गया। ५ वर्ष के बालक ने इसमें रंग भरा है ? क्या है यह बालक ? वह आश्चर्य से उस बालक की ओर देखता रह गया।

"इस पिकासों का नाम, तू ने यिशु क्यों रख दिया ? यह तो पिकासों बनने वाला है।"

"यिशु के अंदर ही सब समा जाते है पुन ! पिकासो को अलग से बनाने की कोई जरूरत नहीं होती परमात्मा को क्रूस पर लटके यिशु के एक-एक कतरे से पिकासों एवं पिकासो सरीखे लोग पैदा होते रहे हैं। जब तक यह संसार चलता रहेगा, कतरा चुकेगा नहीं। इसलिए मैंने इसका नाम यिशु ही रखा।

"पर इस चित्र में इसने पंख बनाया ही नहीं, या पंख बनाने ही नहीं आया।"

"हाँ पुन, जो इतना सुंदर बना सकता है, वह पंख नहीं बना पायेगा क्या ? रोज-रोज यह पक्षाघात से पीडित अपनी माँ को देखता है। रोज-रोज यह मुझे गले के क्रुस के साथ ही मेरे चेहरे पर उभरती हुई पीड़ाओं को देखता है, अपने पिता के कैद होने की कहानियाँ सुनता है। पंख इसने काट दिये हैं। यह इसकी कला की पराकाष्ठा है। मैंने जब देखा था चमत्कृत हो गयी थी। किल ने जब देखा था, तब उसने मुझे सियासत के भूखे भेड़ियों के बीच अपनी प्राण रक्षा के लिए छटपटाती हुई कहानी को फिर से सुनाया था। वह इस चित्र को देखती हुई रो पड़ी थी। इसके टीचर लोगों ने जब देखा तो इसको पुरस्कृत किया था। गजब है यह बच्चा, चमत्कारी व्यक्तित्व के साथ पैदा हुआ है।"

"ऐ, चलो बहुत देर हो गया। यह क्या छुपा रहे हो ? तुझे मालूम नहीं कि तुम पर अखबार पढ़ने की पाबंदी है ? लाओ देखूं क्या है ?" एक सिपाही उसी समय आ गया था। समय हो चुका था और अब इससे अधिक मिलना नहीं था। मिलन का वह क्षण जो रचना और पुनर्नवा के बीच एक स्वर्गिक स्वप्न की तरह आया था, टूट गया।

"तुम लोग सब चीज पर पाबंदी लगा दो मेरे दोस्त पर जानते हो सब चीज पर तुम पाबंदी नहीं लगा सकते। लो देखो, न यह अखवार है, न चिट्ठी है। न हथियार है, न बम है।"

सिपाही ने उस चित्र को लिया, देखा। रंग बगैरह तो अच्छा लगा, पर भेजे के भीतर कुछ नहीं गया। उसने उसे फिर पुनर्नवा को लौटा दिया। हुँ, अखबार नहीं है, चिट्ठी नहीं है, ठीक है अब चलिए मेम साहब, इससे अधिक समय नहीं है।

"फिर कब मिलोगी ?"

"देखो, छुट्टी होते ही मैं आउंगी।"

"किल को कहना, मैने उसे बहुत याद किया है। धीरज नहीं खोयेगी, मैं आउँगा।" सलाखों की दोनों ओर की आंखों में आँसू उमड़ आये। ऊपर के हाथ सरक कर नीचे के हाथों को भींच लिया और फिर टाटा की मुद्रा में हिलने लगे। यिशु का हाथ भी हिलने लगा। रचना वापस मूड़ गयी। पुनर्नवा उसके साये को देखता रहा ! फिर उस चित्र को ले जाकर अपने विस्तर में छुपा दिया।

●

१

जब से गुरुंग प्रतिवेदन निकला है, तब से तिरपट बाबू दिनरात चिंतित रहते हैं । कितना सरकार से कहा कि इसकी क्या जरूरत है ? काम तो वैसे भी वही हो र हा है जो गुरुंग रिपोर्ट में प्रकाशित हुआ है । दिन दुना रात चौगुना प्रतिवेदन ही तो सफल हो रहा है । यह रिपोर्ट प्रकाशित कराकर सरकार ने अपने ही कार्यो, अपने ही लोगों पर तो पानी फेर दिया ही है, मेरे लक्ष्यों की रही सही आशाओं पर भी पानी फेर दिया । सारी तराई एक ही बार जैसे नींद से जाग गयी है । पर नींद से जाग कर ही क्या होगा ? करने के लिए कुछ अंकिल भी चाहिए । किया उनलोगों ने, पर क्या किया, आज जेल में सड़ रहे हैं। पर यह जेल में सड़ना तो और उनकी चिंता का कारण बन गया है । राजेन्द्रबाबू जेल में बैठे ही बैठे चुनाव लड़ेंगे । पुनर्नवा और पुरन का प्रभाव सब मिलाकर हमारी लुटिया ड्वाये बिना नहीं रहेंगे । कितना कहा कि कुछ अकिल से काम करना हो तो हमको भी छुपे छुपे इनमें शामिल होने दो। इसलिए जब उनलोगों ने विरोध किया तो मैं चुप्पी साध लिया । सरकार सब देख रही थी । मेरी चुप्पी का फल यही हुआ कि उसने मुझे मंत्री पद से ही हटा दिया। हट जाने का भी कोई गम नहीं होता अगर जिस दिन मैं राजेन्द्र बाबू से मिला तो वे भी मुझे स्वीकार कर लेते। हूँ, स्वीकार कर लेते तो देखते, मुझे ठुकराकर अपने ही पैरो पर कुल्हाड़ी मारा है उसने । जनमत संग्रह में सरकार ने अपनाया तो मैंने करके दिखला दिया । बहुदलीय व्यवस्था ताकती रह गयी। पर यहाँ मुझे ही ताकता रह जाना पड़ा। धाकड़ हैं राजेन्द्र बाबू, अच्छी तरह पहचान लिया है लोगों ने अब मुझे । आखिर अब किया क्या जाय ?

यही सोचते हुए वे अपने कमरे में चहलकदमी कर रहे थे । कमरे के एक तर फ सोफा सेट के बीच में टेबुल रखा हुआ था । दूसरी तरफ एक चौकी पर एक

दरी बिछाया गया था । ऊपर दिवाल पर मर्यादा पुरुषोत्तम राम अपने धनुषवाण सहित खड़े थे । उन्हीं के बगल में अपने घुंघराले वालों सहित त्रिभुवन सरकार का भव्य चेहरा उनकी ओर देख रहा था । दोनों के बीच में उनका खुद का फोटो लटका हुआ था । इस फोटो में दोनों हाथों का कर जोरे राजा के सामने खड़े थे । उनकी निगाहें नीची थी । राजा के सामने निगाहें नीची ही रखनी पड़ती है। इसी नीची निगाहों वाले अपने फोटो को वे बड़े शान से लोगों को दिखलाते रहते हैं। दिवाल पर वे नीची निगाहों के साथ खड़े थे, फर्श पर वे नीची निगाहें किये हुए चहल कदमी कर रहे थे। वे कुछ उद्विग्न से भी लग रहे थे। उसी समय उनका छोटा भाई प्रवेश किया और उनकी तरफ बिना देखे नीची निगाहें किये हुए दूसरे दरवाजे से आंगन की ओर चला गया ।

तिरपट बाबू ने एक बार अपने छोटे भाई की ओर देखा और 'मुस्कुरा दिया । आज यह भी हमारे खिलाफ हो रहा है । आज तक इसने कभी हमारे विरुद्ध नहीं बोला । मैं जो कुछ कहता गया, वही यह करता गया । इसने भी सोचा था कि मैं राजनीति करूंगा और वह खेती करेगा तो दोनो मिलकर सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुँच जायेंगे । हम पहुंच भी गये, पर यह भी सोचना होगा कि पहुंच गये तो यही न पहुँच गये, हम तो वही खेतिहर के खेतिहर ही रह गये । सोचा था कि मैं नहीं तो कम से कम मेरा लड़का तो जरूर उसी शिखर पर पहुंचे, पर आज उम्मीदों पर पानी फिरता दीख रहा है । अब मैं अपना सिद्धांत बदल दूं तो बड़ा अच्छा ? आज तक सरकार के साथ रहा और अब इन पृथकतावादियों के साथ हो जाउँ । कहता है जब यह सरकार हमारी नहीं है, जब इस सरकार में हमारे लड़के के लिए कोई जगह नहीं है, जब मेरे लड़के को डाक्टरी में नहीं हुआ, जब आपके लड़के को डाक्टरी में नहीं हुआ तो फिर उस सरकार के साथ क्यों रहेंगे ? क्यों नहीं हम उन्हीं पृथकतावादियों से मिल कर अपना लक्ष्य पूरा कर लें। पर वे लोग शामिल करे भी तो ? दूसरे नम्बर पर भी तो वे नहीं रख रहे हैं, बल्कि वे तो बिल्कुल भी हमसे बात करना नहीं चाहते । तो क्या मैं उनलोगों के पैरों पर पड़ने जाउँ ?

नहीं जाऊँ उनके पैरों पर पड़ने, जाउँ उस दरबार में नजरें झुकाने । भविष्य खराब होगा तो हमारे लड़के का होगा कि किसी दूसरे का ? बाप रे बाप इतना सेलफिस हो जाता है कोई अपने बेटे के लिए ? आजकल बोलता नहीं । पर पहले तो ऐसा नहीं था । माना कि बी.बी.सी. सुनते-सुनते उसके दिमाग पर एलिजावेथ छायी रहती हैं, पर हमार देश की व्यवस्था को भी वह काफी सराहना करता था ।

पर लड़के का जब नहीं हुआ तो एलिजावेथ का सारा नशा उतर गया । अवसरवादी कहीं का, नहीं अब यहां नहीं रहेगा । वैसे भी अब बुरे दिन आने की संभावना बढ़ गयी है ।

"सुन्दर, ए सुन्दर जरा सुनो तो । अरे मान लिया कि तुम मुझसे नहीं बोलते, पर में तुमसे बोलूंगा । सिर्फ यहां आओ तो सही ? तिरपट बाब ने बड़े प्यार से अपने छोटे बाबू (भाई) को बुलाया । सुन्दरबाबू चुप-चाप उनके सामने आकर खड़े हो गये ।

"सोचता हूं कि मैं काठमाण्डू में एक घर लेकर वहीं पर रहूँ । वैसे भी इस घर में, इस गाँव में रहना मुझे अच्छा नहीं लगता । गाँव के लोगों की रवैया देखकर अब यहाँ रहने का मन नहीं करता । पहले वह हमारे साथ थे और पता नहीं क्यों, सभी के सभी मेरे खिलाफ हो गये । अरे पता क्यों नहीं, मैं जानता हूं कि वह कौन है जिसने पूरे गाँव को मेरे खिलाफ कर दिया है । गुरुंग प्रतिवेदन तो है ही, पर जब से ब्रह्मबाबू की शादी हुई है तब से जनमत हमारे हाथ से निकलता जा रहा है । मैं अब सोचता हूँ कि यहाँ नहीं रहूँ। यहां का काम अब बिल्कुल तुम संभालो । काठमाण्ड में रह कर लड़के भी पढ़ेंगे और किराया भी नहीं लगेगा । मैं अधिक समय वहाँ गुजारुंगा तो हो सकता है कि सफलता मिल जाय ।"

"अपने पास रखिये अपनी सफलता को अब । बंद करिए बकवास । हाँ वहाँ र हकर सफल हो जायेंगे, यहां जनता में रहकर सफल नहीं होंगे ? राजनीति ओजनीति आती है कि नहीं ? नहीं आती है तो बी.बी.सी. सुनिये। अब वह राजनीति नहीं रही भाई । अब जनता के बीच में जाना होगा। निर्दलीय जीत गया तो जीत गया पर अब आप काठमाण्डू में राजा का खुट्टा ढोक कर कुछ नहीं कर सकेंगे । अब जनता का खुट्टा ढोकना होगा। रही बात बच्चों की पढ़ाई की तो अब वह हो गयी । अब उनके लिए आप कुछ नहीं कर सकेंगे। भाई, भूल जाइए वह सभी जब कोई हाथ पकड़ कर जीताया था । भूल जाइए, जब कोई दूसरा आपके लिए सुदर्शन चक्र चलाता था । अब आप महाभारत के बाद के अर्जुन हैं और यह सारी जनता कोल-भील । इन कोल-भीलों से अब आप नहीं जीत सकते। इनके तीर धनुष का तेज आपके आर्य खून को ठंढा कर देंगें ।

छोटे भाई के ज्ञान को देखकर तिरपट बाबू खुश हो गये । कितना बढ़िया नवलेज रखता है । मैं तो केवल मंत्री बना हूँ, नवलेज तो इसके पास रहता हैं । समय-समय पर अगर यह अपने नवलेज में से थोड़ा-थोड़ा नहीं देता रहता तो मैं

जो कुछ जानता हूँ वह भी नहीं जानता। जब पहाड़िया लोग अंग्रेजी का फाइल लेकर हमारे पास रख देते थे तो मुझे आर्डर देना पड़ता था कि इसका नेपाली में अनुवाद करके लाओ । हमारे देश में अंग्रेजी नहीं चलती । माना कि यह फाइल सीधे अमेरिका से आया है, पर यहां उल्था करना होगा । हम स्वाभिमानी स्वतन्त्र देश के नागरिक है। क्या भारत जैसे गुलाम है ? इसी के चलते मैं पथरी का अपरेशन कराने बैंकक नहीं गया। जब बैंकक के बारे में सुना तो वैसे भी मै वहाँ नहीं जाउँगा । अपने पथरी का इलाज मुज्जफरपुर के कालू बाबू हामियोपैथिक से करवा लिया। गजब है, कालू बाबू, पता नहीं पथरी कहां चला गयी। अब प्रकट रूप से उन्होंने कहा-

"सुन्दर तुम जो कहो, वहीं मानूंगा । मैं अब तेरे सामने हथियार डालता हूँ । पर वैसे इस तरह से गुम सुम रहना, मुझसे बातें भी नहीं करना अब मुझे अच्छा नहीं लगता । देखो, लड़के का डाक्टरी में नहीं हुआ तो क्या हुआ, हमारे पास तो इतना इकठा है कि वे लोग जींदगी भर ऐश करेंगे ।"

"ऐश करेंगे तो मैं जो कहता हूँ वही होगा । अब काठमाण्डू साठमाण्डू में जमीन खरीदने का विचार छोडिए और जितना में जो जमीन की बातचीत हुई है, उसे लिया जाय । उसी के पैसे से फिर काठमाण्डू में भी घर लेने का विचार होगा तो ले लेंगे । काठमाण्डू में रखकर वैसे भी हम अपने बच्चों को एक हीनता के बीच रखेंगे । उनको कभी हम पहाड़ियों के बीच नहीं ले जाऐंगे ।" बात तो पते की कहता है। तिरपट बाबू अब मन ही मन मुस्कुराने लगे । आखिर वे जो चाहते थे उसका अनुमोदन छोटे भाई ने आप से आप कर ही दिया । उनको जब कोई काम करवाना होता है तो वे अपने भाई से अथवा किसी से भी इसी तरह इन्डाइरेक्ट में बात करते हैं । डाइरेक्ट अपनी बातों का अनुमोदन कराने पर क्या मजा ? मजा तो तब है जब वे खुद किसी से वही बात कहलवा लें जो मन ही मन चाहते थे । इसी तरह वे आज तक यहां पहुंचे है । आज फिर वे जो चाहते थे, वही हो रहा था ।

पर इन पृथकतावादियों के सामने उनकी एक नहीं चलती । जितना में ५० बीघे की चकबंदी ले ली गयी । इस चकबंदी को उसने एक पहाड़िया हाकिम से अपनी बड़ी बुद्धिमानी लगा कर लिया था । हूँ, इ लोग रखेंगे जमीन। जोतने आता है, जोतने ? जाइए सिनेमा देखिये और अपने बेटियों को पोखरा सैर कराने के लिए भेजिए । खेत जोतना आपके बस की बात नहीं । साले, अपने मन्त्रालय में एक तह ऊपर कर दिया और जमीन ले लिया । इनको क्या मालूम की जमीन का कितना

तह होता है । अब उसी जमीन से मंत्री जी नोटो को तहियाने लगे और जाकर उस हाडीया का घर भी खरीद लिया। अब बेचारा पहाड़िया किराया पर रहता है । एक बार उनकी बेटियाँ पोखरा घूमने जाती है और सालभर का खर्च लाती है । गजब है, उसने भी मंत्री जी के सामने ही एक घर खरीद लिया । उसका नाम बस्नेत जी है । अपने ७२ वे वर्ष में अभी अभी उन्होंने एक विवाह किया है । इसलिए लड़कियाँ उनसे अलग हो गयी । अलग हो गयी तो हो गयी । अब उनकी जरूरत भी क्या थी ? अब तो खुद उनकी ही उम्र की उनकी बीबी आ गयी है । अब तो उम्र यूँ बैठे बैठे कट जायेगी। रिटायर हुआ तो क्या हुआ ?

अब मंत्री जी बस्नेत जी के घर में रहने लगे । उनके साथ उनके लड़के भी र हने लगे । छोटे-बड़े सभी को उन्होंने कन्वेन्ट में भर्ती करा दिया । लड़के है, कन्वेन्ट में पढ़ेंगे तो आदमी बनेंगे । स्कूल में पढ़ाकर क्या होगा ? राज चलाना हो तो कन्वेन्ट में पढ़ो। राजा के सड़के भी वहीं पढ़ते हैं । इस तरह राजा के लड़के और हमारे लड़के की दोस्ती हो जायेगी। फिर दोस्त-दोस्त एक दिन अमिताभ बच्चन और राजीव गांधी की तरह राज चलायेंगे। बचपन की दोस्ती क्या ऐसे ही चली जायेगी । हूँ, सुन्दर कहता था कि बेटा डाक्टर नहीं बन सका हमने कुछ नहीं किया । नहीं कुछ किया तो आकर देख लो ।

सुन्दर बाबू भी खुश है । अब वे भी चश्मा लगाने लगे हैं । बी. बी. सी. सुनना नहीं छोड़े हैं । दिन रात चश्मा पहन कर बी.बी.सी. सुनते हैं । जिस तरह से कोई चश्मा लगाकर किताब पढ़ता है, उसी तरह वे चश्मा लगाकर रेडियो सुनते हैं । बी बी. सी. को पढ़ते हैं। इसी बी. बी. सी. की किताब से, उन्होंने सभी नालेज इकट्ठा किया है ।

काठमांण्डू रहते हुए इसी बीच उनको अचानक त्रिशक्तिपट्ट मिल गया । जब रेडियो पर खबर सुने तो खुशी से नाचने लगे । रेडियो को दिन भर नचाते रहे कि फिर कब आएगा मेरा नाम । दिन में चार-पांच बार अपने नाम को सुन लिया तो मन जाकर शांत हुआ । अब चलता हूँ घर पर तो देखिये । अब कैसे राजेन्द्र बाबू चुनाव में हरा देते हैं । यही पर कहता था कि अपनी पार्टी में मिला लो तो नहीं माने। अब राजा अपनी ही पाटी में मिला लिये । देखो, आखिर अकिल ऐसे बेकार थोड़े बैठा रहेगा ? अकिल का कदर करनेवाला ही उसका कदर करेगा । उस पृथकतावादी को क्या मालूम कि कदर किसको कहते हैं । सड़ते हैं जेल में । सड़िए । अभी भी हमारी बात मान ले तो जेल में नहीं सड़ेंगे । पर सिर्फ इतना ही होगा कि चुनाव में, मेरे खिलाफ नहीं लड़ेंगे । पर साहब जेल में सड़ेंगे तो सड़ेंगे

पर मेरे खिलाफ लड़ेंगे । लड़िए अब । जब यह त्रिशक्तिपट लेकर जनता के बीच जाउँगा तब देखना । कौन नहीं जानता है, इस लौकेट को ?

तिरपट बाबू बड़ी खुशी से अपने चुनाव क्षेत्र में चले । उनके पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे । वे अपने मोटर साइकिल से जब चारों ओर घूम आये तो उनके पैरो के नीचे की जमीन खिसक गयी । अरे यह क्या हो गया ? हम क्या सोचते थे और क्या हो गया । जो सलाम करता था, उसने भी सलाम करना छोड़ दिया । ऐसे होते हैं लोग देखिये, देखिये । ऐसी होती हैं जनता, क्या इसी को जनता कहते हैं ? त्रिशक्तिपट मुझको मिल गया तो उनके दिलों पर सांप लोटने लगा । अरे गो.द.वा. का मतलब गोरखा का दहिना हाथ । हम गोरखा का दहिना हाथ है । हम नहीं र हेंगे तो गोरखा राज्य नहीं चलेगा । त्रिशक्ति पट माने तीनों देवों का वस्त्र । ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों की शक्तियाँ एक साथ अब मेरे अंदर प्रवेश कर गयी हैं । पर चारों ओर से घूम कर आने के बाद तो ऐसा लगता है कि ये तीनों शक्तियाँ अब मेरे ऊपर से हट गयी है। इसका नाम त्रिशक्तिपट है कि त्रिशक्तिहट है ? वे उद्विग्न होकर अपने उसी कमरे में चहलकदमी करने लगे । चहलकदमी करते हुए ही उसने एक बार उस लौकेट को फिर से पढ़ने की कोशिश की । इसमें तो त्रिशक्तिहट नहीं पट ही है। वे एक बार फिर सोचने लगे । अचानक जाकर वे श्रीराम जी के धनुषवाण लिए खड़े राम के फोटो के नीचे २० अक्षरी बनाया और कमरे में चहल कदमी करने लगे ।

सोचते-सोचते उन्होंने एक बार ऐसा भी सोच डाला । क्या पता कहीं यही सत्य हो ! अगर यही सत्य है तो क्या किया जाय ? यही सत्य है ही । अब तक मेरे भेजे में नहीं आयी थी। अब जाकर आयी है । कहीं ऐसा तो नहीं कि सरकार ने इस लौकेट के बंधन में हमें बांध लिया है । इधर सारा रिपोर्ट तो उनके पास जाता ही होगा । क्या पता कि मेरा भी रिपोर्ट गया होगा कि मैं कुछ पृथकतावादियों की ओर झुकता जा रहा हूँ । गुरुंग रिपोर्ट पर कुछ नहीं बोलने पर उनको मंत्री पद से हटाया जाना, उस रिपोर्ट का अध्यक्ष बनाये जाने के बाद भी उनके दिल को तसल्ली नहीं दिया । अगर हमारे अपने लोगों ने भी पृथकतावादियों का समर्थन कर दिया तो बड़ी मुसीबत हो जायेगी । एक त्रिशक्तिपट दे दिया जाय। इसके बाद उनकी सारी शक्ति खतम । नेपाल में इतनी हिम्मत कहाँ है किसी को कि त्रिशक्तिपट के विरुद्ध कुछ कर सके । लौटाने की तो बात ही छोड़िए । नेपाल में आजतक न ऐसा देखा गया है, न सुना गया है । तिरपट बाबू को इतनी हिम्मत भी

नहीं है और वैसे भी वे राजपुरुष है, रजोगुणसम्पन्न, राज शब्दों से उनको बहुत प्यार हैं। राज, राजा, राजपुरुष, रजोगुण, राज भोग आदि शब्दों को वे अपने भाषणों में बड़ी कुशलता से उपयोग करते हैं।

जो भी हो राज भोग तो कर रहा हूँ। इस बात को सोचते ही थोड़ी देर पहले के अपने विचार को उन्होंने सिर से झटक कर दूर कर दिया। सिर को झटकते ही वे खुश हो गये। ब्रह्म बाबू भी आज कल भाषण - ओषण भूल गये हैं। जब से शारदा से विवाह किये हैं उनकी अकिल गायब है। दिनभर रातभर सिर खाये रहती है। बेचारे ब्रह्म बाबू हमसे चुनाव लड़ेंगे। लडीये अब दिन रात शारदा से। आइए चुपचाप अब हमारा भाषण लिखिए। आप दिन रात कलम घिसिए हमारे और शारदा आपका दिमाग घिसेगी। चुनाव उनाव आपके बस से बाहर की बात है। हे पंडित जी जाकर ब्रहम बाबू को बुला लाइए तो, अभी तुरंत हमको बहुत जरूरी है। हमको बलिरामपुर दहियाड़ राउत के यहाँ जाना है। दहियाड राउत ही तो एक मात्र हमारे सहारे है। अगले चुनाव में पुनर्नवा ने उनको कितना समझाया, पर वे नहीं समझे। गजब है, सारा गांव एक तरफ और वे एक तरफ। उनके एक बोट से ही तो मैं जीत जाता हुँ। सी डी. ओ. अंचलाधीश भी जानते हैं, उनके एक ही वोट से मैं किस तरह जीत जाता हुँ। नहीं, नहीं दहियाड़ बाबू के अलावा तो चुनाव की कल्पना भी नहीं कर सकते। सबको खिलाने-पिलाने से लेकर वोट देने का काम भी वे ही करते हैं। वरियाती भी वहीं, सरियाती भी वही नहीं, नहीं ऐ वदरिया जाओ तुम दहियाड बाबू को बुला लाओ। कहना हम आज ही चले जायेंगे। वे दौड़ते हुए आयेंगे। बहुत जल्दी है। बदरिया दौड़ते हुए चला गया।

राम कन्हाई बाबू को ऐ महदेंवा, जाकर राम कन्हाई बाबू को भी खबर दो। हँ क्या मालूम है उनको खबर भी होगा कि नहीं कि मुझे त्रिशक्तिपट मिला है। बेचारे गौ हैं। वृंदावन में चरते रहते हैं। बाकी का काम हमलोग संभालते हैं। चरिए और जब बुलाउं तो आइए। क्या आप भष्मासुर को मारियेगा ? मारने ओरने के लिए तो हम हइये हैं। बेचारे बेटे के चलते परेशान है। इतना मोटा ताजा हो गया है कि उनके पहले ब्लड-प्रेसर उसी को पकड़ लिया है। बेचारे चरते हैं वे और भोगता है वह। खैर हम क्या कर सकते हैं, यह तो भगवान की लीला है, हम क्या कर सकते हैं ? चरते हैं, मोटाते हैं, हम तो खाली वोट लेते हैं। हा कभी-कभी देवधारी बाबू के विरुद्ध हमारे कहने से खड़ा भी हो जाते हैं। देवधारी बाबू को अपने बस में करने के हथियार वही राम कन्हाई बाबू ता है। उनके खड़े होते ही देवधारी बाबू

हमारे पास नाक रगड़ने लगते हैं। पर देवधारी बाबू को बुला लाओ। देखो अगर रास्ता नहीं देखा है, तो भरवलिया में पूछ लेना।

चारों दिशाओं में लोग दौड़ पड़े। तिरपट बाबू का भोज होगा। त्रिशक्तिपट का भोज। अरे कौन जानता है आगे क्या होगा ? इतिहास में तो नाम लिखायेगा। बाद में जो भी होगा देखा जायेगा। कहने को तो होगा कि हम अपने जमाने में यह तो कह लें कि कौन हमारे इतना बराबर है। जैसे लीलामणि कहते थे, हम तो राणाओं के समय में चार घोड़ों की बग्गियों पर चढ़ते थे। चन्द्र शम्शेर के हजुरिया थे। पर बेचारे की दुर्दशा हो गयी अंत समय में। वेचारे की बीबी आग में जल कर मरी, तो अस्सी वरस की अवस्था में अपनी दूसरी बीबी के साथ पछाड़े खा-खा कर कितना रोते थे। कोई पूछता नहीं था। पर हमारे साथ ऐसा क्यों होगा ? हम तो सरकार के हजुरिया हैं। हम चन्द्र शम्शेर के हजुरिया थोड़े हैं ?

हम तो अपने भाषण से ही लट्टू कर देंगे लोगों को। ए, ब्रह्म बाबू जाइए तो कल ऐसा भाषण लिखकर लाइएगा, जैसे अमिताभ बच्चन ने इलाहाबाद में बोला था। ब्रह्म बाबू तब तक वहाँ पहुंच चुके थे, एक ही गाँव के तो थे। ऐ, चनिरका भाई, पात्रा में साइत देखिये। कोई अच्छा सा दिन निकालिए ताकि हमको अपशुकन न हो। आप से नहीं हो तो कहिए सलेमपुर के पंडी जी को बुलवाऊँ। गोड़वा आजकल कैसा है, दर्द ओर्द तो नहीं होता ?

आप भी हद करते हैं, तिरपट भाई। पातरा देखना है आंख से कि गोड़ से ? गोड़ में दर्द है तो उससे क्या ? आँख पर चश्मा तो ठीक काम कर ही रहा है। तिरपट बाबू ने फिस से हँस दिया। ब्रह्म बाबू भाषण लिखने चले गये। चनिरका भाई पातरा उलटा कर बैठ गये। सभी लोग त्रिशक्ति पार्टी का इंतजाम करने लगे।

बहुत देर के बाद पात्रा उलटाने, पुलटाने के बाद चनिरका भाई ने सुनाया। अगहन के पंचमी को सबसे बढिया दिन हैं। उसी दिन यह पार्टी दिया जाय। इससे ज्यादा अच्छा दूसरा नहीं है। किसी में राहू तो किसी में केतु का प्रवेश है। सबसे अच्छा वही है। एक निर्णय

“धत तेरी की, कहाँ राहु और केतु का नाम ले लिया। ठीक है, ठीक है, वही तिथि निश्चित कर दीजिए। एक तो राहू और केतु जेल में बंद हैं जो हमारी गर्दन काँट ही देंगे पर फिर कभी राहू और केतु का नाम मत लीजिएगा। चुनाव में

हम जाते हैं नहाने। कह कर तिरपट बाबू खरिहानी में नहाने चले गये। पर उस दिन तो गढ़ी माई का मेला है, खैर कोई बात नहीं है।

दूसरे दिन बलिरामपुर के दहियाड बाबू, राम कन्हाई बाबू, देवधारी बाबू तथा ब्रहम बाबू सभी इकट्टे होकर उस दिन के आवश्यक इंतजाम के लिए सलाह मशविरा करने लगे। कौन लोग मिटिंग में बुलाये जायेंगे और कौन लोग नहीं, इसका एक लिस्ट देवधारी बाबू ने बनाकर दिखाया। देवधारी बाबू ने बड़ी चतुराई से इस लिस्ट को बनाया था। वे सब कुछ चाहते थे, पर तिरपटबाबू की इतनी सोहरत पसंद नहीं करना चाहते थे। तिरपट बाबू ने उस लिस्ट को देखा।

"देवधारी बाबू इसमें उस एटर्नी जेनरल और उनका नाम नहीं है। आप तो समझ ही गये होंगे जो देश का सब से चमचमाता हुआ पोशाक पहनते हैं। क्यों क्या वे हमारी पार्टी में नहीं आयेंगे ?"

"क्यों नहीं आयेंगे, पर यहां पर नहीं आयेंगे। काठमांण्डू में बुलाइएगा तो आ सकते हैं। उनका तो काम ही यही है। हर जगह जाकर वे अपनी तेज निगाहों से इधर-उधर देखते हैं और अपना भोजन मिलते ही चल देते हैं। बाकी लोग अपना खाते-पीते रहते हैं। पर यह जरा गांव का मामला है। यहां पर कहाँ वैसा भोजन मिलेगा ?"

"हाँ देवधारी भाई, हिरनी तो जंगलों में होती है। जिनकी सभीत आँखों का शिकार करने में ही तो मजा है। यह तो गाँव है मनुष्यों का वास। फिर भी मैंने एक उपाय निकाला है और खास तौर से इस बार उनको ही बुलाने का निश्चय किया है। मैं खुद इस बात की खबर लेकर काठमाण्डू जाउंगा देखना वे जरूर आयेंगे।"

"तो ठीक है, जैसी आपकी इच्छा पर दूसरा कोई तरीका नहीं है उनको बुलाने का।"

देवधारी बाबू ने जितने लोगों का लिस्ट बनाया उस सबके पास निमन्त्रण कार्ड के लिए छपने का ऑडर दे दिया गया। दूसरे ही दिन निमन्त्रण कार्ड छप कर भी आ गया।

"तिरपट बाबू की त्रिशक्ति पार्टी में आपकी उपस्थिति का अनुरोध...... "सबके पास ब्रह्म बाबू ने कार्ड भेज दिया। एक कार्ड लेकर तिरपट बाबू खुद काठमाण्डू रवाना हो गये।

"ओ कब है तुम्हारी पार्टी ?"

"हजुर अगहन पंचमी को, सोचता था हजुर कि इन पोशाकों की चमक से एक बार अपने घर को धन्य कर दूं। बड़ी कृपा होगी।"

"पर उस दिन तो पोखरा जाना है। उस दिन वह जो घटना हुई थी, याद है न तुम को ?"

"हाँ हजुर याद है ?"

"उसके बाद फिर कभी पोखरा नहीं गया। एक बार फिर जाने का विचार कर रहा हूँ।"

"होस हजुर, होस सरकार। पर इँतजाम मैंने भी वहाँ करवा कर आया है। शिकार वहाँ भी मिलेगा सरकार। कभी-कभी गांवों का शिकार भी बड़ा आनंददायक होता है।

चमकदार पोशाक वाले की आँखें चमक गयी।

"तो क्या वहां भी शिकार मिलता है ?"

"हजूर, सरकार, क्यों नहीं, क्यों नहीं। वहाँ भी सब तरह के शिकार मिलते हैं। वहीं के शिकार तो असल शिकार हैं जो आप को करना पड़ता है। पोखरा काठमाण्डू में तो मानों शिकार ही आपके पास चले आते हैं। लो मारो हमें, हम मर ने के लिए तेरे पास आ गये हैं।

"तो ठीक है, हम चलेंगे। ऐसा शिकार हम भी करेंगे। जाओ तैयारी करो।"

तिरपट बाबू की बाछे खिल गयी। देखते हैं अब कैसे कोई हमको हराता है। हमारा यही तो पलान था। देवधारी बाबू का पत्ता तो ऐसे ही साफ। राजेन्द्र बाबू से थोड़ा डर था, तो देखा जायेगा। इधर अंचलाधीश और सी. डी. ओ. हमसे नाराज थे। अब देख लेंगे उनकी नाराजगी। नाक रगड़ने नहीं आयेंगे तो मेरा नाम तिरपट नहीं। आधा बल तो उनका, त्रिशक्तिपट के मिलते ही खत्म हो गया। बाकी आधा इसके बाद।

तिरपट बाबू को शिकार का कोई शौक नहीं, पर दूसरों के शिकार में सहायता करते हैं। शराब नहीं पीते, पर दूसरों के लिए हमेशा इंतजाम करवा देते हैं। दुनियाँ है, अब उसको वही पसंद है तो हम क्या करेंगे ? हम तो चाहते हैं कि सारी दुनिया हमारी ही तरह हो जाय, पर हो जाय तब तो, नहीं तो मुझे अपना लक्ष्य पूर्ति करने के लिए तो इतना करना ही होगा। देश और जनता को हम नहीं जानते। यह जनता ही कौन सी भली है ? बेचारे लबेदा बाबू उन्हीं के

लिए उन्हीं का पार्टी बनाया तो उन्हीं को हरा दिया । जब राजा से मिल गये तो वही जनता रोज-रोज उन्हीं को गाली देती है। क्यों देती है ? जीतने के लिए तो जिताया नहीं, गाली देने के लिए ताबड़तोड . नहीं, नहीं इस जनता से दूर । रहना चाहिए । हरजाई पता नहीं, कब कुर्सी पर बैठा देगी और कब लात जुतो से भुर्ता बना देगी। इससे तो अच्छा है कि इस तरह की पार्टी-वार्टी देते रहें । एक पार्टी में एक चुनाव, फिर ५ साल के लिए कुर्सी मुबारक । पर सुन्दरवा कहता है कि अब यह नहीं होगा । अब भी होगा। तुम देखते रहो सुन्दर, मैं देखता हूँ । सबको पानी नहीं पीला दूं तो मेरा नाम तिरपट नहीं । रास्ते भर सोचते हुए, खुशी से उछलते हुए अपने चश्मे को उतारते, साफ करते घर पर पहुंच कर वे तैयारी में जुट गये ।

दूसरे ही दिन जाकर उन्होंने सी.डी.ओ. और अंचलाधीश के यहाँ गुप्त रूप से इस भ्रमण की बात बतलायी और साथ ही यह भी बतलायी कि यहां के भ्रमण में उनकी खास मंशा क्या है ? उनकी खास इच्छा शिकार करने की है । सी.डी.ओ. साहब एक ठेक्का का मोल-तोल कर रहे थे और मालपोत के हाकिम साहब से तू-तू मैं-मैं हो रही थी । मौका देखकर उन्होंने आज की मिटिंग डिसमिस कर दी । रीत नहीं पुराता है, अब कल इस पर विचार होगा । अंचलाधीश महोदय, डी.एस.पी. साहब से आवश्यक सलाह, मशविरा कर रहे थे । गण-संग्राम के मेजर भी वहीं पर थे । उनलोगों की मिटिंग डिसमिस हो गयी । सी.डी. ओ. साहब और अंचलाधीश साहब ने जब शिकार की बात सुनी तो खुश हो गये । पर यहाँ तो कहीं जंगल नहीं है, शिकार कहाँ से लायेंगे ? चितवन से लाना पड़ेगा । तिरपट बाबू ने उन्हें समझाया कि इस बार खुली मैदान में ही शिकार करेंगे । जंगलों में तो वे बहुत बार शिकार कर चुके हैं । खुले मैदान का शिकार कैसे होता है, वे खास तौर से उसी के लिए आ रहे हैं । फिर उन्होंने अंचलाधीश के कानों में शिकार की विस्तृत जानकारी दी । अंचलाधीश ने सी.डी.ओ. को बताया और तीनों एक ही बार ठहाका लगाकर हँस पड़े ।

"अरे भाई, तिरपट बाबू के दिमाग का दाद देना होगा । दिमाग हो तो ऐसा । तिरपट बाबू इधर हमसे कोई गलती हुई हो तो क्षमा करिएगा । हम जरा देवधारी बाबू के बहकावे में आ गये थे । फिर ऊपर से हेम बहादुर मल्ल का भी निर्देशन आया था, क्या करें ? गृह मंत्रालय के आदेशानुसार तो हमें चलना ही पड़ता है ।

"अरे हम समझते हैं अचलाधीश साहब कोई बात नहीं, कोई बात नहीं । अब तो मान गये न ?"

"हाँ मान गये, अब कौन नहीं मान सकता । अब तो मानना ही पड़ेगा ।"

अंचलाधीश साहब और सी. डी. ओ. साहब, डी.एस.पी. और मेजर साहब के साथ अब शिकार के इंतजाम में जुट गये। खुले मैदान का शिकार । आखिर उसी शिकार के साथ ही तो थोड़ा हमें भी खाने को मिलता है । अगर वे लोग भी शिकार खाना छोड़ दें तो फिर हम क्या खायेंगे ? तिरपट बाबू की तरह अगर वे भी भेजिटेरियन हो जाय तो हम मर ही जायेंगे। पर तिरपट बाबू भी हमारा इंतजाम कर ही देते हैं । खुद भेजिटेरियन हुए तो क्या हुआ? इस बार मजा आ जायेगा ।

पहले तिरपट बाबू ने पार्टी को अपने गांव के बैठक खाने में ही देने का विचार किया था पर उनका गांव थोड़ा बेसी गाँव पड़ जाता है । बिजली उजली तो आ गया है, पर फोन ज्यादा खर्चीला होने के चलते अभी नहीं आया है । उन्होंने खुद ही नहीं मंगाया है । रोड पर अभी भी कीचड़ के अलावा दूसरा कुछ नहीं मिलता हैं । इस रोड से होकर भला उनकी सवारी कैसे होगी । असम्भव, सीढी उतरते समय तो हाथ पकड़ना पड़ता है । दो फूट रोड नहीं बना था तो भरतपुर अस्पताल में वे नहीं गये । जहाँ से रोड बन रहा था, वहीं से लौट गये । नहीं, नहीं वीरगंज में ही ठीक करना होगा । वीरगंज के अलावा इस जिला में और कोई जगह भी नहीं है यहां क्या लंदन, अमेरिका है कि जहाँ कहीं भी उनके मन मुताबिक चीजें, जगहें मौजूद हों ? यह तो नेपाल है, काठमाण्डू, पोखरा को छोड़ कर बाकी जगहों को बनाना पड़ता है उनके लिए ।

इसलिए पार्टी का सारा इंतजाम विशेष रूप से संझना होटल में किया गया । कहते हैं थ्री स्टार होटल है । मैं तो यह थ्री-फ्री स्टार जानता ही नहीं, पर उसी को कहवा कर नहीं फाइव तो फोर स्टार बनवाना पड़ा ।

अंचलाधीश का ऑडर हुआ । ऊपर से भी थोड़ी सहायता दिलवा दी गयी । और थ्री स्टार होटल, फोर स्टार होटल में बदल गया । सब कुछ उनके मुताविक बना दिया गया । अच्छी तहर से मुआयना कर लिया गया । सब कुछ उनके मुताबिक ही था ।

आखिर वह दिन भी आया । सभी लोग लकदक पोशाकों में संझना होटल की ओर साज ढलते के साथ ही पहुंचने लगे । उस दिन किसी भी बाहरी यात्री को उस होटल में नहीं ठहराया गया । एक बड़े से हाल में माइक, मंच और पंच मकार

चमक रहे थे। नियोन लाइट के नीचे सफेद चादरें बिछी थी। अगल-बगल कुर्सियों का ढेर लगा हुआ था। माइक के पास चीफ गेस्ट के लिए एक अलग से सिंहासन सजाया गया था। सबको मालूम था कि उस पर कौन बैठेगा। सभी लोग पहुँच- पहुँच कर तिरपट बाबू को बधाई दे रहे थे।

अचानक सभी कोई चमत्कृत हो गये। ऐसा रूप, ऐसा लावण्य उनलोगों ने कभी नहीं देखा था। सभी कोई अपनी-अपनी जोड़ी लेकर वहां पहुंचे थे, पर यह जोड़ी, नहीं जोड़ी नहीं, उनमें से केवल एक, यह अपूर्व सुन्दरी यहाँ, इस पृथ्वी पर? नहीं नहीं यह देवी, यह परी किसी अन्य लोकों की हो सकती है। ब्रह्म बाबू कहाँ से पा गये इसे ?

ब्रह्मबाबू शारदा के साथ पार्टी में प्रवेश किये थे। उनके प्रवेश करते ही सभी लोग आश्चर्य से शारदा की और देखा था। सभी लोग उठकर उनकी आगवानी में चल दिये। तिरपट बाबू को इस पर आश्चर्य हुआ पर फिर वे फिस से हंस दिए। इसमें आश्चर्य की क्या बात है, इतने बड़े प्रेस के मालिक है, ऐसी अपूर्व सुन्दरी का साथ, ऊपर से हमारी निगाह और हम पर उनकी निगाह जो आ रहे हैं चीफगेस्ट वनकर, फिर आगवानी नहीं करेंगे तो क्या करेंगे ?

अब तक स्टेज के माइक पर एक सुन्दरी आकर अपने कुल्हे मटकाने लगी थी।

आगे भी जाने न कोय, पीछे भी जाने न कोय।

जो भी है, यही एक पल है।

लाइट, म्यूजिक का खुमार सब पर चढ़ने लगा था। पर अभी तक पार्टी की कारर्वाई रुकी हुई थी। सभी लोगों को उनका इंतजार था। ब्रह्म बाबू ने सबकी तरह मंच पर चढ़कर तिरपट बाबू को बधाई दी और शारदा से भी वैसा ही करने को कहा। (हाँ ताकि ब्रह्म बाबू ने तो बधाई पहले ही दे दी थी। वहाँ पर इतने बड़े, पुरस्कार की बधाई का रश्म भी कुछ विशिष्ट तरीके से देने का आयोजन किया गया था। शारदा बिना बधाई दिये चुप-चाप नीचे उतर गयी।

"क्यों तूने बधाई नहीं दी ? इतने सभी लोगों ने तिरपट बाबू को बधाई दी और तू नहीं दोगी ? जाओ बधाई का रश्म पूरा करो ?"

"जी मैं ऐसा नहीं कर सकती। फिर आप बधाई दे ही चुके है। आपके अखवार में तो पहले ही निकल चुका है।"

"मैं कहता हूँ कि अभी जाओ। क्या तुम सबके सामने हमारी नाक कटवाओगी ? सभी लोग देख रहे हैं कि तुम बिना बधाई दिये उतर गयी।"

"देख रहे हैं तो में क्या करू ? मैं क्या उनकी परवाह करती हूँ ? हमारी मर्जी है, क्या बधाई भी जबरजस्दी देनी होती है ?"

"सेट अप, क्या तुम्हें इनलोगों की कोई परवाह नहीं हैं जिन लोगों के बीच तू इतनी सजधज कर खड़ी हो ?"

"हाँ, हाँ, हाँ, हाँ, हाँ, हाँ, ऽ ऽ ऽ....! जैसे मेरा यह रूप, मेरा यह लावण्य सव इन्हीं लोगों ने दिया है ? क्या खूब क्या खूब ! ! ! ! शारदा की इस हंसी के साथ ही सभी लोग उसकी तरफ और ज्यादा ध्यान केन्द्रित कर लिए। कैमरे बंद हो गये।

"क्यों नहीं जाओगी बधाई देने? क्या इसका कोई कारण है ?"

"कारण है, और बहुत बड़ा कारण है। ऐसा करके मैं आपके गौरव की रक्षा कर रही हूँ।"

"क्या बकती हो ?"

"ठीक बकती हूँ, इस पुरस्कार को मैं अपने, आपके, तिरपट बाबू के एवं अपनी सोसाइटी के मुख पर एक तमाचा मानती हूँ। यह पुरस्कार नहीं, हमारे मुँह पर एक तमाचा है। क्या कोई आपके मुंह पर तमाचा मारे और मैं कहूं कि बधाई है, बहुत बहुत बधाई है तो आपको कैसा लगेगा ? दुःख तो इस बात का है कि आप लोग इस तमाचे को तमाचा नहीं मानते और पुरस्कार समझकर उसकी खुशी में पार्टी भी देते हैं। हँ, हँ, हँ, हँ, हँ ! ऽ ऽ !"

सभी लोग मुंख बंद करके उसे देखते रहे। उसकी दूसरी हँसी के साथ ही सभी लोग सकते में आ गये। किस तरह हँसती है यह ? आदमी तो इस तरह नहीं हँसता, औरत तो इस तरह नहीं हँसती है। लेकिन दिखलाई तो औरत जैसी पड़ रही हैं।

बीच में से एक बूढ़ा आदमी उठा और उसके पास धीरे से जाने की हिम्मत करते हुए गया।

"तुम कौन हो बेटी, ऐसी भी क्या बात है ?"

"चुप रह, बेटी बोलता है। मैं तुम्हारी माँ हूँ माँ, बोल माँ। मैं तुमको अच्छी तरह से जानती हूँ अटर्नी जनरल। मैं वह नहीं हूँ जो तुम्हारी सोसाइटी है। बेटा, बहु को छोड़कर अमेरिका में बस गया। एक बटी ने एक के चक्कर में फंस कर

जहर खाकर मर गयी । दूसरी ने अपने पति को छोड़कर दूसरा कर लिया तो ट्रक से भागती हुई यही पर पकड़ी गयी थी । हमारे यहां ही रुकी थी । यही है तुम्हारी सोसाइटी जो हमारे मुंह पर तमाचा मारती है । मैं उस सोसाइटी की नहीं . हूँ ।

हाँ, हाँ, हाँ, हाँ, हाँ ! ऽ ऽ........!"

अब सभी लोगों के ऊपर भय छाने लगा । ब्रह्म बाबू को लगा कि अभी जाकर शारदा की जीभ खींच लें । पर उसी समय उनकी सवारी हो गयी । उनके हाल में प्रवेश करते ही ध्वनि फिर से बजने लगी । कैवरे डान्स फिर स्टेज पर आ गया । थोड़ी देर पहले जो लोग भयभीत हो गये थे अब दूसरे भय की पकड़ में आ गये थे । सभी लोगों ने अपनी नजर नीचे झुका ली। थोड़ी देर में फिर उनके ईशारे पर ऊपर उठा ली। वे थोड़ी देर पहले की किरकिराहट भुलकर फिर मस्ती में डूबने लगे । पार्टी की शुरूआत उर्वशी की चुस्कियों के साथ शुरू हुई । धीरे-धीरे जहर नीचे उतरने लगा । थोड़ी-थोड़ी देर में वे तिरपट बाबू को बुलाते और कान में कुछ कहते थे । उतर में तिरपट बाबू उनको तसल्ली देते जा रहे थे । उनके चेहरे पर किसी चीज की बेतावी झलक रही थी । अव शारदा चुप-चाप इस तमाशे को देख रही थी । देख रही थी कि इस सोसाइटी के अंदर किस तरह जहर उतरता है । जहर चीफ गेस्ट से शुरू होकर सबके ऊपर छाने लगी थी । थोड़ी ही देर में सब लोग मस्त हो गये । कोई स्नैक लेता, कोई सलाद लेता, तो कोई पंच मकारों में से । सब कुछ सब लोग अपनी अपनी जोड़ियों के साथ थे। सिर्फ चीफ गेस्ट अकेले थे ।

इधर यह चल रहा था, उधर गढ़ी माई का मेला लगा हुआ था । तिरपट बाबू हर बार गढ़ी माई का दर्शन ही नहीं पाठ भी पाँच दिनों तक करते थे । पर इस बार पंडित जी ने इसी समय पार्टी का लगन निकाल दिया था । जिला सभा के उद्घाटन के चलते वे वैद्यनाथधाम नहीं जा सके और अब इस त्रिशक्तिपाटी के चलते गढ़ी माई का व्रत टूट गया । कोई बात नहीं, वे लोग तो भगवान है, कभी मना लेंगे । पर इनको मनाना थोड़ा मुश्किल है । हँ... क्या मुश्किल है ? शिकार की व्यवस्था तो कहीं भी, कभी भी हो जाती है। हजुर, जहाँ पनाह, थोड़ी देर और ।

रात में जगमगाता हुआ प्रकाश, चारों और मर्करी और गैस बत्तियों की रोशनी फैली है। एक-एक दुकान लगी हुई है । कहीं नौटकी, कहीं सिनेमा और कहीं भीडीयो भी दिखलाया जा रहा है । हर कोने से माइक लाउड स्पीकर की आवाज गूज रही है । पाँच दिनों का यह मेला ५ वर्षों में अपनी अपार भीड़ के लिए प्रसिद्ध

है । कितनी मिन्नते, कितनी ही मनौतियों की पूर्ति का इंतजार लोग करते हुए यहाँ पर आते है । एक अपार श्रद्धा, एक अज्ञात शक्ति का आकर्षण उनको खिंचकर यहां तक ले आता है । कितने लोग आते रहते हैं और गढ़ी माता का दर्शन कर खुश होकर , वापस लौटते हैं । स्थानीय लोग इन भीड़ भड़क्कों के कारण, रात में घूमते हुए नजर आते हैं । वे खाकर चलते, मां का दर्शन करते, नाच, नौटंकी को देखते हुए दो बजे तक फिर अपने घरों को वापस लौट जाते हैं ।

इन सारे कोलाहलों के बीच भी एक अपूर्व सन्नाटा छाया रहता है । उस गोल घेरे के अंदर वह कोलाहल नहीं पहुँच पाता था । जैसे कोई चीज इन सारे कोलाहलो को सोख कर अपने आसपास एक अपूर्व शक्ति और सन्नाटे को बनाये रहती है । इसी गोल घेरे के बीच, इसी चक्र के बीचों बीच वह मंदिर है जिसमें गढ़ी माई प्रतिष्ठापित हैं । वहाँ पर रात भर देवास का पाठ होता रहता है । वहाँ जाइए, देवास के साथ ही, एक अपूर्व भय एवं शक्ति का एहसास होता है । साफ लगता है जैसे कोई ऊपर से वहां पर उतरा है और घूम रहा है । कुछ दिखलाई नहीं पड़ता, पर कुछ है, ऐसा लगता है । वह शक्ति अपने अंदर सबको बहा लेती है । लोग वहाँ आते हैं और अक्षत तथा ओढउल के फूलों से माँ की पूजा करते हैं और चरणों में सिर टेकते हैं। भीड़ के कारण उस गोल घेरे के पास जहाँ कहीं भी सिर टेक सकते है । सब जगह माता के पैर मौजूद होते है । रात में एक दो बजे के बाद, सन्नाटा होता है, लोग कुछ कम होते हैं ।

एक जीप चारों चरफ पेट्रोलिंग कर रही है । वह इस मेले में होनेवाली अशान्तियों एवं गड़बड़ियों को शांत करने के लिए तैनात है । इतने ही बड़े-बड़े मेलों में अराजक तत्व लोगों को भड़का कर लाभ उठाते हैं । इसलिए वे मुस्तैदी के साथ इँटे हुए हैं । जीप पर आठ-दस जवान बंदूक लिए बैठे हैं । सब पहाड़िया । वे सभी बड़ी पैनी निगाहों से इधर-उधर देख रहे हैं । उ, उधर देखिए डी.एस.पी. जी साहब । हाँ, हाँ मैं वहां पर गया हूँ, वही तो हैं ।"

"वही है ?"

"हाँ, हाँ वही है, वही है ।"

"ड्राइवर, रुक जाओ, वह इधर ही आ रही है ।"

"हाँ, हाँ इधर ही आ रही है ।"

"पर उसके साथ तो पाँच-सात लड़कियाँ और हैं ।"

"है तो क्या हुआ ? रुकिये आने दीजिए ।"

अपनी ५-७ सहेलियों के साथ वह आयी। सभी लोग जीप से उतरकर उनके पीछे पीछे चलने लगे । आगे-आगे लड़कियों का वह झुण्ड और पीछे-पीछे सिपाहियों की टोली । रुकिये हड़बड़ी नहीं करना, में जब कहूँ तब चटपट अपना काम पूरा कर ना । शिकार के लिये उचित मौके का इंतजार करना पड़ता है । सभी सिपाही उनके ऑडर का पालन कर रहे थे । सी.डी. ओ. साहब ने इशारे से उसे बता दिया था कि उन सातों में से कौन वह है । जिसकी दिन भर वे खोज करते रहे हैं । सभी सलेहियाँ चलते-चलते उस गोल घेरे के पास आयी जिसके बीचों बीच सन्नाटे में माँ गढ़ी माई प्रतिष्ठापित थी । सात सहेलियाँ फूल-पत्तियाँ उठायी और उस चबूतरे पर चढ़ने लगी । एक बार सीढ़ी चढ़ने से पहले ही उसने आँखें बंद कर एक क्षण वही स्मर ण कर लेना चाही। तब तक सहेलियाँ ऊपर जा चुकी थी । इसका लाभ उठाते ही डी.एस.पी. साहब ने इशारा कर दिया । इतना अवसर किसी शिकारी के लिए काफी होता है । सिपाहियों ने आनन-फानन में अपना काम कर दिया । एक आदमी ने उस युवती के बंद आंखों के साथ ही फटाख से उसका मुंह भी बंद कर दिया । वह कुछ समझे-समझे तबतक किसी ने उसका गोड पकड़ा, कोई हाथ और जल्दी से जीप पर ले जाकर जीप स्टार्ट किये और तेजी से चल दिये। अगल- बगल के लोगों ने देखा, होगी कोई कुलटा, पुलिस पकड़ कर ले गयी है। इन लोगों की यही सजा होनी चाहिए । माई के मेले में भी धंधा करने चलती है । लोगों को कुछ भी शंका नहीं हुआ । उनको लगा कि पुलिस अपना काम कर रही है । व्यवस्था कर रही है । उनको कोई एहसास नहीं हुआ कि इस व्यवस्था के नाम पर एक हिरनी जैसी सीधी और निष्कपट लड़की उनका शिकार बन गयी है । जीप में बैठी लड़की दहशत से इधर-उधर देख रही थी जैसे कोई हिरनी ही इन बहसी जानवरों के बीच घिर गयी है । जीप भागी जा रही थी ।

"अरे गंगा कहाँ गयी ?"

"पता नहीं हम कहते हैं हाथ पकड़ के चलो, तो कभी इधर देखती है, कभी उधर देखती है । उसको लगता है कि हर कहीं पूरन ही दिखलाई पड़ जायेगा ।"

"पर वह पूरन के छूट जाने की ही मनौती मांगने आयी थी ।"

"यही कहीं होगी, चलो भीड छँटने पर चली आयेगी वह, कहाँ भुला जायेगी ? सभी रास्ते जाने पहचाने हैं ।"

उन लड़कियों को कानों कान खबर नहीं हुई कि गंगा कहाँ चली गयी । उन्हें लगा कि वह इस भीड़ में कहीं खो गयी है और जाने पहचाने रास्ते होने के चलते घर चली ही जायेगी । क्या कोई बच्ची है कि भुला जायेगी ? उन्हें क्या पता था कि गंगा अब उस रास्ते पर पहुंचा दी गयी है जिसे वह कहीं से भी नहीं पहचानती । वह रास्ता उसका कहीं से भी पहचाना हुआ नहीं है । गाँव की गलियों से दूर, पगडडियों से दूर, जीप भागता चला जा रहा था । जीप के पीछे-पीछे धूल का एक गुब्बार छुटता जा रहा था । इन गुब्बारों का एक बादल बनता जा रहा था । यह बादल ऊपर उठकर आसमान को भी ढकता जा रहा था । चांद-तारे ओझल होने लगे थे ।

अब तक गंगा के हाथ-पांव बाँध दिये गये थे । बीच में उसने छटपटाने की कोशिश की थी ।

हुर्रर ऽऽऽ......... धिर्रर ऽऽऽ.......

जीप अचानक रूकी । पाँव के बंधन खोल कर हाथों के बंधन सहित सिपाही उसे महल के अंदर ले गये । उसमें प्रवेश करते ही सभी के जहर का असर जैसे थोड़ा कम हुआ । सबने उसकी ओर मुड़ कर देखा और फिर जहर में तल्लीन हो गये। सी.डी.ओ. साहब और डी. एस. पी. साहब ने मंच पर चढ़कर उनके कान में कुछ कहा । कहते समय उन्होंने इशारा किया और इशारे की ओर उस पोशाक वाले ने देखा । आंखें उसकी उस तरह चमकी जैसे किसी हिरन को देखकर किसी शिकारी की चमकती है । कोई बात नहीं, कोई बात नहीं, ले जाओ इसे ऊपर, हम तुम लोगों से खुश हुए । अगली बार गो. द.वा. तुम दोनों को दिलवाउंगा । दोनों खुश होकर मंच से नीचे उतरने लगे ।

शारदा ने जब गंगा को देखा तो दौड़कर उसके पास गयी और उसके गले से लिपट कर रोने लगी । एक क्षण को लगा जैसे वह अपने विवाह के समय विदा लेते समय ही उससे गले से लिपटकर रो रही है । अचानक ही वह स्थिति की सारी गम्भीरता को भांप गयी । ब्रह्म बाबू के यहाँ उसने उस मंच पर बैठे आदमी के फोटो को देखा है और उसके बारे में बहुत कुछ सुना है। उसका चेहरा सख्त हो गया ।

"आप सभी लोग, इस गंगा को यहाँ पर क्यों लाये हैं ? आप लोग अभी इसे छोड़ दो नहीं तो अभी मैं हल्ला करके सारी जनता को बुलाऊँगी । आपलोग क्या समझते हैं ? किसी की इज्जत नहीं होती क्या ? मैं आपसे कह रही हूँ, मंच पर बैठे जवान, मैं आप से ही कह रही हूँ ।"

अब तक निरपेक्ष रूप से सबकुछ तिरपट बाबू देख रहे थे। अब यह बात उनके बर्दास्त से बाहर हो गयी। ब्रह्म बाबू , मैंने पहले ही कहा था कि इस लड़की से विवाह मत कीजिए। अब यह हम सबकी गले में फांसी लगवाएगी। ले जाइए इसे , ले जाते हैं कि नहीं ? इसे अभी तुरंत बाहर कीजिए।

मंच पर बैठे जनाव की आँखों में खून उतर आया था ? वे डोलने लगे थे। गुस्से से थर-थर काँपने लगे थे। बाप रे बाप सभी लोग भय और दहशत के साथ किसी तरह उनको शांत किया ! ब्रह्म बाबू के साथ डी.एस.पी. और सी.डी.ओ. साहब आगे बढ़े। तय हुआ कि शारदा को ले जाकर हिरासत में रख दिया जाय। उनको आते देख शारदा गंगा की गले से जाकर लिपट गयी और फूट-फूट कर रोने लगी। नहीं गंगा मैं भी तुम्हारे साथ ही मर जाउंगी, पर मैं यहाँ से नहीं जाउँगी। सबलोग तुम्हें क्यों लाये है, तुम नहीं जानती। मैं जानती हूँ। यह मंच पर बैठे आदमी की हवस इतनी बड़ी है कि वह तुम्हारे क्या इस सारे देश को अपना शिकार बना देगा। नहीं गंगा, भागो यहाँ से वे दोनों भागना चाहती है, पर लपक कर डी.एस.पी. के जवानों ने दोनों को दबोच लिया। गंगा को ऊपर ले जाकर हाथ- पाँव बांध कर बंद कर दिया गया। शारदा को जीप पर पकड़ कर बाहर ले जाया गया। ब्रह्म बाबू सब देख र हे थे। मन ही मन सोच रहे थे अच्छा हुआ, बलाय टला। बाप रे बाप यह औरत है कि काल है? अब उससे तलाक करना ही होगा।

पार्टी के सभी लोग नाच-गान के बाद एक-एक करके जाने लगे। तिरपट बाबू और ब्रह्म बाबू भी मंच पर बैठे पोशाकधारी को सलाम ठोक कर चले गये। तिर पट बाबू ने चलते-चलते उनसे माफी मांगी। हजूर यह बिना जंगल का, सरपट मैदान का शिकार है। गुस्ताखी माफ करेंगे। घर जाकर हम उसकी जीभ काट लेते हैं। हजूर वह इस नाचीज ब्रह्म बाबू की बीबी है। पर हजुर तिरपट बाबू हमारे अपने है।"

"ठीक है जाओ, हम तुमसे कल बात करेंगे।"

तिरपट बाबू और ब्रह्म बाबू भय और शंका से चुप-चाप वहां से चल दिये। क्या बातें करेंगे पता नहीं? लगता है खुश नहीं हुए। आफत आ जायेगी, पर जब कमरे में जायेंगे तो खुश हो ही जायेंगे। क्या ब्रह्म बाबू ?

ब्रह्म बाबू ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे तलाक का प्लान बनाते हुए जा रहे थे। दोनों सीधे घर चले गये। डी.एस.पी. कार्यालय में यह देखने भी नहीं गये कि शारदा कैसी है ?

मंच से उठकर चीफ गेस्ट वहाँ पर गये जहां हाथ-पांव बंधी गंगा पड़ी हुई थी। बंधन खोल दिये गये। गंगा छटपटाने लगी तो फिर हाथ-पांव बांध दिये गये।

अचानक तीसरे प्रहर में उस कमरे की खिड़की फटाक से खुली। चीफ गेस्ट को लगा जैसे उनके आनंद सागर में कोई बहुत बड़ा पत्थर फेंक दिया हो। गंगा को कोई खबर नहीं है कि वह किसे देखे और किसे नहीं देखे। उसकी बुद्धि पथरा गयी है। चीफ गेस्ट ने अपने आनंद में खलल डालने वाले को देखा। आनंद में खलल डालने वाली उन दोनों आंखों ने भी उस लीला को देखा।

सिपाही हरकत में आ गये। अपने सिपाहियों की पहरेदारी में इस लीला में खलल कौन डाल सकता है ? आनन-फानन में उस खलल डालने वाली आँखों को सिपाहियों ने पकड़ कर हाजिर कर दिया।

"इसी को कहते हैं कि जब सियार को मौत आती है तब वह शहर की ओर भागता है। ले आओ, इसे भी इसी लड़की के साथ बांध दो। हम बताते है कि हम कौन है। कैसे आ गयी यहाँ पर, इसे तो डी. एस. पी. पकड़ कर ले गया था।

हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ ऽऽऽ।

एक अजीव ठहाके से कमरा गूंज उठा। मुझे कौन पकड़ सकता है चीफ गेस्ट साहब। तुम्हारे डी.एस.पी. की जीप से छुट कर भाग आयी हूँ। तुम क्या कर सकते हो मेरे साथ, मैं खुद यहाँ पर आयी हूँ। हिम्मत हो तो बढ़ो और कुछ करो।

हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ

इस बार की शारदा की हंसी से चीफ गेस्ट साहब कांप गये। उनको लगा, यह औरत नहीं कुछ और है। उनका रोआँ-रोआँ रोमांचित हो गया। वे दहशत से बरबराने लगे। हजूर लगता है कि वह पागल हो गयी है। यह पागल औरत है। पागलों के साथ क्या ......। "हुक्म हो तो यहाँ से ले जायें। अब तक चीफ गेस्ट साहब फिर संभल गये थे।" "नहीं, ले तो जरूर जाओ। ऐसी पागल औरत भी कहीं कहीं काम लायक होती है ? पर यह ऐसी औरत है कि मुझे भय लगता है। या तो इसको जान से मार दो या.......।

"नहीं यह औरत जो कुछ कहेगी, जनता उसका विश्वास करेगी। इसलिए इसे हम ऐसे नहीं जाने देंगे।"

"तो हुक्म हो हजूर, हम इसे क्या सजा दें ?"

"इसकी जीभ काट लो ताकि यह न कुछ बोल सकेगी न हमारा कुछ बिगड़ेगा।"

अब तक गंगा टुकुर-टुकर शारदा की ओर देख रही थी। उसके होश लौट आये थे। एक झटके में शारदा ने अपनी बाँह छुड़ाकर फिर गंगा से लिपट कर फुट-फुट कर रोने लगी। झपट कर सिपाहियों ने उसे पकड़ा। तीन चार लोगों ने शारदा को पकड़ा और उसकी जीभ खींच कर काट ही डाली। शारदा लहूलुहान हो गयी। कटी हुई जीभ को सिपाहियों ने चीफ गेस्ट के हाथों पर रख दिया। चीफ गेस्ट खुशी से नाचने लगे। इससे बढिया सजा क्या दिया जा सकता है। अब ले जाओ इसे अंधेरे में छोड़ दो। जहाँ जाना हो यह जाये, जो कहना हो कहे। अब हम इसकी शक्ति देखते हैं। सिपाहियों ने उसे अंधेरे में ले जाकर छोड़ दिया। इस बार उन्होंने उसे जीप में बैठा कर पसाह तक लाकर छोड़ा। न उधर रहेगी न फिर आयेगी। पागल लड़की, माथा खराब कर देगी। अब तक शारदा विल्कुल पागल हो चुकी थी। अब वह अपने संतुलन में नहीं थी। कटी हुई जीभ के साथ शारदा उस क्षेत्र में घूमने लगी, अंधेरे में जहां लपलपाती हुई जीभ वाली गढ़ी माई का मंदिर है। मेला लगा हुआ है, लोग आ रहे हैं, जा रहे है। शारदा को अब यह भी पता नहीं है कि यही पर उसका गाँव है, यही पर वह पसाह है, यही पर वह झील है जिसमें कभी वह गंगा के साथ सरस्वती बनती थी। रात के अंधेरे में कभी वह रोती, कभी वह हँसती, कभी नाचने लगती, कभी गालियाँ बकने लगती। कभी खेतों से ढेला उठाकर अंधेरे में फेंकने लगी। धीरे-धीरे वह उसी मंदिर की ओर बढ़ने लगी। सिपाही उसे छोड़ कर, जीप वापस लेकर चलते बने। अब अंधेरे में शारदा भटक रही है।

धीरे-धीरे वह उस मंदिर की ओर बढ़ती जाती, अपनी कटी हुई जीभ के आक्रोश पर छटपटाती जाती। पागल शरीर की तकलीफ भी अभी कुछ याद बाकी छोड़ गयी थी। इसी तकलीफ को भूल जाने के लिए तो आदमी पागल हो जाता है ताकि वह अपने अतीत को इस तरह भूल जाय कि उसकी तकलीफ उसके शरीर पर काम न कर सके। पर शारदा अभी तुरंत पागल हुई थी और कभी कभी कुछ याद आ जाती थी (हाँ हाँ हाँ हाहाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ) हाहा हाँ हाँ हाँ............

अंधेरे को चिरती हुई यह हंसी, चारों तरफ गूंज गयी। ऐसी हंसी किसी मानवी की नहीं हो सकती। हँ, अब देखेंगे हमारी शक्ति ! कहते थे हमारी शक्ति को देख लेंगे। दिखाउंगी अपनी शक्ति, तहस नहस हो जायेगा सब कुछ मिट जायेगा नामो निशान। पसाह को पार करके जैसे ही वह उस पार गया बालू के

ढेर पर कोई महाशक्ति पर नजर पड़ी। अरे काली मां तुम यहां कैसे ? तुम तो मंदिर में रहती हो। यहां पर चली आयी, कब से चली आयी ? मंदिर छोड़ कर, क्यों वहां लोग तंग करते हैं ? बहुत लोग पैरों पर पड़ते हैं। पैरों पर पड़ते पड़ते तुम्हारा पैर दुख जाता होगा ? मां यहां क्या भीख मांगने आयी हो ? हो, हो भीख मांगने आयी हो। यह देखो इतने पैसे, वाह। काली माता तुम तो अब धनी हो जाओगी। पैसे का नाम सुनते ही काली माता बने बहरूपियें ने आँखें खोलकर देखा। मैं तो बहुरूपिया हूँ क्या यह इतना भी नहीं जानती ? कोई पागल है क्या ?

तभी खिसें में से एक टनाटन रूपया निकाल कर शारदा ने उसकी ओर फेंका। रूपया देखकर बहुरूपियो ने तुरंत आँखे बंद कर ली। नहीं यह तो रूपया देती है, पागल नहीं है। उसके आँखें बंद करते ही शारदा बहुरुपियों के बगल में पड़े रंग को उठाया, और उसके हाथ में पड़े भाले और खड़क को छीन लिया, उसका नकली जीभ नोच लिया और नौ दो ग्यारह हो गयी।

हाँ, हाँ हाँ अभी बहुरुपिया समझने और कहने में ही लगा रहा कि शारदा माता पार ! वह थोड़ी देर उसके पीछे पीछे दौड़ा पर फिर पैसे की लोभ में मुड़ गया। कौन है यह पागल औरत ? पागल ही है, नहीं तो यह भला हमारा रूप विगाड कर क्या करेगी ? हम तो यहां पैसा रखे थे, पैसा छीनना चाहिए तो भला कोई बात होती। पागल ही है। छोड़ो हम फिर कल नकली जीभ लगा लेंगे। हमारे पास बहुत है। आज की कमाई इतनी ही। हमारी रात की ड्यूटी का टाइम भी खत्म हो गया। अब दिन में तो मेरे भाई की ड्यूटी पड़ेगी।

उधर शारदा सब कुछ लिए दौड़ी-दौड़ी हुई एक खेत में चली गयी। जब उसने देखा कि अब उसका पीछा कोई नहीं कर रहा तो वह उस खेत में बैठ गयी। रंगों को निकाल कर उसने अपने सारे शरीर में पोत लिया। देखते ही देखते शारदा के संगमरमर जैसा शरीर, काला-कलूटा हो गया। चेहरा भयावह, स्याह, काला, उस पर दो चमकती आँखे। श्रृंगार रस जैसे भयानक रस में परिवर्तित हो गया हो। फिर उसने बहुरुपियों से छीनी हुई जीभ को अपनी कटी हुई जीभ से जोड़ कर बाध लिया। कटी हुई जीभ से जुड़ कर वह जीभ बाहर तक लपलपाने लगी। फिर उसने अपने हाथ में भाला लिया और धीरे धीरे उस गोल घेरे की ओर जाने लगी। लोग देखते तो कहते कि कोई बहुरूपिया है। अधिकांश लोग अब थक कर चूर गये थे। केवल मंदिर के पुजारी बैठे हुए थे। शारदा चुप-चाप गोल घेरे के ऊपर

चढ़ कर मंदिर के पीछे बैठ गयी । एक बार पुजारी मंदिर से बाहर निकला और उसके बाहर निकलते ही सर से शारदा मंदिर में प्रवेश कर गयी । जल्दी से उसने अपनी साड़ी खोल कर गढ़ी माई की मूर्ति को ढक दिया । नगी शारदा केवल एक विस्टी और उरोज बंधन बाँध कर गढ़ी माई की मूर्ति के आगे खड़ी हो गयी । एक हाथ में भाला, किसी असुर को मारने की मुद्रा में लेकर अपनी लपलपाती हुई जीभ के साथ शारदा महाकाली बन गयी थी ।

थोड़े देर में पुजारी लौट कर आया । वह लघुशंका करने गया था । वह देखते ही भय से काँप गया । फिर श्रद्धा से माँ के चरणों में सिर टेक दिया । उसकी आँखों से झर-झर आँसू बहने लगे । धन्य भाग हमारा माँ, तूने साक्षात दर्शन दिया । मेर ी आँखें खुल गयी माँ। मेरा जन्मों-जन्मों का बंधन छूट गया । माँ मैं कैसे स्तुति करूँ तेरी ?

ॐ नमो भगवती सर्व रक्षकाय ह्रीं ॐ मा रक्ष रक्ष सर्व सौभाग्य भाजनं माँ कुरु कुरु स्वाहा ।

क्या माँ, तूने यह रूप सिर्फ मुझे ही दिखाया या और लोगों पर भी तेरी कृपा होगी ? तेरा क्या हुक्म है माँ ? क्या मैं और लोगों को भी खबर करूँ ? एक हाथ को आशीर्वाद की मुद्रा में करती हुई माँ ने पुजारी को इशारा दिया । पुजारी खुशी से नाचने लगा ।

माँ भगवती साक्षात प्रकट हुई हैं । दौड़ो लोगों, जन्मों जन्मों के बंधन काट लो। पता नहीं कब अन्तर्धान हो जायेगी । मेले में यह खबर बिजली की तरह फैल गयी कि साक्षात गढ़ी माई प्रकट हुई हैं । सभी लोग दौड़, दौड़ कर आने लगे और इस आश्चर्य को देखने लगे । कोई शंका उपशंका भी करने लगे । वे मेले में आये थे, अपने माल और मिठाइयाँ बेचने, गढ़ी माई में उनकी खास दिलचस्पी नहीं थी । कौन कहता है साक्षात प्रकट हुई हैं। पत्थर को रंग दिया गया है । उधर शारदा ऐसी अचल और निश्चल खड़ी थी जैसे कोई पत्थर का बुत खड़ा हो । बहुत से लोग चरणों में गिरते और तृप्त होकर बाहर निकलते । हाड़, मांस की गर्मी है, साफ है भाई, झूठ कैसे हो सकता है ? सुबह होते होते इलाके भर में यह खबर फैल गयी कि गढ़ी माता साक्षात प्रकट हुई है और लोगों को दर्शन दे रही हैं । अन्तर्धान नहीं होंगी । ५ दिनों तक जिनको दर्शन करना हो कर ले। सभी जगह से झुण्ड के झुण्ड लोग दर्शन कर ने चले आ रहे हैं ।

पर पतरहट्टी गाँव में इस खबर के साथ ही यह खबर भी फैल गयी कि रात में मेले मे से गंगा न जाने कहाँ गायब हो गयी । कुछ पुलिस वाले उसके पीछे-पीछे आ रहे थे । हो सकता है कि वही उसे ले गये हों। आज कल ये पुलिस वाले शिकार खोजते हैं । चलो गढ़ी माता अगर साक्षात प्रकट हुई हैं तो हम पहले उनसे पूछते जाय । फिर इस वघुवन वाले को हम नहीं छोड़ेंगे । अब चाहे जान रहे या जाय ।

झुण्ड के झुण्ड लोग आते गये और दर्शन कर धन्य होकर जाते गये ।

“हजुर, जहांपनाह, सुनते हैं कि गढ़ी माता साक्षात प्रकट हुई है, एक बार बहाँ सवारी.........”

“अरे, हाँ हाँ हमने भी सुना है। क्या विचित्र बात है ?”

हम तो वैसे भी एक बार गढ़ी माता का मेला देखने जाने वाले ही थे । पाँच दिन लगता है, किसी दिन चले जायेंगे। क्या फर्क पड़ता है ? अभी हम इस गंगा की बच्ची में डूबे हुए थे । पर यह खबर सुनकर हम आज ही जायेंगे । गुरुंग, तुम मेरी सवारी का बन्दोवस्त आज ही करो ।”

“जी हजुर, अच्छा ।” अंचलाधीश गुरुंग आदेश पा कर हरकत में आ गये। उन्होंने कलैया, डी.एस.पी. को खबर कर बुला लिया और मेजर साहब को कहकर गण संग्राम की टुकडयिों को भेजवा दिया ।

“माँ, मेरी गंगा कहाँ चली गयी है ? कल तुम्हारे इस मेले में खो गयी । कहाँ चली गयी वह ? हमें उसका पता बताओ । क्या गंगा को कल जो पुलिस पीछा कर रही थी, वही ले गयी ?”

कल रात गंगा के साथ आयी एक सहेली ने माँ के चरणों में गिर कर यह सवाल किया । फिर वह उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी । माँ ने धीरे से अपना हाथ बढ़ाकर उसके सर को छुआ । सहेली गर्दन ऊपर उठाकर देखने लगी । मां ने स्वीकार की मुद्रा में अपना सर हिला दिया ।

सिंहासन भैया, हाँ भैया, माँ कह रही है, गंगा को पुलिस वाले ही ले गये । उसके साथ गांव के और लोगों ने भी माँ के स्वीकार भाव को पढा । अब सभी लोग लौट कर गाँव में गये और जगह जगह इकठा होने लगे । अब वह किसी भी शक्ति से नहीं मानेंगे । महाशक्ति ने प्रकट होकर क्या मानने के लिए कहा है ? माँ का आशीर्वाद हमारे साथ है । चलो सभी लोग। हम पुलिस पर धावा बोलेंगे ? हम वघुवन पर धावा बोलेंगे । इन पहाड़ियों को अब हम नहीं छोड़ेंगे । चलो उठो । पहले मेला में चलकर हम वही पर माइक से इस बलात्कार का भण्डाफोर करेंगे । फिर देखना क्या होता है ? सभी लोग

अपने-अपने घरों में हथियार ठीक करने चले गये । ठीक १२ बजे दिन से होते हुए वन पर आक्रमण करेंगे और फिर वहाँ से कार ठीक उसी समय चीफ गेस्ट की सवारी गढ़ी माई के मेले में हुई । उधर से हथियारों से लैस होकर पत्तरहट्टी गाँव से लोग पहुंचे। मिलिटरी के जवानों को देखकर वे एक गोल घेरे में होकर भागने लगे । स्थानीय लोग इसी तहर झरकी बजाते हैं, कहकर मिलटरी वापस लौट गयी ।

गोल घेरे पर से सभी लोगों को हटा दिया गया । सिर्फ पुजारी उस टीले पर बैठा था । चीफ गेस्ट धीरे-धीरे ऊपर चढ़े, वही से देखा, महाशक्ति, जलती हुई अंगारों की तरह आंखों से देख रही है । उनको तब अपनी भूल का एहसास हुआ लौट कर सीडी के नीचे जुता उतार कर वे फिर चढ़े । अरे, यह तो साक्षात गढ़ी माता है । भीतर तो कोई कंपन नहीं हुआ, कोई रोमांच नहीं हुआ । ऐसे लोगों को रोमांच होता भी नहीं है । पर पाप अधिक किये थे। कान पकड़ कर खड़े हो गये । फिर क्षमा ! क्षमा ! क्षमा ! कह कर उनके चरणों में गिर पड़े । क्या पता, गढ़ी माँ क्या कर दे । जब वे चरणों में गिरे थे, ठीक उसी समय शारदा ने भाला उठाया घपच ! घपच !! ऽऽऽऽ.........

चीफ गेस्ट साहब मुर्गी की तरह छटपटाने लगे । पुजारी देखकर डर गया । मिलिटरी भी दहशत से कांप गयी । उनके हाथों से बंदूक छुट गया । फिर शारदा ने इतने बार किये कि चीफ गेस्ट की गर्दन कटकर अलग हो गयी । पुजारी दौड़ते बाहर चिल्लाने लगा । माँ का प्रकोप, लोगों माँ का प्रकोप, एक आदमी पर प्रकोप, साक्षात महाशक्ति ने भस्मासुर को मार दिया । सभी लोग इस दृश्य को देखने के लिए उमड़ पड़े। सिपाही लोगों को कुछ समझ में नहीं आ रहा था । वैसे भी उनके साथ अधिक सिपाही इस लिए नहीं आ पाये थे ताकि चीफ गेस्ट को लोग पहचान नहीं ले । जब तक सिपाही आये तबतक लोगों की भीड़ से देवल खचाखच भर गया था। एक बार शारदा ने बाल पकड़ कर उसकी गर्दन को अपने हाथ से उठा लिया । साक्षात महाशक्ति ! फिर ठहाका लगा कर सिर को दूर फेंक दिया । सिर दू...र औंधे मुंह गिर कर धूल-धूसरित हो गया ।

तभी लाठी, बल्लम और अन्य हथियारों को लेकर पतरहटी के लोगों ने माइक से कहना शुरू किया-

“मेरे गाँव की गंगा को इन पुलिस वालों ने कल रात उठा लिया ।” मारो मारो, घेरो, बचने न पाये ।

पूरे मेले में भगदड़ मच गयी। मारो मारो ।

पकड़ो, पकड़ो, वह रहा ।

मिलीटरी का बंदूक, पुलिस की लाठी, धरी की धरी रह गयी। लोगों की भीड़ से ही वो भी पिचड़ी हो गयी । इधर चीफ गेस्ट साहब का धूल धूसरित सिर पिचड़ी ही नहीं हड्डी हड्डी चूरण हो गया ।

उसी समय शारदा निकली और भीड़ में खो गयी । जाते समय वह अपनी साड़ी भी लेती गयी । किसी ने नहीं देखा कि वह कहाँ गयी ?

माँ अन्तर्धान हो गयी, इसी भस्मासुर को मारने के लिए ही मां प्रकट हुई थी । वह देखो फिर वही पहले की मूर्ति दिखलाई पड़ रही है । वापस आकर पुजारी ने देखा वही गढ़ी माई की मूर्ति है ।

पसाह की झील में जाकर उसने भाले को फेंक दिया और अपने शरीर की कालिख को धोने लगी । इसी तरह महावली हनुमान ने लंका दहन के बाद समुद्र में अपनी पूंछ बुझाई होगी । अपने शरीर को धोकर वह फिर लौट कर उसी मेले की भीड़ में खो गयी ।

चारों ओर हाहाकार मची हुई थी । तराई की सारी जनता यहाँ उमडी हुई थी । सभी लोगों के बीच, तराई की सारी जनता के बीच यह खबर बिजली की तरह फैल गयी कि गंगा का अपहरण करने वाले बन्दूकधारी पहाड़ी को गढ़ी माता ने भस्मासुर की तरह सिर काट लिया और टीक पकड़ कर उसके खून को अपनी लपलपाती जीभ से चाट रही थी । एक पैर उसकी छाती पर रख कर उसके बाद वह अन्तर्धान हो गयी । यही सजा है इनकी । अब गंगा को ढूंढ रहे हैं। पता नहीं बेचारी को कहाँ छुपा दिया है । ओ कहाँ छुपायेंगे किसी पुलिस के पास होगी । डी.एस.पी साहब के यहां रखे होंगे लोग ।

चलो, धावा बोल दो, एक एक सिपाही का हम सिर काट लेंगे। गढ़ी माता की जय ! महाशक्ति माता की जय ! शारदा माता की जय !! गंगा माता की जय !!

हर हर बम बम, हर हर बम बम, हर हर बम बम

लाखों लोगों के अंदर हर-हर बम बम और महाशक्ति के विकराल रूप समा गये। वे सभी अब एक साथ कलैया की तरफ उमड़ पड़े। जहाँ भी देखते, पहाड़ियों को चुन- चुन कर मारते। त्राहि-याहि मच गयी। उस मेले में ही जितने पहाड़ी दर्शनार्थी आये थे सबको चुन-चुन कर मार दिया गया। जिधर वह जनता जाती लोगों के बीच दहशत फैल जाती । जैसे वानर सेना ने एक साथ दक्षिण गेट से लंका पर आक्रमण बोल दिया है । कोई भी अपने से अलग नाक नक्स के लोग मिलते, सबको मौत के घाट उतार दिया

जाता। जितनी लिपस्टिक लगायी फैशनेबल औरत मिलती सबकी गर्दन उड़ा दी जाती। इस प्रक्रिया में कितने मधेशी भी मार दिये गये, पता नहीं। यह खबर पाते ही कलैया के डी.एस.पी. साहब ने वीरगंज फोन किया और अपने सभी पुलिस जवानों के साथ नौ-दो ग्यारह हो गये। थाना खाली था। बिना लड़े हथियार डाल गए शाल, पर कहा जायेंगे ? चलो खोजी। भागते समय जितनी भी पुलिस मिली सब साफ। कलैया साथ में सबको साफ करने के बाद लोग वीरगंज की ओर चले। खबर पाते ही वीरगंज के. अचलाधीश ने काठमाण्डू खबर किया और वे भी नौ दो ग्यार ह हो गये। मेले के सभी लोग बगावत कर दिये, बाप रे बाप उस मेले में तो ५० लाख लोग होंगे। बाप लोग भी आयेंगे तो हमारी तो क्या पूरा वीरगंज शहर नालंदा का खण्डहर बन जायेगा। चाना खाली हो गया। पहाड़ी लोग रक्सौल का रास्ता पकड़ने लगे।

उसी मेले में एक युवती अपने बच्चे को कधे पर लिए बड़ी बेचैनी से अपने को बचाती हुई किसी तरह अपने गन्तव्य की ओर लौट रही थी। अपनी अपूर्व सुन्दर ता के कारण वह साक्षात रम्भा की तरह लग रही थी। इतनी सुन्दर औरत कोई मधेशी नहीं हो सकती, पकड़ो इसे होठों में लिपस्टिक भी लगाई हुई है। "ठहरो कहाँ भाग रही हो ?"

"क्यों मैं भाग कहां रही हूँ ? मैं तो आप लोगों की बहन हूं। देखिये इस बच्चे को, क्या कहीं से यह किसी दूसरी तरह से दिखलाई पड़ता है ? बिल्कुल आपके जैसा है। मैं एक क्रिश्चियन औरत हूँ फिर भी गढ़ी माई का दर्शन करने आयी थी। बच्चे की माँ ने इसे भेजा है, मनौती मांगी थी।" कहती हुई युवती ने दहशत से अब उनके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी। उसने एक ओर मुंह करके जल्दी से अपने होठों के लिपस्टिक को पोंछ लिया।

"क्या तुम सही कह रही हो ? कहाँ पर तुम्हारा घर है ?"

"जी विश्वास नहीं तो देख लीजिए यह !" कहकर उसने गले से क्रुस को निकाला और दिखला दिया। बच्चे की गले में भी क्रूस लटक रहा था। "मेरा घर इंडिया में पड़ता है।"

"हाँ इंडिया में क्रिश्चियन लोग रहते हैं। अंग्रेजों के समय से वहाँ लोग क्रिश्चियन बनने लगे थे। क्रिश्चियन होकर भी हमारी गढ़ी माता का दर्शन करने आयी हो बहन ? अहा, हँ ! धन्य है। जाओ बहन जाओ हमसे गलती हुई एक ये पहाड़ी लोग हैं, हिन्दू हैं, हमारी गंगा को उठा ले गये। गढ़ी माता ने उसका बदला लिया है।"

"इतना ही नहीं भाई, इसकी माँ ने गढ़ी माई का प्रसाद भी मंगाया है। वह चल नहीं सकती, इसलिए उसके लिए मैं ही प्रसाद चढ़ाकर ले जा रही हूं। लीजिए आप लोग भी खाइए।" कहकर उसने सबके लिए प्रसाद बढ़ा दिया।

"धन्य है, बहन अब तुम अकेली नहीं जाओगी। चारों ओर लोग तुम्हारे जैसे लोगों को खोज कर रहे हैं। हमने तो पूछा तो पता चला, पर कुछ लोग पूछते भी नहीं। अब तुम हमारे ही साथ चलोगी। हम तुम्हारी रक्षा करके तुम्हारे यहाँ पहुँचा देंगे।" सभी प्रसाद लेते हुए उस युवती से अपार स्नेह दर्शाने लगे। धन्य है, कितना बड़ा दिल है, क्रिश्चियन होकर भी गढ़ी माई के प्रति इतना विश्वास ! गढ़ी माई का दरवाजा तो हर किसी के लिए खुला है।

"अरे इस युवती को क्यों............? ओ यह तो डंकन अस्पताल में काम कर ने वाली एक नर्स है। मैं जब खून डकरते हुए वहां पर भी भर्ती हुआ था तो वहाँ इस बहन ने कितनी हमारी सेवा की थी ? छोड़ दो इसे यह पहाड़िया नहीं है।" एक युवक ने उस टोली में आते हुए कहा।

"अरे हम कहाँ कुछ कर रहे हैं ? हम भी तो इसे पहुंचा देना चाहते हैं। उसने सबकुछ बतला दिया है।"

"क्या नाम है, बहन तुम्हारी ?" कहते हुए एक आदमी ने उसके बच्चे को अपनी गोद में लिया। अब वे सभी उसकी रक्षा करते हुए चले जा रहे हैं। सभी लोग तो अपना काम कर ही रहे हैं, अब हम लोग थोडा रक्षा का काम भी कर दें। उन युवकों के बीच में रचना आँसू बहाती हुई जा रही थी। पता नहीं क्यों उसके आँसू थमते ही नहीं थे। संसार में सब तरह के लोग होते हैं। कौन कहता है कि ये लोग बहसी है ? कौन कहता है कि ये लोग जल्लाद बन गये है ? इनकी गंगा को उठा ले जायेंगे तो ये क्या चुप रहेंगे ?

"बहन तुम रो रही हो ? क्यों हमसे कोई गलती हुई ?"

"नहीं, यू ही आंखें छलक आयी। आपके गोद में इस लड़के को देख कर मुझे इसकी पिता की याद आ गयी। पता नहीं उसका क्या हाल होगा ?"

"कौन क्यों ? कौन है इसके पिता ? मालूम होता है, तुम्हारी दुखती रग को हमने छू दिया है।"

"पता नहीं, कहां है ? कहीं पर खो गये हैं।" जानबूझ कर रचना ने कुछ नहीं बताया। पता नहीं बताने पर कहीं कोई राज खुल जाय और यही लोग उसके खून

के प्यासे न बन जाय। थोड़ी देर के इस भातृत्व का वह कतल करना नहीं चाहती थी। आँखें पोछते हुए वह आगे बढ़ने लगी।

X X X

"हजुर सारे तराई में बलवा हो गया है। गढ़ी माई साक्षात प्रकट होकर छोटे सरकार को भस्मासुर की तरह मार दिया है। कहते हैं लोग कि अब किसी की खैर नहीं। लोग कहते हैं कि गढ़ी माई का कोप है क्या कम है आग सिर्फ गढ़ी माई के मेला में ही नहीं बल्कि सभी जगहों पर फैल गयी है। हर जिला हर अंचल से सिर्फ यही खबर आ रही है। गंगा को उठा कर ले गये हैं, तो गंगा से साक्षात बलात्कार किया, क्या ठट्टा है ? अब कोई नहीं बचेगा । बारा जिला से तिरपट बाबू और देवधारी बाबू भी प्राण बचाकर भागे हैं। कहते हैं भीतर की मिटिंग में हमें भी बुलाया जाय। वे विस्तृत जानकारी लेकर आये हैं।"

वैसे तो सारी जगहों पर फोन से खबर हो गयी थी और एक विचित्र पोशाक पहने एक व्यक्ति काठमाण्डू के एक आलीशान चहारदिवारी के बीच महल में चहल कदमी कर रहा था। उसी फोन और उसी तार से सारे तराईवासियों को भी इस बात की खबर हो गयी थी और वे जहाँ थे वहीं से इस जंग में कूद पड़े थे। ऐसा भी कहीं होता है, गंगा के साथ बलात्कार ? पूरन की अर्द्धांगिनी के साथ ? बाप रे बाप जो कुछ भी हो जाय, अब हम नहीं मानेंगे।

सारी तराई जल रही थी। सभी पहाड़ी लोग उत्तर की ओर भाग रहे थे। "ठीक है, उन्हें भेज दो और तुरंत इमरजेन्सी सभा बुलाओ।"

तुरंत काठमाण्डू में इमरजेन्सी सभा का आयोजन हो गया। क्या किया जाय, क्या नहीं किया जाय ? सभी किंकर्तव्यविमूढ थे।

"क्यों सभी किंकर्तव्यविमुढ है ? अभी हमारे पास इतनी शक्ति है कि सारे देश को शताब्दियों तक कन्ट्रोल करके रखेंगे। साले एक-एक घर पर एक-एक मिलटरी हम बैठा सकते हैं।"

"पर यह अवसर मिलटरी के हाथों में देने का नहीं है। चतुराई से कोई दूसरा उपाय सोचो।"

"हा, हजूर सरकार, ठीक कह रहे हैं, हमें धीरज से काम करना चाहिए।"

तिरपट बाबू और देवधारी बाबू ने दोनों झिलमिलाते पोशाक वालों से कहा।

"क्या उचित समय है, क्या नहीं है। देखो हम कैसे उचित समय बनाते हैं। झिलमिलाते हुए वस्त्रोयालों में से एक दूसरे को हिकारत से देखता हुआ चला गया।

फिर वही हुआ जो मिलीटरी की बात करते थे। इस मिटिंग से पहले ही इस सैनिक आदेश को जारी कर दिया गया था। इस आदेश के जारी होते ही देश भर के सैनिकों की हरकत शुरू हो गयी। ट्रक के ट्रक सैनिकों ने सारी तराई को घेर लिया। एक-एक घर पर कब्जा हो गया। अब पासा उलट गया था। मिलीटरी की संख्या भी कम नहीं थी। फिर बम-तोप क्या कम होता है ? सभी लोग अपने-अपने घरो में बंद हो गये। आनन-फानन में वीरगंज के गण संग्राम के जवानों ने वीर गंज को चारों ओर से घेर लिया। एक-एक घर पर तो बाद में जायेंगे पहले ये लोग जो हमें लूटने आये हैं, उन्हें भून दिया जाय।

धड़ाम ! धड़ाम !! धड़ाम !!

बाप रे बाप। भीड़ में दहशत फैल गयी। जनशक्ति की शक्ति तो बोट में देखा जाता है, अब यहाँ तो रणभूमि बन गया था। एक ओर निहथी जनता और दूसरी तरफ सेनाओं का अत्याचार ! अब सभी लोग तितर-बितर होकर अपने- अपने प्राण बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। सभी लोग भागने लगे। सभी लोग बोर्डर पार कर लेना चाहते थे। गांव-गांव में पुलिस, सैनिक, अब भला कौन रहेगा। तांता लग गया बोर्डर की तरफ।

वीरगंज में पहुंचते ही रचना के साथ आ रहे नवयुवकों ने रचना को उसका बच्चा थमाया और अलग-अलग भागने लगे।

भागो, प्राण बचाओ !

अरे नहीं, हम नहीं भागेंगे, हम मर जायेंगे, पर नहीं भागेंगे। जितने लोग उतनी तरह की बातें। जो भागना चाहता था वह भाग रहा था। जो नहीं भागना चाहता था, वह खुशी से सीने पर गोली खा रहा था। चारों ओर लाशों की ढेर लगती जा रही थी।

"सरकार उनलोगों का क्या किया जाय ? वे लोग तो जेल में ही उकुस मुकुस कर रहे हैं। किसी के द्वारा इस बात की खबर हो गयी है उन्हें।"

"किसकी बात करता है तुम ?"

"सरकार, वही पूरन और पुनर्नवा की।"

“ओ ले जाओ उनको भी । देश से बाहर । समझे ? किसी बोर्डर पर । अच्छा होगा उसके ही जिले के किसी बोर्डर पर देखेंगे लोग कि देखों राजनीति करने का क्या नतीजा होता है ? हम उन्हें अपने देश की मिट्टी में मरने भी देना नहीं चाहते ?”

ऑडर पाकर मिलीटरी की जीप जेल की ओर चली और वहाँ से पुनर्नवा और को लेकर चल पड़ी । ऊपर-नीचे घुमावदार सड़कों पर मिलीटरी की जीप पूरन पूरन और पुनर्नवा को लेकर भाग रही थी ।

इधर भाग रही थी, रचना अपने कंधे पर यिशु को लेकर भागते, अपने को बचाते वह सरीसवा नदी के किनारे पहुंच गयी । उसने जान-बूझ कर हरैया का रास्ता चुना था । गांव पड़ने की वजह से कहीं वह बच जाय ।

ठाँय !

एक तरफ से गोली सरसराती हुई आयी और रचना के सीने में घुस गयी । र चना अभी नदी में उतरी ही थी कि यह गोली उसे लगी थी । रचना कराह कर नदी के पानी में गिर गयी । घुटने भर पानी लिए बहती हुई उस नदी का पानी लाल हो गया । गोद में पड़ा बच्चा भय से दुनिया की यह लीला देख रहा था । पानी में गिरी हुई रचना के सीने से चिपटकर वह रोने लगा ।

रचना की आँखों के आगे जो अंधेरा छा गया था उसी अंधेरे में एक तस्वीर उभरी और उसे दिखलाई पड़ा जैसे सामने क्रूस पर लटका यिशु रो रहा है ।

ऐ, क्यों रो रहे हो, प्रभु मेरे मैं तुझे रोने नहीं दूंगी । उसी के साथ उसकी आंखों के आगे अधिरा छा गया । वह झटके से उठी और गोद में चिपके एवं रो रहे बच्चे को और कस कर गोद में भींच लिया और अपनी सारी शक्ति लगाकर नदी को पार कर गयी । नदी को पार करते ही वह शांति क्षेत्र पार कर गयी थी । शांति क्षेत्र पीछे छूट गया था ।

ठाँय !

एक दूसरी गोली सरसराती हुई आयी और बच्चे को लग गयी । वही ज्यों ही रास्ते पर मडी थी गोली के सामने बच्चा आ गया था । बच्चा छटपटा कर बेहोश हो गया । रचना फिर गिर पड़ी और उस यिशु से लिपटकर रोने लगी ।

नहीं, मेरे लाल नहीं, तुम हमें.........हमें छोड कर नहीं जा सकते । देख हमको, तुम्हारी माँ अभी जिंदा है । हम फिर से तुझे अपनी कोख में छुपाकर रखेंगे । जब तक यह दुनियाँ बहसी बनी रहेगी, तबतक तू हमारे गर्भ में पलते रहना ! पर तू हमें छोड्कर न जाना ।”

यिशु वेहोश था । रचना पागलों की तरह चूम रही है । एक बार उसे डकन याद आया। डंकन जहां लोगों का इलाज होता है । प्रभु यिशु के लिए ही बना है । रचना फिर उठी और बच्चे को दबाये दौड़ने लगी । किसी भी तरह वह डंकन में पहुँच जाना चाहती थी । गेट पर पहुंचते पहुंचते बच्चे ने दम तोड़ दिया । रचना दौड़ती हुई डकन के चर्च में प्रवेश कर गयी ।

चर्च ! एक तरफ यिशु क्रूस पर लटक रहे थे। दूसरी तरफ एक बच्चे को अपनी गोद में लेकर माता मरियम खड़ी है ।

"O me lord I testify at this moment,
To my powerlessness and to thy might !
to my poverty and to thy wealth,
There is none but thee, the help in peril
And self–subsistying."

प्रभु यिशु को यह प्रार्थना करके वह गोद में लिए बच्चे के साथ, माता मरियम की ओर मुखातिब हुई । उधर माता मरियम अपनी गोद में यिशु को ले रखी थी, इधर रचना अपनी गोद में यिशु को ले रखी थी । उस ओर की मरियम जड़ हो गयी थी, इस ओर की मरियम अभी जड़ नहीं हुई थी । उसके शरीर से जींदा रक्त बह रहा था, वह लहू-लुहान हो गयी थी। उसके गोद का बच्चा जड़ हो चुका था । अभी उसका जड़ होना बाकी था । वह जहाँ खड़ी थी, उसी के पास एक खम्भा भी खड़ा था । रचना अपनी पीठ को धीरे से उस खम्भे पर टिका दिया । शरीर के खम्भे पर टिकते ही, आँखें पथरा कर जड़ हो गयी । थोड़ी देर पहले बह गये आँसू गालों तक गिरे पड़े थे । उधर माता मरियम की आँखों में भी आँसू बहे थे ।

चर्च में दौड़ती हुई जा रही, लहू-लुहान रचना को डंकन के कर्मचारियों ने देखा । एक चपरासी ने दौड़कर इसकी खबर सबको कर दी । सभी लोग दौड़ कर चर्च की ओर जाने लगे । .... किल ने जब यह सुना तो जैसे काठ मार गया । उसे इस बात का विश्वास ही नहीं हुआ कि गढ़ी माई के दर्शन के लिए गयी रचना के साथ यह होगा । उसके बच्चे को क्या हुआ ? गोली सिर्फ रचना को लगी है या बच्चे को भी ? बच्चे की कल्पना के साथ ही वह उसे देखने के लिए छटपटाने लगी । कैसे देखे वह अपने लाल को ? लकबे से ग्रसित पैर से वह कैसे जाय चर्च तक ? मेरा बच्चा, मेरा यिशु ।” छटपटाहट तेज होती जा रही थी, तेज होती जा रही थी । और तेज और तेज, और तेज............ और एक ही बार नहीं ऽऽऽ..............

की आवाजों के साथ ही वह उठ बैठी और फिर खड़ी भी हो गयी । आज तक के लकवा ग्रस्त पैरों का रोग, इस दुर्घटना से समाप्त हो गया था । वह तेजी से चर्च की ओर दौड़ी । तब तक सभी लोग चर्च में पहुंच गये थे । वहां पहुँच कर उसने देखा कि रचना के साथ ही यिशु की आंखें भी पथरा गयी है । इसे देखते ही उसका मुह खुला का खुला रह गया। वह जहाँ खड़ी थी, वहीं जम गयी। आंखें पथरा गयी । अपने खुले मुख एवं पथराई आँखों से उसका रूप भयानक हो गया था जैसे उस मुख में वह सारी दुनिया को निगल जाना चाहती हो । उस रूप को देखकर चर्च में जमा हुए सभी लोग एक बार भयभीत हो गये। पल भर में किल का निर्जीव शर ीर परकटे पक्षी की तरह औंधे मुँह जमीन पर गिर पड़ा । गिरकर उसके हाथ रचना के दोनों पैर छू रहे थे, जैसे माता मरियम के चरणों में कोई गुनहगार पड़ा हो । भागती हुई किल के पैरों में लगी हुई पोखरा की गोली का निशान अब उसके औंधे शरीर के पैर पर दिखलाई पड़ रहा था ।

चर्च में जमा हुए सभी लोगों, सभी डाक्टरों ने इस घटना को देखा । उनलोगों में सभी देश के प्रतिनिधि थे । अमेरिका, जापान, फ्रांस, जर्मनी सभी जगहों के मिशनों से लोग प्रभु यिशु का संदेश देने, दुनिया में अमन चैन एवं शांति देने के नाम पर वहाँ आये थे । सभी लोगों ने इस शांति को देखा । मरी हुई रचना, किल और यिशु को भी देखा । क्या संसार में शांति हो सकती है ? वे सभी प्रतिनिधि यही सोच र हे थे ।

कुछ देर के बाद रचना, किल और यिशु तीनों की लाशों को ताबूत में बंद कर दिया गया । उस ताबूत में उनके प्रिय चीजों को भी बंद कर दिया गया । रचना के साथ युसुफ और पुननर्वा की तस्वीर, किल के पास पुनर्नवा की तस्वीर और यिशु के पास उसके प्रिय चित्र को रखकर ताबूत बंद कर दिया गया । रचना की गले में क्रुश चमक रहा था । किल के पाँव में घाव का दाग चमक रहा था। यिशु के पास उसका प्रिय चित्र चमक रहा था । सबको एक ही साथ ताबूत में बंद कर दिया गया । अब कुछ भी बाकी नहीं रहा । न कोई चमक, न कोई दाग, सब ताबूत में बद ! सब कुछ शांत !

x x x

जिस समय रचना यिशु को लेकर डंकन के रास्ते पर भाग रही थी, उसी समय एक जीप त्रिभुवन राजपथ पर उसी रास्ते की ओर भाग रही थी । जीप पर बैठे पुलिसवालों को सब कुछ निर्देश दे दिया गया था । उन्हें सब कुछ मालूम था,

पर उनमें बैठे दो कैदियों को कुछ भी पता नहीं था कि वे कहां ले जाये जा रहे है ? जीप तेजी से अपने गन्तव्य की ओर बढ़ रही थी ।

इधर तराई के घर-घर में एक-एक मिलिटरी के जवान तैनात थे । चारो और कर्फ्यू लग चुका था । किसी को घर से निकलने नहीं दिया जा रहा था । किसी को भागने नहीं दिया जा रहा था । सभी लोग चाहते हैं कि वे किसी तरह सरीसवा नदीं के उस पार चले जायें ताकि इस प्राणलेवा दहशत से त्राण मिले । सरीसवा नदी जो हिन्दुस्तान और नेपाल को वीरगंज और रक्सौल को अलग करती है । पर सरकार का हुक्म है । उस पार अगर ये चले आयेंगे तो दूसरी मूसिवत खड़ी हो जायेगी । जब तक हमारी अपनी मुसीबत हल नहीं हो जाती, हम इनकी मुसीबत को हल नहीं होने देंगे। कोई बोर्डर के उस पार नहीं भागने पाये। पर इक्का दुक्का लोग भागने में सफल भी हो रहे थे ।

सैनिकों के परेड के बीच सब कुछ शांत था । कहीं कोई हर-हर खर खर नहीं था ।

एक जीप त्रिभुवन राजपथ पर भाग रही थी । उसी समय दूसरी सभा का फिर आयोजन किया गया। उस सभा में पहली बार राजेन्द्र बाबू को बुलाया गया । इधर जीप भाग रही थी, उधर सभा चल रही थी । चारों तरफ सैनिक थे “तो आप इस काम पर वार्ता करने के लिए तैयार नहीं है ? हम चाहते थे, कि देश में इतना बड़ा बलवा हो गया है । थोड़ा हम झुके, थोड़ा आप झुके तो कोई समझौता हो जाय, कुछ मोल तोल हो जाय । इस समय सभी लोग आपके आदेश का पालन करेंगे ।”

“मोल तोल बाजारों में होता है भाई मोल तोल तिरपट बाबू करते हैं, यहाँ तिर पट बाबू न यह कोई बाजार है, न हमारी मांगे किसी बाजार में बिकने वाला माल है कि मैं इसका दाम कुछ कम कर दूं । यह हमारे जीवन और हमारे अस्तित्व का सबाल है । अगर हमारी माँगे उचित नहीं हैं, अगर हमारा जीवन उचित नहीं है, अगर हमारा अस्तित्व उचित नहीं है तो मैं झुकने की तो क्या अपना पूरा आंदोलन स्थगित करके, आपके आगे समर्पण कर दूंगा । अगर नहीं, यह ठीक है, यह उचित है, अगर यह शाश्वत है, अगर यह अनमोल है, तो फिर इसका मोल-तोल नहीं हो सकता है । फिर झुकने और झुकाने का इसमें कोई प्रश्न नहीं । जहाँ तक हमारी बात अब मानने और नहीं मानने का सवाल है तो आपलोगों ने जनता को इस तरह भड़का कर सारी स्थिति को हम सभी के हाथों से निकल जाने

दिया है । आपने गंगा के साथ बलात्कार किया । अब वो हमारी तो क्या ब्रह्मा की बात नहीं मानेंगे ।"

"तो क्या आप अपने लोगों को थोड़ा शांत भी नहीं कर सकते ताकि हम इसके लिए कोई जमीन तैयार करें ?"

"शांत और शांति क्या इसका मतलब कुछ जानते हैं ? आपकी बंदूकों के नीचे तो सभी शांत ही है । मुझे यहां बुलाते हैं, तो पुरन और पुनर्नवा को बंद रखते हैं । उन्हें बुलाते है तो हमें अंदर रखते हैं। क्या इस तरह से कोई वार्ता होती है ? न आप शांत है, न शांति चाहते हैं । इस तरह कोई वार्ता नहीं होती । हम यहाँ से जाना चाहते हैं ।"

इसके बाद राजेन्द्र बाबू को पता नहीं कितने प्रलोभन भी दिये गये । तिरपट बाबू और देवधारी बाबू के द्वारा अलग से मोल तोल करवाया गया । पर राजेन्द्र बाबू टस से मस नहीं हुए । आखिर उन्हें झख मारकर बापस भेज देना पड़ा । एक जीप दर बार से निकलकर बाहर जेल की ओर जा रही थी । राजेन्द्र बाबू को फिर से जेल भेजा जा रहा था ।

एक जीप त्रिभुवन राजपथ पर अपने गन्तव्य की ओर बढ़ रही थी ।

पूरी तराई में आतंक फैल चुका था । किसका आतंक आतंकवादियों का या कि. ....? शाम को जीप वीरगंज में पहुंच गयी । ठीक जिस समय रचना के खून से सरीसवा लाल हो गयी थी उस समय वह जीप वीरगंज के डी.एस.पी. कार्यालय में पहुँची । सब से आवश्यक बातें होने लगी । सभी लोग इस काम के लिए सोचने लगे। कौन सी जगह चुनी जाय । कोई ऐसी जगह चुनी जाय जिससे लोगों को सही बात का पता न चले। सबको यही मालूम हो कि ये लोग जेल से भाग गये हैं । भागने के बाद मोगलान में उनकी यह दुर्दशा हो गयी । हम लोगों पर कोई आरोप नहीं लगेगा । ऊपर से खास तौर से यह निर्देशन है, क्योंकि अगर यह पता चला कि हमने ऐसा किया है तो फिर अन्तर्राष्ट्रीय जगत में हमारी बदनामी होगी । यू.एन.ओ. में फिर हम कोई मुँह दिखलाने के काबिल नहीं रहेंगे । नहीं हमें कोई ऐसी जगह चुननी होगी, हमको कोई उच्च स्तर का उपाय सोचना होगा । सभी लोग उस उपाय को सोचने लगे । कुछ देर के बाद उपाय माथे में आ भी गया । उपाय के मगज में प्रवेश करते ही जीप उन लोगों को लेकर रक्सौल की तरफ चल पड़ी । सरीसवा नदी से कुछ दूर इधर ही चेक पोष्ट के पास जीप रुकी। नहीं वहाँ पर हमारे पास समय अधिक नहीं रहेगा, यही पर पूछ लें ।

"अरे क्या पूछ लें, चलो क्या जरूरत है इसकी ?"

"नहीं, नहीं यह ता पूछना ही होगा । यह तो हमेशा से होता रहा है । कम से कम इतना तो हमारा कर्तव्य हो ही जाता है । फिर बेचारे ने हमारा क्या बिगाड़ा है । माना कि हम हुक्म को मानेंगे, वैसा ही करेंगे, पर एक बार इसका भी मान जानले तो क्या हो जायेगा ? फिर तो कभी ये लोग हम से कुछ नहीं कहेंगे ?

"ठीक है तो पूछो, बड़ा आता है दयावान बनने । इनलोगों ने तो हमारे एवं हमारी कौम के ऊपर कोई दया नहीं दिखाई । बात करो तो देखो कैसी नफरत लिए हुए है ?

"अब क्या नफरत क्या प्यार, सब बराबर होने जा रहा है। इनका नफरत भी इनके पास, इनका प्यार भी इनके पास ।"

"अच्छा बाबा पूछो, बेकार में टाइम न खाओ ।" उस दयावान पुलिस ऑफिसर ने दोनों कैदियों की ओर मुखातिब हुआ ।

"मेरे भाई, क्या अंतिम इच्छा है तेरी ?"

अब जाकर दोनों कैदियों को पता चला कि उन्हें वहां से क्यों लाया गया है । इसका अनुमान हालांकि उन लोगों ने पहले ही लगा लिया था, फिर भी उन्हें यह समझ में नहीं आया कि इस काम के लिए उन्हें यहां तक क्यों लाया गया है ?

"भाई कहते हो और अंतिम इच्छा पूछते हो ?" पूरन ने जवाब दिया ।

"हाँ, इसलिए कि एक भाई कहीं एक भाई की इच्छा पूरी कर सके ।"

"तो सुनो, मेरी अंतिम इच्छा यही है कि एक बार मेरी गंगा से मेरी मुलाकात हो और मरने से पहले वह मेरे मुँह में गंगाजल डाल कर विदा करे ।"

सभी लोगों ने एक दूसरे को देखा । अब यहाँ पर गंगा को कहाँ से ले आया जाय ? हम कहते हैं कि कोई ऐसी इच्छा होगी जो वसीयत की तरह मरने के बाद पूरा करने के लिए कहा गया है, ऐसा अपने हाकिमों से कह देंगे । क्योंकि वहाँ से आते समय भी हमें ऐसा निर्देश था कि मरने के पहले इनकी अंतिम इच्छा के बारे में पूछ लेना । पर अब इसकी इच्छा को अब हम कैसे पूरा करें "भाई गंगाजल हम कहाँ से ला सकते हैं? पर यह गंगा कौन है ?"

"ऐ क्या गंगा, गंगा की रट लगा रखे हो ? यह साला इंडियन है, खाली गंगा की बात करता है? तुम नेपाली हो कि नहीं साला ?" अंगारे बरसाते हुए एक गवरु सैनिक ने पूरन का कालर पकड़ कर कहा और फिर पुनर्नवा की ओर मुखातिब होकर कहा "ऐ साले, तुम कौन हो ? इंडियन हो कि नेपाली ?"

अब तक पुनर्नवा का क्रोध भड़क चुका था। उस सैनिक के इस हरकत पर वह आगबबूला हो गया। यहीं है इस देश की सैनिक जो इस देश की रक्षा करते है ? हमारे जैसे राजनीतिक कैदियों के साथ जब ये ऐसा सलूक करते हैं तो निरीह जनता के बीच इन्हें भेज दो तो ये क्या करेंगे ? वह गुस्से से थर-थर कांपने लगा।

“क्या तुम जानना चाहते हो कि मैं कौन हूँ? तो सुनो में उस मां-बाप का लड़का हू जो तुम्हार खून से संबन्धित है जिसे तुम नेपाली कहते हो। जिस नेपालीपना पर तुम्हें नाज है, पर क्या तुम जवाब दोगे कि मैं भी उस पर नाज कर सकता हूँ ? मेरे माँ बाप क्षेत्री थे। मुझे जन्म देने के बाद, जब मैं तीन महीने का था, मा किसी दूसरे मर्द के साथ भाग गयी और मैं नहीं जानता कि वह कहां है, कौन है, है कि मर गयी ? जैसे तुम अपनी भाषा में पोइली जाना कहते हो, हाँ मेरी माँ पोइली चली गयी। बाप भी तीन महीने के एक बच्चे का पालन पोषण कैसे करेंगे ? मर्द कहीं अपने बेटे का पालन-पोषण करता है ? और क्या औरत होकर पोइली जा सकती है तो वे क्या मर्द होकर किसी औरत को नहीं ला सकते ? वे भी एक औरत को पोइली लेकर चले गये। जाते समय उन्होंने मुझ पर इतनी कृपा जरूर की कि उन्होंने मेरी गला नहीं दबा दी नहीं तो आज गला दबाने के लिए मैं यहाँ तुम लोगों को उपलब्ध नहीं होता। मेरे बाप ने मुझको एक थारु परिवार में गोद दे दिया।

मेरे थारु माँ बाप ने मुझे गोद ले लिया जिनको दूसरी कोई सन्तान नहीं थी। उस माँ बाप की अनुकम्पा से मैं तेरी सोसाइटी के बीच उपलब्ध हूँ जो हमारे माँ बाप नहीं थे। पर जब भी मैं इन माँ बाप को याद करता हूँ, मेरी आँखें भर आती है। काश उनकी मैं सेवा कर सकता? उन्होंने जींदगी भर मेरी सेवा करके मुझे पुनर्नवा बनाया और जब मुझे उनकी सेवा करने की बारी आयी, वे चल बसे। उसके बाद मैं अपने देश की, अपने समाज की सेवा में लगा हूँ और आज मैं उससे भी बंचित हो रहा हूँ। मिलीटरी के जवान, तुहारा काम सिर्फ लोगों को मारना है, तुम्हारे पास इतना भेजा नहीं कि तुम इसे समझ सकोगे ? करो, उस काम को जिसका तुम्हें आदेश मिला है।

पुनर्नवा की बात से वह सिपाही पिघल गया। उसे लगा जैसे किसी बड़े भाई ने उसके गाल पर कस कर एक तमाचा जड़ दिया है। रुआँसा होकर उसने कहा-

क्षमा करना मेरे भाई, पर हम मजबूर है। हमें इस काम को करना ही है ? क्या मैं अपने बड़े भाई से अंतिम इच्छा पूछ सकता हू ?”

आधे सिपाही पिघल गये, पर आधे ज्यों की त्यो अडियल बने रहे। उ बोलता है साला ! क्या प्रमाण है इसका ? ऐसा कहकर यह हमें बहकाना चाहता है। क्या पूछते हैं, सब बेकार है ? जल्दी से काम पूरा करके चल देना चाहिए। वो तो चले हैं, बक बक करने ?”

“अगर तुम मेरी इच्छा पूरी कर सकते हो तो लो इस कागज को मेरे परिवार में पहुंचा देना। मेरी एक पत्नी है एवं एक बेटा है। यह उन्हीं की अमानत है।”

उस सिपाही ने उसे लिया और देखा इतना छोटा सा काम पूरा क्यों नहीं होगा ? हम पहुंचा देंगे। इसमें कौन सी बड़ी बात है ? एक कागज है, इसमें एक चित्र है और इसमें नेपाल का एक नक्सा भी है। हाँ भाई, तुम जरूर नेपाली हो नहीं तो नेपाल का नक्सा कैसे सिने से लगाकर रखते ? पर यह चिठी ?...........? यह कबूतर , यह पृथ्वी का गोल ग्लोब ? यह सब क्या है ? पर ऊपर से इस कबूतर का पंख ही कटा हुआ है। क्या है इसका मतलब ?”

“हाँ, हाँ, हाँ, मतलब तुम्हारी समझ में नहीं आयेगा भाई बस यही मेरी अंतिम इच्छा है, इसे मेरे परिवार में पहुंचा देना।”

सभी सिपाहियों में बातचीत होने लगी। यह तो आसान है, एक कागज का टुकड़ा उसके घर पर पहुंचा देना है मानो चिट्ठी नहीं पहुंचाया, चित्र पहुंचाया। इसके डाक से रजिष्ट्री भी कर सकते हैं ? पर उस साले पूरन की इच्छा कैसे पूरी की जाय ? नहीं पूरी की जाय। चलो ले चलो, मार दोनों साले को क्या देर करते हो ? आधे सिपाही पक्ष में और आधे विपक्ष में बातें करने लगे। आखिर जीत पक्ष की हुई। तय हुआ कि डी. एस. पी. आफिस में इस बात की खबर की जाय।

“हलो, हलो, ओभर सर पूरन नाम का कैदी किसी गंगा से भेट करना चाहता है और गंगाजल पीना चाहता है।”

डी.एस.पी. साहब ने सुना बड़ा घाघ कैदी है। पर इच्छा तो पूरी करने का आदेश है। गंगा तो हमारे यहां ही कैद है। वे माथे पर बल देकर सोचने लगे। अच्छा ही होगा, यह गंगा ही सारे फसाद की जड़ है। इसको भी...........”

“हलो, हलो, ओभर, देखो इस गंगा को भेज रहे हैं. यही पर कैद है। यह उसकी बीबी है। पर दूसरी इच्छा कभी पूरी नहीं करनी है। यह जायेगी और इसको भी इसी के साथ। नहीं तो सिर्फ उसी के चलते इस घटना की जानकारी सारी दुनियाँ को हो जायेगी। ऊपर से निर्देश है कि इस घटना की

जानकारी एक पत्ते को भी नहीं हो । क्या निर्देश देते हैं लोग ? किसी को पता भी नहीं चले और इच्छायें पूरी हो । हँ,............डी.एस.पी. साहब झल्लाने लगे ।

थोड़ी देर के बाद दो जीप सरीसवा नदी के किनारे रुकी । इस जगह पर एक पुल बना था । उसी पुल के नीचे एक जीप से दोनों कैदियों को उतार कर ले जाया गया । दूसरी जीप से गंगा को उतारा गया । कैदियों को एक टीम और गंगा को दूसरी टीम ने पकड़ रखी थी । दोनों को नदी के उस पार ले जाकर छोड़ दिया गया । दोनों प्रेमी एक दूसरे से लिपट कर रोने लगे । न जाने कितने वर्षों का बाँध तोड़कर वे दोनों एक दूसरे से लिपटे थे ।

ठाँय ! ठाँय !! ठाँय !!!

लगातार तीन गोलियाँ दाग दी गयी । तीनों गोलियाँ पीछे से पूरन के सीने में उतर गयी । वह वही ढेर हो गया । नदी के उस पार । शांति क्षेत्र के उस पार बह छटपटाने लगा । विसुरती हुई गंगा उसके गले एवं सीने से लिपट कर विलाप कर ने लगी ? रह रह कर वह उसके मुँह को चूमती, चाटती और आँखों से झर-झर आँसू बहा रही थी । पूरन के चूमे जाते चाटे जाते मुख के अंदर गंगा के आँसू बह वह कर पड़ रहे थे । गंगा की आँखों से गंगाजल निकल कर पूरन की अंतिम इच्छा पूरी कर रही थी। पूरन ने कहा था कि गंगा अपने हाथों से गंगाजल मुझे पिलायेगी । गंगा गंगाजल को पिला रही थी, पर अपने हाथों से नहीं, अपनी आँखों से !

ठाँय ! ठाँय !! ठाँय !!!

लगातार तीन गोलियाँ फिर चली और पूरन की छाती से लिपटी गंगा भी वहीं ढेर हो गयी ।

सिपाहियों के कब्जे में खड़ा पुनर्नवा के साथ भी यही प्रक्रिया दुहरायी गयी । उसके बाद पूरा वातावरण शांत हो गया । तीनों को शांत करके दोनों जीप अपने शांति क्षेत्र को लौट गयी । किसी को कुछ पता नहीं चलेगा । यू.एन.ओ. में सबाल उठेगा तो कहा जायेगा कि दोनों कैदी भाग गये और उस पार हिन्दुस्तान में एक लड़की के साथ मुंह काला करते समय किसी की गोलियों के शिकार हो गये । हाँ बेकार के हम लोग शांति क्षेत्र के बंधन में फंस गये हैं नहीं तो अभी तक सभी क्या कम है, हमारा प्लान ? शांति क्षेत्र तो हम इसे बना कर ही रहेंगे । नही तो लोगों को भूनकर रख दिया जाता । अभी तो सिर्फ मिलिटरी को शांतिपूर्वक तैनात कर दिया गया है । क्या किया जाय, कुछ किया जाय तो यू.एन. ओ. वाला कहेगा,

कि ऐसा करता है । साले यू. ए. न.ओ. वाले भी न शांति क्षेत्र बनाते है, न हटा ले । दोनों में से कोई एक हो जाता तो हम बंधन से छूट जाते ।

दोनों जीप वीरगंज डी.एस.पी. कार्यालय में रूकी । सिपाहियों ने उस को निकाल कर डी.एस.पी. को दिया ।

“सर यह क्या है? पुनर्नवा ने अपनी अंतिम इच्छा के रूप में इसे अपने परिवार के पास पहुँचा देने के लिए दिया है ।”

“डी.एस.पी. साहब ने उस कागज को अपने हाथ में लिया और अपने माथे पर बल देकर सोचने लगा । वह उन्हें भी समझ में नहीं आ रहा था, पर कैसे कहें? ये साले सिपाही कहेंगे कि डी.एस.पी. को भी समझ में नहीं आया ।

“ठीक है, ठीक है, तुम लोग जाओ, हम उसकी इच्छा को पूरा करेंगे ।”

सभी सिपाही चले गये। डी.एस.पी. साहब को एक बार हुआ कि कागज को फाड कर फेक दें पर रुक गये । क्या पता इस कागज का कोई राज ही हो ? हम पुलिसवालों को किसी चीज को इस तरह नेगलेट नहीं करना चाहिए। चलते हैं. एस.पी. साहब के पास ।

“सर, यह क्या है ? पुनर्नवा ने अपनी अंतिम इच्छा के रूप में इसे अपने परिवार के पास पहुँचा देने के लिए दिया है ।”

एस.पी साहब ने भी उस कागज को लिया और माथे पर बल देकर सोचने लगे । वह उन्हें भी समझ में नहीं आया, पर कैसे कहें डी.एस.पी. साहब से ।

“ठीक है, ठीक है, तुम जाओ हम इसे पहुंचा देंगे ।”

एस.पी. साहब को लगा कि जरूर इसमें कोई रहस्य है । इस रहस्य को खोलना होगा। काठमाण्डू चलना होगा । आई.जी.पी. साहब को दिखलाउंगा । वे उस कागज को लेकर फौरन रवाना हो गये ।

“सर सर, इस कागज को पुनर्नवा ने अपनी अंतिम इच्छा के रूप में दिया है कि इसे उसके घर में पहुंचा दिया जाय क्या है यह ?”

“आई.जी.पी. ने उसे लिया और वे चक्कर खाने लगे ।

“ठीक है, तुम जाओ ।”

इस तरह वह कागज आई.जी.पी., जरनैल, कनैल के द्वारा वहां पर पहुँचा जहाँ उसका पड़ाव था । वे उसे देखते ही आग बबूला हो गये ।

“कौन है, वह गुस्ताख ? जिसने इस चित्र को बनाया ? उसे पकड़ और मेरी आंखों के सामने सूट कर दो । बाप रे बाप इस देश में इस तरह हमारा

मजाक करने वाला पैदा हो गया ? हम उसे १० जन्मों तक फांसी देंगे । १० जन्मों की फासी हम उसे एक ही बार देना चाहते हैं ।"

पास खड़े सभी लोग उनका यह गुस्सा देख कर भयभीत हो गये । एस. पी डी.एस.पी., जरनल, कर्नल सभी को लगा जैसे उन्हीं को फांसी लग रही हो ।

जाओ ऽऽऽऽ........ "चिल्लाकर कहा उन्होंने ।

सभी लोग सकते में आ गये। वे लोग वहाँ से हाँफते हुए भागे। उस व्यक्ति की तलाश होने लगी । व्यक्ति तो कहाँ मिलेगा ? वे लोग फिर उनको खबर देने गये । तबतक उनका गुस्सा कुछ शांत हो गया था ।

"अच्छा हुआ वह पहले ही फांसी चढ़ गया, नहीं तो हम उसे ७ जन्मों की फांसी एक ही बार दे देते । अच्छा एक काम करो ।"

"हजुर, सरकार ।"

"इस चित्र के कबूतर का पंख बनवाओ ।"

सभी लोगों ने हुक्म को सिर आंखो पर लिया और एक दूसरे पेन्टर से उस कबूतर को पंख बनाने के लिए दे दिया गया । कुछ दिनों के बाद वह बनकर आ भी गया ।

"अहाहा ऽऽऽऽ........इसे कहते हैं कबूतर जैसे अभी उड़ने उड़ने को तैयार है । अब यह उड़कर सारी दुनियाँ का सैर करेगा । जाओ इसे रवाना कर दो ।"

वह काजग का कबूतर वाशिंगटन की ओर रवाना हो गया ।

X X X

भागो, भागों, प्राण बचाओ, हे प्रभो यह क्या हुआ ? हे प्रभो, ऐसी क्या गलती हो गयी ? क्या कहा ? सारा बघुवन ध्वस्त हो गया ? ओ पसाह का बाँध टूट गया ? क्या खेतों से मूल फूटकर बहने लगा है । परम पिता यह क्या तेरी लीला है ?

चारों ओर चित्कार, हाहाकार, भूकम्प महाप्रलय की तरह बरसात ! सभी लोग घर छोड़ छोड़ कर अपने अपने प्राण बचाने लगे । इस प्राण बचाने की प्रक्रिया में हजारों लोगों की जाने जा रही है । कोई किसी को पूछनेवाला नहीं है । थोड़ी देर पहले तक सभी घरों में तैनात सैनिकों को भी अपने प्राणों के लाले पड़ गये कोई इधर भागता, कोई उधर भागता नजर आ रहा था । अब उनके हाथों से बंदूक छुट गये थे । बंदूकों ने इस मौके पर लड़ने से इंकार कर दिया था ।

डी.एस.पी. एस.पी. आई.जी. पी. कर्नेल, जरनैल सबकी लाश उनके घरों में मलबे में दब गये । कबूतर उड़ाने वाले एक जगह मुंह बायें पड़े हुए थे । महाप्रलय की यह विनाश लीला ज्यादा नहीं केवल घंटे भर चली थी और सब कुछ स्वाहा हो गया । थोड़ी देर पहले सारे संसार में अपना कबूतर उड़ाने वाले की गर्दन कबूतर की तरह मरोड़ दी गयी थी । उस महाप्रलय के हाथों के सभी कबूतर क्या कबूतर उड़ायेंगे ? कौन पूछने वाला है किसको ? जो सियार और कुत्ते बच गये थे, जो गिद्ध मडरा रहे थे, सबके लिए महाभीज मिल गया था । नदिया, ताल, तलैया, गंगा जमुना सभी उस महाप्रलय से आप्लावित वह रहे थे । ऐसा महाप्रलय कभी नहीं हुआ । एवरेष्ट भी नीचे खिसक गया था ।

हाँ, हाँ, हाँ, हाँ, हाँ, हाँ, हाँ...........

हा, हा, हा, हा, हा, हा, हा, हा,...............

हा, हा, हा, हा, हा, हा, हा, हा,...............

एक युवती इलाहाबाद के घाटों पर पागलों की तरह हँस रही थी ।

हा, हा, हा, हा, हा, हा, हा, हा, हा, हा

जैसे वह पगली, आदमी के इस सम्पूर्ण पागलपन पर कटाक्ष कर रही हो । गंगा और यमुना का संगम अपने अंदर, उस समूचे विनाश लीला का, उस महाप्रलय का संपूर्ण पानी लेकर वह रहा था ।

हा हा हा हा हा, हा, हा, हा हा, हा, हा, हा.......

इसके सिवा वह कुछ बोल नहीं सकती थी, उस की जीभ

ए, ऐं, ओ, आम, अ, आ है (नेपाल कहाँ है ?)

अ, आ, ई, अ, आ, अआ, है गंगा कहाँ है ?

दो आदमियों से वह युवती कुछ सवाल पूछ रही थी । पर उन दोनों आदिमियों ने उस सवाल को नहीं समझा। वे दोनों राहगीर उसी रास्ते से कहीं जा रहे थे ।

"कौन है ये, क्या कह रही है ? कुछ पता चलता है ? पागल है क्या ?"

"अरे भाई, पागल ही तो है । देखते नहीं, इसके वस्त्र ? ऐसा अस्त, व्यस्त, ऐसा अस्त व्यस्त कहीं कोई नार्मल आदमी रहता है । पागल ही है, पागल, चले । इसको हमने भूकम्प के झटके से पहले भी यही देखा था । यही पर घूमती रहती है । अपने आप बड़बड़ाती रहती है । हर किसी से कुछ पूछती रहती है । पर इसकी भाषा कोई समझे तब न जवाब दे । सबको अपना जीभ दिखलाती रहती है । सब

यह तो समझ जाते हैं कि इसकी जीच काट दी गयी है। यह पूछती क्या है किसी को पता चले तब न ? लिख कर भी नहीं बताती, पढ़ी लिखी नहीं होगी।"

दोनों राहगीर यही बतियाते कहते आगे बढ़ते गये। चलते-चलते वे मुड़कर उनकी तरफ देखते जाते थे। अफसोस भी खाते थे। बेचारी केसी अल्हड़ है। पर कैसी भगवान की लीला है, सब बेतरतीब हो गया है।

युवती अब घाट पर बैठी एक टक गंगा के पानी पर देख रही थी। गंगा का पानी उमडघुमड़ कर वह रहा था। अचानक वह उठ खड़ी हुई और बड़ी गौर से देखने लगी।

थोड़ी दूर पर दो लाशें बहती हुई आ रही थी। दोनों लाश कुछ दूरी पर बह रही थी। अचानक वे दोनों एक दूसरे के पास आने लगी। युवती मुस्कुराने लगी।

हा हा हा हा, हा, हा, हा, हा, हा

देखो, देखो मरने के बाद भी इनकी प्रेम लीला नहीं खत्म हुई, देखो, देखो किस तरह, दोनों एक दूसरे की ओर बढ़ते जा रहे है। नहीं नहीं, ये नहीं बढ़ रहे हैं। पानी ही इन्हें एक दूसरे के पास कर रहा है। हाँ, हाँ ये नहीं बढ़ रहे हैं, पानी ही बहा र हा है।

हा, हा, हा हा, हा, हा हा, हा, हा हा, हा, हा

देखो, देखो, दोनों एक दूसरे से कैसे लिपट गये। इसी को कहते हैं चमत्कार ! वाह भगवान ! तेरी लीला भी अपरम्पार है ! पता नहीं जिंदा में ये लोग मिल पायें हों कि नहीं। अब इच्छा तो पूरी कर लें।

हा, हा, हा हा, हा, हा हा, हा, हा हा, हा, हा

अचानक हँसती हुई युवती की हंसी थम गयी। वह गुरु गम्भीर होने लगी। फिर रोने लगी। उसकी आंखों से आंसुओं की धार बहने लगी। लाशें अब उसके बिल्कुल पास आ गयी थी। अचानक उसके चेहरे पर रोष प्रकट हो गया। उलाहने का रोष ऐसा रोष जो किसी के चेहरे पर, अपने को उलाहना देते समय प्रकट होता है !

"ओ, तो गंगा जी, आप यहां है ? पूरन भैया आप भी यही ?" खूब निकले आप भी, चलिए हम नहीं बोलते आपसे ? कहाँ, कहा आपको ढूंढती रही, कहीं नहीं मिले। गंगा मिलेगी भी कैसे ? ठीक है, जाइए आप लोग, हम जाती हैं।

वह मुड़कर वापस लौटने लगी। लाश जहाँ थी, वहां से थोड़ी दूर आगे निकल गयी। उसने फिर मुड़कर देखा, लासें दूर होती जा रही है। अचानक उसे अपने से दूर जाते देख वह फिर रो पड़ी।

"नहीं गंगा, हमें छोड़ कर मत जाओ नहीं भैया, हमें छोड़ कर मत जा हम भी आते है।"

छपाक !

जीभ कटी शारदा ने आंखों में आंसू भरे गंगा में छलांग लगा दिया। उसी समय कहीं से एक कबूतर उड़ता हुआ आया। दूसरी ओर से एक बाज उसे देख रहा था।

फटाक।

बाज ने एक झपाटा मारा और कबूतर को ले गया। नीचे पानी का एक भंवरा आया और शारदा अदृश्य हो गयी। कुछ देर के बाद उसके पाँव दिखलाई पड़े। दोनों जाते हुए राहगीरों ने मुड़कर देखा और उस पाँव को हाथ जोड़कर नमस्कार किया। फिर शारदा कभी दिखलाई नहीं पड़ी। सरस्वती अदृश्य हो गयी।

गंगा बहती जा रही थी। पूरन के साथ।

दूर-दूर....... दू......र तक गंगा बहती जा रही थी, अपने मटमैले जल प्रवाह के साथ।

सामने जमीन पर दिखलाई पड़ रही थीं, गंगाघाट की सीढ़ियां ऊपर मंदिर के गुम्बज पर पताका फहरा रहा था, सत्य का पताका ! ऊपर बहुत ऊपर आसमान पर बादलों का धुंआ दिखलाई पड़ रहा था। बादलों के उसी धुंध में एक चित्र उभरा। चार भुजाओं वाली सरस्वती अपने पूरे रूप लावण्य के साथ आशीर्वाद की मुद्रा में धीरे-धीरे उस नील गगन की ओर पाँव बढ़ाती जा रही थी जहां पर असंख्य तारे टिमटिमाते है। पता नहीं किस तारे पर जाकर अब वह अपनी लीला प्रकट करेंगी।

समाप्त